ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन "जनसंख्या शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की शिक्षा विषय में
पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

1995

निर्देशक
डा० जे० एल० वर्मा
रीडर
शिक्षा विभाग
बुन्देलखण्ड कालेज
झांसी (उ० प्र०)
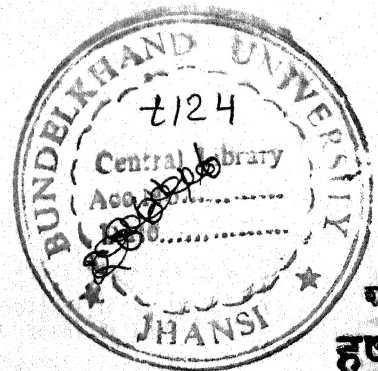
शोधकर्ता
हर्षवर्धन
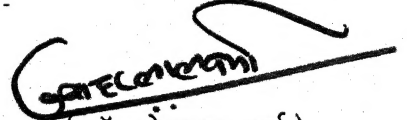
प्रमाण - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि हर्षवर्धन ने शिक्षा विषय में शीर्षक - **'ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन जनसंख्या शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में'** पर शोध प्रबन्ध मेरे निर्देशन में अत्यन्त परिश्रम अध्यवसाय एवं कर्तव्यनिष्ठा से सम्पन्न किया है ।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

निर्देशक

(डॉ0 जे0एल0 वर्मा)
रीडर
शिक्षा विभाग
बुन्देलखण्ड कालेज,
झाँसी ।

घोषणा - पत्र

मैं, हषवर्धन घोषणा करता हूँ कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध- **"ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन जनसंख्या शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में"** मेरा निजी प्रयास है । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पी-एच0डी0 की उपाधि हेतु प्रस्तुत किया गया है ।

हर्षवर्धन

(हर्षवर्धन)
शोधकर्ता

उपक्रम

ईश्वर की महती अनुकम्पा से जनसंख्या शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय पर इस शोध प्रबन्ध के सृजन में अनेक विषय विशेषज्ञों, शिक्षाविदों, विद्वानों ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में प्रेरणा व सहयोग देकर मेरे कार्य को अभिसिंचित किया है । ऐसे महानुभावों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य रूप से मेरा पुनीत कर्तव्य है ।

अपने शोध-प्रबन्ध **'ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन - जनसंख्या शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में'** को पूर्ण करने में, निर्देशक के रूप में अपने विशद ज्ञान से मेरा पथ प्रशस्त करने के लिए मैं **डॉ0 जवाहर लाल वर्मा**, रीडर (शिक्षा विभाग, बुन्देलखण्ड कालेज, झाँसी) के प्रति चिरऋणी रहूँगा । विषय विशेषज्ञ के रूप में शोध कार्य की पूर्ति में यदि आपका सहयोग मुझे प्राप्त न होता तो मैं किंचित मात्र भी अपने इस कार्य को पूर्ण करने में समर्थ न होता । मैं अन्र्तमन से ऐसे सहृदयी निर्देशक के प्रति कृतज्ञ हूँ तथा शत-शत वन्दन करता हूँ ।

शोध कार्य में पग रखने के लिये मुझे अनुप्रमाणित करने वाले एवं आद्योपान्त अर्हनिश सहयोग प्रदान करने वाले डॉ0 योगेश कुमार गुप्ता, डी0लिट् (रीडर, शिक्षा विभाग, पी0जी0 कालेज, मुरादाबाद) का भी मैं आजीवन आभारी रहूँगा, जिन्होंने शोध कार्य में पग-पग पर आने वाली कठिनाइयों के निराकरण में अपने जीवन के अमूल्य क्षण प्रदान कर मुझे कृतार्थ किया । आप प्रस्तोता, प्रेरक, पथ प्रदर्शक के रूप में हर क्षण मेरे साथ रहे । आपका सहयोग अवर्णित व अव्यक्त है ।

अपने अमूल्य मार्गदर्शन एवं परामर्श के द्वारा मेरे उज्ज्वल भविष्य के लिये अन्र्तमन से कर्मयोगी के रूप में पथ प्रशस्त करने वाले अग्रज डॉ0 जयपाल सिंह 'व्यस्त', प्रवक्ता (हिन्दू पी0जी0 कालेज, मुरादाबाद) का मैं चिरऋणी हूँ तथा उनके प्रति अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित करता हूँ । मैं अपनी पूजनीय भाभी श्रीमती रामवती देवी, पत्नी डॉ0 जयपाल सिंह 'व्यस्त' के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ । जिन्होंने सदैव आशीष की वर्षा कर मेरा पथ अमृत सिंचित किया है ।

शोध कार्य की पूर्ति में डा0 जी0एस0 अग्रवाल (शिक्षा विभाग, हिन्दू पी0जी0 कालेज, मुरादाबाद) का भी मैं आजीवन ऋणी रहूँगा जिनके उचित मार्गदर्शन एवं अथक प्रयास से इस महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने में मुझे स्थायी सम्बल प्राप्त हुआ, जिससे मैं इस कठिन मार्ग को पार कर सका ।

शोध प्रवृत्तियों की गहराई तक ज्ञान प्रदान करने वाले डॉ0 विशेष गुप्ता, वरिष्ठ प्रवक्ता (समाजशास्त्र विभाग, एम0एच0 पी0जी0 कालेज, मुरादाबाद) का भी मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ ।

शोधकर्ता डॉ0 विजयपाल सिंह (रीडर, गणित एवं सांख्यिकी, आर0एस0एम0, पी0जी0 कालेज, धामपुर) के प्रति भी नतमस्तक है, जिन्होंने अपने अमूल्य ज्ञान की रश्मियों से सांख्यिकीय गणना को समझने में अपना अमूल्य समय प्रदान किया ।

मैं डॉ0 नीता गुप्ता (प्रवक्ता अर्थशास्त्र विभाग, हिन्दू महाविद्यालय, मुरादाबाद) के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जो निरन्तर मुझे कार्य पूर्ण करने में सद्-परामर्श एवं प्रेरणा प्रदान करती रही हैं तथा प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में अपने मृदु और आत्मीय व्यवहार द्वारा मेरा पथ अवलोकित करती रही हैं ।

मैं हृदय से आभारी हूँ डॉ0 रामलखन विश्वकर्मा (रीडर, डी0वी0 कालेज, उरई) एवं डॉ0 वी0पी0 अग्रवाल (रीडर, अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालय, सीतापुर) का, जिन्होंने अपने मार्गदर्शन एवं निर्देशन द्वारा कई महत्वपूर्ण विषयों को समझाने में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान कर कृतार्थ किया । शोधकर्ता कृतज्ञ है डॉ0 जितेन्द्र वर्मा, डॉ0 लेखराज सिंह एवं डॉ0 (श्रीमती) सरोज सिसोदिया का जिन्होंने जनसंख्या शिक्षा को समझाने व उसके सार्थक पहलुओं पर अपने अमूल्य सुझाव प्रदान कर शोधकार्य में सराहनीय सहयोग प्रदान किया ।

मैं डॉ0 मंजुलता (प्रवक्ता, संस्कृत विभाग, एस0वी0डी0 पी0जी0 कालेज) धामपुर व उनके पति अभयवीर सिंह के प्रति भी अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अनेक कार्यो के सम्पादन में मुझे सहयोग प्रदान किया ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में पठन-पाठन की सामग्री प्रदान करने के लिये मैं जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली, साक्षारता निकेतन, लखनऊ के जनसंख्या विभाग, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली व मेरठ विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्षों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने शोध कार्य की आपूर्ति में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया ।

शोधकर्ता उन सभी विषय विशेषज्ञों का हृदय से आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सूची के कथनों का निर्माण कराने में अपना अमूल्य अनुभव प्रदान किया तथा विद्वता से कथनों का परीक्षण किया ।

शोधकर्ता मुरादाबाद मंडल के सभी चयनित विद्यालयों के शिक्षक, शिक्षिकाओं, प्रधानाचार्यों का भी मन से आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने शोधकार्य हेतु जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति मापनी पर निष्ठा भाव से अपने विचार प्रस्तुत किये एवं शोधकार्य हेतु समय-समय पर साक्षात्कार द्वारा अपने विचार प्रदान करके मेरा उत्साहवर्द्धन किया । इन शिक्षक, शिक्षिकाओं को ही केन्द्र मानकर मैंने अपना शोध कार्य पूर्ण किया है । वास्तव में यह शिक्षक शिक्षिकायें ही मेरी शोध के आधार स्तम्भ हैं ।

शोधकर्ता कौंसिल फॉर सोसल डबलपमेंट, नई दिल्ली के वरिष्ठ शोध अधिकारी मि0 नागी व उनके समस्त सहयोगी स्टाफ का भी कृतज्ञ है, जिन्होंने विद्धता व सहहृदयता से प्रस्तुत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रदत्तों की पूर्ण निष्ठा व लगन से गणना की ।

मैं बाबा लक्ष्मण दास उ0मा0 विद्यालय सरकड़ा के प्रधानाचार्य, श्री जयपाल सिंह शिक्षक बन्धुओं विशेष रूप से श्री विजयपाल सिंह, श्री यशपाल सिंह, श्री दिनेश राणा व विद्यालय के प्रबन्धक डॉ0 नवबहार जी का भी अत्यधिक आभारी हूँ जिन्होंने मेरे कार्य में अपना समस्त सहयोग प्रदान किया ।

मैं अपने पूज्यनीय माता-पिता **श्री छत्रसाल सिंह एवं श्रीमती पुष्पा देवी,** अग्रज श्री धर्मवीर सिंह, अनुज लोकेश कुमार व अवनीश कुमार, अपनी पत्नी श्रीमती अनीता रानी व अपने समस्त सम्बन्धियों के प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर सहयोग प्रदान करके मेरा असीम उत्साहवर्द्धन किया ।

मैं अपनी पुत्री कु0 अभिलाषा व पुत्र अभिषेक कुमार के प्रति गौरवान्वित हूँ, जिन्होंने मेरे कार्य में अपना बहुमूल्य समय देकर तथा बार-बार मेरे कार्य को पूर्ण करने के लिये सजग करते हुए मुझे प्रशंसनीय सहयोग दिया । मेरा स्नेहाशीष सर्वदा उनके साथ है ।

मैं अपने टंकणकर्ता श्री नीरज मेहरोत्रा एवं उनकी पत्नी श्रीमती कंचन मेहरोत्रा का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने अपने व्यस्ततम समय में पूर्णनिष्ठा व लगन से मेरे इस शोध-प्रबन्ध को समय पर पूर्ण किया और भाई जैसा स्नेह प्रदान किया ।

इति शुभम्

हर्षवर्धन

(हर्षवर्धन)

अनुक्रमणिका

तालिका सूची

अध्याय - प्रथम : प्रस्तावना

अध्याय - प्रथम

प्रस्तावना

वास्तव में जनसंख्या एक बहुआयामी घटना है । जनसंख्या की संरचना का अध्ययन करने के लिए बहुआयामी आगम की आवश्यकता पड़ती है । यह एक ऐसी संरचना है, जिसमें व्यक्तियों पर सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव, गुणवत्ता के आधार पर उनके जीवन स्तर, सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उनकी सोच, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जनसंख्या की मनोदशा, आर्थिक मानक पर उनका जीवन स्तर और राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में जनसंख्या के द्वारा राज्य की स्थापना इत्यादि विभिन्न बिन्दु जनसंख्या के अन्तर्गत ही समाहित है । राष्ट्र का स्तर चाहे विकासशील हो अल्प विकसित या विकसित जनसंख्या के सदैव सकारात्मक और और नकारात्मक पक्ष, एक प्रकार की वैज्ञानिक सोच और विश्लेषण के लिए बाध्य करते हैं । जनसंख्या का ढाँचा सदैव उसकी व्यवस्था को प्रभावित करता है । जनसंख्या का आकार व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति, उनके रहन-सहन, पर्यावरण, विकास आदि से सीधे रूप में सम्बन्धित है । जनसंख्या का यही स्वरूप जैसे-जैसे बढ़ता और घटता रहता है, उसी अनुपात में उसके संरचनात्मक तत्व उसकी व्यवस्था को प्रभावित करते रहते हैं । इसी आधार पर जनसंख्या का यह स्वरूप समाज में विकास की गति तय करता है ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के चार दशक पूर्व से विश्व के अल्पविकसित क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि ने शोधकर्ताओं, बुद्धिजीवियों व योजनाकारों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है । यही कारण रहा है कि इस दशक में जनसंख्या गतिशीलता एवम् आर्थिक तथा सामाजिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन में प्रतिस्पर्धा होने लगी है । इसी दशक में विश्व के चिन्तकों में यह चेतना भी जागृत हुई कि जनसंख्या वृद्धि व्यक्तियों और संसाधनों, आशाओं और आकांक्षाओं व उपलब्ध अवसरों के मध्य असंतुलन भी पैदा करती है । साथ ही यह भी अनुभव किया गया कि जनसंख्या वृद्धि सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन से भी सम्बन्धित है, जिसमें कृषि उत्पादन की माँग, रोजगार के अवसर, स्वास्थ्य रक्षक सेवायें और इसी प्रकार की अन्य सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है ।

प्राकृतिक, आर्थिक, भौगोलिक, शैक्षिक तथा अन्य संसाधनों के विस्तार की एक सीमा है । उसी अनुपात में उसका उपयोग करने वालों की संख्या भी हो तभी सभी प्रकार का संतुलन बना रहता है । परन्तु आज उपयोग करने वाले व्यक्तियों की जनसंख्या में अपेक्षा से कई गुनी वृद्धि न केवल भारत को चिन्तित कर रही है, अपितु विश्व स्तर पर यह समस्या वर्तमान में प्रथम वरीयता पर पहुँच गई है ।

विश्व के पचास से भी अधिक विशेषज्ञों ने हाल ही में एक वक्तव्य जारी करके जनसंख्या समस्या को सबसे विकट समस्या बताया है । एक जीवन काल में ही विश्व की जनसंख्या दुगनी होकर 5.5 बिलियन तक पहुँच गई है । यदि हम निम्न जन्म दर के अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर भी लें, तो अगली शताब्दी के मध्य तक अपने अस्तित्व के लिए 7.8 बिलियन लोग लड़ते नजर आयेंगे । विश्व की जनंसख्या में प्रतिमाह एक इंग्लैंड की जनसंख्या बढ़ रही है । प्रतिदिन करीब 3,84,000 बच्चे जन्म लें रहे हैं । यदि हम कहें कि आज जनसंख्या विस्फोट परमाणु विस्फोट से भी अधिक है तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

जनसंख्या वृद्धि को रोकने में परिवार कल्याण कार्यक्रम असफल रहे हैं । इस विफलता में सबसे बड़ी भूमिका अशिक्षा की रही है । जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाने के लिए जनसंख्या शिक्षा के अभियान को अधिक गति की आवश्यकता है । इस अभियान में शिक्षक शिक्षिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है । महिला शिक्षा का जन्म दर की कमी से सीधा सम्बन्ध है ।

विश्व में भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश और टयूनीशिया उन ।। राष्ट्रों में से है जहाँ ।5 वर्ष के ऊपर की आधी से अधिक जनसंख्या निरक्षर है । संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जारी आँकड़ों के अनुसार भारत चीन और पाकिस्तान समेत लगभग 20 राष्ट्र सर्वाधिक निरक्षर हैं ।

शिक्षा एवं जनाधिक्य का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है । अशिक्षा जनाधिक्य को जन्म देती है । शिक्षा का अभाव जनसंख्या वृद्धि में तीव्र गति प्रदान करता है । अशिक्षित व्यक्ति दूरगामी परिणामों का चिन्तन उतना नहीं कर सकता जितना की शिक्षित व्यक्ति । इन तथ्यों पर अनेक संस्थाओं, व्यक्तियों, विचारकों, चिन्तकों ने अनेक अध्ययन किये हैं । इन

अध्ययनों में से कुछ के नाम इस प्रकार है - जगन्नाथ 1974, गास्केरेनहास 1974, एफ0ए0ओ0 1979, ए0 1979, बी0 ब्राउन 1971,74,75, ए0 1975, बी0 1975, 1976, 1978, 1979, ए0, 1979 बी0, 1979 सी, 1981 ए0बी0सी0 वर्ग 1973 । इन अध्ययनों में ग्रामीण क्षेत्रों की शिक्षा दुर्दशा, स्त्री शिक्षा की कमी, अनुशासनहीनता, उच्च स्तर के अध्यापकों की कमी, सामाजिक रूढ़ीवादिता, अन्धविश्वास आदि तथ्यों को सम्मिलित किया गया ।

राजनैतिक, नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक रूप को भी जनसंख्या वृद्धि प्रभावित करती है । जनाधिक्य वाले देश जनसंख्या वृद्धि से अराजकता एवं नव साम्राज्यवाद की स्थिति को बढ़ाते हैं । इंग्लैण्ड व दूसरे यूरोपियन देशों का 17वी, 18वी शताब्दी में उपनिवेशवाद इस तथ्य को इंगित करता है । सीमित साधनों में बड़े परिवार का पालन होना दुरूह ही है । बेरोजगारी, भाई भतीजावाद, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास भी जनाधिक्य से उत्पन्न समस्यायें हैं । इस सम्बन्ध में बी0के0 आर0बी0 (1974), सिद्ध (1979), शाहबानो (1970), यूनिस्कों (1980) आदि ने अध्ययन किये हैं ।

जनाधिक्य का वातावरण प्रत्येक क्षेत्र में प्रदूषण को जन्म देता है । इसमें नाभिकीय प्रदूषण भी सम्मिलित है । यू0एन0ओ0 (1971), दास (1972), किम (1972), यूनिस्को (1975) आदि के अध्ययन इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय हैं ।

जनाधिक्य के कारण मानव कमजोरियाँ खुलकर सामने आती हैं जैसे अतिक्रमण आय के संसाधनों का शोषण आदि । इन सबके कारण नगरों में प्रदूषण फैलता है तथा नगरीय चमक-दमक से नगरीकरण को बढ़ावा मिल रहा है । ये सभी समस्याऐं जनाधिक्य का ही दुष्परिणाम है । इस क्षेत्र में सिंह (1974), बोस (1976), एन0पी0बी0 (1980), आदि के अध्ययन हुए हैं ।

जनसंख्या की दिनोदिन होती वृद्धि के दुष्परिणामों में बेरोजगारी की समस्या सबसे जटिल एवं दुरूह है । बेरोजगारी की समस्या के कारण नैतिक मूल्यों का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है । मानव मूल्य टूट रहे हैं । कुंठाये जन्म ले रही हैं । इसके साथ समय में कमी, निम्न जीवन स्तर, मुद्रा उपलब्धिता की दर में कमी, राष्ट्रीय आय में कमी, पारिवारिक जीवन में आर्थिक तनाव आदि अनेक आर्थिक समस्यायें जनाधिक्य के कारण ही हैं, जो व्यक्ति के जीवन व राष्ट्र के

समक्ष विकराल रूप से उपस्थित रहती हैं । इन आर्थिक दुष्परिणामों के संदर्भ में अनेकों व्यक्तियों तथा संस्थानों ने विराट् अध्ययन किये हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि जनसंख्या की अधिकता मानव को व्यष्टि एवं समष्टि दोनों स्तर पर प्रभावित करती हैं ।

जनसंख्या के आर्थिक दुष्परिणामों के सम्बन्ध में मेहरा (1966), एन0सी0ई0आर0टी0 (1976), रस्तोगी (1974), अग्रवाल (1966), नारायण (1967), देसाई (1970) सिंह (1975) आदि द्वारा अनुसंधान किये गये हैं ।

कुपोषण, अल्पपोषण के बाल रोग, बाल मृत्यु दर में वृद्धि रोगों के प्रति सहनशीलता व ज्ञान की कमी, चिकित्सा सुविधाओं का अभाव आदि जनाधिक्य के स्वास्थकीय दुष्परिणाम हैं । इस सम्बन्ध में अनेकों संस्थानों व व्यक्तियों ने अपने अध्ययन किये हैं । इनमें से कुछ है -- चेलास्वामी (1959), मुखर्जी एवं सेन गुप्ता (1960), स्कीमशौप व गर्डनर (1968), चन्द्रशेखर (1972) इंदिरा (1972), यूनिस्को (1977), राव (1977) ।

जनाधिक्य का पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर तो दुष्परिणाम पड़ता ही है साथ-साथ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रखर व अमिट दुष्प्रभाव पड़ता है । इससे भोजन पोषण, शिक्षा, स्वास्थय, आवास आदि के दुष्परिणाम उत्पन्न होते हैं । इस सम्बन्ध में दास गुप्ता (1970), एन0सी0ई0आर0टी0 (1973), ब्राउन (1974), यूनिस्को (1975) आदि ने अपने अध्ययन किये हैं ।

इस प्रकार हमें परिलक्षित होता है, कि जनसंख्या की अधिकता मनुष्य के विभिन्न पक्षों को पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अतिसंवेदनशीलता के स्तर से प्रभावित करती है ।

जनसंख्या में रात दिन होती इस वृद्धि का मुख्य कारण जन्मदर में अधिकता व मृत्युदर में कमी को कहा जा सकता है । जनसंख्या की अधिकता से विकास के सब मार्ग अवरूद्ध हो जाते हैं और कुछ मार्ग तो लुप्त भी हो जाते हैं । जनसंख्या अधिकता विकास के कार्यो में बाधा डालती है तथा मानव जीवन के सभी पक्षों पर अपना दुष्प्रभाव डालती है ।

मात्र दो सौ वर्षो में विश्व की जनसंख्या 2.75 करोड़ से बढ़कर 500 करोड़ के लगभग हो गयी है । इस प्रकार विश्व की जनसंख्या प्रतिवर्ष 2.5 प्रतिशत बढ़ रही है तथा

पिछले पाँच दशकों में यह संख्या दुगनी हो गई है । यदि इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि होती रही तो सन् 2000 तक विश्व की जनसंख्या 600 करोड़ से 650 करोड़ तक हो सकती है । निर्धन देशों की जनसंख्या वृद्धि धनी देशों की जनसंख्या वृद्धि से भिन्न है । धनी देशों में वृद्धि दर निर्धन देशों की वृद्धि दर से कम है । स्केन्ड्रीनाविया में जन्म दर एवं जीवन दर 75 वर्ष है । यू0एस0ए0 में 73 वर्ष एवं भारत में 54 वर्ष है ।

जनसंख्या वृद्धि की समस्या एक ऐसी जटिल समस्या है जो दिनों दिन अति उग्र रूप धारण करती जा रही है । महानगरों को देखकर तो लगता है कि पृथ्वी पर मानव के अलावा अन्य जीवधारी ही नहीं रहता । जंगलों की समाप्ति तथा नई बस्तियों के निर्माण को देखकर हृदय काँपता है कि जनसंख्या वृद्धि की परिणति क्या होगी ? जनाधिक्य की समस्या के निदान हेतु सभी पक्षों से विचार करना आवश्यक है । शिक्षा का इन पक्षों में प्रथम स्थान है । अब यह बात स्पष्ट हो गयी है कि जनसंख्या नियोजन कार्यक्रम एवं सीमित परिवार के द्वारा जनाधिक्य को कम करने में शिक्षण संस्थाओं से अच्छी भूमिका और कोई संस्था नहीं निभा सकती है । बालक, बालिकाओं, शिक्षकों अभिभावकों के हृदय में सीमित परिवार की भावना को जितना विकसित पुष्पित, पल्लवित, शिक्षण संस्थायें कर सकती हैं उतना अन्य संस्थायें नहीं । शिक्षण संस्थायें ही ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा छात्रों को जनसंख्या शिक्षा प्रदान की जा सकती है । शिक्षण संस्थायें अध्यापकों एवं छात्रों में जनसंख्या कम करने की चेतना जाग्रत करने में महत्वपूर्ण, प्रभावशाली अभिकर्ता हो सकती हैं ।

भारत में जनसंख्या वृद्धि की दर विश्व के अन्य निर्धन देशों की तुलना में सर्वाधिक है । यह वृद्धि दर तमाम उपायों के बाद भी लगभग 2.14 प्रतिशत है ।

भारत की जनसंख्या इस सदी के अन्त तक 600 मिलियन को पार कर जायेगी । 1976 में संसद के समक्ष प्रस्तुत राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के अनुसार 1984 तक ही जनसंख्या में वार्षिक वृद्धि दर को 1.4 प्रतिशत लाना था, जो 1995 तक भी सम्भव नहीं हुआ है । भारतीय परिदृश्य में 1996 तक हमारी जनसंख्या 92.5 मिलियन हो जायेगी । आठवीं योजना के दौरान 35 विलियन लोग बेरोजगार हो जायेंगे । आज विश्व में हर छटाँ व्यक्ति भारतीय है ।

विश्व बैंक द्वारा जारी आँकड़ों के अनुसार भारत की जनसंख्या 1993 में 90 करोड़ 5 लाख 43 हजार हो गई है । मिस्र की राजधानी काहिरा में 5 सितम्बर से लेकर 13 सितम्बर तक संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में 'जनसंख्या नियंत्रण एवं विकास सम्मेलन 1994 हुआ । इसमें विश्व के 180 देशों के 15000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था ।

। इससे पहले भी 1974 में बुखारेस्ट में तथा 1984 में मैक्सिको में जनसंख्या नियंत्रण सम्मेलन हुए हैं । हमारे लिए सबसे विचारणीय प्रश्न यह है कि काहिरा सम्मेलन 1994 में जिन विषयों को लेकर बहस हुई उनमें से अधिकांश समस्यायें भारत से ही जुड़ी हैं । नये आँकड़ों के अनुसार भारत 2040 में विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला राष्ट्र होगा । जिसकी अनुमानतः जनसंख्या 150 करोड़ होगी ।

भारत में जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर निम्न सारिणी, से परिलक्षित होती है -

सारिणी संख्या 1.1

भारत की जनसंख्या (1901-1993)

वर्ष	जनसंख्या	कुल	दशकीय वृद्धि प्रतिशतता	औसत वार्षिक वृद्धि पर प्रतिशत	1901 के पश्चात वृद्धि दर प्रतिशत
1901	238,396,327	-			
1911	252,093,390	13,697,063	5.75	0.56	5.75
1921	251,321,213	772,177	0.31	0.03	5.42
1931	278,977,238	27,656,025	11.00	1.04	17.02
1941	318,660,580	39,683,342	14.22	1.33	33.67
1951	361,088,090	42,420,485	13 31	1.25	51.47
1961	439,234,771	77,682,873	21.51	1.96	84.25
1971	584,159,652	108,924,881	24.80	2.20	129.94
1981	683,329,097	135,169,445	24.66	2.22	186.64
1991	843,930,861	160,601,764	23.50	2.11	254.00

स्त्रोत :- आशीष बोरा, 1991

भारत में गंदी बस्तियों की जनसंख्या लाखों में

हाराष्ट्र 66·7

तर प्रदेश 58·5

श्चिम बंगाल 46·2

न्ध्र प्रदेश 42·9

मिलनाडु 35·6

बिहार 35·3

मध्य प्रदेश 27·7

गुजरात 25·7

दिल्ली 24·2

कर्नाटक 23·6

राजस्थान 19·6

केरल 13·6

पंजाब 13·2

उड़ीसा 8·4

अन्य राज्य 25·4
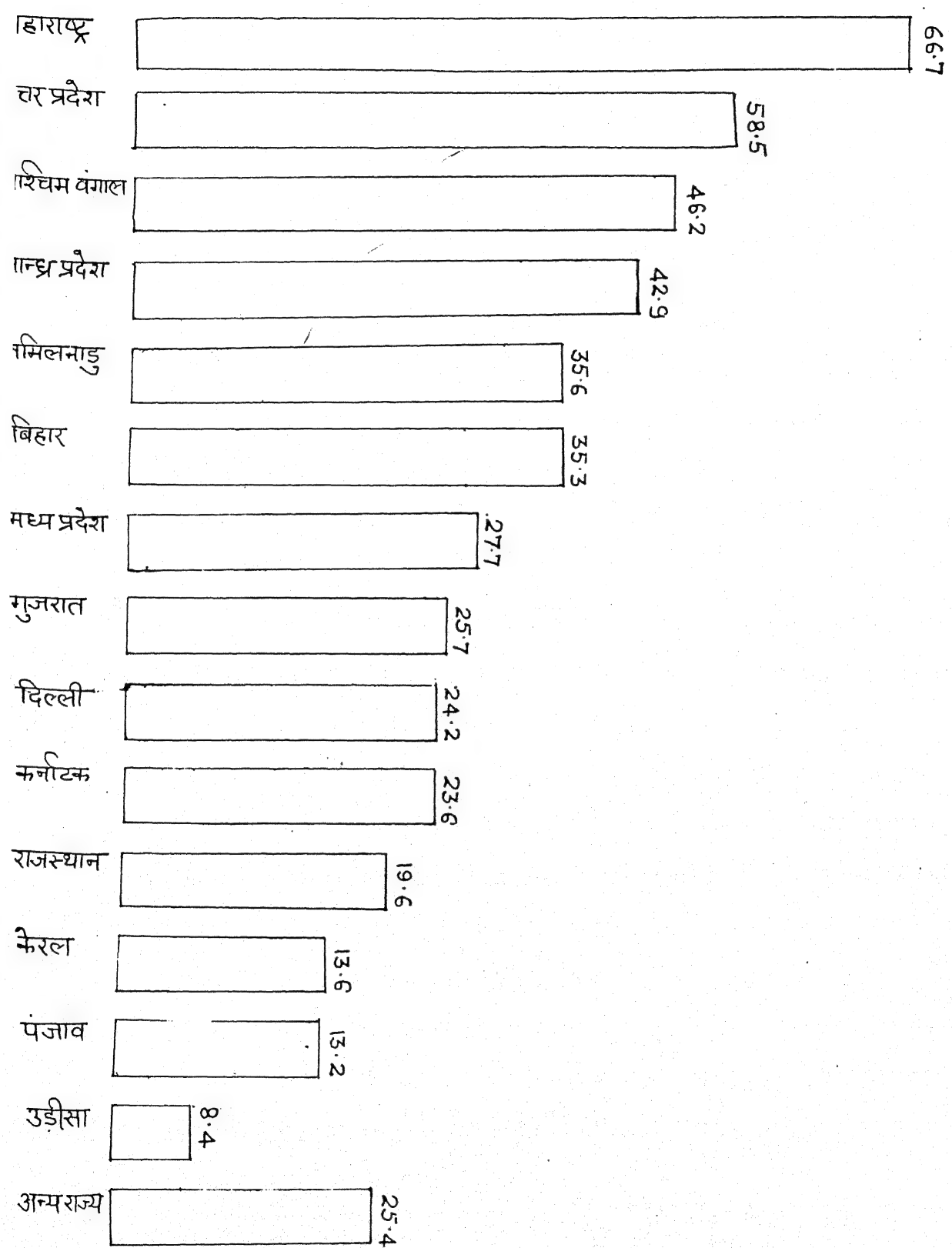
स्रोत : शहरी विकास मंत्रालय से ।

भारतवर्ष के सामने जनसंख्या वृद्धि विषय अतिविचारणीय व सर्वाधिक चिन्तनीय विषयों में है । निर्धन और असुदृढ़ देशों में जहाँ निरर्थकता नीचे की ओर गिर रही है वहाँ भारत में यह निरन्तर वृद्धि पर है । सारिणी प्रथम की (1) से भी यही विदित होता है ।

भौगोलिक दृष्टि से भारत का विस्तार क्षेत्र विश्व का केवल 2.14 प्रतिशत है । तथापि ये विश्व की कुल जनसंख्या का 15 प्रतिशत अथवा निर्धन देशों की जनसंख्या का 21 प्रतिशत भाग स्वयं में समेटे है । सारिणी प्रथम की (एक) से विदित है कि जनसंख्या वृद्धि दर एक करोड़ प्रतिवर्ष से अधिक हो रही है ।

इस जनसंख्या वृद्धि से हमारे सभी मूल्य प्रभावित हो रहे हैं । सबसे विकट समस्या आवास व प्रदूषण की हो रही है । भारत में गंदी बस्तियों की बाढ़ आ गई है । भारत के शहरी विकास मंत्रालय की एक रिपोर्ट के आधार पर 21.5% भारत की आबादी गन्दी बस्तियों में रह रही हैं । गंदी बस्तियों का एक चौथाई भाग महाराष्ट्र तथा उत्तर प्रदेश में है ।

गंदी बस्तियों की राज्यवार जनसंख्या प्रदर्शित रेखाचित्र से देखी जा सकती है ।

यदि हम जनसंख्या वृद्धि पर विचार करें तो हम पाते हैं कि प्रतिवर्ष मात्र 2 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि की दर से भी 35 वर्षो में जनसंख्या के दुगने होने की सम्भावना रहती है । अब जनसंख्या वृद्धि दर इसलिए भी अधिक है क्योंकि प्लेग और हैजा जैसी छूत की बीमारियों पर नियंत्रण कर लिया गया है तथा दैवीय प्रकोपों जैसे बाढ़, सूखा आदि पर भी नियंत्रण काफी हद तक पा लिया गया है । इससे जन की हानि बहुत कम होने लगी है । हमारे पास इन 35 वर्षो के बाद भी आवास, भोजन, वस्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि समस्याओं के समाधान का क्या कोई साधन है ? यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जो सत्य को अपने में समेटे है । अनुमानतः उस समय की जनसंख्या के लिए 11850 टन भोजन, 1,80,000 मीटर कपड़ा, 33,910 मकान, 1,26,500 स्कूल एवं 27,25,000 शिक्षकों की प्रतिवर्ष आवश्यकता होगी । इस सम्पूर्ण जनसंख्या की इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति लगभग 1000 रूपये की आवश्यकता होगी । इस कार्य के लिए भारत सरकार को 1400 करोड़ रूपये से भी अधिक की अतिरिक्त धनराशि का भार प्रतिवर्ष वहन करना पड़ेगा ।

यदि हम अपने देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर करना चाहते हैं तो हमें सर्वप्रथम जनसंख्या वृद्धि की समस्या का निवारण करना होगा । यदि हम इस समस्या का समाधान नही कर पाते हैं, तो निरक्षरता, बाल मृत्यु, रोग, प्रदूषण, बेरोजगारी, नगरीकरण, वर्ष संघर्ष आदि की समस्यायें और अधिक विस्तार लेकर हमारे अस्तित्व को ही झकझोर देंगी ।

उपरोक्त सभी समस्याओं का निदान जनसंख्या शिक्षा है । इससे व्यस्क एवं प्रबुद्ध व्यक्तियों को पुर्नउत्पादकता क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त होगा तथा अल्पायु नवयुवकों की जीवन सम्बन्धी समस्यायें भी जनसंख्या शिक्षा से दूर की जा सकेंगी । जो पुर्नउत्पादकता के क्षेत्र में प्रवेश कर रही हैं । 1983 में सिन्हा ने अपनी रिपोर्ट में कहा था -- जनसंख्या शिक्षा तथा जनसंख्या नियोजन को उच्चतर माध्यमिक कक्षा के स्नातकोत्तर पाठयक्रम में सामाजिक शिक्षा के समान स्थान मिलना चाहिए । गुप्ता (1984) जनसंख्या नियोजन शिक्षा में, जनसंख्या गतिविज्ञान, पारिवारिक जीवन की शिक्षा, मानव द्वारा भोजन उत्पादन की शिक्षा, प्रसुति एवं शिशुपालन आदि की शिक्षा होनी चाहिए व्यक्ति यह महसूस करने को बाध्य हो जायेगें कि ज्ञान एवं बुद्धि अव्यक्त है तथा सभी सुविधायें सीमित हैं । पाई (1983) का सुझाव था कि छात्रों, अभिभावकों तथा स्कूल व कालेजों के शिक्षकों को जनसंख्या समस्याओं का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये । वर्तमान युग में टेलीविजन, वीडियो, समाचार पत्र आदि अनेक ऐसे माध्यम हैं जो यौन शिक्षा का संदेश देते है । इन पर नियंत्रण विशेषकर युवाओं के लिए आवश्यक है । इसके लिए एक व्यक्ति या एक पखबाड़े का एक सीमित कार्यक्रम ही पर्याप्त नही है, वरन् नियमित प्रेस, रेडियो, टेलीविजन आदि के कार्यक्रम लाभकारी एवं प्रभावकारी सिद्ध होगें । वर्तमान में जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित काफी अध्ययन किये जा रहे हैं ।

वास्तव में वर्तमान परिस्थितियों को देखकर तथा गम्भीरता और गहनता से चिन्तन मनन करने पर एक ही विचार सुस्पष्ट और परिपक्व होता है कि जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित अध्ययन अति आवश्यक है । क्योंकि जनसंख्या वृद्धि केवल पारिवारिक, सामाजिक स्तर पर ही नही वरन् राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना दुष्प्रभाव डालती हैं ।

जनसंख्या नियंत्रण एवं परिवार कल्याण :

जिस युग से हम गुजर चुके हैं उसमें मानव के लक्ष्य - रोग - विरोध, जन्म -

नियंत्रण, आत्मदमन, मृत्यु विरोध आदि थे तथा जिस युग में हमें प्रवेश करना है उसके लक्ष्य रहेंगे - संतति निगमन, आत्म नियमन, जीवन समर्थन, आत्माभिव्यक्ति, परस्परावलम्बन, स्वास्थ्य सम्वर्धन एवं राष्ट्रीय अभिरंजन आदि ।

'बाइलोजी ऑफ पोपुलेशन ग्रोथ' अमरीकी अर्थशास्त्री रेमण्ड पर्ल ने इस पुस्तक में बुद्धिवादी वक्र सिद्धान्त की स्थापना की । अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि फल भक्षिकाओं की संख्या निरन्तर बढ़ती रहती है । वह पहले तीव्र गति से बढ़ती है तथा शनैः शनैः गिरने लगती है । इसके विपरीत लेमिंग नामक चूहे के आकार के एक जीव की संख्या तीन चार वर्ष बढ़ने के बाद अत्यधिक बढ़ जाने पर समुद्र में कूद कर आत्म हत्या कर लेते हैं । प्रश्न यह उठता है कि मानव को फल भक्षिकाओं की तरह माने या लेमिंग की तरह । कुछ विद्वान मानव को लेमिंग की तरह मानते हैं । अमरीकी वैज्ञानिक डा0 बोनास सात्व मानव को फल भक्षिकाओं से अधिक श्रेष्ठ मानते हैं ।

डॉ0 सात्व तथा उनके कुछ साथी विचारकों की यह धारणा है कि हमारे समक्ष बहुत सी ऐसी समस्यायें विकराल रूप धारण किये खड़ी हैं, जिन्हें हम हल नहीं कर पा रहे हैं । इसका कारण यह है कि हम इन विकराल समस्याओं को पुराने उपायों से ही हल करना चाहते हैं । परन्तु इस नये युग में नई मान्यताओं तथा परम्पराओं के बीच हमें नवीन उपाय एवं नवीन तकनीकियों के सृजन करने होगें । हमें विरोधात्मक एवं नकारात्मक उपायों के स्थान पर स्वीकारात्मक एवं सकारात्मक उपाय अपनाने होंगे । नये युग के इस वातावरण में जनमानस के हृदय में मृत्यु विरोध के स्थान पर जन्म समर्थन एवं स्वास्थ्य सम्बर्धन, परम्परावलम्बन - विचारधारा का अवलम्बन किया जाये । इसलिए इस समय परिवार नियोजन के स्थान पर परिवार कल्याण की विचारधारा अधिक समयानुकूल है ।

परिवार कल्याण एवं जनसंख्या शिक्षा :

1968 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा की गई एक घोषणा के अनुसार 'परिवार कल्याण के बारे में शिक्षा के अवसर प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का मूल अधिकार है ।

मनुष्य को अपना यह अधिकार प्राप्त हो इसके लिए जहाँ एक ओर परिवार कल्याण अभियान के उपायों को पूर्णतः नकारा नहीं जा सकता वही दूसरी ओर इससे पूर्णतः

आश्वस्त भी नहीं हुआ जा सकता । अतः इसके लिए 1970 के दशक में यह सोचा जाने लगा कि जनसंख्या शिक्षा को विद्यालयों में एक अलग विषय बनाया जाये, ताकि भावी पीढ़ी अवधिवत तथा मनोवैज्ञानिक ज्ञान पाकर जनसंख्या शिक्षा के प्रति उचित अभिवृत्ति का निर्माण कर सकें । यह तो अक्षरतः सत्य है कि राष्ट्र की प्रगति एवं राष्ट्रीय चरित्र का विकास शिक्षा से ही हो सकता है । शिक्षित समाज में ही परिवार कल्याण के कार्यक्रम एवं जनसंख्या शिक्षा को प्रभावी ढंग से प्रतिष्ठित किया जा सकता है । आज शिक्षा सम्बन्धी कार्यो में समाज का एक बड़ा भाग व्याप्त है । इसलिए यह तथ्य स्वयं में काफी महत्व रखता है । भारत में इस विचार धारा का शिलान्यास अगस्त 1969 में बम्बई में आयोजित की गई जनसंख्या शिक्षा संगोष्ठी के साथ हुआ । इस संगोष्ठी को अनुसंधानों के आधार पर जनसंख्या शिक्षा के राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में मान लिया गया । 1968 में भारत से पूर्व जापान में जनसंख्या शिक्षा को राष्ट्रीय कार्यक्रम घोषित किया गया था । महानगरों की विस्फोटक जनसंख्या वृद्धि ने जनसंख्या शिक्षा एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम को सुदृढ़ सम्बल प्रदान किया तथा इसका सघन रूप में विस्तार किया गया ।

ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक एवं जनसंख्या शिक्षा :

शिक्षकों की शक्ति के प्रभाव की अभिव्यक्ति, उनके शिक्षण का स्तर तथा विद्यार्थियों की अभिवृतित का आपस में घनिष्ट सम्बन्ध है । यदि शिक्षक की अभिवृत्ति जनसंख्या शिक्षा को समर्थन देती है तो इस बात की अधिक सम्भावना है कि छात्र भी जनसंख्या शिक्षा में अपनी सार्थक अभिवृत्ति प्रकट करने लगें ।

जनसंख्या शिक्षा के प्रचार व प्रसार में शिक्षकों की अपनी अति महत्वपूर्ण भूमिका है चाहे वह शिक्षक ग्रामीण क्षेत्र के हों, या शहरी, शासकीय हों या अर्द्धशासकीय, पुरूष शिक्षक हों अथवा महिला शिक्षक । यदि शिक्षक चाहें तो वह शिक्षण संस्थाओं के समान व्यक्तिगत रूप से भी जनसंख्या शिक्षा का ज्ञान देकर अपने एवं अन्य लोगों के जनसंख्या शिक्षा के ज्ञान का विकास कर सकते हैं । अतः इसके लिए यह अध्ययन आवश्यक है ।

आज के विद्यार्थी ही कल के ऐसे नागरिक बनेंगे जो जनसंख्या शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक होगें । इस अध्ययन का परिणाम यह होगा कि इससे जनसंख्या शिक्षा के पाठयक्रम एवं पाठय विषय सम्बन्धी - अन्य कार्यक्रमों के विकास हेतु एक निश्चित दिशा प्राप्त होगी। यदि

शिक्षकों की अभिवृत्ति इस अध्ययन के समर्थन में नही होती है तो सरकार एवं स्वैच्छिक संस्थानों को अपना ध्यान इस ओर आकृर्षित करना होगा तथा ऐसे संसाधन जुटाने होंगे जिनसे जनसाधारण का ज्ञान इस क्षेत्र में बढ़ सकें एवं उसके प्रति अपनी समर्थक अभिवृत्ति बना सकें ।

बहुत से विद्वानो जिनमें गुप्ता (1970), अग्रवाल (1976), सिंह (1981), दास (1986) आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं, के अध्ययनों से यह तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आता है कि विद्यालय तथा कालिजों के पाठयक्रम में जनसंख्या शिक्षा को एक एकीभूत विषय के रूप में रखा जाये । जनसंख्या शिक्षा के प्रति यदि शिक्षक - शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सही नहीं है तो वह छात्रों को जनसंख्या शिक्षा का उचित ज्ञान कभी नही दे सकते । अतः इसके लिये ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति को जानना अति आवश्यक है ।

जनसंख्या शिक्षा में पुरूष शिक्षकों के साथ-साथ महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति को भी कम करके नहीं आँका जा सकता है । क्योंकि भारत की नारी हर क्षेत्र में महान है, फिर चाहे वह माता के रूप में हो पत्नी के रूप में हो, बहन के रूप में हो अथवा प्रशिक्षिका या शिक्षिका के रूप में । शिक्षिका के रूप में तो वह उच्चकोटि की रचनाकार ही है । वह अकेली ही सामाजिक अथवा राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय जीवन की रचना करती है तथा भारतीय परिवारों एवं विद्यालयों में रचनात्मक परिवर्तन कर सकती है । इस संदर्भ में साहित्यकार डॉ0 राधाकृष्णन ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा था - 'नारी की शिक्षा के बिना समाज को शिक्षित नही किया जा सकता ।' यदि पुरूषों के समान नारी को भी शिक्षा प्रदान की जाये तो हमारी भावी पीढ़ी लाभान्वित होगी ।

'पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी इस संदर्भ में कहा था -- 'एक लड़के का शिक्षित होना, केवल एक व्यक्ति का शिक्षित होना है किन्तु एक बालिका का शिक्षित होना एक पूरे परिवार का शिक्षित होना है ।'

वास्तव में पुरूष अध्यापकों के साथ-2 महिला अध्यापिकाओं में भी जनसंख्या शिक्षा के प्रति अधिक रूझान की आवश्यकता है । शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके लिए जनसंख्या शिक्षा का क्या स्थान व महत्व है यह जानने के लिए शोधकर्ता ने अध्ययन करने का निश्चय किया है ।

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा की तैयारी एवं उसके प्रति उनकी स्वीकारोक्ति के सम्बन्ध में हेरीयरी (1974), मेहता (1975) तथा गुप्ता (1980) के अध्ययन हुंए हैं । राय (1969), जैन (1970), टेलर (1971), लूला (1974) सोलकर (1975), मंजुल (1977), सिंह (1987) तथा कई अन्य शिक्षाविदों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक के व्यक्तित्व, महत्व एवं उनकी अभिवृत्ति का छात्रों के जीवन स्तर पर काफी प्रभाव पड़ता है । आदर्शवादी शिक्षा प्रणाली इसका सार्थक उदाहरण है । इन शिक्षाविदों ने जनसंख्या शिक्षा जागृति के सम्बन्ध में भी अध्ययन किये हैं । शर्मा (1966), पोहन (1967), जैन (1971), पटेल (1973), राव (1984) ने छात्रों के काम ज्ञान एवं काम शिक्षा के सम्बन्ध में अध्ययन किये हैं । शिक्षकों एवं छात्रों के परिवार नियोजन के सम्बन्ध में उनकी अभिवृत्ति एवं प्रभाव का अध्ययन गौतम (1975), रहमान (1979), गुप्ता (1987) ने किया । इनमें से अधिकांश अध्ययन पुरूष शिक्षक वर्ग एवं पुरूष छात्र वर्ग पर हुए हैं । आज सबसे प्रबल स्तर पर आवश्यकता इस बात की है कि जनसंख्या शिक्षा की समस्या को उसके निश्चित रूप में सभी संभावनाओं पर विचार करके अध्ययन किया जाये । अतः शोधकर्ता ने यह निश्चय किया कि जनसंख्या शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिए विस्तृत अध्ययन किया जाये । अतः शोधकर्ता ने 'ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन जनसंख्या शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में' शीर्षक पर अपना अध्ययन किया है ।

जनसंख्या शिक्षा, शिक्षा के प्रति एक ऐसी सोच है जो जनसंख्या वृद्धि को प्रतिबन्धित करने के लिए संजीवनी का काम करेगी । इस ज्ञान के माध्यम से पुरातन मूल्यों, परम्पराओं, प्रथाओं का भारतवर्ष की परिस्थिति के साथ समायोजन होगा तथा जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न दुष्परिणामों की गहन जानकारी एवं निदान भी सम्भव होगा ।

1. जनसंख्या शिक्षा की परिभाषा :

जनसंख्या शिक्षा के विषय में विभिन्न शिक्षाविदों एवं संस्थाओं ने कुछ परिभाषायें दी है । उनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं - वी0के0आर0वी0 राव (1969) 'जनसंख्या शिक्षा को मानव विकास का संसाधन मानते हुए कहते हैं, 'जनसंख्या शिक्षा को मात्र संख्यात्मक संवृत्ति या संख्याओं पर आधारित निबन्ध नही माना जाना चाहिये । जनसंख्या शिक्षा जनसंख्या की एक विशेषता है

जो कि वृद्धि के एक घटक एवं वृद्धि के लक्ष्य से सर्वाधिक सम्बन्धित है । संख्याओं को उसके ह्रासात्मक एवं प्रगत्यात्मक रूप में किया जाना चाहिये । जनसंख्या शिक्षा मानव संसाधन के विकास का कार्यक्रम है ।' उनकी मान्यता है कि जनसंख्या शिक्षा न केवल जनसंख्या जागृति से ही सम्बन्धित है वरन् उन मूल्यों एवं अभिवृत्तियों से सम्बन्धित है, जिनसे गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनों ही सम्पर्कित होते हैं ।

स्टेन्चर (1971) ये जनसंख्या शिक्षा को परिस्थितिकीय उपगम मानते हैं तथा जीव एवं पर्यावरण के आपसी सन्मूलन पर बल देते हुए कहते हैं, 'जनसंख्या शिक्षा का तात्पर्य जनसंख्या पर्यावरणीय शिक्षा से है । जनसंख्या को पर्यावरण से अलग नही किया जा सकता ।'

यूनेस्को की बैंकाक संगोष्ठी (1971) द्वारा जनसंख्या शिक्षा के सम्बन्ध में कहा गया है - 'जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है, जिसके माध्यम से परिवार राष्ट्र तथा विश्व की जनसंख्या स्थिति का अध्ययन करने का अवसर इस उद्देश्य से प्राप्त होता है कि छात्रों में तर्कसंगत एवं उत्तरदायित्व पूर्ण अभिवृत्ति एवं व्यवहार का विकास हो सके ।'

यूनेस्को (1971) में जनसंख्या शिक्षा को और स्पष्ट करते हुए परिभाषित किया है -

'जनसंख्या शिक्षा वास्तव में एक शैक्षिक योजना है जो परिवार, देश, राष्ट्र व विश्व की जनसंख्या परिस्थितियों के अध्ययन में सहायता प्रदान करती है । इसका मूल उद्देश्य विकास में राष्ट्र की परिस्थितियों के प्रति विद्यार्थियों के तार्किक दृष्टिकोण और उत्तरदायी अभिवृत्तियों को विकसित करना है ।'

सन् (1971) में ही जनसंख्या शिक्षा को परिभाषित करते हुए गोपाल राव ने कहा था - 'जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है, जो कि जनसंख्या सम्वृद्धि के सम्बन्ध में अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे छात्र जनसंख्या वृद्धि के कारण बढ़ती हुई समस्याओं के बारे में विवेकपूर्ण और तर्कसंगत निर्णय लेने में समर्थ हो सकें ।

(1971) में काम शिक्षा एवं पारिवारिक जीवन की शिक्षा दोनों को जनसंख्या शिक्षा में सम्मिलित करते हुए बुलर्सन महोदय कहते हैं, 'जनसंख्या शिक्षा जनसंख्या, काम और

परिवार के प्रति अभिवृत्तियों एवं ज्ञान का अन्वेषण है । इसमें जनसंख्या जागृति, पारिवारिक जीवन की शिक्षा, प्रजनन की शिक्षा एवं आधारभूत मूल्य सम्मिलित हैं ।'

साइमन्स (1971), 'जनसंख्या शिक्षा जनसंख्या की समस्या के संदर्भ में ज्ञान प्रदान करने वाला एक आशाजनक साधन तो है ही, साथ ही यह भावी पीढ़ी की अभिवृत्ति में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन भी लाता है ।'

1971 में विमैडरमैन ने जनसंख्या शिक्षा के नैतिक एवं चारित्रिक उद्देश्यों पर बल दिया है । वह कहते हैं 'जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य जनसंख्या वृद्धि एवं राष्ट्रीय विकास के बीच अल्य एवं दीर्घकालिक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता एवं अवरोध का विकास करना है । इसलिए जनसंख्या जागृति के कार्यक्रम में जनसंख्या गत्यात्मकता पारिवारिक जीवन एवं मानव प्रजनन सम्बन्धी वे सभी तथ्य प्रदान किये जायें जिसकी बच्चों को आवश्यकता होगी । ये कार्यक्रम यह भी दर्शायें, कि समाज में प्रत्येक सदस्य के कार्य दूसरों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं । ये जनसंख्या शिक्षा के नैतिक एवं आचारात्मक लक्ष्य हैं, जो कि तुलनात्मक एवं अभिवृत्यात्मक लक्ष्यों के अतिरिक्त हैं ।'

'मंजुल (1974) तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या एवं प्राकृतिक संसाधनों के मध्य पारस्परिक क्रिया का व्यैक्तिगत एवं सामुदायिक स्वास्थ्य एवं राष्ट्रीय समृद्धि तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव से सम्बन्ध प्रदर्शित करती हुई कहती हैं, 'जनसंख्या वृद्धि का प्राकृतिक स्रोतों, वैयक्तिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य राष्ट्रीय समृद्धि एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के मध्य अन्तरक्रिया का अध्ययन जनसंख्या शिक्षा है ।'

1974 में लूला ने जनसंख्या शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है - 'जनसंख्या शिक्षा वह कार्यक्रम हैं, जिसके माध्यम से विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्रों में जनसंख्या समस्या के सम्बन्ध में आधारभूत जागृति तथा छोटे परिवार के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास किया जाता है ।'

साइमन्स (1971) ने ज्ञान पक्ष के साथ-2 भाव पक्ष पर भी बल देते हुए कहा है - 'जनसंख्या शिक्षा एक ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य अनियोजित जनसंख्या वृद्धि की समस्या तक पहुँचने के लिये ज्ञानात्मक उपागम का विकास करना है ।

उपरोक्त सभी परिभाषाओं को परिलक्षित करने से स्पष्ट होता है कि परिभाषाओं में अनेक अध्ययन क्षेत्र सम्मिलित किये गये हैं, जैसे जनसंख्या जागृति एवं अवरोधन, जन्म निरोधकों की शिक्षा, काम शिक्षा, मानव प्रजनन की शिक्षा, परिवार नियोजन, स्वास्थकीय शिक्षा, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की शिक्षा, पर्यावरणीय शिक्षा आदि ।

अनेक शिक्षाविदों, शैक्षिक संस्थानों द्वारा जनसंख्या शिक्षा को परिभाषित किया है । इन परिभाषाओं में बुलर्सन महोदय की परिभाषा उद्देश्यपूर्णता, स्पष्टता, वैज्ञानिक आधार, व्यापकता एवं पूर्णता की दृष्टि से अधिक उपयुक्त मानी गई है ।

प्रस्तुत अध्ययन में पाई (1983) के कहे शब्दों के अनुसार यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि जनसंख्या शिक्षा में पारिवारिक जीवन की शिक्षा, मानव द्वारा भोजन उत्पादन की शिक्षा, गति विज्ञान, प्रसूति एवं शिशु पालन की शिक्षा, चेतना एवं राष्ट्रीय उत्तरदायित्व आदि की शिक्षायें सम्मिलित हैं ।

जनसंख्या शिक्षा का स्वरूप :

जनसंख्या शिक्षा के स्वरूप को विश्लेषित करने पर जनसंख्या शिक्षा के स्वरूप का सम्बन्ध, एक ऐसे कार्यक्रम से है जो विद्यार्थियों में चेतना एवं उत्तरदायित्व की अभिवृत्ति एवं व्यवहार का विकास करने के उददेश्य से उन्हें पारिवारिक संगठन, राष्ट्र एवं विश्व की परिस्थितियों के लिए तैयार करती है ।

(1969) में बम्बई में आयोजित नेशनल सेमीनार ने पारिवारिक जीवन की शिक्षा एवं जनसंख्या शिक्षा के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए उसके उद्देश्यों के सम्बन्ध में कहा था, कि उनका उद्देश्य विद्यार्थियों को यह समझाने योग्य बनाना है कि परिवार का आकार नियन्त्रित हो सकता है तथा इसमें ही भलाई है । जनसंख्या की सीमा राष्ट्र के उच्चस्तरीय जीवन के विकास को सुलभ कर सकती है तथा परिवार के आकार को सीमित व नियंत्रित करने में सहयोग दे सकती है ।

यह भी आवश्यक है कि विद्यार्थी परिवार की अच्छाई एवं स्वास्थ्य की रक्षा के सम्बन्ध में सही मार्ग को पसन्द करें । पारिवारिक जीवन की आर्थिक स्थिरता को निश्चित करें

एवं आने वाली नई संतति की भलाई के लिए निश्चिंत रहें ।

यह तथ्य विशाल पेड़ के समान फैला है तथा जनसंख्या शिक्षा के अनेक पहलुओं को अपने में समाहित किये हैं ।

अनेकों सम्मेलनों, कार्यगोष्ठियों, अनुसंधानों, साहित्यिक अध्ययन एवं उद्‌भट विद्वानों के विचारों के आधार पर जनसंख्या के कुछ रूप सामने आते हैं । प्रथम तो यही परिलक्षित होता है कि अधिकांश शिक्षाविद पारिवारिक जीवन की शिक्षा को जनसंख्या शिक्षा का मुख्य घटक मानते हैं ।

दूसरे जनसंख्या शिक्षा परिवार नियोजन की शिक्षा नहीं है । वरन उत्तरदायित्व जनकत्व की पूर्णरूपेण तैयारी की शिक्षा है । परिवार नियोजन केवल गर्भ निरोध से सम्बन्धित हैं । अतः परिवार नियोजन की तकनीकी को एक आयु विशेष के बाद ही जनसंख्या शिक्षा के पाठ्‌यक्रम में सम्मिलित किया जा सकता है ।

जनसंख्या शिक्षा द्वारा काम से सम्बन्धित अनुचित भय, शर्म, अज्ञानता, भ्रामक धारणा, निषिद्धताओं मनोग्रन्थियों आदि पर विजय पाने के लिये छात्रों को सहयोग प्रदान किया जाना आवश्यक है ।

स्वास्थय एवं परिवार के आकार का आपस में घनिष्ट सम्बन्ध है । ये परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं । अधिकांश शिक्षाविद जनसंख्या शिक्षा से पारिवारिक जीवन की शिक्षा की अभिव्यक्ति करते हैं ।

कुछ शिक्षाविद काम शिक्षा को जनसंख्या शिक्षा के पाठयक्रम में सम्मिलित करने के तथ्य को स्वीकार करते हैं तथा कुछ जनसंख्या शिक्षा के पाठ्‌यक्रम में सम्मिलित करने का विरोध करते हैं । बहुत सी गोष्ठियों एवं परिसम्मेलनों में जनसंख्या शिक्षा को काम शिक्षा के बिना अधूरा माना गया है ।

जनसंख्या शिक्षा का उद्‌देश्य यह है कि वह बच्चों के हृदय में अपने माता पिता एवं साथियों के प्रति घृणा, द्वेष, प्रतिद्वन्द्विता, नैराश्य, भग्नाशा, रोष एवं विकृत मानसिकता का भाव न पैदा होने दें । साथ ही साथ बच्चों के मन में भविष्य सापेक्षता, प्रत्याशा का निर्माण करना जनसंख्या शिक्षा का कार्य है ।

अभिवृत्ति :

प्रत्येक समूह चाहे वह सभ्यों का हो या असभ्यों का, मनुष्य का हो या पशुओं का, सुसंस्कृत लोगों का हो या असंस्कृत लोगों का, अपने सदस्यों पर चेतन या अवचेतन रूप से प्रभाव डालता है । इन प्रभावों के कारण व्यक्ति एक विशेष प्रकार के दूसरे व्यक्ति, परिस्थिति या वातावरण के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने लगता है ।

इस प्रकार व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति, समूह अथवा परिस्थितियों के सम्बंन्ध में जो प्रतिक्रियायें होती हैं, वही उसकी अभिवृत्ति है । अर्थात् वह प्रतिक्रियायें उसकी अभिवृत्ति पर निर्भर होती है ।

2. **अभिवृत्ति की परिभाषा :**

शाब्दिक दृष्टि से अभिवृत्ति शब्द अंग्रेजी के शब्द एचीट्टयूड का हिन्दी रूप है । अंग्रेजी भाषा में इस शब्द का स्रोत लैटिन भाषा शब्द रेण्टस है जो कि उपयुक्तता, औचित्य आदि शब्दों के लिये उपयुक्त होता है ।

विभिन्न विचारकों ने अभिवृत्ति की परिभाषा विभिन्न रूपों में की है । गार्डन तथा एलपोर्ट के अनुसार - 'अभिवृत्ति एक मानसिक एवं स्नायविक नियुक्ति की तत्परता है जो अनुभवों द्वारा संगठित होती है, जो व्यक्ति के प्रत्युत्तर का निर्दिष्ट गतिगामी प्रयत्न उन सब वस्तुओं और स्थितियों के प्रति करती है, जिनसे वह सम्बन्धित हैं ।

क्रेच तथा कूचफील्ड ने अपनी परिभाषा में कहा है - 'यह एक चिरस्थायी संप्रेरणाओं, संवेगों, प्रत्यक्षीकरण एवं ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का संगठन है, जो व्यक्ति के संसारिक कुछ रूपों के सम्बन्ध में है ।

कैम्पवैल के अनुसार - 'सामाजिक अभिवृत्ति सामाजिक परिस्थितियों के प्रत्युत्तर में क्रमशीलता होती है, उससे अभिव्यक्त की जाती है ।

शैरिक -- यह एक सुलभ तथ्य का वर्णन करती है जो कि व्यक्ति से व्यक्ति में समाजीकरण किया हुआ है ।

अभिवृत्ति की अवधारणा का विकास अमेरिका में हुआ । एलफोर्ट महोदय ने इसके सम्बन्ध में कहा है, 'सम्भवतः यह सबसे स्पष्ट व आवश्यक अवधारण है जो कि वर्तमान समय के अमरीकी सामाजिक मनोविज्ञान में पाई जाती है ।'

फ्युमन ने अभिवृत्ति को परिभाषित करते हुए कहा है -- 'यह एक पारिभाषित व्यवहार का पारिभाषित स्थिति में सम्भवतः होने की प्रकृति है ।'

बोगाडर्स के अनुसार - 'यह एक कार्य करने की प्रकृति है जो कि किन्हीं वातावरणीय तत्वों की और या उसके विरूद्ध होती है, जिसके कारण यह एक सकारात्मक मूल्य की हो जाती है ।' स्कोर्ड तथा वैकमैन के अनुसार - 'अभिवृत्ति व्यक्ति के पर्यावरण के किसी एक पक्ष में प्रति व्यक्ति के प्रति व्यक्ति की भाषाओं, विचारों की पूर्व प्रवृत्ति की निरन्तरता है ।

यंग के अनुसार एक अभिवृत्ति आवश्यक रूप से एक पूर्व ज्ञान रूपी प्रत्युत्तर का स्वरूप है, एक क्रिया का आरम्भ है, जो आवश्यक नही कि पूर्ण हो, यह प्रतिक्रिया की तत्परता किसी प्रकार की उत्तेजनात्मक स्थिति को सम्मिलित करती है, जो या तो विशिष्ट है या सामान्य है ।'

वी0एफ0 ग्रीन कहते हैं -- 'अभिवृत्ति की अवधारणा में एक क्रमशीलता या प्रत्युत्तरों के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करना निहित है ।

थर्स्टन के अनुसार - किसी मनोविज्ञान पदार्थ के पक्ष अथवा विपक्ष में प्रभाव की मात्रा को अभिवृत्ति कहते हैं ।

उपरोक्त परिभाषाओं से अभिवृत्ति के किसी एक पक्ष पर ही प्रभाव पड़ता है । ये परिभाषायें अभिवृत्ति के सभी पक्षों को स्पर्श नहीं करती है किन्तु रेयर्स, गेज और रूमेल की यह परिभाषा सर्वाधिक कार्यकारी है कि, 'अभिवृत्ति अनुभवों द्वारा व्यवस्थित संवेगात्मक प्रवृत्ति है, जो कि सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों से किसी पदार्थ या वस्तु के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करती है ।

उपरोक्त परिभाषा अधिक व्यापक, वैज्ञानिक, स्पष्ट, सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों को निर्देशित करने वाली है । इसमें अभिवृत्ति को अनुभवों द्वारा व्यवस्थित बनाया गया है । अतः यह परिभाषा अभिवृत्ति के प्रत्येक पहलू को समान रूप से स्पष्ट करती है ।

(1976) में इरिच्सन एवं वर्टलिंग ने अभिवृत्ति के उद्देश्य से सम्बन्ध स्थापित करते हुए कहा कि - 'अभिवृत्ति को किसी उद्देश्य से सम्बन्धित सकारात्मक अथवा नकारात्मक भाव की अभिव्यक्ति से परिभाषित किया जा सकता है ।

अभिवृत्ति का स्वरूप :

उपरोक्त विद्वानों के द्वारा परिभाषित अभिवृत्ति की परिभाषाओं के आधार पर अभिवृत्ति का निम्नलिखित स्वरूप सामने आता है -

1- अभिवृत्तियाँ हमारे व्यवहार को दिशा प्रदान करती है ।

2- अभिवृत्तियाँ व्यक्तियों द्वारा समूह के सम्बन्ध में बनती है ।

3- अभिवृत्तियाँ अर्जित की जा सकती हैं तथा व्यक्ति इन्हें अपने अनुभवों द्वारा अर्जित करता है ।

4- अभिवृत्ति का परिवर्तन अस्थाई होता है तथा इसका विकास स्वतः सम्भव नहीं है ।

5- अभिवृत्तियाँ कम या अधिक मात्रा में स्थाई होती है तथा बिना किसी एक पृष्ठभूमि के अभिवृत्तियों का कोई अस्तित्व नहीं होता । बिना विचार के अभिवृत्ति नहीं बनती । विचार प्रमुख है ।

6- अभिवृत्तियाँ समूह या गुट के सदस्यों में लगभग समानता से उपस्थित रहती हैं ।

7- अभिवृत्ति परिवर्तन में बाहरी तथा आन्तरिक दोनों कारक प्रभाव डालते हैं ।

8- अभिवृत्तियाँ भाव तथा संवेगों से सम्बन्धित होती हैं तथा इनमें तीव्रता होती हैं ।

9- अभिवृत्तियाँ पर्याप्त मात्रा में संवेगात्मक तत्वों से जुड़ी होती हैं ।

10- अभिवृत्तियाँ व्यक्ति के विश्वास, विचारों, प्रतिभाओं, संवेगों से जुड़ी होती हैं ।

11- अभिवृत्ति परिवर्तन में मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और व्यवहारिक कारक समान रूप से सहयोगी है ।

अभिवृत्तियों में परिवर्तन :

अभिवृत्ति के स्वरूप में परिवर्तन भी होता रहता है । इसमें मनोवैज्ञानिक निर्धारकों के साथ-2 सांस्कृतिक एवं व्यवहारिक निर्धारक भी समान रूप से प्रभाव डालते हैं । नई अभिवृत्तियाँ पूर्व अर्जित अभिवृत्तियों के परिवंर्तन की अपेक्षा सरलता से अर्जित की जा सकती हैं । इस प्रकार हम अभिवृत्ति परिवर्तन शब्द का प्रयोग केवल आंतरिक तथा सापेक्षिक रूप से स्थाई सम्बन्धों के लिए करते हैं ।

अभिवृत्ति परिवर्तन की विधियों के सम्बन्ध में बहुत कम अनुसंधान हुए हैं । इसलिए ये विधियाँ निश्चित नही की जा सकती है ।

हरवर्ट केलमान ने अभिवृत्ति परिवर्तन को तीन प्रक्रियाओं में विभक्त किया है --

सर्वप्रथम इन प्रक्रियाओं में आज्ञापालन का प्रथम स्थान है । इसके द्वारा जो अभिवृत्ति परिवर्तन होता है उसके सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अभिवृत्ति को बहुत ही विशिष्ट कारण से अपनाया जाता है । किसी प्रतिक्रिया के प्रविष्टिकरण को प्राप्त करने के कारण अथवा बचाव के कारण ही अभिवृत्तियों में परिवर्तन लाया जाता है । इस प्रकार का अभिवृत्ति परिवर्तन अस्थाई होता है ।

अभिवृत्ति परिवर्तन में द्वितीय स्थान तादात्मीकरण की प्रक्रिया को दिया है । केलमान का मानना है कि तादात्मीकरण उस समय होता हुआ कहा जा सकता है जबकि एक व्यक्ति वह व्यवहार करता है जो कि दूसरे व्यक्ति या समूह में उद्धत किया गया है । तादात्मीकरण द्वारा जो अभिवृत्ति परिवर्तन होता है वह दूसरे के द्वारा दिये गये पुरस्कार या दण्ड पर आधारित होता है । इसलिये यह परिवर्तन स्थाई रहता है ।

अभिवृत्ति परिवर्तन की विधियों में केलमान ने आन्तरिकता द्वारा अभिवृत्ति परिवर्तन को तीसरे स्थान पर स्वीकार किया है ।

इस परिवर्तन की आन्तरिकता प्रक्रिया द्वारा जो प्रभाव उत्पन्न होता है वह ऐसा अभिवृत्ति परिवर्तन लाता है जो कि बाहरी व्यक्ति या समूह पर आधारित नहीं होता । इस विधि द्वारा अभिवृत्ति परिवर्तन स्थाई होता है । अतः यह सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है ।

हरवर्ट केलमान के अलावा कुछ अन्य शिक्षाविदों ने भी अभिवृत्ति परिवर्तन की विधियाँ निर्धारित की हैं । इनमें बाल्टोन (1933), नेटन्सन (1938), केबिन तथा रेमर्स (1941), कुर्तलेविन (1952), बटलर (1953), मरफी (1953), थर्स्टन (1983) प्रमुख हैं । इनके द्वारा किये गये अनुसंधानों में दर्शाये गये अभिवृत्ति परिवर्तन के निम्नलिखित बिन्दु है ।

प्रचार सामग्री द्वारा परिवर्तन, शैक्षिक, प्रक्रिया द्वारा परिवर्तन, चलचित्र द्वारा परिवर्तन, सूचनाओं तथा सुदृढ़ तर्क द्वारा अभिवृत्तियों में परिवर्तन इत्यादि ।

3. **अध्ययन का शीर्षक :**

जनसंख्या शिक्षा, अभिवृत्ति एवं ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के समुचित तथ्यों

का अध्ययन करके, इनके सभी तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता ने 'ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन - जनसंख्या शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में ।' नामक शीर्षक के अन्तर्गत शोध कार्य करने का लघु साहस किया है ।

4. **प्रयुक्त शब्दावली :**

प्रस्तुत परियोजना में शोधकर्ता द्वारा जिन शब्दों को शीर्षक के अन्तर्गत चुना गया है उनकी परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं -

अभिवृत्ति :

अभिवृत्ति को किसी उद्देश्य से सम्बन्धित पक्ष अथवा विपक्ष अर्थात् सकारात्मक या नकारात्मक भाव की अभिव्यक्ति से परिभाषित किया जा सकता है ।

- 'इरिचसन एवं वर्टलिंग' (1976)

जनसंख्या शिक्षा :

जनसंख्या शिक्षा एक ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम है जो छोटे अथवा बड़े, सभी के जीवन में प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित है । दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जनसंख्या जागृति, पारिवारिक जीवन की शिक्षा, मानव विकास, परिवार नियोजन, प्रजनन, बाल पोषण एवं रक्षा आदि के आधारभूत मूल्य सम्मिलित हैं ।'

- पाई (1983)

ग्रामीण व शहरी शिक्षक :

'ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों से तात्पर्य ऐसे शिक्षकों से है जो विद्यार्थियों को ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में अपने अनुभव से निर्देशन एवं दिग्दर्शन के उद्देश्य से कार्यालयी स्तर पर किसी भी ग्रामीण एवं शहरी शैक्षिक संस्था में नियुक्त हों ।

- डॉ0 वाई0के0 गुप्ता

5. **अध्ययन के उद्देश्य :**

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है -

1- ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का मापन करना ।

2- ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

3- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

4- जातिगत आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

5- धर्म के आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

6- प्रौढ़ एवं युवा आयु के, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

7- विवाहित एवं अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

8- प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निष्कर्षों के आधार पर सुझाव प्रस्तुत करना ।

6. **आधारभूत मान्यतायें :**

ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का अध्ययन आरम्भ करने से पूर्व शोधकर्ता यह मान कर चला है कि -

1- समाज में रह रहे अन्य व्यक्तियों के समान ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों का जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी व्यवहार उनकी विभिन्न अभिवृत्तियों का ही परिणाम है ।

2- उपयुक्त वातावरण एवं सूझ-बूझ से किसी भी व्यक्ति की अभिवृत्ति में परिवर्तन किया जाना सम्भव है ।

3- जनसंख्या शिक्षा के प्रति व्यक्त ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्तियों को अभिवृत्ति मापनी द्वारा मापा जा सकता है ।

4- समाज के जागरूक प्रतिष्ठित एवं सामाजिकता से जुड़े होने के कारण ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक समाज की समस्याओं के समाधान हेतु अपना निश्चित अभिमत रखते हैं ।

5- ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्तियों, अभिमतों, व्यवहार, जीवन दर्शन आदि का विद्यार्थियों पर सीधा प्रभाव पड़ता है । इससे परिवार, समाज तथा राष्ट्र भी प्रभावित होते हैं ।

6- ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिव्यक्ति मत दृष्टिकोण आदि जनसंख्या शिक्षा का पाठयक्रम तैयार करने में महत्वपूर्ण एवं उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं ।

7. **परिकल्पनाएँ :**

1- शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में अधिक होती है ।

2- ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं हैं ।

3- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है ।

4- ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में जातिगत आधार पर सार्थक अन्तर नही होता है ।

5- धर्म के आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनंसख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है ।

6- प्रौढ़ एवं युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

7- विवाहित एवं अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर होता है ।

8. **अध्ययन का न्याधिकरण :**

वर्तमान समय में बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या आज विस्फोटक रूप में हमारे सम्मुख है । यह समस्या सुलझने के स्थान पर प्रतिक्षण, प्रतिदिन उग्र एवं जटिल होती जा रही है । यदि अधिक ध्यान और गहनता से इस समस्या को परिलक्षित करते हैं तो जनाधिक्य का वीभत्स रूप हमारे सम्मुख आने को तैयार खड़ा है । महानगरों में तो जनसंख्या वृद्धि के वीभत्स रूप ने अपने पैर पूर्णरूपेण पसार दिये हैं । अत: आज यह अति आवश्यक हो गया है कि इसको रोकने के लिए युन्द्वस्तर पर उचित, अनुकूल कदम उठाये जायें। यदि हमने इस समस्या को थोड़ा भी हल्केपन से

लिया तो कुछ ही समय के अन्तराल में जनाधिक्य हमारी समस्त प्रगति को ग्रस लेगा । अतः शोधकर्ता ने इसी तथ्य को विशेष रूप से ध्यान में रखकर इस क्षेत्र में अध्ययन करने का विचार किया है ।

इस सम्बन्ध में शोधकर्ता ने सर्वप्रथम जनाधिक्य से उत्पन्न सरकार की कठिनाइयों की ओर ध्यान इंगित किया ।

नये युग की माँग है कि जनमानस में जीवन समर्थन, स्वास्थ्य सम्वर्धन, सन्तति नियमन, आत्माभिव्यक्ति, परस्परावलम्बन, आत्म विश्वास की विचारधारा का अधिक अवलम्बन और पोषण किया जाये तथा इसके लिये परिवार कल्याण की विचारधारा समयानुकूल है । अतः शोधकर्ता ने यह अध्ययन करना उचित समझा ।

जनसंख्या की दिनोदिन वृद्धि से सरकार के समक्ष, नगरीकरण, आवास, खाद्यान्न, चिकित्सा, बेरोजगारी, शिक्षा आदि अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं । अतः शोधकर्ता ने वर्तमान समय में सरकार के समक्ष जनाधिक्य से सम्बन्धित समस्याओं के निदान हेतु प्रस्तुत अध्ययन को उपयोगी समझा ।

स्वास्थ्य मानव जीवन की प्रमुखतम आवश्यकता है । परिवार समाज, राष्ट्र स्वस्थ मनुष्य बल से ही पुष्ट समृद्धशाली एवं शक्तिशाली बनता है । जनसंख्या की अधिकता से व्यष्टि एवं समष्टि दोनों ही स्तर पर स्वास्थ्य प्रभावित होता है । अतः जनाधिक्य से उत्पन्न स्वास्थकीय दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन करने का निश्चय किया ।

ग्रामीण क्षेत्रों एवं कस्बों पर जनसंख्या शिक्षा निदेशक अपना प्रभाव किस सीमा तक छोड़ते हैं । इस तथ्य पर भी शोधकर्ता द्वारा ध्यान आकृर्षित करने का प्रयास किया है ।

शिक्षक शैक्षिक कार्यक्रमों का आधार तथा धुरी है । ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की स्कूल कालेजों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करने के उद्देश्य से भी शोधकर्ता ने इस क्षेत्र में अध्ययन किया है ।

जनसंख्या शिक्षा में उपरोक्त तथ्यों से सम्बन्धित अनेक अध्ययन तथा अनुसंधान किये गये हैं, तथापि उनमें से प्रायः सभी में किसी न किसी तथ्य की अपूर्णता का अनुभव किया गया ।

अतः उन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन करने का निश्चय किया गया ।

9. **परिसीमायें :**

समय एवं स्थान की कमी के कारण प्रस्तुत अध्ययन को उसके न्यादर्श, क्षेत्र विधि एवं सम्बन्धित अवस्थाओं के आधार पर निम्न प्रकार से परिसीमित किया गया है ।

1- शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में भारतवर्ष के उत्तर प्रदेश राज्य में मुरादाबाद मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी पुरूष व महिला शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है ।

2- अध्ययन को प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, माध्यमिक, स्नातक एवं स्नातकोत्तर संस्थाओं तक सीमित रखा गया है ।

3- अध्ययन में न्यादर्श के रूप में ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के अस्थाई व स्थाई मान्यता प्राप्त विद्यालय, अर्द्धशासकीय व शासकीय विद्यालय, पुरूष एवं महिला शिक्षण संस्थाओं से 500 पुरूष, महिला शिक्षकों का चयन किया गया है ।

4- अध्ययन में शोधकर्ता ने ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम की शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण प्रदान करने वाले पुरूष व महिला शिक्षकों को सम्मिलित किया है ।

5- शोधकर्ता ने अध्ययन में प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक, प्रौढ़ एवं युवा शिक्षक, विवाहित व अविवाहित शिक्षक, कला एवं विज्ञान शिक्षण प्रदान करने वाले शिक्षक, हिन्दू मुस्लिम, सिख, ईसाई, शिक्षक, सवर्ण, पिछड़ी जाति व अनुसूचित जाति के शिक्षकों को सम्मिलित किया है ।

10. **शोधविधि एवं उपकरण :**

प्रस्तुत अध्ययन में 'वर्णनात्मक सर्वे शोध विधि' का प्रयोग किया गया ।

अध्ययन को और अधिक वैज्ञानिक बनाने के लिए ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति ज्ञात करने हेतु एक अभिवृत्ति मापनी की रचना की गयी । इस परीक्षण की वैधता तथा विश्वसनीयता ज्ञात की गयी एवं मानक भी ज्ञात किये गये ।

शोधकर्ता ने इस अध्ययन हेतु प्रमापीकृत परीक्षण का निर्माण किया तथा परीक्षण किया । इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत प्रदत्त प्रपत्र की रचना की गयी, जिसका प्रयोग ग्रामीण एवं

शहरी शिक्षकों के बारे में उनकी व्यक्तिगत सूचनाऐं एकत्र करने के लिए किया गया । प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्षों के पीछे उत्तरदायी कारणों की जाँच के लिये साक्षात्कार परिसूची की रचना की गयी और साक्षात्कार प्रणाली में उसका उपयोग किया गया ।

ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक जनसंख्या वृद्धि एवं उससे उत्पन्न समस्याओं के सम्बन्ध में क्या अभिवृत्ति रखते हैं, इसके लिए जनसंख्या शिक्षा एवं उससे सम्बन्धित क्षेत्रों पर आधारित मुरादाबाद मण्डल (बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर) के विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत 500 ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक शिक्षिकाओं का चयन करके उनके अभिमतों एवं अभिवृत्तियों का संग्रह किया गया तथा जनसंख्या शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक, शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति ज्ञात की गयी ।

वर्णनात्मक शोधविधि के साथ-साथ जनसंख्या शिक्षा पर ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिए परीक्षण विधि का भी अवलम्बन लिया गया ।

सही तथ्य एवं अध्ययन को वैज्ञानिक बनाने के लिए शोधकर्ता ने साक्षात्कार विधि को भी अपनाया है ।

ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति से संग्रहीत प्रश्नों का विश्लेषण करने के लिये 'सांख्यिकीय विधि' का प्रयोग किया गया है ।

11. शोध प्रतिवेदन की प्रस्तुति :

प्रत्येक शोध प्रतिवेदन के कुछ निश्चित उद्देश्य होते हैं । जिनके आधार पर शोध प्रतिवेदन लिखा जाता है । यह प्रतिवेदन शोध प्रोजेक्ट के अनुसार ही होते हैं । प्रस्तुत शोध प्रतिवेदन पूर्व में दिये उद्देश्यों के अनुसार निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त किया गया है -

अध्याय 1 - प्रस्तावना

अध्याय 2 - सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन ।

अध्याय 3 - शोध अभिकल्प एवं प्राविधियाँ ।

अध्याय 4 - आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय 5 - शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

विवेचन
ग्रंथ संदर्भ सूची
परिशिष्ट

अध्याय - द्वितीय : सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अध्याय - 2

सम्बन्धित शोध साहित्य का अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता ने जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में हुए अनुसंधानों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है । अध्ययन की सुविधा के लिए केवल उन अनुसंधानों को सम्मिलित किया गया है, जो कि अध्यापकों एवं अध्ययनरत छात्रों से सम्बन्धित हैं, जबकि इस विषद विषय पर अनेक व्यापक क्षेत्र के शोध हुए हैं, जैसे जनसंख्या नियोजन, परिवार कल्याण, परिवार नियोजन आदि ।

1. अनुसंधानों का संक्षिप्त विवरण :

1961 से 1963 तक बड़ौदा के वैयक्तिक अध्ययनों से विदित हुआ कि अधिकांश जनसंख्या समस्या काम ज्ञान की कमी के कारण होती है । प्रमुख कारण काम में मन न लगना, असफल प्रेम, विकृत काम व्यवहार आदि इसमें उद्दीपन का कार्य करते हैं ।

1964 में संतोष वर्मा ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों की व्यक्तिगत काम समस्यायें बहुत अधिक है । इसका कारण विद्यालयों में काम शिक्षा का अभाव है । अतः उन्होंने विद्यालयों में काम शिक्षा का प्रावधान होना आवश्यक माना, जिससे जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण हो सके ।

1966 में मधुबेजल ने 'अध्यापिकाओं की परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति' पर किये गये अपने अध्ययन में पाया कि कुछ अध्यापिकायें बालकों को ईश्वरीय देन समझती हैं । कुछ अध्यापिकाओं ने बालकों के बीच में 2 से 5 वर्ष के अन्तर को उचित माना । इनके अध्ययन में 70 प्रतिशत अध्यापिकाओं को परिवार नियोजन के प्रति कोई जानकारी नही थी । कुछ शिक्षिकायें परिवार में लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अधिक महत्व देती पाई गयी ।

1966 में सुषमा ने मेरठ कॉलिज के 50 छात्रों की परिवार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया । इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि छात्र विवाह के उद्देश्य से सहमत हैं तथा 50 प्रतिशत छात्र परम्परागत विधि से विवाह करना उचित मानते हैं । 34 प्रतिशत छात्र विधर्मी लड़की से विवाह करना चाहते थे तथा दहेज विरोधी थे ।

1966 में श्री गौतम ने मेरठ कालिज के 50 छात्राओं के विवाह एवं परिवार के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया । इनके अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि छात्राएँ 20 से 24 वर्ष की आयु को विवाह के लिए उचित मानती हैं । अधिकांश छात्रायें इस उम्र से पूर्व विवाह के विरूद्ध हैं विवाह विच्छेद के कानूनों से छात्राएँ परिचित थी । वे विवाह के लिए चरित्रवान निर्धन पुरूष को दुष्चरित्र धनवान व्यक्ति से अच्छा मानती थी अधिकांश छात्राएँ परिवार नियोजन कार्यक्रम से आंशिक रूप में परिचित पाई गयी ।

कपिल (1968) ने प्राथमिक स्तर के 144 अध्यापकों की जनसंख्या नियन्त्रण से सम्बन्धी अभिवृत्ति का अध्ययन किया । इन अध्यापकों में 58 प्रतिशत परिवार नियोजन के साधनों से परिचित थे । 76 प्रतिशत अध्यापक परिवार नियोजन के जानकार पाये गये । अधिकांश अध्यापकों की ये मान्यता थी कि संतान की इच्छित संख्या पूर्ण हो जाने के बाद परिवार नियोजन के साधनों को अपना लेना चाहिए । 58 प्रतिशत अध्यापकों ने बंध्यकरण शल्य क्रिया के बारे में सुना था, इन अध्यापकों का मानना था कि अध्यापकों द्वारा बंध्यकरण शल्य क्रिया को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये ।

स्वीडिश कमीशन ऑफ सैक्स एजूकेशन (1969) को कक्षा 9 के छात्र छात्राओं के काम ज्ञान के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि काम शिक्षा के स्रोत के रूप में छात्रों की अपेक्षा छात्राओं ने माता पिता को सर्वश्रेष्ठ माना । छात्राओं का काम ज्ञान छात्रों से अधिक पाया गया । अधिकांश किशोरों की मान्यता काम ज्ञान में विस्तार करने की रही । पचास प्रतिशत किशोरों की मान्यता थी कि विद्यालयों को किशोर किशोरियों के पारस्परिक सम्बन्धों में व्यवधान नहीं डालना चाहिये ।

1970 में वर्गीज ने जनसंख्या समस्या के विभिन्न पक्षों पर किये गये अध्यापकों की अभिवृत्ति के अपने अध्ययन में पाया, कि धर्म के आधार पर अध्यापकों की अभिवृत्तियों में अन्तर नहीं हैं, जबकि वैवाहिक स्तर के आधार पर अध्यापकों द्वारा प्रकट किये गये मतों का काम शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर पाया गया । जनसंख्या शिक्षा के प्रति वैवाहिक व अवैवाहिक शिक्षकों की अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया गया । पुरूष एवं महिला अध्यापकों की जनसंख्या शिक्षा एवं काम शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर पाया गया ।

पोहलमैन एवं राव ने 1970 में बालकों एवं उनके अध्यापकों की अभिवृत्ति के अध्ययन में पाया कि शहरी लड़के 25 वर्ष की आयु में एवं ग्रामीण लड़के 21 वर्ष की आयु में विवाह करने के पक्ष में है । अधिकांश छात्र एवं अध्यापक परिवार में लड़के का होना आवश्यक मानते हैं । जन्म नियोजन की विधियों एवं मानव भ्रूण के विकास से सम्बन्धित ज्ञान को विद्यालयों में प्रदान करने में क्रमशः 60 प्रतिशत एवं 55 प्रतिशत पुरूष एवं महिलाओं ने समर्थन किया ।

1970 में पोहलमैन तथा राव ने दिल्ली एवं उसके आसपास के ग्रामों के 832 अध्यापकों के विचारों का अध्ययन किया । इसके लिए उन्होंने प्रश्नावली एवं साक्षात्कार दोनों विधियों को अपनाया । इस अध्ययन में उनकी अनुशंसा थी, कि अध्यापकों की जनसंख्या समस्या के संदर्भ में निम्नलिखित प्रकरण सम्मिलित किये जायें -

पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर छोटे परिवार के लाभ, पारिवारिक जीवन की शिक्षा से सम्बन्धित प्रकरण सम्मिलित किये जायें । जनसंख्या वृद्धि से राष्ट्र पर कुप्रभाव तथा दो बच्चों के मध्य उचित समयान्तराल से लाभ ।

1970 में मंजुल ने स्वास्थ्य एवं जनसंख्या शिक्षा का वैचारिक प्रारूप विकसित किया । जनसंख्या एवं स्वास्थ्य से सम्बन्धित उनका विचार तीन मुख्य तथ्यों पर इस प्रकार है -

संकल्पना एक :

जनसंख्या का उपबन्ध और आकार प्राकृतिक स्त्रोंतों के उपयोग की पारस्परिक क्रिया जीवन स्तर का आधार है ।

संकल्पना दो :

परिवार समाज की आधारभूत इकाई है, जो कुछ व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है ।

संकल्पना तीन :

स्वास्थ्य एक गतिशील लक्ष्य है, जो कि परिस्थितियों एवं अन्य अनेक कारकों का जटिल पारस्परिक क्रिया परिणाम है ।

डेमोग्राफिक ट्रेनिंग केन्द्र बम्बई 1970 ने सहशिक्षा विद्यालयों में पारिवारिक जीवन की शिक्षा का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया । इस कार्यक्रम में छात्र छात्राओं को प्रश्न पूछने के लिये उकसाया तथा अन्त में इसके आयोजकों को अनुभव हुआ कि -

विद्यालयी विषयों में काम शिक्षा एवं पारिवारिक जीवन की शिक्षा का समाकलन हो । इस कार्यक्रम से सहशिक्षा विद्यालयों में सहज वातावरण विकसित करने में सहायता मिली । इस परीक्षण से यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों के काम ज्ञान में वृद्धि हुई ।

प्रोफेनवेश्गर ने 1970 में 100 छात्राओं एवं 100 छात्रों की जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित अभिवृत्ति का अध्ययन किया । इन्होंने अध्ययन हेतु प्रश्नावली का प्रयोग किया । कुछ न्यादर्श का साक्षात्कार भी लिया । अध्ययन से निम्नलिखित तथ्य सामने आये -

भारत में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या को सभी छात्रों तथा छात्राओं ने स्वीकार किया तथा वे जनसंख्या वृद्धि की समस्या को विकट समस्या मानते पाये गये । अधिकांश छात्र छात्राओं ने परिवार में एक पुत्र होना आवश्यक माना । सभी छात्र छात्राओं ने परिवार नियोजन के साधनों को उचित माना ।

1971 में मेहता व अन्यों ने विद्यालय पाठयक्रम में जनसंख्या शिक्षा के बिन्दुओं का निर्धारण किया । उन्होंने बताया कि भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, सामाजिक ज्ञान, सामाजिक अध्ययन और गणित में जनसंख्या शिक्षा का प्रवेश सम्भव है ।

आई0पी0पी0एफ0 (1971) कोरिया में केन्द्रीय शिक्षा अनुसंधान संस्थान ने माध्यमिक एवं प्राथमिक स्तर की पाठय पुस्तकों का विश्लेषण किया । अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जनसंख्या शिक्षा के समाकलन की सम्भावना का अध्ययन करना था ।

1971 में सियोल स्थित केन्द्रीय शिक्षा संस्थान ने कोरिया में 4000 अध्यापकों तथा 1300 छात्रों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया । इन्होंने अपने अध्ययन में तकनीकी विषयों को नहीं रखा वरन् प्रोजेक्ट को केवल भाव जागृति तक ही सीमित रखा । अध्ययन में तकनीकी विषय जैसे परिवार नियोजन, काम शिक्षा, बाल पालन पोषण नही रहे । इन्होंने अपने अध्ययन में पाया -

कुछ अध्यापक एवं छात्रगण अधिक बच्चों के पक्ष में है जबकि कुछ अन्य जनसंख्या समस्या को एक विकट समस्या मानते हैं । ये जन्म निरोध को अनैतिक नही मानते हैं ।

अधिकांश छात्रों एवं अध्यापकों का ज्ञान आशा से कहीं अधिक निम्न पाया गया । अध्यापकों ने जनसंख्या नियंत्रण का श्रेष्ठ साधन परिवार नियोजन कार्यक्रम को माना । अध्यापक विद्यालयी विषयों में जनसंख्या को स्थान देने के पक्ष में पाये गये तथा स्वयं को ज्ञान प्रदान करने में समर्थ मानते हैं ।

1972 में अख्तर, सिन्हा तथा इस्लाम ने स्नातक शिक्षकों की परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन किया । अभिवृत्ति एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए इन्होंने प्रश्नावली का निर्माण किया । इनके अध्ययन में पुरूष तथा महिला अध्यापक सम्मिलित थे ।

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि अध्यापकगण परिवार नियोजन एवं उनके साधनों को स्वीकार करते हैं । बहुत से पुरूष तथा महिला अध्यापक परिवार नियोजन सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन करते हैं । इन अध्यापकों में लगभग 38 प्रतिशत पुरूष तथा 5 प्रतिशत महिलायें परिवार नियोजन एवं जन्म नियन्त्रण के साधनों जैसे निरोध, खाने की गोलियाँ, आई0यू0टी0 नसबन्दी को भी अपनाने के पक्ष में पाये गये ।

बाला सुब्रामन्यम एवं रामाराव ने 1972 में हाई स्कूल के अध्यापकों की जनसंख्या जागृति का अध्ययन किया तथा पाया कि वे जनंसख्या शिक्षा को विद्यालयी विषयों में रखना उचित मानते हैं । इन्होंने अपने अध्ययन में अध्यापकों की जागृति उच्च स्तर की पाई ।

1973 में कर्ता और कोटेश्वर ने कर्नाटक के दो स्थानों दुबली और धारबाड़ के 231 पुरूष तथा 52 महिलाओं पर अध्ययन किया । अध्ययन में प्रश्नावली और साक्षात्कार दोनों विधियों को अपनाया । इन्हें अपने अध्ययन से विदित हुआ कि अध्यापकों में से 36 प्रतिशत परिवार नियोजन के साधनों को अपना रहे हैं । परिवार नियोजन को अपनाने वाले हिन्दू, ईसाई तथा मुस्लिम धर्म के अध्यापक थे तथा दो से अधिक बच्चों के पिता पहले ही थे ।

1973 में शैलबाला दयाल ने विद्यालयी अध्यापकों के परिवार नियोजन एवं काम शिक्षा के पाठ्यक्रम के प्रति, प्रतिक्रिया का अध्ययन किया । इस अध्ययन में बी0एड0 पत्राचार पाठयक्रम के 98 शिक्षक थे । इनके अध्ययन से निम्न निष्कर्ष सामने आये -

जनसंख्या शिक्षा का विभिन्न विषयों में समाकलन करने के संदर्भ में अध्यापकों में

मतभेद था । 70 प्रतिशत अध्यापक इसे सामाजिक विज्ञान के साथ समाकलन करने के पक्ष में थे । पुरूष अध्यापकों में 90 प्रतिशत एवं महिला अध्यापिकाओं में 75 प्रतिशत दो बच्चों के मध्य 2 से 4 वर्ष का अन्तर स्वीकार करते हैं । 75 प्रतिशत अध्यापक परिवार नियोजन के साधनों को अपनाना उचित मानते हैं ।

1974 में गोपालराव ने समस्याधारित जनसंख्या शिक्षा के पाठयक्रम का निर्माण किया तथा इनमें जनसख्ंया से सम्बन्धित कारण, प्रभाव तथा नियन्त्रण तीन सम्प्रत्यय थे । इनमें तथ्य थे -- जनसंख्या नियन्त्रण एवं वैयक्तिक, राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय उत्तरदायित्व । जनसंख्या विशिष्टतायें किसी राष्ट्र के सामाजिक आर्थिक विकास को प्रभावित करती हैं ।

एलोसियस (1974) ने विद्यालयों में काम शिक्षा के प्रवेश के संदर्भ में किशोर एवं उनके अभिभावकों के अभिमतों का अध्ययन करके यह पाया कि अन्य धर्मावलम्बि माता-पिता की अपेक्षा ईसाई धर्म मानने वाले माता पिता जनसंख्या शिक्षा के अधिक पक्षधर हैं । अभिभावकों एवं किशोरों की काम शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी ।

1974 में सत्कार ने गोवा के अध्यापकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों की जनसंख्या जागृति का अध्ययन किया । जिसमें 2185 के लगभग विद्यार्थी, 400 अध्यापक, 200 अभिभावक सम्मिलित थे । इनके अध्ययन के निष्कर्ष निम्न रहे -

जनसंख्या के तथ्यों से 70 प्रतिशत विद्यार्थी एवं 96 प्रतिशत अध्यापक व 96 प्रतिशत अभिभावक परिचित थे । 80 प्रतिशत अध्यापकों व अभिभावकों की अभिरूचि छात्रों को जनसंख्या शिक्षा से परिचित कराने में थी । दोनों ही जनाधिक्य को प्रदूषण, बेरोजगारी आवासीय न्यूनता का परिणाम मानते हैं । अभिभावक विद्यालयों में, जनसंख्या शिक्षा छात्रों को प्रदान कराना चाहते हैं । 61 प्रतिशत अध्यापक व 84.5 प्रतिशत अभिभावक सहशिक्षा में जनसंख्या शिक्षा प्रदान करने के विरोध में है ।

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि छात्रगण बाल मृत्यु के कारणों तथा मृत्यु की दर के विषय में जानकारी नहीं रखते हैं परन्तु परिवार नियोजन एवं बाल विवाह से जन्म दर में होने वाले प्रभावों से परिचित हैं ।

1974 में मेहता व हेनरी ने जनसंख्या शिक्षा के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों की तत्परता अभिवृत्ति एवं जनसंख्या शिक्षा के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों की प्रतिक्रिया ज्ञात करने के लिए अध्ययन किये ।

मेहता व हेनरी ने अपने अध्ययन के लिए प्रश्नावलियों का निर्माण किया तथा प्रश्नावलियों पर अध्यापकों व अभिभावकों की प्रतिक्रिया ज्ञात की । दोनों ही अध्ययनकर्ताओं ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश अध्यापक एवं अभिभावक जनसंख्या शिक्षा प्रदान करने के पक्षधर थे । अध्यापक व अभिभावक दोनों ही यह स्वीकार करते हैं, कि शैक्षिक माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम से जनसंख्या शिक्षा प्रदान करना प्रभावी नहीं होता ।

अपने अध्ययन में अध्ययनकर्ताओं ने अध्यापक समूहों के अभिमतों में सार्थक अन्तर पाया । अधिकांश अध्यापक व अभिभावकों ने यह माना कि जनसंख्या शिक्षा के द्वारा छात्रों में छोटे परिवार के लिए धनात्मक अभिवृत्ति का विकास होता है ।

1974 में उच्चतर माध्यमिक स्तर तक के लिये कुछ कार्य गोष्ठियों द्वारा जनसंख्या पाठ्यक्रम निर्धारित करने का कार्य किया गया तथा जनसंख्या पाठ्यक्रम का निर्माण भी किया गया ।

प्रभाकर (1975) ने अपने अध्ययन के लिए विद्यालय के छात्रों का चयन किया । उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि छात्र जनसंख्या शिक्षा को पाठयक्रम में स्थान देने के पक्ष में है ।

श्रीवास्तव ने अध्यापकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के अपने अध्ययन में पाया कि -

अध्यापक विद्यालयी पाठयक्रम में जनसंख्या शिक्षा का होना आवश्यक मानते हैं । अधिकांश अध्यापक युवा वर्ग को जनसंख्या शिक्षा प्रदान किये जाने के पक्ष में थे तथा जनसंख्या समस्या के प्रति जागरूक थे । अध्यापकों की निश्चित मान्यता थी कि जनसंख्या नियंत्रण के बिना आर्थिक विकास अवरूद्ध होगा ।

1975 में मेहता एवं अन्य ने माध्यमिक शिक्षण प्रशिक्षण के लिये जनसंख्या शिक्षा के पाठयक्रम का निर्माण जनसंख्या कार्यगोष्ठी में किया ।

कपूर और वास्वानी तथा हनुमाबुल ने 1976 में क्रमशः सेकेन्ड्री स्तर के अध्यापकों एवं कक्षा छात्रों के माता पिता की जनसंख्या अभिवृत्ति का अध्ययन किया ।

इनके अध्ययन के निष्कर्ष ये थे -

अध्यापकों में 47.2 प्रतिशत जनसंख्या शिक्षा को विद्यालयी पाठयक्रम में समकलित करने के पक्ष में थे । अधिकांश अभिभावक भी अपने बच्चों को जनसंख्या शिक्षा एवं काम शिक्षा प्रदान करवाना उचित मानते थे । अपने अनुभव के आधार पर अभिभावकों ने बताया कि बड़े परिवार का पालन करना कठिन है ।

अध्यापकों के अध्ययन में उन्होंने पाया कि उनमें वैवाहिक आयु के विषय में मतभेद हैं । अध्यापकों का एक भाग जनसंख्या शिक्षा को उच्च प्राथमिक स्तर तक पढ़ाने के पक्ष में है, वही अध्यापकों का दूसरा भाग जनसंख्या शिक्षा को केवल महाविद्यालयी स्तर पर ही प्रदान किये जाने के पक्ष में है । परिवार में बच्चों की सख्ंया के विषय में भी अध्यापक एकमत नही थे ।

गोपालराव ने (1976) में अध्यापको एवं अभिभावकों की काम शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को ज्ञात किया । इसके लिए उन्होंने लिकर्ट पद्धति का प्रयोग किया । इन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि जहाँ अध्यापक एवं अभिभावक लैंगिक स्वास्थ्य, मानव उत्पादन अंगों की आकारिकी के शिक्षण सम्बन्ध में मतैक्य थे, वहीं विद्यालय स्तर पर गर्भ निरोधकों का शिक्षण के प्रति उन्होंने विरोध प्रकट किया । कामशिक्षा के स्वीकरण एवं धर्म में कोई सम्बन्ध नही माना गया ।

1976 में भोपाल सिंह ने राजस्थान राज्य में बी0एड0 तथा एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की जनसंख्या जागृति का अध्ययन किया । इनके अध्ययन में 100 छात्राध्यापक व प्रशिक्षार्थी सम्मिलित थे । इन्होंने 94 कथनों की एक प्रश्नावली का निर्माण किया जिसमें जनसंख्या रोकने की क्रियाओं, काम शिक्षा की कमी के कारण होने वाले दुष्परिणामों, नैतिक आर्थिक- सामाजिक राजनैतिक, स्वास्थ्य दुष्परिणाम, परिवार नियोजन, अध्यापक प्रशिक्षण में जनसंख्या शिक्षा आदि से सम्बन्धित कथन थे । अध्ययन में पुरूष-महिला अध्यापकों व विवाहित-अविवाहित अध्यापकों के मतों की तुलना की गई जिसमें विभिन्न मत प्राप्त हुए ।

प्रशिक्षार्थियों की यह मान्यता थी कि प्रशिक्षणकाल में शिक्षण विषयों में जनसंख्या शिक्षा को सम्मिलित किया जाये । कुछ अध्यापक ही परिवार नियोजन से सहमत नही पाये गये । विवाहित एवं अविवाहित अध्यापकों के मतो में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया । अधिकांश मत शिक्षा के प्रसार को जनसंख्या शिक्षा का श्रेष्ठ साधन मानने के पक्ष में थे । अध्यापकों के लिए जनसंख्या शिक्षा का अध्ययन आवश्यक माना गया । परिवार में बच्चों की संख्या के संबंध में अलग-अलग मत प्राप्त हुए जिनमें तीन बच्चों के परिवार को आदर्श परिवार मानने वालों का प्रतिशत सबसे अधिक 67 प्रतिशत रहा ।

तिवारी (1977) ने सामाजिक परिवर्तन के सम्बन्ध में विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया । इन्होंने अपने अध्ययन में पाया, कि किशोर बहु विवाह, बाल विवाह प्रथा के विरोधी है । किशोरं दो या तीन बच्चों वाले परिवार को ही आदर्श परिवार मानते हैं साथ ही साथ जबरन नसबंदी को व्यक्ति की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप मानते हैं ।

तिवारी तथा सोमभट्ट ने (1978) में परिवार नियोजन के प्रति अध्यापको की अभिवृत्ति का अध्ययन लिकर्ट पद्धति से किया । इनके अपने अध्ययन में आगरा (उ0प्र0) के स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं के 50 शिक्षक सम्मिलित थे ।

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि विवाह के एक वर्ष बाद संतान पाने वाले 18 प्रतिशत दो वर्ष में संतान पाने वाले 52 प्रतिशत अध्यापकों की संख्या थी । गर्भपात का पूर्ण रूप से किसी ने समर्थन नही किया । 72 प्रतिशत अध्यापक परिवार नियोजन के साधनों का प्रयोग करते थे विवाहोत्तर काम सम्बन्धों का समर्थन किसी ने नही किया । वंध्यकरण शल्यक्रिया से 52 प्रतिशत अध्यापक पूर्ण सहमत तथा 6 प्रतिशत अध्यापक असहमत पाये गये । नर बंध्यकरण शल्य क्रिया को केवल 6 प्रतिशत अध्यापकों की सहमति प्राप्त हुई ।

सुन्दरराज ने 1978 में कालेज छात्रों के लिये जनसंख्या शिक्षा के पाठयक्रम का निर्माण किया । (1978 में रहमान ने अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालय से बाहर के नवयुवकों के लिये जनसंख्या शिक्षा के पाठयक्रम की योजना प्रस्तुत की ।

1979 में रहमान ने ही विद्यालय से बाहर के युवकों हेतु जनसंख्या शिक्षा पाठयक्रम का निर्माण किया । इन्होंने पाठयक्रम में जनसंख्या शिक्षा के पॉच क्षेत्र रखें - राष्ट्र, समुदाय एवं

राष्ट्र की जनसंख्या, जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक, बंगलादेश में जनसंख्या ।

1979 में ठाकरे ने गुजरात के माध्यमिक विद्यालयों के प्रशिक्षणरत शिक्षकों के लिये जनसंख्या पाठयक्रम तैयार करने का प्रयास किया ।

ठाकोर (1980) ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्राध्यापकों की उपलब्धि अंकों की अपेक्षा अभिवृत्ति अंकों में सार्थक विभेद नहीं है ।

नलिनी देवी ने 1981 में स्कूल जाने वाले छात्रों की जनसंख्या शिक्षा जागृति का अध्ययन किया । इसके साथ ही इन्होंने उन छात्रों की जनसंख्या शिक्षा प्राप्त करने की आंतरिक इच्छा का भी अध्ययन किया । इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण छात्र शहरी छात्रों की अपेक्षा जनसंख्या के प्रति अधिक जागृति रखते हैं । प्राथमिक स्कूलों व मिडिल स्कूलों के छात्रों से हाईस्कूल के छात्र जनसंख्या शिक्षा के प्रति अधिक जागृत हैं । छात्रों में अधिकांश जनसंख्या शिक्षा को जानने के प्रति अभिरूचि रखते हैं ।

1981 में एच0जी0 सतरसाकबाला ने जनसंख्या शिक्षा तथा शोधकार्य में व्यवहारिक परिवर्तन के लिये जनसंख्या शिक्षा के संदर्भ में एक कार्य योजना बनायी । इनका मुख्य उद्देश्य विभिन्न माध्यमों से जनसंख्या शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना था ।

इन्होंने अपने अध्ययन के लिये कक्षा 9 के 1000 विद्यार्थी 300 अन्य लोग 100 क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं को चुना, जो सूरत जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों से पुरूष व महिला दोनों थे । इंन्होंने अपने अध्ययन से निम्न निष्कर्ष निकाले -

1- जनसंख्या प्रशिक्षण प्राप्त समूह सांख्यिकीय दृष्टि से 0.01 स्तर पर धनात्मक था ।

2- परिवार नियोजन कार्यकर्ता जनसंख्या शिक्षा के विषय में कोई धनात्मक सार्थक अन्तर रखते नहीं पाये गये ।

3- पुरूष एवं महिला वर्ग एवं विद्यार्थियों के वर्ग में जनसंख्या शिक्षा की धनात्मक उपलब्धि 0.01 तथा 0.05 दोनों स्तरों पर पायी गयी ।

1983 में एम0 भण्डारकर ने सेकेण्ड्री स्कूल के विद्यार्थी एवं अध्यापकों की जनसंख्या शिक्षा के विषय में अभिवृत्ति का अध्ययन किया । इन्होंने न्यादर्श में 142 अध्यापक व 1500 सेकेण्ड्री स्कूल के छात्रों को 22 शहरी एवं ग्रामीण स्कूलों से चुना । इन्होंने अपने अध्ययन से निम्न निष्कर्ष निकाले -

1- सेकेण्ड्री स्कूल के अध्यापक एवं विद्यार्थी दोनों ही जनसंख्या शिक्षा के विषय में अल्पज्ञान रखते थे ।

2- सेकेण्डी विद्यालयों की छात्रायें जनसंख्या शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक अभिवृत्ति रखती थी ।

3- कला संवर्ग के विद्यार्थी अन्य संवर्गो के विद्यार्थियों से जनसंख्या शिक्षा के विषय में अधिक ज्ञान रखते थे ।

4- जनसंख्या शिक्षा के विषय में परिवार के आर्थिक आधार पर विद्यार्थियों में धार्मिक अभिवृत्ति पायी गयी । छात्रों की धनात्मक अभिवृत्ति संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकांकी परिवार के विषय में थी ।

एस0सी0ई0आर0टी0 बिहार 1986 ने सेकेण्ड्री स्तर के विद्यार्थियों की जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धियों पर अपना मूल्यांकन किया । शोध के मुख्य उद्देश्य थे -

1- जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के ज्ञान का स्तर जानना ।

2- जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित विषय पर अपना मत प्रकट करना ।

3- कक्षाओं से अलग जनसंख्या शिक्षा का विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करना ।

4- प्राप्त जनसंख्या शिक्षा के ज्ञान का मूल्यांकन करना ।

संस्था ने बिहार के पूर्णिया, गुमला, देवगढ़, गोपालगंज, पश्चिमी चम्पारन जिलों के 20 ग्रामीण व 20 शहरी विद्यालयों से कक्षा 10 के 1000 छात्रों को न्यादर्श के लिए चुना । इस अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित थे -

1- शहरी छात्र व छात्रायें गाँवों के छात्र व छात्राओं से जनसंख्या शिक्षा के विषय में अधिक ज्ञान रखते थे ।

2- शहरी लड़कों को जनसंख्या शिक्षा के विषय में शहरी लड़कियों से अधिक ज्ञान था ।

3- जनसंख्या शिक्षा के विषय में गाँवों व शहर दोनों की छात्रायें छात्रों से निम्न अभिवृत्ति रखती थीं ।

4- शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के ज्ञान में जनसंख्या शिक्षा के सम्बन्ध में बड़े स्तर पर भिन्नता थी, परन्तु विचार निर्धारण एवं प्रयोग से यह अंतर कम हो गया था ।

5- एस0सी0ई0आर0टी0 विहार द्वारा प्राप्त निष्कर्ष में विहार के सेकेण्ड्री स्कूल के विद्यार्थियों में जनसंख्या शिक्षा जाग्रति 69 प्रतिशत थी तथा विद्यार्थियों की समस्यायें समझने तथा प्रयोग में लाने की सामर्थ के ज्ञान का मूल्यांकन 64 प्रतिशत था ।

एस0सी0ई0आर0टी0 महाराष्ट्र (1986) ने अपनी एक शोध 'राष्ट्रीय जनसंख्या नीति' में जनसंख्या शिक्षा पर पठन पाठन के प्रभाव का अध्ययन किया ।

इस अध्ययन का उद्देश्य जनसंख्या शिक्षा के लिए प्रशिक्षित किये गये माध्यमिक स्तर तक के शिक्षकों के व्यवहार में परिवर्तन लाना तथा अनुसंधान के सुधार व प्रशासन को बढ़ाने के लिए सुझाव देना था ।

इस अध्ययन में जूनियर हाईस्कूल, हाईस्कूल के प्रधानाचार्य, बालिका विद्यालयों की प्रधानाचार्या, जूनियर हाई स्कूल तथा माध्यमिक स्कूलों के अध्यापक, प्रशिक्षण विद्यालयों के अध्यापकों को महाराष्ट्र के 15 जनपदों से चुना गया । आँकड़ों व साक्षात्कारों के द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए --

1- सात में से पाँच अकृषि विश्वविद्यालयों में जनसंख्या शिक्षा को बी0एड0 पाठयक्रम में एक विषय के रूप में सम्मिलित किया गया था ।

2- 15 में से 9 शिक्षण संस्थानों में जनसंख्या शिक्षा का अध्ययन संतोषजनक था ।

3- छात्र अध्यापक अपने द्वितीय वर्ष के पाठयक्रम में जनसंख्या शिक्षा को पढ़ रहे थे ।

4- 67 प्रतिशत कालेज के अध्यापक व्यवहारिक परिवर्तन चाहते थे ।

5- 50 प्रतिशत जूनियर हाई स्कूल के अध्यापक भी व्यवहारिक परिवर्तन चाहते थे ।

6- संस्था ने यह सुझाव भी दिया कि जो बचे हुए अध्यापक हैं उनके लिए एक जनसंख्या शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जाये ।

भार्गव (1987) के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि अधिकांश शिक्षक विद्यालयों के माध्यम से जनसंख्या शिक्षा देने के पक्ष में है ।

सिंह (1987) ने कालेज छात्राओं पर अध्ययन करने यह निष्कर्ष निकाला कि अधिकतर कालेज छात्रायें छोटे परिवार में विश्वास करती है । वे दो से अधिक बच्चों के पक्ष में नही थी ।

संध्या कुलश्रेष्ठ (1990) ने अपने शोध प्रबन्ध 'जनसंख्या शिक्षा के प्रति महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन' नामक शोध प्रबन्ध में उत्तर प्रदेश के 36 विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में कार्यरत 500 शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन किया । इन्होंने अपने अध्ययन में पाया -

1- किशोर एवं किशोरियों को विषम लिंगी जानकारी दी जानी चाहिये ।

2- विद्यालयी पाठयक्रम में जनसंख्या शिक्षा को एक विषय के रूप में पढ़ाने के लिए कोई स्पष्ट अभिवृत्ति ज्ञात नही हुई ।

3- इनके अध्ययन में अधिकांश शिक्षिकाओं ने जीवन में स्वास्थ्य के महत्व को स्वीकारा । शिक्षिकाओं ने कुपोषण अल्पपोषण के रोग व बाल मृत्युदर को जनसंख्या की अधिकता का दुष्परिणाम बताया ।

4- स्नातक एवं उससे कम शिक्षा प्राप्त शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति जनसंख्या के प्रति कम पायी गयी ।

5- जनंसख्या शिक्षा अभिवृत्ति के सम्बन्ध में धर्म के आधार पर हिन्दू, मुस्लिम, सिख ईसाई धर्म के शिक्षकों की अभिवृत्ति में विषमता पायी गयी । इन्होंने पाया कि हिन्दू धर्म के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा संदर्भ में सर्वाधिक अनुकूल अभिवृत्ति है ।

6- विवाहित महिला शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अविवाहित, विधवा, परित्यक्ता शिक्षिकाओं से अनुकूल रही ।

1952 से 1974 तक जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित क्षेत्रों जैसे परिवार नियोजन, संगठन में प्रशिक्षण, निरोध का वितरण एवं कार्यक्रम मूल्यांकन, शिक्षा संचार, गर्भ निरोधकों आदि अनेक क्षेत्रों पर लगभग 533 अनुसंधान हुए । इन अनुसंधानों में सर्वाधिक अनुसंधान अभिवृत्ति एवं क्रियाओं से सम्बन्धित हुए । 1969 में प्रथम राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा सेमिनार का आयोजन बम्बई में हुआ । 1974 का वर्ष विश्व स्तर पर जनसंख्या वर्ष के रूप में मनाया गया । 1970 से 1979 तक तीन अनुसंधान पी0एचडी0 स्तर पर, तेरह एम0एड0 स्तर पर, दो एम0एस0सी0 गृह विज्ञान स्तर पर हुआ । इनमें से अधिकांश अनुसंधान एक से अधिक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

1980 तक हुए तीन डाक्टरेट स्तर के अध्ययनों में प्रथम जनसंख्या जागृति पर दूसरा युवाओं के लिये पाठयक्रम निर्माण तथा तीसरा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठयक्रम निर्माण करने एवं उसके प्रशिक्षण से सम्बन्धित था ।

अनुसंधानों में शहरी परिवेश में केवल धर्म, लिंग आयु, परिवार नियोजन एवं नियंत्रण के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति आदि विषय प्रमुख रहे । अध्ययनों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का क्षेत्र बहुत सीमित रहा । साथ ही साथ काम शिक्षा, पारिवारिक जीवन की शिक्षा, स्वास्थय शिक्षा, वातावरण प्रदूषण, विद्यालयों में जनसंख्या शिक्षा आदि को भुला दिया गया । पाठयक्रम के निर्माण में अध्यापकों के सुझावों एवं उनके सहयोग को उपेक्षित किया गया ।

विस्तृत अध्ययनों के अभाव के साथ-साथ अधिकांश अध्ययन किसी एक पक्ष पर तैयार किये गये हैं । अधिकांश अनुसंधानों में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है । केवल कुछ अनुसंधानों में ही अभिवृत्ति मापनी का विधिवत् प्रयोग किया गया है ।

विवाह की आदर्श आयु, बच्चों के मध्य उचित अन्तराल काम शिक्षा के संदर्भ में विचार आदि विषयों पर अध्ययनों में व्यापकता का अभाव रहा ।

उपर्युक्त अध्ययनों से प्रकट होता है कि जनसंख्या शिक्षा के प्रति ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्तियों एवं अभिमतों का एक ऐसा अध्ययन किया जाए जिसमें शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं जातिगत एवं विभिन्न अन्य विषय सम्मिलित हो । शिक्षकों की अभिवृत्ति का परिवेश, लिंग, धर्म, जाति, आयु, प्रशिक्षण, विवाह आदि के आधार पर अध्ययन किया जाए, जिसमें शिक्षकों के अभिमतों एवं अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन हो । विद्यालयों में जनसंख्या शिक्षा को उचित स्वरूप प्रदान किया जाये तथा जनसंख्या शिक्षा की कमियों को दूर किया जाये ।

वर्तमान समय तक जितने भी अध्ययन किये गये हैं उनमें ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों (जिनमें महिला व पुरूष दोनों शिक्षक सम्मिलित हैं) पर बहुत कम अध्ययन हुए हैं । जो अध्ययन हुए हैं वह बहुत छोटे स्तर पर है । जिसमें अप्रमापीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया है ।

पिछले अध्ययनों की अपेक्षा प्रस्तुत अध्ययन नवीन, उपादेय, व्यापक, वैधतायुक्त, प्रमापीकृत, संतुलित न्यादर्श पर आधारित है । इस अध्ययन में शिक्षा शोध के समस्त वैज्ञानिक आयामों का समावेश करने का प्रयास किया गया है । जो सम्भवतः जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम में कुछ सुधार कर सकेगा व जनसंख्या के प्रति शिक्षकों में व्यापकता का समावेश करने में सहायक सिद्ध होगा ।

-0-

अध्याय - तृतीय : शोध अभिकल्प एवं प्रविधियाँ

अध्याय - तृतीय

शोध अभिकल्प एवं प्राविधियाँ

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता ने अध्ययन कार्य की सुगमता के लिए शोध विधि का प्रयोग किया है । सर्वप्रथम शोध विधि का प्रस्तुतीकरण किया गया है । तत्पश्चात् न्यादर्श का चयन किया गया है तथा उपकरणों के संदर्भ में वर्णन किया गया है ।

1. **शोधविधि :**

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान युग में बढ़ती हुई जनसंख्या एवं उससे उत्पन्न समस्याओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक, शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना है ।

जनसंख्या तथ्य के निराकरण हेतु शोधकर्ता ने जनसंख्या शिक्षा एवं उससे सम्बन्धित क्षेत्रों पर आधारित कथनों की एक प्रश्नावली का निर्माण किया तथा उन कथनों पर उत्तर प्रदेश में मुरादाबाद मण्डल के तीनों जनपदों (मुरादाबाद, बिजनौर व रामपुर) के विभिन्न प्राथमिक से स्नातकोत्तर शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत 500 शिक्षक - शिक्षिकाओं का चयन कर उनके अभिमतों एवं अभिवृत्तियों का संग्रह किया । इस प्रकार जनंसख्या शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों, शिक्षिकाओं की अभिवृत्तियाँ ज्ञात की गयीं ।

शोधकर्ता ने मूलरूप से प्रस्तुत अध्ययन को 'वर्णनात्मक शोधविधि' पर आधारित किया है । कुछ अभिमतों को सुस्पष्ट एवं परिपुष्ट करने के लिए कुछ शिक्षक शिक्षिकाओं से प्रत्यक्ष रूप में मिलकर साक्षात्कार भी किया ।

ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति से संग्रहीत प्रश्नावलियों का विश्लेषण करने के लिए 'सांख्यिकीय विधि' का प्रयोग किया गया । इसके अन्तर्गत शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित विधियों को प्रयोग में लाया गया -

क- प्रदत्त की गणना, लेखा एवं पुनः आकड़ीकरण ।

ख- मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण

(टीमूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफमूल्य) की गणना सभी समूहों में की गई । प्रदत्त के रूप में लेखाबद्ध तकनीकी का प्रयोग भी किया गया ।

2. **न्यादर्श का चयन :**

शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के प्राथमिक पूर्व माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, माध्यमिक, स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से शिक्षक शिक्षिकाओं का चयन किया ।

शोधकर्ता के लिए यह कठिन था कि वह सीमित साधनों में समस्त जनसमूह से सम्पर्क स्थापित कर सके । शोधकर्ता ने पूर्ण जनसंख्या को लेकर अध्ययन व्यर्थ तथा असम्भव जानकर जनसंख्या के एक सीमित तथा उत्तरदायी न्यादर्श को आधार बनाकर ही परिणाम प्राप्त किया जाना उचित तथा सम्भव समझा ।

शोधकर्ता ने अध्ययन की समय, सीमा, वैद्धता एवं उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए जनसंख्या के सीमित तथा उत्तरदायी शिक्षक शिक्षिकाओं को न्यादर्श के रूप में चुनकर अध्ययन किया । शोधकर्ता की धारणा है कि शिक्षक वर्ग से अच्छा जनसंख्या शिक्षा के लिए कोई न्यादर्श नहीं है ।

शोधकर्ता ने इसके लिए उत्तर प्रदेश राज्य के मुरादाबाद मंडल को चयनित किया। मंडल के तीनों जनपदों (मुरादाबाद, बिजनौर व रामपुर) के सभी विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के नाम पर्चियों पर लिखे गये । तत्पश्चात् एक बालिका से उन पर्चियों को उठवाया । इस प्रकार रैंडम लोटरी मैथड का प्रयोग करते हुए तीनों जनपदों के 65 विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का चयन किया गया । इन विद्यालयों व महाविद्यालयों में पुरूष व महिला शिक्षक, अंग्रेजी व हिन्दी दोनों माध्यम से शिक्षण प्रदान करने वाले स्कूल शिक्षक तथा शासकीय एवं अर्द्धशासकीय विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के 500 शिक्षकों का चयन किया गया ।

अंतिम रूप में अध्ययन के लिए प्रयुक्त न्यादर्श में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की संख्या इस प्रकार रखी गयी -

सारिणी - 1-3

न्यादर्श के लिए चयनित विभिन्न स्तरों के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की संख्या का विवरण

शिक्षण संस्थाओं के प्रकार	शिक्षण संस्थाओं की संख्या
प्राथमिक विद्यालय	15
पूर्व माध्यमिक विद्यालय	15
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	12
माध्यमिक विद्यालय	15
स्नातक महाविद्यालय	05
स्नातकोत्तर महाविद्यालय	03
योग	65

सारिणी - 2-3

मुरादाबाद मंडल के तीनों जनपदों से चयनित ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक, शिक्षिकाओं की संख्या का विवरण

जनपद का नाम	ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की संख्या
मुरादाबाद	230
बिजनौर	170
रामपुर	100
योग	500

सारिणी - 3-3

न्यादर्श के लिए विभिन्न स्तरों की शिक्षण संस्थाओं से चयनित ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक शिक्षिकाओं की संख्या का विवरण

शिक्षण संस्थाओं के प्रकार	अध्यापकों की संख्या
प्राथमिक विद्यालय	100
पूर्व माध्यमिक विद्यालय	100
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	100
माध्यमिक विद्यालय	150
स्नातक महाविद्यालय	30
स्नातकोत्तर महाविद्यालय	20
योग	500

सारिणी - 4-3

न्यादर्श के लिए चयनित विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के प्रकार का विवरण

शिक्षण संस्थाओं का प्रकार	शिक्षण संस्थाओं की संख्या
बालक विद्यालय	38
बालिका विद्यालय	15
सहशिक्षा विद्यालय	12
योग	65
अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय	15
हिन्दी माध्यम के विद्यालय	50
योग	65

सारिणी 4 क्रमश : -

शिक्षण संस्थाओं का प्रकार	शिक्षण संस्थाओं की संख्या
शासकीय विद्यालय	15
अर्द्ध शासकीय विद्यालय	30
स्थायी मान्यता प्राप्त विद्यालय	13
अस्थायी मान्यता प्राप्त विद्यालय	07
योग	65

सारिणी - 5.3

न्यादर्श के लिए उपरोक्त शिक्षण संस्थाओं से चयनित शिक्षकों का विवरण

शिक्षण संस्थाओं के प्रकार	शिक्षकों की संख्या
बालक विद्यालय	250
बालिका विद्यालय	100
सहशिक्षा विद्यालय	150
योग	500
अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय	120
हिन्दी माध्यम के विद्यालय	380
योग	500
शासकीय विद्यालय	110
अर्द्धशासकीय विद्यालय	310
स्थायी मान्यता प्राप्त विद्यालय	35
अस्थायी मान्यता प्राप्त विद्यालय	45
योग	500

3. **उपकरणों का निर्माण :**

शोधकर्ता द्वारा अध्ययन के लिए ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का विकास निम्न प्रक्रिया अपना कर किया -

4. **कथनों का एकत्रीकरण :**

शोधकर्ता ने कथनों का एकत्रीकरण करने के लिए जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के साहित्य का अध्ययन किया । साथ ही साथ जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिरूचि परीक्षणों का भी अध्ययन एवं विश्लेषण किया । इसमें से शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं जातिगत तथा अन्य विषयों से सम्बन्धित 80 कथनों को एकत्र किया । कथनों का एकत्रीकरण करने के लिए शोधकर्ता ने कुछ विद्वत शिक्षक, शिक्षिकाओं, अभिभावकों एवं विषय विशेषज्ञों से भी विचार विनिमय किया तथा उनके बहुमूल्य विचारों का भी लाभ प्राप्त किया । साथ ही शोधकर्ता ने अपने अनुभव के आधार पर भी कुछ कथनों का निर्माण किया । इस प्रकार 135 कथनों का एकत्रीकरण किया गया ।

5. **कथनों का चयन :**

एकत्रित 135 कथनों में से उपयुक्त व समयानुकूल कथनों का चयन करने के लिए इस क्षेत्र में अनुभवी दस विशेषज्ञों की राय ली गयी तथा उन्हीं कथनों का चयन किया गया जिनके विषय में 90 प्रतिशत या इससे अधिक विशेषज्ञ सहमत थे । इस प्रकार प्रारम्भ में 80 कथन अभिवृत्ति प्रपत्र में रखे गये ।

विशेषज्ञों एवं शोधकर्ता ने इन समस्त कथनों को छः मूल्यों पर व्यवस्थित किया । यह छः मूल्य शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं जातिगत तथा अन्य हैं । यह परीक्षण प्रारम्भ में केवल 16 शिक्षकों पर किया गया, जिनमें 8 शिक्षक ग्रामीण परिवेश व 8 शिक्षक शहरी परिवेश के थे । प्रश्नावली में पक्ष एवं विपक्ष दोनों प्रकार के कथनों को सम्मिलित किया गया । शिक्षकों के लिये अपनी अभिवृत्ति व्यक्त करने के लिये क्रमशः पूर्ण सहमत, सहमत, तटस्थ, असहमत एवं पूर्ण असहमत के कालम रखे गये तथा साक्षात्कार सूची में शिक्षक, शिक्षिकाओं को अपनी पसंद की अभिवृत्ति वाले कालम में सही का निशान लगाने के निर्देश दिये गये ।

द्वितीय प्रशासन :

उपरोक्त बिधि द्वारा चयनित 80 कथनों को निर्देश के द्वारा परीक्षण में सम्मिलित किया गया तथा 16 शिक्षक, शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति पर पक्ष के कथनों पूर्ण सहमत, सहमत, तटस्थ असहमत एवं पूर्ण असहमत पर क्रमशः 4,3,2,1,0 तथा विपक्ष के कथनों पर क्रमशः 0,1,2,3,4 अंक प्रदान किये गये । प्रत्येक कथन पर उच्च एवं निम्न अंक वाले वर्गो की अभिवृत्ति श्रेणियों का वितरण बनाया गया तथा उनके मध्यमान अंक एवं मध्यमानों के अंतर को आधार मानकर उनमें पारस्परिक कन्तिक अनुपात निकाला गया । जिन कथनों का कन्तिक अनुपात 0.1 स्तर पर सार्थक मिला, केवल उन्हीं कथनों का चयन अन्तिम परीक्षण के लिये किया गया । इस प्रकार अंतिम साक्षात्कार अनुसूची में 60 कथन कुल छः मूल्यों में क्रमबद्ध करके सम्मिलित किये गये । साक्षात्कार अनुसूची में कुछ कथन पक्ष के तथा कुछ विपक्ष के रखे गये । जिन्हें सारिणी 6-3 में दर्शाया गया है -

सारिणी - 6-3

साक्षात्कार अनुसूची में सम्मिलित पक्ष एवं विपक्ष के कथनों की क्रम संख्या

पक्ष के कथनों की संख्या	1,3,4,5,6,8,9,11,12,16,17,18,20,21,22,23,24,26,27,28,29,30,32,36, 38,40,42,43,45,47,49,50,51,52,53,54,55,56,57,58,60	
विपक्ष के कथनों की संख्या	2,7,10,13,14,15,19,25,31,33,34,35,37,39,41,44,46,48,59	
कुल योग	पक्ष के कथन	विपक्ष के कथन
	41	19

इस प्रकार 60 कथनों का गहनतापूर्वक विश्लेषण करने पर यह सुस्पष्ट हो गया कि इन कथनों में स्वतः ही जनसंख्या शिक्षा के समस्त क्षेत्रों का उचित प्रतिनिधित्व है । विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों व उपक्षेत्रों से सम्बन्धित कथनों के प्रतिनिधित्व को सारिणी संख्या 7.3 में प्रदर्शित किया गया है ।

सारिणी - 7.3

प्रस्तावित अध्ययन में सम्मिलित मूल्यों का वर्गीकरण

विभिन्न मूल्य	कथनों की क्रम संख्या	योग
शैक्षिक मूल्य	1,2,3,4,5,6,7,8,9,10	10
सामाजिक मूल्य	11,12,13,14,15,16,17,18,19,20	10
आर्थिक मूल्य	21,22,23,24,25,26,27,28,29,30	10
राजनीतिक मूल्य	31,32,33,34,35,36,37,38,39,40	10
धार्मिक एवं जातिगत मूल्य	41,42,43,44,45,46,47,48,49,50	10
अन्य मूल्य	51,52,53,54,55,56,57,58,59,60	10

6. विश्वसनीयता :

जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति की विश्वसनीयता Split half Method (अर्धविच्छेदी विधि) तथा Test- Retest Method द्वारा ज्ञात की गई ।

अर्द्धविच्छेदी विधि में पूरे परीक्षण को दो भागों में बाँटा गया । पहले भाग में सभी विषय एवं दूसरे भाग में सभी सम संख्या के कथन तथा प्रश्न रखे गये । इस प्रकार से प्राप्त दोनों भागों के कथनों के मध्यमान अंक निकाले गये । इसी आधार पर प्रोडेक्ट सह सम्बन्ध निकाला गया जो 0.58 व .52 ज्ञात हुआ । इसी को विश्वसनीयता गुणांक के रूप में लिया गया ।

7. परीक्षण की वैधता :

राक्सिन तथा हारक्स के शब्दों में - 'परीक्षण में वैधता तभी होती है जब वह वास्तव में उसी बात का मापन करता है, जिसके मापन की उससे आशा की जाती है ।

परीक्षण में निम्नलिखित प्रकार की वैधता निकाली गयी -

8. **अंकित वैधता :**

अंकित वैधता में परीक्षण स्वयं अपने पदों के द्वारा ही वैध प्रतीत होते हैं । इस प्रकार की वैधता परीक्षण के प्रश्नों के रूप को देखकर ही ज्ञात की जा सकती है ।

प्रस्तुत परीक्षण जब विशेषज्ञों को दिया गया तो उन्होंने एक मत से यह स्वीकार किया कि यह परीक्षण देखने से ही जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति परीक्षण लगता है । इससे इसमें अंकित वैधता है ।

विषयवस्तु वैधता :

परीक्षण की विषयवस्तु वैधता से यह तात्पर्य है कि हमारे परीक्षण का प्रत्येक पद उस ज्ञान एवं निष्पादन का न्यादर्श होना चाहिये, जिस उद्देश्य हेतु परीक्षण की रचना हो रही है ।

प्रस्तुत परीक्षण जनसंख्या शिक्षा के सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है । परीक्षण में जनसंख्या शिक्षा को पूर्ण व अंश रूप से प्रभावित करने वाले सभी क्षेत्र जैसे - सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक व जातिगत तथा अन्य मूल्य का उचित समावेश है । अतः यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत परीक्षण में विषय वस्तु वैधता है ।

मानक :

किसी भी परीक्षण पर मानक वह प्राप्तांक है जिसे किसी विशेष समूह द्वारा प्राप्त किया गया हो । अन्य शब्दों में 'मानक से तात्पर्य कार्य के उस नमूने से है, जिसे समस्त समूह के द्वारा प्रदर्शित किया गया हो । इस परीक्षण के आधार पर तुलना के लिए तीक्ष्ण अंक निकाले गये ।

9. **समंक संग्रह :**

जनसंख्या विशेषज्ञों से निर्मित साक्षात्कार अनुसूची को शोधकर्ता ने मुरादाबाद मण्डल में तीनों जनपदों के चुने हुए विद्यालयों में स्वयं जाकर वितरित किया, तथा शिक्षक-शिक्षिकाओं से अभिवृत्ति मापनी में अपनी अभिवृत्ति प्रकट करने की प्रार्थना की । इस प्रकार शोधकर्ता ने चयनित विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकाओं को 560 साक्षात्कार अनुसूची प्रपत्र वितरित किये । इन प्रपत्रों को

दो सप्ताह बाद प्रत्येक विद्यालय में जाकर शिक्षकों से एकत्रित किया । वितरित किये गये प्रपत्रों में से 532 प्रपत्र एकत्र हुए जिनमें से 32 प्रपत्र अपूर्ण अवस्था में थे । शोधकर्ता ने अपने न्यादर्श के अनुसार 500 शिक्षक शिक्षिकाओं के प्रपत्रों को अपने अध्ययन में सम्मिलित किया ।

अंकन कार्य :

शोधकर्ता ने विद्यालयों के अनुसार प्रपत्रों को व्यवस्थित किया । तत्पश्चात् सभी प्रपत्रों का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया कि कहीं केवल अनुमान के आधार पर तो प्रपत्रों को पूर्ण नहीं किया गया है, अथवा प्रपत्र में किसी शिक्षक-शिक्षिका ने विशेष डिजाइन से तो उत्तर नहीं दिये हैं । या अपने सम्बन्ध में गलत जानकारी तो नहीं दी है ।

शोधकर्ता ने शिक्षक, शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन जनसंख्या विशेषज्ञों की राय से आठ समूहों में किया ।

सारिणी - 8.3

परिवेश के आधार पर न्यादर्श के लिए चयनित शिक्षकों की वर्गीकरण तालिका

	संख्या	प्रतिशत
ग्रामीण शिक्षक	250	50
शहरी शिक्षक	250	50
योग	500	

सारिणी - 9.3

न्यादर्श के लिये चयनित यौन भेद के आधार पर शिक्षकों की वर्गीकरण तालिका

	संख्या	प्रतिशत
पुरूष शिक्षक	350	70
महिला शिक्षक	150	30
योग	500	

सारिणी - 10.3

न्यादर्श के लिये चयनित प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों की वर्गीकरण तालिका

	संख्या	प्रतिशत
प्रशिक्षित शिक्षक	341	68.2
अप्रशिक्षित शिक्षक	159	31.8
योग	500	

सारिणी - 11.3

न्यादर्श के लिये चयनित शिक्षकों की जातिगत आधार पर वर्गीकरण तालिका

	संख्या	प्रतिशत
सवर्ण वर्ग	301	60.2
पिछड़ा वर्ग	134	26.8
अनुसूचित वर्ग	65	13
योग	500	

सारिणी - 12.3

न्यादर्श के लिए चयनित शिक्षकों की धर्म के आधार पर वर्गीकरण तालिका

	संख्या	प्रतिशत
हिन्दू शिक्षक	300	60
सिख शिक्षक	40	8
ईसाई शिक्षक	24	4.8
मुस्लिम शिक्षक	136	27.2

सारिणी - 13.3

न्यादर्श के लिए चयनित शिक्षकों की आयु वर्ग के आधार पर वर्गीकरण तालिका

	संख्या	प्रतिशत
प्रौढ़ शिक्षक	240	48
युवा शिक्षक	260	52
योग	500	

सारिणी - 14.3

न्यादर्श के लिए चयनित शिक्षकों की विषय संवर्ग के आधार पर वर्गीकरण तालिका

	संख्या	प्रतिशत
साहित्यिक संवर्ग के शिक्षक	374	74.8
विज्ञान संवर्ग के शिक्षक	126	25.2
योग	500	

सारिणी - 15.3

न्यादर्श के लिए चयनित शिक्षकों की वैवाहिक स्थिति के आधार पर वर्गीकरण

	संख्या	प्रतिशत
विवाहित शिक्षक	393	78.6
अविवाहित शिक्षक	107	21.4
योग	500	

10. प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :

शोधकर्ता द्वारा अपने शोध कार्य हेतु मुख्य रूप से निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों को प्रयुक्त किया गया है -

(अ) मध्यमान ज्ञात करने के लिये प्रयुक्त सूत्र :

(i) एकैक अवलोकन श्रेणी के लिए :

$$\overline{X} = \frac{\sum x}{n}$$

अथवा

$$\overline{X} = A + \frac{\sum d}{n}$$

जहाँ $d = x - A$

A = मूल बिन्दु में परिवर्तन है।

(ii) खण्डित एवं अखण्डित श्रेणी में :

$$\overline{X} = \frac{\sum fx}{\sum f}$$

अथवा

$$\overline{X} = A + \frac{\sum fd}{\sum f}$$

(ब) प्रमाणिक विचलन के लिए प्रयुक्त सूत्र :

(i) एकैक अवलोकन श्रेणी के लिए:

$$\sigma = +\sqrt{\frac{\sum(x-\overline{x})^2}{n}}$$

अथवा

$$\sigma = +\sqrt{\frac{\sum d^2}{n} - \left(\frac{\sum d}{n}\right)^2}$$

(ii) खण्डित एवं अखण्डित श्रेणी के लिए:

$$\sigma = +\sqrt{\frac{\sum f(x-\overline{x})^2}{\sum f}}$$

अथवा

$$\sigma = +\sqrt{\frac{\sum fd^2}{\sum f} - \left(\frac{\sum fd}{\sum f}\right)^2}$$

(स) समान्तर माध्य की मानक त्रुटि :

$$S.E.(\overline{X}) = \frac{\text{प्रमाणिक विचलन}}{\sqrt{n}}$$

जहाँ n = कुल अवलोकनों की संख्या है।

(द) 't' परीक्षण

(i) स्टुडैण्ट 't' परीक्षण

$$t = \frac{|\bar{x} - \mu|}{\sqrt{s/\sqrt{n}}}$$

जहाँ :

$\bar{x}$ = प्रतिदर्श माध्य,

μ = समष्टि माध्य, एवं

$$s = \frac{\Sigma (x - \bar{x})^2}{n-1}$$

n = निरीक्षणों की संख्या है।

't' की d.f. $= n-1$

(ii) फिशर 't' परीक्षण

$$t = \frac{|\bar{x}_1 - \bar{x}_2|}{\sqrt{s_c^2 \left(\frac{1}{n_1} + \frac{1}{n_2}\right)}}$$

जहाँ:

$\bar{x}_1$ = एक प्रतिदर्श का माध्य,

$\bar{x}_2$ = दूसरे प्रतिदर्श का माध्य,

$$s_c^2 = \frac{(n_1-1)s_1^2 + (n_2-1)s_2^2}{n_1+n_2-2},$$

n_1 = एक प्रतिदर्श में निरीक्षणों की संख्या, एवं

n_2 = दूसरे प्रतिदर्श में निरीक्षणों की संख्या है।

't' की d.f. $= n_1+n_2-2$

(च) (iii) प्रसरण अनुपात परीक्षण

$$F = \frac{S_1^2}{S_2^2}$$

जहाँ:

$$S_1^2 = \frac{\Sigma (x - \bar{x})^2}{n_1-1}$$

$$S_2^2 = \frac{\Sigma (y - \bar{y})^2}{n_2-1}$$

'F' की d.f. $= (n_1-1, n_2-1)$

n_1 = एक प्रतिदर्श में निरीक्षणों की संख्या एवं

n_2 = दूसरे प्रतिदर्श में निरीक्षणों की संख्या है।

शोध प्रबन्धा में समस्त सांख्यिकी गणना कौंसिल फॉर सोसल डबलपमेंट (सी0एस0डी0) 53 लोदी एस्टेट, नई दिल्ली (डिपार्टमेंट ऑफ गर्वनमेंट) द्वारा की गयी है ।

-0-

अध्याय - चतुर्थ : आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय - चतुर्थ

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1- प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

अध्याय चार में शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण व व्याख्या की गई है । प्रस्तुत अध्याय में शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्राप्त अंकों की गणना की गयी है । जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्राप्त अंकों छः मूल्यों पर संग्रहीत किया गया है । ये छः मूल्य है शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक व जातिगत एवं अन्य । इसके उपरान्त शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का विवेचन उनकी वैयक्तिकता के आधार पर प्रस्तुत किया गया है ये वैयक्तिकता है -- परिवेश, लिंग, प्रशिक्षण, जाति, धर्म, आयु, वैवाहिक स्थिति । इन सभी वैयक्तिक आधारों को समूहों में विभाजित किया गया है ।

संख्या के आधार पर प्राप्त सभी समूहों के आँकड़ों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य व प्रसरण अनुपात परीक्षण एफ मूल्य कम्प्यूटर द्वारा ज्ञात किये गये हैं ।

ज्ञात सांख्यिकीय गणना के आधार पर प्रत्येक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का विश्लेषण किया गया है तथा जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्तियों से सम्बन्धित उत्तरदायी कारकों का विश्लेषण भी किया गया है । यह जानने का प्रयास भी किया गया है कि शिक्षकों की प्राप्त अभिवृत्ति अंकों के लिये कौन-कौन से तथ्य उत्तरदायी है । अध्याय के अंत में परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है ।

अध्याय में प्रस्तुत सभी सारिणियों में ग्रामीण के लिये (ग्रा0) शहरी के लिये (श0) पुरूष के लिये (पु0) महिला के लिये (म0) कला के लिये (क0) विज्ञान के लिये (वि0) प्रशिक्षित के लिये (प्र0) अप्रशिक्षित के लिये (अप्र0), शिक्षक के लिये (शि0) समस्त के लिये (स0) शब्द का प्रयोग स्थानाभाव के कारण किया गया है ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ग्रा0पु0शि0	200	26.48	6.899	.563	.51	.51	1.12
	श0पु0शि0	150	26.85	6.523	.461			
2.	ग्रा0म0शि0	50	26.50	6.169	.617	.14	.15	1.66
	श0म0शि0	100	26.64	4.793	.678			
3.	ग्रा0क0शि0	174	26.27	6.181	.469	.26	.26	1.13
	श0क0शि0	200	26.10	6.581	.465			
4.	ग्रा0वि0शि0	76	28.02	6.136	.704	.01	.01	1.13
	श0वि0शि0	50	28.02	6.536	.924			
5.	समस्त ग्रा0शि0	250	26.48	6.604	.418	.56	.56	1.13
	समस्त श0शि0	250	26.80	6.208	.393			

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति

सारिणी 1.4 में शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) तथा प्रसरण अनुपात परीक्षण एफ मूल्य को दर्शाया गया है ।

ग्रामीण व शहरी, पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान क्रमशः (26.48 व 26.85) तथा प्रमाणिक विचलन (6.899 व 6.523) ज्ञात हुए । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त व पृथक टी मूल्य निकाले गये जो .51 आये, जिनमें सार्थकता का स्तर नही है । अतः यह कहा जा सकता है, कि वर्णित समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह के मध्यमान (26.50 व 26.64) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.14 व .15) रहे, जो दोनों मानक स्तर 0.05 व 0.01 पर सार्थक नहीं है । मध्यमान अंकों के आधार पर भी समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में शैक्षिक मूल्य के आधार पर एकरूपता है ।

कला संवर्ग के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमानों में भी विशेष अन्तर नही है । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य भी सार्थकता की कसौटी पर नहीं है ।

विज्ञान वर्ग के ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह में शैक्षिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (28.02 तथा संयुक्त व पृथक परीक्षणों में टी मूल्य .01 रहे । जो सार्थकता के स्तर पर नही है ।

समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्यों में एकरूपता है । समूह के मध्यमान क्रमशः (26.48 व 26.80), टी मूल्य .56 हैं । अतः समूह में शैक्षिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत शिक्षकों का बड़ी मात्रा में शहर के अन्दर निवास करना मानता है ।

सारिणी 1.4 के सभी समूहों में शैक्षिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एफ मूल्यों को भी प्रदर्शित किया गया है । सारिणी के अवलोकन से विदित है कि किसी भी समूह के एफ मूल्य में सार्थक अन्तर नही है । अतः सभी समूहों में, सांख्यिकीय रूप से, शैक्षिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में, समरूपता का समावेश है ।

सारिणी - 2.4

सामाजिक मूल्य के आधारपर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ग्रा0पु0शि0	200	25.75	5.138	.363	.22	.21	1.35
	श0पु0शि0	150	25.88	5.966	.487			
2.	ग्रा0म0शि0	50	25.64	5.213	.737	1.07	1.11	1.19
	श0म0शि0	100	26.67	5.685	.569			
3.	ग्रा0क0शि0	174	25.67	4.893	.371	.23	.24	1.45
	श0क0शि0	200	25.81	5.896	.417			
4.	ग्रा0वि0शि0	76	25.84	5.706	.655	1.85	1.87	1.08
	श0वि0शि0	50	27.74	5.484	.776			
5.	समस्त ग्रा0शि0	250	25.72	5.143	.325	.95	.95	1.30
	समस्त श0शि0	250	26.19	5.857	.370			

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सामाजिक मूल्य के आधार पर सारिणी 2.4 में विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक टीमूल्य वएफ मूल्यों को दर्शाया गया है ।

ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (25.75 व 25.88), प्रमाणिक विचलन (5.138 व 5.966) है । समूह की जनसख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टीमूल्य क्रमशः .22 व .21 रहे। टीमूल्यों से स्पष्ट है कि समूह में सार्थकता का स्तर नहीं है । अतः उपरोक्त मूल्य पर इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समानता है ।

ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः 25.64 तथा 26.67 हैं । संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.07 व 1.11 हैं । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि उपरोक्त लिखित समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

कला संवर्ग के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान (25.67 व 25.81) हैं । समूह के टी मूल्य .23 व .24 रहे ।

विज्ञान के ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (25.84 व 27.74), प्रमाणिक विचलन (5.706 व 5.484) रहे । अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये संयुक्त व पृथकटी मूल्य 1.85 व 1.87 ज्ञात किये गये हैं । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही-है ।

समस्त ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 25.72 व 26.19, प्रमाणिक विचलन (5.143 व 5.857) हैं । समूह की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाला गया संयुक्त व पृथक टी मूल्य .95 रहा । टी मूल्य से स्पष्ट है कि इस समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की एक जैसी सामाजिक परम्पराओं को मानता है ।

सारिणी - 3.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमापिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ग्रा0पु0शि0	200	29.01	7.013	.573	3.83xx	3.73xx	1.47
	श0पु0शि0	150	31.63	5.777	.408			
2.	ग्रा0म0शि0	50	31.13	5.904	.590	.99	1.01	1.15
	श0म0शि0	100	32.12	5.517	.780			
3.	ग्रा0क0शि0	174	31.58	5.710	.433	4.08xx	4.12xx	1.37
	श0क0शि0	200	28.94	6.678	.472			
4.	ग्रा0वि0शि0	76	32.06	5.760	.661	1.44	1.47	1.22
	श0वि0शि0	50	33.52	5.223	.739			
5.	समस्त ग्रा0शि0	250	29.86	6.661	.421	3.37xx	3.37xx	1.36
	समस्त श0शि0	250	31.73	5.718	.362			

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

सारिणी 2.4 में सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रसरण अनुपात परीक्षण को दर्शाया गया है । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सांख्यिकीय रूप से एकरूपता है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

आर्थिक मूल्य पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व एफ मूल्यों को सारिणी 3.(4) में दर्शाया गया है ।

ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक क्रमशः (29.01 व 31.63), प्रमाणिक विचलन (7.013 व 5.777) ज्ञात किये गये । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य 3.83 व 3.73 रहे । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि आर्थिक मूल्य पर शहरी पुरूष शिक्षक, ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण शहरी शिक्षकों का जनसंख्या शिक्षा के प्रति गहन आर्थिक चिन्तन को मानता है ।

महिला शिक्षकों के ग्रामीण व शहरी परिवेश के आधार पर आर्थिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस समूह के मध्यमान 31.13 व 32.12 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .99 व 1.01 हैं ।

कला संवर्ग के ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । वर्णित समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (31.58 व 28.94), प्रमाणिक विचलन 5.710 व 6.678 हैं । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य 4.08 व 4.12 हैं । मध्यमान अंको से स्पष्ट है, कि ग्रामीण कला शिक्षक, शहरी कला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण कला शिक्षकों का अवकाश दिवसों में कृषि कार्य में संलग्न होना मानता है ।

सारिणी - 4.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ग्रा0पु0शि0	200	21.83	5.697	.403	1.97x	1.97x	1.06
	श0पु0शि0	150	23.02	5.531	.452			
2.	ग्रा0म0शि0	50	23.40	4.204	.595	.76	.77	1.07
	श0म0शि0	100	23.97	4.354	.435			
3.	ग्रा0क0शि0	174	21.68	5.031	.381	2.74xx	2.74xx	1.06
	श0क0शि0	200	23.13	5.177	.366			
4.	ग्रा0वि0शि0	76	23.21	6.240	.716	1.23	1.30	1.76
	श0वि0शि0	50	24.48	4.700	.665			
5.	समस्त ग्रा0शि0	250	22.14	5.460	.345	2.66xx	2.66xx	1.14
	समस्त श0शि0	250	23.40	5.105	.323			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक 32.06 व 33.52 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.44 व 1.47 हैं, जिनमें सार्थकता का कोई स्तर नही है ।

सारिणी में समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति को आर्थिक मूल्य पर अवलोकित करने से यह विदित है, कि ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति के मध्यमान (29.86 व 31.73), प्रमाणिक विचलन (6.661 व 5.718) हैं । संयुक्त व पृथक टी मूल्य दोनों परीक्षणों में 3.37 रहे, जिनमें 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। मध्यमान अंकों के आधार पर स्पष्ट है कि ग्रामीण शिक्षकों से शहरी शिक्षक अधिक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण शहरी शिक्षकों का आर्थिक मानदण्डों पर अधिक सजगता का स्तर है ।

सारिणी 3.4 एफ में सभी समूहों के एफमूल्य प्रदर्शित किये गये हैं । सारिणी के अवलोकन से विदित है कि किसी भी समूह में एफमूल्य सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों में आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के औसत मूल्यों में संकेन्द्रण है ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 4.4 में विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक टी मूल्य व एफ मूल्य को दर्शाया गया है ।

ग्रामीण पुरूष शिक्षक व शहरी पुरूष शिक्षक समूह में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों के मध्यमान अंक क्रमशः (21.83 व 23.02) हैं । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.97 रहे । मध्यमान अंकों के आधार पर विदित है कि ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति उच्च स्तर की है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा शहरी पुरूष शिक्षकों का राजनीतिक साहित्य को पढ़ना व राजनीतिक गतिविधियों में अधिक भाग लेना मानता है ।

ग्रामीण महिला शिक्षकों व शहरी महिला शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । तथापि शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक अधिक हैं ।

कला संवर्ग के ग्रामीण शिक्षकों से शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति श्रेष्ठ है । इस समूह में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (21.68 व 23.13), प्रमाणिक विचलन (5.031 व 5.177) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य दोनों परीक्षणों में 2.74 ज्ञात हुए । शोधकर्ता शहरी कला शिक्षकों की इस विषय पर धनात्मक अभिवृत्ति का कारण शहरी कला शिक्षकों का अवकाश के क्षणों में राजनीतिक गतिविधियों में अधिक भाग लेना तथा ग्रामीण कला शिक्षकों का इन दिवसों को कृषि कार्य में व्यतीत करना तथा राजनीतिक गतिविधियों को सीमित रखना हो सकता है ।

ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों में राजनीतिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । इस समूह के मध्यमान अंक 23.21 व 24.48 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.23 व 1.30 है ।

समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की राजनीतिक आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक क्रमशः (22.14 व 23.40) हैं । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य दोनों परीक्षणों पर 2.66 रहे । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह की अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों के आधार पर स्पष्ट है कि ग्रामीण शिक्षकों से शहरी शिक्षक अधिक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । इसका कारण शहरों में मीडिया व राजनीतिक गतिविधियों की प्रधानता हो सकता है ।

सारिणी 4 में सभी समूहों के एफ मूल्यों को भी प्रदर्शित किया गया है । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी भी समूह के एफ मूल्य में सार्थकता का स्तर नही है । अतः राजनीतिक मूल्य पर समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के पारितः संकेन्द्रण समान है ।

सारिणी - 5.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ग्रा0पु0शि0	200	23.83	5.349	.378	.66	.67	1.28
	श0पु0शि0	150	24.19	4.737	.387			
2.	ग्रा0म0शि0	50	23.92	4.275	.605	3.93^{xx}	4.00^{xx}	1.10
	श0म0शि0	100	26.93	4.493	.449			
3.	ग्रा0क0शि0	174	23.97	5.101	.387	2.04^{x}	2.03^{x}	1.14
	श0क0शि0	200	25.01	4.770	.337			
4.	ग्रा0वि0शि0	76	23.56	5.267	.604	3.01^{xx}	3.05^{xx}	1.14
	श0वि0शि0	50	26.38	4.928	.697			
5.	स0ग्रा0शि0	250	23.84	5.145	.325	3.23^{xx}	3.23^{xx}	1.14
	स0श0शि0	250	25.28	4.823	.305			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात एफ मूल्य को सारिणी 5.4में दर्शाया गया है ।

सारिणी में प्रदर्शित प्रथम समूह के मध्यमान (23.83 व 24.19) हैं । समूह में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य .66 व .67 रहे, जो सार्थकता की कसौटी पर नहीं हैं । अतः धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

ग्रामीण महिला शिक्षक व शहरी महिला शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर सार्थक अन्तर है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । इस समूह के मध्यमान अंक 23.92 व 26.93 हैं । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः 3.93 व 4.00 हैं । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि शहरी परिवेश में रहने वाली महिला शिक्षक ग्रामीण परिवेश की महिला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं । सम्भवतः इसका कारण शहरी परिवेश में रहने वाली महिला शिक्षकों के जातिगत एवं धार्मिक बन्धनों की शिथिलता तथा ग्रामीण परिवेश की महिला शिक्षकों में जातिगत एवं धार्मिक सुदृढ़ता हो सकता है ।

ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः 23.97 व 25.01 हैं । समूह में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.04 व 2.03 हैं । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों के आधार पर विदित है, कि ग्रामीण कला शिक्षकों से शहरी कला शिक्षक धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर अधिक अनुकूल व सार्थक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर विज्ञान वर्ग के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के लिये निकाले गये मध्यमान 23.56 व 26.38 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 3.01 व 3.05 है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट विदित है कि उपरोक्त लिखित मूल्य पर विज्ञान के शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति विज्ञान के ग्रामीण शिक्षकों से कहीं अधिक उच्च व

सारिणी - 6.4

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ग्रा0पु0शि0	200	32.34	4.251	.301	$2.46^{\times}$	$2.40^{\times}$	1.44
	श0पु0शि0	150	31.10	5.108	.417			
2.	ग्रा0म0शि0	50	31.56	5.027	.711	1.31	1.32	1.03
	श0म0शि0	100	32.71	5.092	.509			
3.	ग्रा0क0शि0	174	32.13	4.633	.351	1.58	1.60	1.32
	श0क0शि0	200	31.31	5.330	.377			
4.	ग्रा0वि0शि0	76	32.28	3.908	.448	1.66	1.66	1.03
	श0वि0शि0	50	33.48	3.960	.560			
5.	समस्त ग्रा0शि0	250	32.18	4.418	.279	1.02	1.02	1.36
	समस्त श0शि0	250	31.74	5.152	.326			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

धनात्मक है । इसका कारण शहरी विज्ञान शिक्षकों के उदारवादी धार्मिक व जातिगत बन्धन हो सकते हैं ।

न्यादर्श में चयनित समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान (23.84 व 25.28), प्रमाणिक विचलन 5.145 व 4.823 रहे । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य 3.23 दोनों परीक्षणों से ज्ञात हुआ । टी मूल्य के आधार पर समूह में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, समस्त ग्रामीण शिक्षकों से समस्त शहरी शिक्षक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सारिणी 5 में धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर सभी समूहों के ज्ञात किये गये एफ मूल्यों को दर्शाया गया है । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के विभिन्न समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टि से समानता है ।

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 6.4में विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण को दर्शाया गया है ।

ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक क्रमशः (32.34 व 31.10) है । समूह के प्रमाणिक विचलन (4.251 व 5.108) ज्ञात हुए । समूह की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.46 व 2.40) रहे । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों के आधार पर स्पष्ट है, ग्रामीण पुरूष शिक्षक, शहरी पुरूष शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

अन्य मुल्य पर ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमानों व टी मूल्यों में समरूपता हैं ।

ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक समूह व इसी समूह के विज्ञान शिक्षकों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थकता का स्तर नही है । दोनों समूहों के मध्यमान में एकरूपता का स्तर है ।

सारिणी - 7.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ग्रा0पु0शि0	200	159.82	28.121	2.296	.95	.91	1.82
	श0पु0शि0	150	162.30	20.833	1.473			
2.	ग्रा0म0शि0	50	163.08	16.888	2.388	1.37	1.47	1.57
	श0म0शि0	100	167.78	21.178	2.118			
3.	ग्रा0क0शि0	174	161.42	19.594	1.485	.44	.45	1.85
	श0क0शि0	200	160.35	26.619	1.882			
4.	ग्रा0वि0शि0	76	164.82	21.082	2.418	2.37×	2.42×	1.21
	श 0वि0शि0	50	173.62	19.160	2.710			
5.	समस्त ग्रा0शि0	250	162.46	20.077	1.270	.26	.26	1.65
	समस्त श0शि0	250	163.00	25.922	1.633			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान 32.18 व 31.74 ज्ञात हुए । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.02) ज्ञात हुए, जिनमें कोई सार्थकता का स्तर नही है । अतः इस समूह की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

सारिणी 6 में सभी समूहों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए अन्य मूल्य की जनसंख्या अभिवृत्ति के एफमूल्यों को भी दर्शाया गया है । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों में सांख्यिकीय दृष्टि से अन्य मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई भिन्नता नहीं है ।

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सभी मूल्यों के योग पर ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की सारिणी 7.4 देखने पर विदित होता है, कि ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान (159.82 व 162.30), प्रमाणिक विचलन (28.121 व 20.833) हैं । समूह के टी मूल्यों में भी समानता है । समूह में सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर नहीं है ।

ग्रामीण महिला शिक्षक व शहरी महिला शिक्षकों की मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया । समूह के मध्यमान अंक (163.08 व 167.78) हैं । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण महिला शिक्षकों से शहरी महिला शिक्षक कुछ अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं ।

कला वर्ग के ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के अन्य मूल्य पर मध्यमान अंकों में समानता है । समूह के टी मूल्य भी सार्थकता की कसौटी पर नहीं हैं ।

विज्ञान के ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक (164.82 व 173.62) हैं । सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टीमूल्यों में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के टी मूल्य 2.37 व 2.42 रहे । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है । शोधकर्ता इसका कारण विज्ञान के शहरी शिक्षकों का अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण मानता है ।

सारिणी - 8.4

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्र0पु0शि0	253	28.18	6.856	.431	7.24xx	8.90xx	2.68
	अप्र0पु0शि0	97	22.79	4.191	.425			
2.	प्र0म0शि0	88	28.31	5.260	.561	4.84xx	4.81xx	1.08
	अप्र0म0शि0	62	24.03	5.459	.693			
3.	प्र0क0शि0	252	27.74	6.620	.417	7.25xx	8.30xx	2.26
	अप्र0क0शि0	122	22.95	4.404	.399			
4.	प्र0वि0शि0	89	29.56	5.876	.623	4.60xx	4.67xx	1.07
	अप्र0वि0शि0	37	24.32	5.682	.934			
5.	प्र0ग्रा0शि0	169	28.43	6.337	.487	.60	.60	1.09
	प्र0श0शि0	172	28.01	6.619	.505			
6.	अप्र0ग्रा0शि0	81	23.41	4.289	.477	.39	.38	1.47
	अप्र0श0शि0	78	23.12	5.206	.589			
7.	समस्त प्र0शि0	341	28.21	6.475	.351	8.61xx	9.61xx	1.86
	समस्त अप्र0शि0	159	23.27	4.748	.377			

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान एक जैसे रहे । समूह के टी मूल्यों में भी कोई सार्थकता का स्तर नही है । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति योग मूल्य के आधार पर समान है ।

सारिणी 7.4 में सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति को विभिन्न समूहों में इस प्रकार दिखाया गया है, कि विभिन्न समूहों में कहाँ तक सार्थक अन्तर है । सारिणी से विदित होता है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों में सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के पारितः समान संकेन्द्रण हैं ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 8.4 में शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक टी मूल्यों को दर्शाया गया है ।

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (28.18 व 22.79), तथा प्रमाणिक विचलन (6.856 व 4.191) ज्ञात हुए । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त व पृथक टी मूल्य ज्ञात किये गये, जो क्रमशः 7.24 व 8.90 रहे । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि प्रशिक्षित पुरूष शिक्षक, अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

प्रशिक्षित महिला व अप्रशिक्षित महिला शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर हैं । समूह के मध्यमान क्रमशः (28.31 व 24.03) तथा संयुक्त पृथक टी मूल्य 4.84 व 4.81 रहे । मध्यमान अंकों से परिलक्षित है, कि प्रशिक्षित महिला शिक्षक, अप्रशिक्षित महिला शिक्षकों से शैक्षिक मूल्य पर कही अधिक सार्थक व अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं । शोधकर्ता इसका कारण प्रशिक्षित महिला शिक्षकों का अधिक उत्तरदायित्व पूर्ण शिक्षण को मानता है ।

कला संवर्ग के प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता की दृष्टि से 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान

अंक 27.74 व 22.95 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 7.25 व 8.30 ज्ञात हुए । अतः कला वर्ग के प्रशिक्षित शिक्षक इसी वर्ग के अप्रशिक्षित शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित विज्ञान शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक क्रमशः 29.56 व 24.32 ज्ञात हुए। समूह के टी मूल्यों में 0.01 स्तर पर सार्थकता पायी गई जो क्रमशः 4.60 व 4.67 रहे । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि प्रशिक्षित विज्ञान शिक्षक, अप्रशिक्षित विज्ञान शिक्षकों से कहीं अधिक उच्च व धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

प्रशिक्षित ग्रामीण व प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । इस समूह के मध्यमान अंकों में भी समरूपता का समावेश है । यही स्थिति अप्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की रही । इन दोनों समूहों में सार्थक अन्तर न होने का कारण शोधकर्ता दोनों समूह के शिक्षकों का एक जैसा शैक्षिक स्तर व जनसंख्या शिक्षा के विषय में एक जैसे विचारों को मानता है ।

समस्त प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के शैक्षिक मूल्य पर मध्यमान अंक (28.21 व 23.27), प्रमापिक विचलन (6.475 व 4.748) ज्ञात हुए । समूह में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य 8.61 व 9.61 रहे जिनमें सार्थकता के स्तर पर 0.01 का अन्तर है । अतः प्रशिक्षित शिक्षक, अप्रशिक्षित शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण प्रशिक्षित शिक्षकों का राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के विषय में अधिक परिपक्त व जागरूक होना मानता है ।

सारिणी 8.4में सभी समूहों में प्रसरण के आधार पर सार्थक अन्तर ज्ञात किये गये हैं । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह के एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों में शैक्षिक मूल्य पर औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के पारितः समान संकेन्द्रण हैं ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों की

सारिणी - 9.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्र0पु0शि0	253	26.94	5.529	.348	6.66xx	7.54xx	1.76
	अप्र0पु0शि0	97	22.82	4.163	.423			
2.	प्र0म0शि0	88	28.32	5.044	.538	5.83xx	5.85xx	1.03
	अप्र0म0शि0	62	23.48	4.958	.630			
3.	प्र0क0शि0	252	27.18	5.354	.337	7.92xx	8.52xx	1.53
	अप्र0क0शि0	122	22.77	4.330	.392			
4.	प्र0वि0शि0	89	27.64	5.671	.601	3.33xx	3.54xx	1.34
	अप्र0वि0शि0	37	24.08	4.895	.805			
5.	प्र0ग्रा0शि0	169	27.05	4.948	.381	.85	.85	1.41
	प्र0श0शि0	172	27.55	5.877	.448			
6.	अप्र0ग्रा0शि0	81	22.96	4.411	.490	.34	.34	1.08
	अप्र0श0शि0	78	23.20	4.588	.519			
7.	स0प्र0शि0	341	27.30	5.434	.294	8.54xx	9.15xx	1.47
	स0अप्र0शि0	159	23.08	4.486	.356			

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य प्रमाणिक विचलन मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक टी मूल्य व एफ मूल्यों को सारिणी 9 में दर्शाया गया है ।

प्रशिक्षित पुरूष शिक्षक एवं अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सामाजिक मूल्य के आधार पर 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान अंक 26.94 व 22.82 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 6.66 व 7.54 ज्ञात हुए । अतः प्रशिक्षित पुरूष शिक्षक, अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों से सामाजिक मूल्य पर अधिक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

प्रशिक्षित महिला शिक्षक भी अप्रशिक्षित महिला शिक्षकों से सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति को धनात्मक रूप में प्रकट करती है । समूह की अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान 28.32 व 23.48 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 5.83 व 5.85 ज्ञात हुए ।

कला व विज्ञान संवर्ग के प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । कला व विज्ञान समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (27.18 व 22.77) तथा (27.64 व 24.08) ज्ञात किये । दोनों समूहों में संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः (7.92 व 8.52) तथा (3.33 व 3.54) रहे । अतः दोनों समूहों में प्रशिक्षित शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अप्रशिक्षित शिक्षकों से अनुकूल है ।

प्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी तथा अप्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी समूहों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ । समस्त प्रशिक्षित व समस्त अप्रशिक्षित शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (27.30 व 23.08), प्रमाणिक विचलन (5.434 व 4.486) ज्ञात हुए । समूह में सार्थक अन्तर जानने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य (8.54 व 9.15) ज्ञात हुए, जिनमें 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से विदित है, कि समस्त प्रशिक्षित शिक्षक, अप्रशिक्षित शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सामाजिक मूल्य पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों में, प्रशिक्षित शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है । शोधकर्ता इसका कारण प्रशिक्षित शिक्षकों का सामाजिक परम्पराओं से संलग्न जनसंख्या शिक्षा नीति को अधिक जागरूक व परिपक्व दृष्टि से देखना है । साथ ही साथ सामाजिकता पर जनसंख्या दुष्प्रभाव पर गहरी समझ को भी मानता है ।

सारिणी - 10.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्र0पु0शि0	253	32.18	5.984	.376	8.62^{xx}	8.90^{xx}	1.16
	अप्र0पु0शि0	97	26.14	5.566	.565			
2.	प्र0म0शि0	88	33.01	4.891	.521	4.12^{xx}	3.95^{xx}	1.63
	अप्र0म0शि0	62	29.25	6.249	.794			
3.	प्र0क0शि0	252	32.17	5.755	.363	9.74^{xx}	9.84^{xx}	1.06
	अप्र0क0शि0	122	26.04	5.582	.505			
4.	प्र0वि0शि0	89	33.04	5.626	.596	1.26	1.28	1.08
	अप्र0वि0शि0	37	31.67	5.411	.890			
5.	प्र0ग्रा0शि0	169	33.23	5.224	.402	2.68^{xx}	2.69^{xx}	1.36
	प्र0शा0शि0	172	31.58	6.086	.464			
6.	अप्र0ग्रा0शि0	81	28.60	5.460	.607	2.71^{xx}	2.71^{xx}	1.34
	अप्र0शा0शि0	78	26.06	6.325	.716			
7.	समस्त प्र0शि0	341	32.39	5.727	.310	9.02^{xx}	8.86^{xx}	1.10
	समस्त अप्र0शि0	159	27.35	6.018	.477			

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

सारिणी 9.4 में प्रदर्शित जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के विभिन्न समूहों में एफ मूल्य दर्शाये गये हैं । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः सांख्यिकीय रूप से सभी समूहों में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 10.4 में आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) को दर्शाया गया है ।

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षक समूह में आर्थिक मूल्य के आधार की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थकता अन्तर है । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान 32.18 व 26.14, प्रमाणिक विचलन 5.984 व 5.566 तथा संयुक्त व पृथक टीमूल्य 8.62 व 8.90 ज्ञात हुए । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि प्रशिक्षित पुरूष शिक्षक, अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों से आर्थिक मूल्य पर अधिक सार्थक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित महिला शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान 33.01 व 29.25 रहे । समूह की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः 4.12 व 3.95 रहे । टी मूल्यों से स्पष्ट है, कि समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । अतः प्रशिक्षित महिला शिक्षक, अप्रशिक्षित महिला शिक्षकों से कही अधिक उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं । शोधकर्ता इसका कारण प्रशिक्षित शिक्षकों का पारिवारिक बजट को दृष्टिगत रखते हुए जनसंख्या शिक्षा विषय का चिन्तन करना है । ।

कला वर्ग के प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों में निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्यों (9.74 व 9.84) में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के आर्थिक मूल्य पर मध्यमान (32.17 व 26.04) ज्ञात हुए । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि प्रशिक्षित कला संवर्ग के शिक्षक, अप्रशिक्षित कला संवर्ग के शिक्षकों से कही अधिक धनात्मक जनसख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

विज्ञान संवर्ग के प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । सम्भवतः इसका कारण अप्रशिक्षित विज्ञान शिक्षकों का भी प्रशिक्षित विज्ञान शिक्षकों की तरह रिक्त समय में धन उपार्जन करना हो ।

प्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में आर्थिक मूल्य पर 0.01 स्तर का सार्थक अन्तर है । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.68 व 2.69 तथा मध्यमान अंक क्रमशः 33.23 व 31.58 ज्ञात हुए । अतः इस समूह में प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षक, प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

अप्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह में आर्थिक मूल्य पर निकाले जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के संयुक्त व पृथक टी मूल्यों में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर ज्ञात हुआ । समूह के मध्यमान 28.60 व 26.06 रहे । मध्यमान अंकों से परिलक्षित है कि अप्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, अप्रशिक्षित शहरी शिक्षकों से अनुकूल है । सम्भवतः इसका कारण अप्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों का शिक्षण के साथ-साथ कृषि कार्य में संलग्न होना हो ।

समस्त प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान 32.39 व 27.35 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 9.02 व 8.86 रहे । मध्यमान अंकों से विदित है कि प्रशिक्षित शिक्षक अप्रशिक्षित शिक्षकों से कहीं अधिक सार्थक व धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सभी प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों के आर्थिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया । सभी समूहों में प्रशिक्षित शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक श्रेष्ठ है । शोधकर्ता इसका कारण प्रशिक्षित अध्यापकों का जनसंख्या शिक्षा के आर्थिक मूल्य पर अधिक परिपक्व चिन्तन व समायोजन को मानता है ।

सारिणी 10.4 के विभिन समूहों में प्रसरण अनुपात परीक्षण भी दर्शाये गये हैं । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह के एफमूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है । अतः सभी समूहों

सारिणी - 11.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्र0पु0शि0	253	22.86	6.058	.381	2.81^{xx}	3.31^{xx}	2.14
	अप्र0पु0शि0	97	20.98	4.137	.420			
2.	प्र0म0शि0	88	24.53	4.376	.466	2.61^{xx}	2.65^{xx}	1.21
	अप्र0म0शि0	62	22.70	3.981	.506			
3.	प्र0क0शि0	252	23.13	5.550	.350	3.72^{xx}	4.20^{xx}	2.04
	अप्र0क0शि0	122	21.05	3.881	.351			
4.	प्र0वि0शि0	89	23.74	6.164	.653	.08	.09	1.93
	अप्र0वि0शि0	37	23.64	4.436	.729			
5.	प्र0ग्रा0शि0	169	22.23	5.850	.450	3.45^{xx}	3.45^{xx}	1.18
	प्र0शि0शि0	172	24.33	5.392	.411			
6.	अप्र0ग्रा0शि0	81	21.96	4.570	.508	.94	.94	1.55
	अप्र0श0शि0	78	21.34	3.667	.415			
7.	स0प्र0शि0	341	23.29	5.713	.309	3.23^{xx}	3.62^{xx}	1.89
	स0अप्र0शि0	159	21.66	4.156	.329			

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

में आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्यों में सांख्यिकीय दृष्टि से एकरूपता है ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक टी मूल्यों को सारिणी 11.4 में दर्शाया गया है ।

प्रशिक्षित पुरूष व अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षक समूह में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । राजनीतिक मूल्य पर प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है, जैसा की मध्यमान अंकों (22.86 व 20.98) से प्रदर्शित है । शोधकर्ता इसका कारण प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या के प्रति राजनीतिक परिपक्वता को मानता है ।

राजनीतिक मूल्य पर प्रशिक्षित महिला शिक्षक व अप्रशिक्षित महिला शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (24.53 व 22.70) हैं । समूह की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.61 व 2.65 रहे । जो टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि प्रशिक्षित महिला शिक्षक, अप्रशिक्षित महिला शिक्षकों से राजनीतिक मूल्य पर उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं ।

प्रशिक्षित कला व अप्रशिक्षित कला शिक्षा समूह की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर ज्ञात हुआ । समूह के मध्यमान 23.13 व 21.05 तथा संयुक्त व पृथक टीमूल्य 3.72 व 4.20 रहे । स्पष्ट है प्रशिक्षित कला शिक्षक, अप्रशिक्षित कला शिक्षकों से राजनीतिक मूल्य पर श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित विज्ञान शिक्षक समूह के मध्य सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नही पाया गया । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमानों (23.74 व 23.64) में भी समरूपता है ।

ग्रामीण व शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर ज्ञात हुआ । समूह के मध्यमान अंक 22.23 व 24.33 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 3.45 रहे । मध्यमान अंकों से सुस्पष्ट है, कि प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों से प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति राजनीतिक मूल्य पर श्रेष्ठ है । शोधकर्ता इसका कारण प्रशिक्षित शहरी अध्यापकों का जनसंख्या पर पड़ने वाले राजनीतिक दुष्प्रभावों के विषय में अधिक सचेत होना मानता है ।

अप्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । राजनीतिक मूल्य पर समूह की अभिवृत्ति के मध्यमानों में एकरूपता का समावेश है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण व शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों का जनसंख्या शिक्षा के प्रति अधिक सचेतन होना मानता है ।

समस्त प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक 23.29 व 21.66, प्रमाणिक विचलन 5.713 व 4.150 रहे । समूह के टी मूल्यों (3.23 व 3.62) में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूह में राजनीतिक मूल्य पर प्रशिक्षित शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक श्रेष्ठ है ।

अधिकांश समूहों में प्रशिक्षित शिक्षक राजनीतिक मूल्य पर अप्रशिक्षित शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण प्रशिक्षित अध्यापकों का राष्ट्रीय जनसंख्या दुष्परिणामों में राजनीतिक मूल्यों की भूमिका से परिचित होना मानता है ।

सारिणी 11.4 में राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एफ मूल्यों को प्रदर्शित किया गया है । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सभी समूह में उपरोक्त वर्णित मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संकेन्द्रण है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक

सारिणी - 12.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य)व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्र0पु0शि0	253	24.50	5.231	.329	3.10^{xx}	3.33^{xx}	.071
	अप्र0पु0शि0	97	22.63	4.461	.453			
2.	प्र0म0शि0	88	26.10	4.363	.465	.55	.54	.232
	अप्र0म0शि0	62	25.67	5.014	.637			
3.	प्र0क0शि0	252	25.08	5.123	.323	3.15^{xx}	3.33^{xx}	.047
	अप्र0क0शि0	122	23.38	4.364	.395			
4.	प्र0वि0शि0	89	25.27	6.208	1.021	.80	.73	.074
	अप्र0वि0शि0	37	24.43	4.890	.518			
5.	प्र0ग्रा0शि0	169	24.39	5.460	.420	1.88	1.88	.026
	प्र0श0शि0	172	25.42	4.601	.351			
6.	अप्र0ग्रा0शि0	81	22.70	4.220	.469	3.01^{xx}	3.00^{xx}	.045
	अप्र0श0शि0	78	24.98	5.298	.600			
7.	समस्त प्र0शि0	341	24.91	5.064	.274	2.27^{x}	2.29^{x}	.642
	समस्त अप्र0शि0	159	23.82	4.900	.389			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक टी मूल्यों व एफमूल्यों को सारिणी 12.4 में दर्शाया गया है ।

प्रशिक्षित पुरूष शिक्षक व अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षक समूह की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (24.50 व 22.63), प्रमाणिक विचलन (5.231 व 4.461) ज्ञात हुए । मध्यमान अंकों से विदित है कि प्रशिक्षित पुरूष शिक्षक, अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों से उपरोक्त मूल्य पर अधिक अनुकूल व सार्थक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

महिला शिक्षकों के प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित समूह में धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान 26.10 व 25.67 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .55 व .54 ज्ञात हुए । शोधकर्ता सार्थक अन्तर न होने का कारण समूह की महिला शिक्षकों में एक जैसे धार्मिक दृष्टिकोण को मानता है ।

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित कला शिक्षक समूह की धार्मिक एवं जातिगत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान 25.08 व 23.38 तथा प्रमाणिक विचलन 5.123 व 4.364 ज्ञात हुए । समूह की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य 3.15 व 3.33 रहे जो 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । अतः उपरोक्त मूल्य पर प्रशिक्षित कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक श्रेष्ठ है ।

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित विज्ञान शिक्षक समूह की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर ज्ञात नहीं हुआ । यही स्थिति प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षक व प्रशिक्षित शहरी शिक्षक समूह में रही ।

अप्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षक व अप्रशिक्षित शहरी शिक्षक समूह की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया । समूह के मध्यमान 22.70 व 24.98 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 3.01 व 3.00 ज्ञात हुए । मध्यमान अंकों के आधार पर स्पष्ट है, कि अप्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों से अप्रशिक्षित शहरी शिक्षक श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण अप्रशिक्षित शहरी शिक्षकों में अधिक उदार धार्मिक व जातिगत दृष्टिकोण को मानता है ।

सारिणी - 13.4

शिक्षक अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्र0पु0शि0	253	32.95	4.396	.276	8.06xx	8.39xx	1.20
	अप्र0पु0शि0	97	28.82	4.016	.408			
2.	प्र0म0शि0	88	33.53	4.124	.440	3.60xx	3.40xx	1.98
	अप्र0म0शि0	62	30.61	5.809	.738			
3.	प्र0क0शि0	252	33.14	4.444	.280	8.76xx	8.49xx	1.20
	अप्र0क0शि0	122	28.71	4.861	.440			
4.	प्र0वि0शि0	89	33.00	4.009	.425	1.05	1.07	1.10
	अप्र0वि0शि0	37	32.18	3.821	.628			
5.	प्र0ग्रा0शि0	169	33.58	3.757	.289	2.04x	2.04x	1.63
	प्र0शा0शि0	172	32.63	4.790	.365			
6.	अप्र0ग्रा0शि0	81	29.25	4.277	.475	.69	.69	1.60
	अप्र0शा0शि0	78	29.79	5.409	.612			
7.	समस्त प्र0शि0	341	33.10	4.329	.234	8.29xx	7.95xx	1.26
	समस्त अप्र0शि0	159	29.52	4.857	.385			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

समस्त प्रशिक्षित एवं समस्त अप्रशिक्षित शिक्षकों की धार्मिक एवं जातिगत जनसंख्या शि अभिवृत्ति के मध्यमान 24.91 व 23.82 प्रमाणिक विचलन 5.064 व 4.900 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.27 व 2.29 हैं । समूह के टी मूल्यों में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से विदित है कि प्रशिक्षित शिक्षकों की जनसंख्या अभिवृत्ति, अप्रशिक्षित शिक्षकों से धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर श्रेष्ठ है । शोधकर्ता इसका कारण प्रशिक्षित शिक्षकों में धार्मिक एवं जातिगत बन्धनों की शिथिलता को मानता है ।

सारिणी 12.4 में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रसरण अनुपात परीक्षण को दर्शाया गया है । सभी समूहों के एफ मूल्यों में सार्थकता नहीं है । अतः प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के विषय में वर्णित मूल्य पर कोई मूल अंतर नहीं है ।

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 13.4 का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति भिन्न-भिन्न है ।

प्रशिक्षित पुरूष शिक्षक एवं अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (32.95 व 28.82), प्रमाणिक विचलन 4.396 व 4.016 हैं । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः 8.06 व 8.39 ज्ञात हुए । समूह में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । अतः मध्यमान अंकों के आधार पर स्पष्ट है कि प्रशिक्षित पुरूष शिक्षक, अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों से अन्य मूल्य पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान क्रमशः (33.53 व 30.61) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (3.60 व 3.40) है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि प्रशिक्षित महिला शिक्षक अप्रशिक्षित महिला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं ।

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित कला शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में अन्य मूल्य पर 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर रहा । समूह के मध्यमान (33.14 व 28.71) को

सारिणी - 14.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्र0पु0शि0	253	167.67	24.087	1.514	8.87^{xx}	10.92^{xx}	2.69
	अप्र0पु0शि0	97	144.47	14.698	1.492			
2.	प्र0म0शि0	88	173.82	15.936	1.699	6.25^{xx}	6.01^{xx}	1.59
	अप्र0म0शि0	62	155.40	20.111	2.554			
3.	प्र0क0शि0	252	168.47	22.704	1.430	10.13^{xx}	11.26^{xx}	1.87
	अप्र0क0शि0	122	145.11	16.588	1.502			
4.	प्र0वि0शि0	89	171.56	21.527	2.282	2.75^{xx}	3.06^{xx}	1.70
	अप्र0वि0शि0	37	160.64	16.491	2.711			
5.	प्र0ग्रा0शि0	169	169.04	19.118	1.471	.18	.18	1.75
	प्र0श0शि0	172	169.47	25.288	1.928			
6.	अ0ग्रा0शि0	81	148.71	14.286	1.587	.01	.01	2.14
	अ0श0शि0	78	148.74	20.892	2.366			
7.	समस्त प्र0शि0	341	169.26	22.412	1.214	10.16^{xx}	11.04^{xx}	1.59
	समस्त अप्र0शि0	159	148.72	17.778	1.410			

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

देखकर विदित होता है कि प्रशिक्षित कला शिक्षक, अप्रशिक्षित कला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

विज्ञान शिक्षकों के प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित समूह में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया । अप्रशिक्षित ग्रामीण व अप्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक भिन्नता नही है ।

प्रशिक्षित ग्रामीण व प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया । समूह के मध्यमान क्रमशः (33.58 व 32.63) हैं । मध्यमान से स्पष्ट है कि प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों से अधिक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

समस्त प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्यमान अंक क्रमशः (33.10 व 29.25) हैं । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः (8.29 व 7.95) हैं । समूह में टी मूल्य के आधार पर 0.01 स्तर पर सार्थकता है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि प्रशिक्षित शिक्षक अप्रशिक्षित शिक्षकों से अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा के विषय में श्रेष्ठ अभिवृत्ति रखते हैं ।

सारिणी 13.4 के विभिन्न समूहों में एफ मूल्य भी निकाले गये हैं । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी भी समूह के एफ मूल्यों में सार्थकता का स्तर नही है । अतः यह कहा जा सकता है कि सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सांख्यिकीय रूप से समरूपता का समावेश है ।

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न प्रशिक्षित व प्रशिक्षित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक टी मूल्यों को सारिणी 14.4में दर्शाया गया है ।

मूल्यों के योग पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान 167.67 व 144.46 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः 8.87 व

।10.92 हैं । समूह की अभिवृत्ति में टी मूल्यों के आधार पर 0.0। स्तर पर सार्थक अन्तर है । स्पष्टतः प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की मूल्य योग पर अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों से श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित महिला शिक्षक समूह में सभी मूल्यों के योग की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.0। स्तर पर सार्थक अंतर है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (।73.82 व ।55.40) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 6.25 व 6.0। हैं । मध्यमान अंकों से विदित है, कि प्रशिक्षित महिला शिक्षक, अप्रशिक्षित महिला शिक्षकों से अधिक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं ।

कला संवर्ग के प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्यों में सार्थक अन्तर ज्ञात हुआ । सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य ।0.।3 व ।।.26 रहे । जिनमें 0.0। स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमानों (।68.47 व ।45.।।) से स्पष्ट है, कि प्रशिक्षित कला अध्यापक, अप्रशिक्षित कला अध्यापकों से अधिक श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

प्रशिक्षित विज्ञान शिक्षक व अप्रशिक्षित विज्ञान शिक्षकों के समूह की मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक ।7।.50 व ।60.64 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.75 व 3.06 रहे । समूह में टी मूल्यों के आधार पर 0.0। स्तर पर सार्थक अन्तर है । अतः वर्णित समूह में प्रशिक्षित विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक उच्च व धनात्मक है । प्रशिक्षित ग्रामीण व प्रशिक्षित शहरी शिक्षक समूह में सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर प्राप्त नहीं हुआ । समूह के मध्यमान अंकों में भी लगभग समरूपता है । यही स्थिति अप्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह में है । शोधकर्ता इसका कारण आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों का परिवेश के आधार पर एक जैसे जनसंख्या शिक्षा चिन्तन को मानता है ।

समस्त प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षक समूहों में 0.0। स्तर पर सार्थक अन्तर है । सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य ।0.।6 व ।।.04 रहे । समूह के मध्यमान अंकों ।69.26 व ।48.72 से परिलक्षित है कि प्रशिक्षित शिक्षक अप्रशिक्षित शिक्षकों से अधिक सार्थक व अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । सभी

सारिणी - 15.4

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1-	सवर्ण ग्रा0पु0शि0	100	29.08	6.642	.664	.17	.17	1.03
	सवर्ण श0पु0शि0	84	29.25	6.746	.736			
2-	सवर्ण ग्रा0म0शि0	36	27.91	4.693	.782	.66	.73	1.68
	सवर्ण श0म0शि0	81	27.16	6.082	.676			
3.	सवर्ण ग्रा0क0शि0	91	28.79	6.357	.666	.28	.28	1.03
	सवर्ण श0क0शि0	124	28.54	6.460	.580			
4.	सवर्ण ग्रा0वि0शि0	45	27.26	6.584	.881	1.09	1.08	1.24
	सवर्ण श0वि0शि0	41	28.73	5.910	1.028			
5.	समस्त सवर्ण ग्रा0शि0	136	28.22	6.494	.531	.74	.75	1.10
	समस्त सवर्ण श0शि0	165	28.77	6.191	.506			

प्रशिक्षित शिक्षकों की उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का कारण शोधकर्ता राष्ट्रीय जनसंख्या चिन्तन को मानता है ।

सारिणी 14.4 में सभी समूहों के एफमूल्य प्रदर्शित है, जिनमें सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नही है । अतः सभी समूह में मूल्यों के योग पर औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के पारितः संकेन्द्रण है ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर सवर्ण शिक्षकों के विभिन्न समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

शैक्षिक मूल्य के आधार पर सवर्ण शिक्षकों के विभिन्न समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त व पृथक टी मूल्य को सारिणी 15.4 में प्रदर्शित किया गया है ।

सवर्ण ग्रामीण पुरूष शिक्षकों व सवर्ण शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान अंकों में भी समरूपता है । अतः समूह की अभिवृत्ति एक समान है ।

सवर्ण ग्रामीण महिला व सवर्ण शहरी महिला शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में भी कोई सार्थक अन्तर ज्ञात नहीं हुआ । शैक्षिक मूल्य पर सवर्ण ग्रामीण कला शिक्षक व सवर्ण शहरी कला शिक्षक समूह के मध्यमान अंक 28.79 व 28.54 तथा प्रमाणिक विचलन 6.357 व 6.460 है । समूह के संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य .28 है जो सार्थक नहीं है । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति समान है ।

सवर्ण ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों व सवर्ण शहरी विज्ञान शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (27.26 व 28.73) हैं । सार्थकता की दृष्टि से समूह के टी मूल्यों में भी कोई कसौटी नही है । अतः समूह की अभिवृत्ति समान है ।

समस्त सवर्ण ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में भी कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह की अभिवृत्ति के मध्यमानों में भी एकरूपता है । अतः समूह में समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

सारिणी 15.4में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के सभी समूहों मेंएफ मूल्य को भी प्रदर्शित किया है । सारिणी के अवलोकन से विदित है, कि किसी भी समूह के एफमूल्य सार्थक

सारिणी - 16.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र०सं०	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1-	सवर्ण ग्रा०पु०शि०	100	26.77	5.322	.532	1.78	1.76	.336
	सवर्ण श०पु०शि०	84	28.23	5.886	.642			
2-	सवर्ण ग्रा०म०शि०	36	26.55	4.872	.812	1.17	1.23	.393
	सवर्ण श०म०शि०	81	27.81	5.552	.617			
3.	सवर्ण ग्रा०क०शि०	91	26.81	4.869	.510	1.55	1.59	.060
	सवर्ण श०क०शि०	124	27.98	5.877	.528			
4.	सवर्ण ग्रा०वि०शि०	45	26.51	5.837	.870	1.38	1.39	.494
	सवर्ण श०वि०शि०	41	28.17	5.244	.819			
5.	समस्त सवर्ण ग्रा०शि०	136	26.71	5.190	.445	2.07×	2.09×	.249
	समस्त सवर्ण. श०शि०	165	28.03	5.711	.445			

× 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

नही है । अतः सांख्यिकीय दृष्टि से सवर्ण ग्रामीण व सवर्ण शहरी, शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समरूपता है ।

शैक्षिक मूल्य पर सवर्ण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में परिवेश के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया । शोधकर्ता इसका कारण सवर्ण ग्रामीण शिक्षकों का अधिकांश नगरों में निवास, रोजगार के घटते अवसरों पर एक समान जनसंख्या दृष्टिकोण को मानता है ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 16.4 में सवर्ण जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक टी मूल्य व एफ मूल्य को प्रदर्शित किया गया है ।

सवर्ण जाति के ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर नही है, केवल मध्यमान अंकों के आधार पर कहा जा सकता है कि सवर्ण शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, सवर्ण ग्रामीण शिक्षकों से कुछ श्रेष्ठ स्तर की है ।

सवर्ण ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक (26.55 व 27.81) तथा प्रमाणिक विचलन 4.872 व 5.552 हैं । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः 1.17 व 1.23 है, जो सार्थकता के स्तर पर नही है । अतः सवर्ण ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

सवर्ण ग्रामीण कला शिक्षक व सवर्ण शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में भी वर्णित मूल्य पर सार्थक अन्तर नही है ।

सवर्ण ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (26.51 व 28.17) तथा प्रमाणिक विचलन 5.837 व 5.244 हैं। समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.38 व 1.39 हैं, जो सार्थकता के स्तर पर नही है । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में केवल

सारिणी - 17.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सवर्ण ग्रा0पु0शि0	100	32.13	5.376	.538	1.83	1.81	1.17
	सवर्ण श0पु0शि0	84	33.64	5.816	.635			
2.	सवर्ण ग्रा0म0शि0	36	33.27	5.268	.878	.77	.77	1.04
	सवर्ण श0म0शि0	81	32.45	5.371	.597			
3.	सवर्ण ग्रा0क0शि0	91	33.65	5.377	.564	2.14 x	2.16 x	1.10
	सवर्ण श0क0शि0	124	32.02	5.637	.506			
4.	सवर्ण ग्रा0वि0शि0	45	33.09	5.421	.788	.18	.18	1.05
	सवर्ण श0वि0शि0	41	33.31	5.286	.847			
5.	समस्त सवर्ण ग्रा0शि0	136	32.29	5.587	.457	1.98	1.99	1.10
	समस्त सवर्ण श0शि0	165	33.54	5.330	.435			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

मध्यमान अंकों के आधार पर अन्तर है । सवर्ण शहरी विज्ञान शिक्षकों की अभिवृत्ति, सवर्ण ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से कुछ श्रेष्ठ है ।

समस्त सवर्ण ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमान अंक क्रमशः (26.71 व 28.03), प्रमाणिक विचलन (5.190 व 5.711) तथा संयुक्त पृथक टी मूल्य क्रमशः 2.07 व 2.09 हैं, जो 0.05 स्तर पर सार्थक हैं। अतः सवर्ण ग्रामीण शिक्षकों से सवर्ण शहरी शिक्षक उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सारिणी 16.4में विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों के एफ मूल्य भी प्रदर्शित है, जिनमें सार्थकता के स्तर पर कोई भी नहीं है । अतः प्रसरण अनुपात परीक्षण के आधार पर सभी समूहों में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है । सभी समूहों में सामाजिक मूल्य पर औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर सवर्ण जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 17.4 में सवर्ण जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की आर्थिक मूल्य पर प्राप्त जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक टी मूल्य को प्रदर्शित किया गया है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर सवर्ण ग्रामीण व सवर्ण शहरी, पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । सवर्ण ग्रामीण महिला व सवर्ण शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति भी लगभग समरूप है ।

सवर्ण ग्रामीण कला शिक्षक व सवर्ण शहरी कला शिक्षकों की आर्थिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान क्रमशः 33.65 व 32.02 तथा प्रमाणिक विचलन 5.377 व 5.637 हैं । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 2.14 व 2.16 है । मध्यमान अंकों से विदित है कि सवर्ण ग्रामीण कला शिक्षकों की सवर्ण शहरी कला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । शोधकर्ता इसका कारण यह महसूस करता है, कि सवर्ण ग्रामीण कला शिक्षक अपने बटते-सिमटते खेतों को देखकर जनसंख्या शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक हो गये हैं ।

सवर्ण ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा

सारिणी - 18.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सवर्ण ग्रा0पु0शि0	100	23.05	5.682	.568	2.06ˣ	2.06ˣ	1.08
	सवर्ण श0पु0शि0	84	24.75	5.466	.596			
2.	सवर्ण ग्रा0म0शि0	36	23.58	4.569	.762	1.27	1.24	1.15
	सवर्ण श0म0शि0	81	24.69	4.268	.474			
3.	सवर्ण ग्रा0क0शि0	91	22.91	5.481	.575	2.81ˣˣ	2.77ˣˣ	1.19
	सवर्ण श0क0शि0	124	24.93	5.025	.451			
4.	सवर्ण ग्रा0वि0शि0	45	23.75	5.245	.782	.30	.30	1.36
	सवर्ण श0वि0शि0	41	24.07	4.497	.702			
5.	समस्त सवर्ण ग्रा0शि0	136	23.19	5.399	.463	2.57ˣ	2.55ˣ	1.21
	समस्त सवर्ण श0शि0	165	24.72	4.900	.381			

ˣ - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

ˣˣ - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

अभिवृत्ति एक प्रकार की है । समूह के मध्यमान क्रमशः 33.09 व 33.31 रहे । समूह के टी मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

समस्त सवर्ण ग्रामीण व समस्त सवर्ण शहरी शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । शोधकर्ता यह अनुभव करता है कि जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर कुछ अन्य चरों पर निर्भर करता है जैसे शिक्षा, सामाजिकता व आयु ।

सारिणी 17.4 में प्रदर्शित प्रसरण अनुपात परीक्षण एफ मूल्य को अवलोकित करने पर विदित है, कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सवर्ण शिक्षकों के विभिन्न समूह आर्थिक मूल्य पर लगभग एक समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 18.4 में सवर्ण शिक्षकों के विभिन्न समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

सवर्ण ग्रामीण व सवर्ण शहरी पुरूष शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः 23.05 व 24.75 तथा प्रमाणिक विचलन 5.682 व 5.466 है । समूह का संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.06 है । मध्यमान अंकों के अवलोकन से स्पष्ट है कि वर्णित मूल्य पर सवर्ण शहरी पुरूष शिक्षक, सवर्ण ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सवर्ण ग्रामीण महिला शिक्षक व सवर्ण शहरी महिला शिक्षकों के मध्य राजनीतिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर ज्ञात नहीं हुआ ।

राजनीतिक मूल्य पर सवर्ण ग्रामीण कला शिक्षकों व सवर्ण शहरी कला, शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। समूह के मध्यमान क्रमशः (22.91 व 24.93) तथा प्रमाणिक विचलन (4.569 व 4.268) है । संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.81 रहे । अतः मध्यमान अंकों से विदित है, कि सवर्ण शहरी शिक्षकों की, सवर्ण ग्रामीण शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । शोधकर्ता इसका कारण शहरी सवर्ण शिक्षकों की अवकाश के समय में राजनीतिक सक्रियता तथा इसी समूह के ग्रामीण शिक्षकों की कृषि कार्य में व्यस्तता को मानता है ।

सारणी - 19.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सवर्ण ग्रा0पु0शि0	100	24.60	5.673	.567	.83	.85	1.43
	सवर्ण शा0पु0शि0	84	25.25	4.741	.517			
2.	सवर्ण ग्रा0म0शि0	36	24.19	4.701	.784	3.42xx	3.35xx	1.12
	सवर्ण श0म0शि0	81	27.29	4.445	.494			
3.	सवर्ण ग्रा0क0शि0	91	25.04	5.444	.571	1.74	1.69	1.43
	सवर्ण श0क0शि0	124	26.23	4.559	.409			
4.	सवर्ण ग्रा0वि0शि0	45	23.37	5.250	.783	2.62x	2.62x	1.04
	सवर्ण श0वि0शि0	41	26.31	5.155	.805			
5.	समस्त सवर्ण ग्रा0शि0	136	24.49	5.419	.465	3.02xx	2.98xx	1.33
	समस्त सवर्ण श0शि0	165	26.25	4.698	.366			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

सवर्ण ग्रामीण विज्ञान शिक्षक व सवर्ण शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में राजनीतिक मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है ।

समस्त सवर्ण ग्रामीण व समस्त सवर्ण शहरी शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान क्रमशः 23.19 व 24.72 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः 2.57 व 2.55 हैं । मध्यमान अंकों के अवलोकन से विदित है, राजनीतिक मूल्य पर सवर्ण शहरी शिक्षकों की सवर्ण ग्रामीण शिक्षकों से उच्च व धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । शोधकर्ता इसका कारण शहरों में व्याप्त अधिकांश राजनीतिक गतिविधियाँ व समाचार पत्रों की अधिकता को मानता है ।

सारिणी 18.4 में विभिन्न समूहों के एफमूल्य भी प्रदर्शित है जो किसी भी समूह में सार्थक नही है अतः सभी समूहों में राजनीतिक मूल्य पर औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति पर समान संकेन्द्रण हैं ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सवर्ण शिक्षकों के विभिन्न शिक्षक समूहों की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक टी मूल्यों व एफ मूल्यों को सारिणी 19 में प्रदर्शित किया गया है ।

सवर्ण ग्रामीण व सवर्ण शहरी पुरूष शिक्षक समूह की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

सवर्ण ग्रामीण व सवर्ण शहरी महिला शिक्षकों की धार्मिक व जातिगत मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान 24.19 व 27.29, प्रमाणिक विचलन 4.701 व 4.445 तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य क्रमशः 3.42 व 3.35 है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि सवर्ण ग्रामीण महिला शिक्षकों से सवर्ण शहरी महिला शिक्षक अधिक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती है । सम्भवतः इसका कारण शहरी महिला शिक्षकों का धार्मिक एवं जातिगत कुरीतियों को तोड़ना हो सकता है ।

सवर्ण ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक समूह की उपरोक्त मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

सवर्ण ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान (23.37 व 26.31) को देखने पर विदित है, कि सवर्ण शहरी विज्ञान शिक्षक, सवर्ण ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । सम्भवतः इसका कारण शहरी विज्ञान शिक्षकों का अधिक व्यापक धार्मिक व जातिगत दृष्टिकोण होना हो सकता है ।

समस्त सवर्ण ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (24.29 व 26.25) हैं । संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः 3.02 व 2.98 ज्ञात है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है । अतः मध्यमान अंकों के अवलोकन से विदित है कि शहरी सवर्ण शिक्षकों की ग्रामीण सवर्ण शिक्षकों से धार्मिक व जातिगत मूल्य के आधार पर श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर अधिकांश सवर्ण शिक्षक समूहों में शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर श्रेष्ठ है । शोधकर्ता इसका कारण शहरी क्षेत्रों में धार्मिकता के प्रति प्रगतिवादी दृष्टिकोण व शिथिल पड़ते जातिगत बन्धनों को मानता है ।

सारिणी 19.4 में धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर सभी समूह के प्रसरण का अन्तर देखने के लिए एफमूल्य निकाले गये हैं । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः उपरोक्त वर्णित मूल्य सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समान संकेन्द्रण है ।

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 20.4 में अन्य मूल्य के आधार पर सवर्ण जाति के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन संयुक्त एवं पृथक टीमूल्य को दर्शाया गया है ।

सवर्ण ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (33.69 व 33.07) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः .99 व .98 हैं, जो सार्थकता के स्तर पर नही है । समूह के मध्यमान अंकों में भी एकरूपता की स्थिति है । अतः इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई भिन्नता नही है ।

सारिणी - 20.4

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सवर्ण ग्रा0पु0शि0	100	33.69	4.029	.403	.99	.98	1.20
	सवर्ण श0पु0शि0	84	33.07	4.417	.482			
2.	सवर्ण ग्रा0म0शि0	36	32.80	4.315	.719	1.30	1.28	1.12
	सवर्ण श0म0शि0	81	33.88	4.071	.452			
3.	सवर्ण ग्रा0क0शि0	91	33.97	4.028	.422	.83	.84	1.14
	सवर्ण श0क0शि0	124	33.50	4.303	.386			
4.	सवर्ण ग्रा0वि0शि0	45	32.40	4.114	.613	1.11	1.11	1.03
	सवर्ण श0वि0शि0	41	33.39	4.171	.651			
5.	समस्त सवर्ण ग्रा0शि0	136	33.45	4.109	.352	.03	.03	1.07
	समस्त सवर्ण श0शि0	165	33.47	4.258	.331			

ग्रामीण एवं शहरी सवर्ण महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में भी कोई सार्थक अन्तर नही है । मध्यमान अंकों में भी एक सा स्तर है । अतः समूह की अभिवृत्ति एक जैसी है ।

सवर्ण ग्रामीण कला व सवर्ण शहरी कला शिक्षकों के मध्यमान क्रमशः (33.97 व 33.50) तथा टी मूल्य संयुक्त व पृथक रूप में .83 व .84 हैं । सवर्ण ग्रामीण विज्ञान शिक्षक व सवर्ण शहरी विज्ञान शिक्षकों के मध्यमान भी एकरूपता की स्थिति में हैं। समूह का संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.11 है । अतः इन दोनों समूहों में अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई भिन्नता नही है ।

समस्त सवर्ण ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान अंक (33.45 व 33.47) प्रमाणिक विचलन (4.109 व 4.258) है । मध्यमान अंकों से विदित है, कि समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समरूपता का समावेश है ।

प्रदर्शित सारिणी 20.4 में सभी समूहों का प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य) को भी दर्शाया गया है, जो किसी भी समूह में सार्थक नही है । अतः सांख्यिकीय दृष्टि से अन्य मूल्य के आधार पर सवर्ण शिक्षकों के विभिन्न समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संकेन्द्रण है ।

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 21.4 में सभी मूल्यों के योग पर सवर्ण शिक्षकों के विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

सवर्ण ग्रामीण व सवर्ण शहरी पुरूष शिक्षकों के मध्यमान अंक क्रमशः (170.86 व 172.80) हैं । समूह के टी मूल्य में कोई सार्थकता नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सवर्ण ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से सवर्ण शहरी शिक्षक कुछ अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सवर्ण ग्रामीण महिला व शहरी महिला शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । इस समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (168.05 व 173.18)

सारणी - 21.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न सवर्ण शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सवर्ण ग्रा0पु0शि0	100	170.86	19.171	1.917	.59	.58	1.76
	सवर्ण श0पु0शि0	84	172.80	25.437	2.775			
2.	सवर्ण ग्रा0म0शि0	36	168.05	14.900	2.483	1.48	1.60	1.50
	सवर्ण श0म0शि0	81	173.18	18.255	2.028			
3.	सवर्ण ग्रा0क0शि0	91	171.37	17.341	1.818	.64	.67	1.76
	सवर्ण श0क0शि0	124	173.21	23.007	2.066			
4.	सवर्ण ग्रा0वि0शि0	45	167.57	19.579	2.919	1.12	1.12	1.01
	सवर्ण श0वि0शि0	41	172.31	19.517	3.048			
5.	समस्त सवर्ण ग्रा0शि0	136	170.11	18.128	1.554	1.22	1.24	1.49
	समस्त सवर्ण श0शि0	165	172.99	22.137	1.723			

हैं । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर कह सकते हैं कि सवर्ण ग्रामीण महिला शिक्षकों से सवर्ण शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक धनात्मक है ।

सभी मूल्यों के योग पर सवर्ण ग्रामीण व सवर्ण शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । सार्थकता की दृष्टि से सवर्ण ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक भी कोई सार्थक अन्तर वाली अभिवृत्ति नहीं रखते हैं । इस समूह के मध्यमान अंक क्रमशः 167.57 व 172.37 हैं । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर सवर्ण शहरी विज्ञान शिक्षक, सवर्ण ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति से कुछ अनुकूलता लिये हैं ।

समस्त सवर्ण ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमान अंक 170.11 व 172.99 हैं । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.22 व 1.24 हैं, जिनमें सार्थकता की कसौटी नहीं है । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

सारिणी 21.4 में सभी समूहों के एफ मूल्य भी प्रदर्शित हैं । एफ मूल्यों का अवलोकन करने से स्पष्ट है, कि ये मूल्य किसी भी समूह में सार्थक नहीं है । अतः यह कहा जा सकता है कि सांख्यिकीय दृष्टि से सवर्ण ग्रामीण व सवर्ण शहरी शिक्षक सभी मूल्यों के योग पर मूल रूप से एक सी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 22.4 में शैक्षिक मूल्य के आधार पर पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

पिछड़ी जाति के ग्रामीण पुरूष व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (22.02 व 22.57) तथा प्रमाणिक विचलन 4.258 व 4.947 है । समूह में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाला गया संयुक्त व पृथक टी मूल्य सार्थक नही है । मध्यमान अंकों में भी एकरूपता का समावेश है । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति वर्णित मूल्य पर एक सी है ।

पिछड़ी जाति की ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में शैक्षिक मूल्य पर कोई सार्थक अन्तर ज्ञात नहीं हुआ ।

सारणी - 22.4

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न पिछड़ी जाति के शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	पिछड़ी जाति के ग्रा0पु0शि0	39	22.02	4.258	.682	.58	.60	1.35
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	64	22.57	4.947	.618			
2.	पिछड़ी जाति की ग्रा0म0शि0	12	23.16	3.040	.878	.28	.32	3.74
	पिछड़ी जाति की श0म0शि0	19	23.68	5.879	1.349			
3.	पिछड़ी जाति के ग्रा0क0शि0	45	22.24	3.588	.535	.14	.15	1.61
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	76	22.13	4.547	.522			
4.	पिछड़ी जाति के ग्रा0वि0शि0	06	22.66	6.861	2.801	2.24×	2.21×	1.49
	पिछड़ी जाति के श0वि0शि0	07	30.42	5.623	2.125			
5.	पिछड़ी जाति के स0ग्रा0शि0	51	22.29	4.006	.561	.64	.67	1.66
	पिछड़ी जाति के स0श0शि0	83	22.83	5.158	.566			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

शैक्षिक मूल्य पर पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक क्रमशः (22.24 व 22.13) तथा प्रमाणिक विचलन (3.588 व 4.547) ज्ञात हुए । सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.14 व .15) है जिनमें कोई सार्थकता का स्तर नहीं है । समूह के मध्यमान भी लगभग एक जैसे है । अतः समूह की अभिवृत्ति में कोई भिन्नता नही है ।

पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के ज्ञात मध्यमान (22.66 व 30.42) तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य क्रमशः (2.24 व 2.21) हैं । मध्यमान अंकों के अवलोकन से विदित है कि पिछड़ी जाति के ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से इसी जाति के शहरी विज्ञान शिक्षक श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

पिछड़ी जाति के समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है । शोधकर्ता इसका कारण सामाजिक, आर्थिक व कुछ अन्य चरों को समझता है ।

सारिणी 22.4 में शैक्षिक मूल्य पर सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रति एफ मूल्यों को प्रदर्शित किया गया है । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः शैक्षिक मूल्य पर पिछड़ी जाति के सभी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एकरूपता है ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति

सामाजिक मूल्य के आधार पर पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक टी मूल्य को सारिणी 23.4 में प्रदर्शित किया गया है ।

पिछड़ी जाति के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

पिछड़ी जाति की ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (23.00 व 21.78) हैं । केवल

सारणी - 23.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न पिछड़ी जाति के शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	पिछड़ी जाति के ग्रा0पु0शि0	39	23.20	3.995	.640	.69	.71	1.19
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	64	22.60	4.367	.546			
2.	पिछड़ी जाति की ग्रा0म0शि0	12	23.00	5.862	1.692	.75	.66	3.53
	पिछड़ी जाति की श0म0शि0	19	21.78	3.119	.716			
3.	पिछड़ी जाति के ग्रा0क0शि0	45	22.66	4.183	.624	.54	.53	1.16
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	76	22.26	3.879	.445			
4.	पिछड़ी जाति के ग्रा0वि0शि0	06	26.83	4.956	2.023	.85	.86	1.59
	पिछड़ी जाति के श0वि0शि0	07	24.14	6.256	2.365			
5.	पिछड़ी जाति के स0ग्रा0शि0	51	23.15	4.438	.621	.97	.96	1.17
	पिछड़ी जाति के स0श0शि0	83	22.42	4.112	.451			

मध्यमान अंकों के आधार पर कहा जा सकता है, सामाजिक मूल्य पर पिछड़ी जाति की ग्रामीण महिला शिक्षकों की अपनी जाति की शहरी महिला शिक्षकों से कुछ अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

सामाजिक मूल्य पर पिछड़ी जाति के ग्रामीण कला व शहरी कला शिक्षकों तथा ग्रामीण विज्ञान व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है। समूह के मध्यमानों में भी अधिक अन्तर नहीं है । केवल पिछड़ी जाति के ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों की अभिवृत्ति कुछ धनात्मक है ।

समस्त पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमान अंक क्रमशः 23.15 व 22.42 तथा प्रमाणिक विचलन 4.438 व 4.112 ज्ञात हुए । समूह के टी मूल्य .97 व .96 रहे जो सार्थक अन्तर की कसौटी पर नहीं है । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों में सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया । शोधकर्ता इसका कारण पिछड़ी जाति के शिक्षकों का पुरातन सामाजिक मान्यताओं का एक ही प्रकार से ग्रामीण व शहरी परिवेश में पालन करना मानता है ।

सारिणी 23.4 में विभिन्न समूहों के टी मूल्यों को भी दर्शाया गया है । सारिणी का अवलोकन करने से विदित है कि किसी भी समूह के एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एकरूपता का समावेश है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 24.4 में आर्थिक मूल्य के आधार पर पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचचलन व संयुक्त तथा पृथक टी मूल्यों को दर्शाया गया है ।

आर्थिक मूल्य पर पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थकता है । समूह के मध्यमान (27.76 व 24.64), प्रमाणिक विचलन (4.882 व 6.064) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.46 व 2.59) है । मध्यमान अंकों से विदित है कि पिछड़ी जाति के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा

सारिणी 24.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न पिछड़ी जाति के शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	पिछड़ी जाति के ग्रा0पु0शि0	39	27.46	4.882	.782	2.46ˣ	2.59ˣ	1.54
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	64	24.64	6.064	.758			
2.	पिछड़ी जाति की ग्रा0म0शि0	12	28.08	4.795	1.384	1.50	1.49	1.05
	पिछड़ी जाति की श0म0शि0	19	25.47	4.671	1.072			
3.	पिछड़ी जाति के ग्रा0क0शि0	45	27.46	4.654	.694	3.87ˣˣ	3.94ˣˣ	1.15
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	76	23.92	4.995	.573			
4.	पिछड़ी जाति के ग्रा0वि0शि0	06	28.66	6.346	2.591	2.07	2.00	2.38
	पिछड़ी जाति के श0वि0शि0	07	34.71	4.112	1.554			
5.	पिछड़ी जाति के स0ग्रा0शि0	51	27.60	4.821	.675	2.88ˣˣ	3.00ˣˣ	1.43
	पिछड़ी जाति के स0श0शि0	83	24.83	5.759	.632			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

अभिवृत्ति, पिछड़ी जाति के शहरी पुरूष शिक्षकों की तुलना में अधिक अनुकूल है ।

इसी जाति की ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों के मध्यमान (28.08 व 25.47) है । समूह में सार्थक की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है । मध्यमान अंकों के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि पिछड़ी जाति की ग्रामीण महिला शिक्षकों की आर्थिक आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति इसी जाति की शहरी महिला शिक्षकों से कुछ श्रेष्ठ है ।

पिछड़ी जाति के ग्रामीण कला व शहरी कला शिक्षकों में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान अंक (27.46 व 23.92) तथा टी मूल्य दोनों अनुमानों के आधार पर (3.87 व 3.94) है । अतः इस जाति के ग्रामीण कला शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर अधिक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

उपरोक्त जाति के ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों में कोई सार्थकता नही है । समूह के मध्यमान अंकों (28.66 व 34.71) से विदित होता है, कि शहरी विज्ञान शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक अनुकूल है ।

पिछड़ी जाति के समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमान अंक (27.60 व 24.83), प्रमाणिक विचलन (4.821 व 5.759) है । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 2.88 व 3.00 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । अतः यह स्पष्ट है कि पिछड़ी जाति के ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति आर्थिक मूल्य पर इसी जाति के शहरी शिक्षकों से धनात्मक है ।

सारिणी 24.4 में आर्थिक मूल्य पर सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एफ मूल्यों को भी प्रदर्शित किया गया है । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थकता की कसौटी पर नही है । अतः यह कहा जा सकता है कि सभी समूहों में औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के आर्थिक मूल्यों में संकेन्द्रण हैं ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर- पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

राजनीतिक मूल्य के आधार पर पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, टी संयुक्त व पृथक टी मूल्य को सारिणी 25.4 में प्रदर्शित किया गया है ।

सारिणी - 25.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न पिछड़ी जाति के शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	पिछड़ी जाति के ग्रा0पु0शि0	39	19.25	3.618	.579	1.56	1.66	1.69
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	64	20.62	4.706	.588			
2.	पिछड़ी जाति की ग्रा0म0शि0	12	22.66	3.367	.972	1.44	1.44	1.03
	पिछड़ी जाति की श0म0शि0	19	20.89	3.315	.760			
3.	पिछड़ी जाति के ग्रा0क0शि0	45	19.84	2.899	.432	.52	.56	1.86
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	76	20.19	3.950	.453			
4.	पिछड़ी जाति के ग्रा0वि0शि0	06	21.66	8.262	3.373	1.10	1.07	1.97
	पिछड़ी जाति के श0वि0शि0	07	26.00	5.888	2.225			
5.	पिछड़ी जाति के स0ग्रा0शि0	51	20.05	3.818	.535	.84	.87	1.33
	पिछड़ी जाति के स0श0शि0	83	20.68	4.409	.484			

पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक प्रकार की है । इसी जाति की ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की ज0शि0 अभिवृत्ति में भी कोई सार्थकता नही है । इस समूह के मध्यमान अंक (.22.66 व 20.89) हैं । संयुक्त एवं पृथक अनुमान के आधार पर टी मूल्य (1.44 व 1.44) हैं जो किसी मानक स्तर पर सार्थक नहीं है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पिछड़ी जाति की ग्रामीण महिला शिक्षक राजनीतिक मूल्य के आधार पर कुछ अनुकल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती है ।

पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थकता नहीं है । इसी जाति के ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की अभिवृत्ति में भी कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान 21.66 व 26.00 हैं । अतः यह कह सकते हैं, कि शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति राजनीतिक मूल्य पर केवल मध्यमान अंकों पर अनुकूल है ।

समस्त पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमान अंकों में समानता है । दोनों अनुमानों के आधार पर टी मूल्य .84 व .87 जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है । अतः राजनीतिक मूल्य के आधार पर पिछड़ी जाति के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक समान है ।

सारिणी में प्रदर्शित एफ मूल्यों में भी कोई सार्थकता नही है । अतः कहा जा सकता है कि सांख्यिकीय दृष्टि से सभी समूहों में कोई अन्तर नहीं है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न पिछड़ी जाति के शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 26.4 में पिछड़ी जाति के धार्मिक एवं जातिगत मूल्यों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के समान्तर माध्य, प्रमाणिक विचलन तथा संयुक्त एवं पृथक अनुमात के आधार पर टी मूल्यों को दर्शाया गया है ।

सारिणी में विभिन्न समूहों के मध्यमान अंकों व संयुक्त एवं पृथक रूप में टी मूल्यों को देखने पर पता चलता है कि किसी भी समूह में किसी भी मानक स्तर पर सार्थकता नही है । सभी समूहों के मध्यमान एक जैसे है । केवल पिछड़ी जाति के ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों व पिछड़ी

सारणी - 20.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न पिछड़ी जाति के शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	पिछड़ी जाति के ग्रा0पु0शि0	39	23.20	4.959	.794	.59	.57	1.31
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	64	22.65	4.336	.542			
2.	पिछड़ी जाति की ग्रा0म0शि0	12	23.23	3.172	.916	1.37	1.48	1.99
	पिछड़ी जाति की श0म0शि0	19	25.36	4.475	1.027			
3.	पिछड़ी जाति के ग्रा0क0शि0	45	23.28	4.421	.599	.32	.33	1.23
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	76	23.02	4.451	.511			
4.	पिछड़ी जाति के ग्रा0वि0शि0	06	22.83	8.159	3.331	.90	.86	3.63
	पिछड़ी जाति के श0वि0शि0	07	26.00	4.282	1.618			
5.	पिछड़ी जाति के स0ग्रा0शि0	51	23.23	4.572	.640	.05	.05	1.04
	पिछड़ी जाति के स0श0शि0	83	23.27	4.489	.493			

सारिणी - 27.4

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न पिछड़ी जाति के शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	पिछड़ी जाति के ग्रा0पु0शि0	39	29.48	3.634	.582	1.26	1.34	1.71
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	64	28.37	4.746	.593			
2.	पिछड़ी जाति की ग्रा0म0शि0	12	27.58	5.534	1.598	.05	.05	1.18
	पिछड़ी जाति की श0म0शि0	19	27.68	6.000	1.377			
3.	पिछड़ी जाति के ग्रा0क0शि0	45	28.57	4.148	.618	.95	.99	1.41
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	76	27.75	4.924	.565			
4.	पिछड़ी जाति के ग्रा0वि0शि0	06	32.50	2.588	1.057	.49	.49	1.48
	पिछड़ी जाति के श0वि0शि0	07	33.28	3.147	1.190			
5.	पिछड़ी जाति के स0ग्रा0शि0	51	29.03	4.176	.585	.98	1.02	1.45
	पिछड़ी जाति के स0श0शि0	83	28.21	5.029	.552			

जाति के शहरी विज्ञान शिक्षकों के मध्यमान अंकों में कुछ अन्तर है । इस समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (22.83 व 26.00) हैं । अतः कहा जा सकता है कि इस वर्ग के शहरी विज्ञान शिक्षक धार्मिक एवं जातिगत आधार पर अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण यह अनुभव करता है कि पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूह धार्मिक एवं जातिगत आधार पर रूढ़िवादी परम्पराओं से अब भी जकड़े हैं ।

सारिणी में प्रदर्शित प्रसरण अनुपात परीक्षण से पता चलता है कि धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न समूहों में कोई भी एफ मूल्य पर सार्थक नहीं है । अतः कहा जा सकता है कि सांख्यिकीय दृष्टि से सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर एक प्रकार की है ।

अन्य मूल्य के आधार पर पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 27.4 में पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के समान्तर माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण को प्रदर्शित किया गया है ।

उपरोक्त मूल्य के आधार पर किसी भी समूह में सार्थक अन्तर नहीं है । सारिणी के अवलोकन से विदित होता है कि अन्य मूल्य के आधार पर पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों के मध्यमान अंकों में भी कोई अधिक अन्तर नही है । सभी समूहों के मध्यमान अंक लगभग एक जैसे हैं । अतः इस आधार पर हम कह सकते हैं कि इस जाति के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में अन्य मूल्य के आधार पर एकरूपता की स्थिति है । शोधकर्ता यह महसूस करता है कि पिछड़ी जाति के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति को शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक आदि सभी चर प्रभावित करते हैं ।

सारिणी में विभिन्न समूहों के प्रसरण अनुपात परीक्षण देखने पर विदित होता है, कि किसी भी समूह के एफ मूल्यों में कोई सार्थकता नही है । अतः अन्य मूल्य पर सांख्यिकीय दृष्टि से पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एकरूपता की झलक है ।

सारिणी - 28.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न पिछड़ी जाति के शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	पिछड़ी जाति के ग्रा0पु0शि0	39	144.89	14.954	2.395	.87	.94	1.85
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	64	141.62	20.315	2.539			
2.	पिछड़ी जाति की ग्रा0म0शि0	12	146.83	15.075	4.352	.51	.53	1.29
	पिछड़ी जाति की श0म0शि0	19	144.73	17.143	3.933			
3.	पिछड़ी जाति के ग्रा0क0शि0	45	144.31	11.764	1.754	1.71	1.88	2.11
	पिछड़ी जाति के श0पु0शि0	76	139.36	17.092	1.961			
4.	पिछड़ी जाति के ग्रा0वि0शि0	06	155.16	29.539	12.059	1.50	1.43	3.31
	पिछड़ी जाति के श0वि0शि0	07	174.57	16.226	6.133			
5.	पिछड़ी जाति के स0ग्रा0शि0	51	145.58	14.884	2.084	1.02	1.09	1.73
	पिछड़ी जाति के स0श0शि0	83	142.33	19.579	2.149			

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न पिछड़ी जाति के शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 28.4 में सभी मूल्यों के योग पर पिछड़ी जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य को प्रदर्शित किया गया है ।

सभी मूल्यों के योग पर पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान क्रमशः (144.89 व 141.62) तथा प्रमाणिक विचलन 14.954 व 20.315 हैं । समूह के टीमूल्य .87 व .95 है । जिनमें कोई सार्थकता नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर कहा जा सकता है कि पिछड़ी जाति के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की इसी जाति के शहरी पुरूष शिक्षकों से जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में उच्चता है ।

सार्थकता की दृष्टि से पिछड़ी जाति की ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह में भी कोई अन्तर नही है । समूह के मध्यमान 146.83 व 144.73 है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर सभी मूल्यों के योग पर पिछड़ी जाति की ग्रामीण महिलाओं का इसी जाति की शहरी महिलाओं से उच्च दृष्टिकोण है । सम्भवतः इसका कारण ग्रामीण परिवेश में पिछड़ी जाति की ग्रामीण महिलाओं का विषद जनसंख्या अनुभव हो ।

पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सभी मूल्यों के योग पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान (144.31 व 139.36) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.71 व 1.88 है । मध्यमान अंकों के आधार पर कहा जा सकता है कि पिछड़ी जाति के ग्रामीण कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अपनी ही जाति के शहरी शिक्षकों से अनुकूलता लिये हैं ।

पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह के मध्यमान (155.16 व 174.57), प्रमाणिक विचलन (29.539 व 16.226) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.50 व 1.43) हैं । समूह के टी मूल्यों में सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है, केवल मध्यमान अंकों के आधार पर

सारिणी - 29.4

शैक्षिक मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अनुसूचित जाति के ग्रा0पु0शि0	61	26.27	5.754	.737	$2.12^{\times}$	$4.30^{\times}$	4.14
	अनुसूचित जाति के श0पु0शि0	02	35.00	2.828	2.000			
2.	अनुसूचित जाति की ग्रा0म0शि0	02	24.50	6.364	4.500	-	-	-
	अनुसूचित जाति की श0म0शि0	00	-	-	-			
3.	अनुसूचित जाति के ग्रा0क0शि0	38	25.02	5.299	.860	-	-	-
	अनुसूचित जाति के श0क0शि0	00	-	-	-			
4.	अनुसूचित जाति के ग्रा0वि0शि0	25	28.04	5.976	1.195	1.61	2.99	4.46
	अनुसूचित जाति के श0वि0शि0	02	35.00	2.828	2.000			
5.	अनुसूचित जाति के स0ग्रा0शि0	63	26.22	5.726	.721	$2.15^{\times}$	$4.30^{\times}$	4.10
	अनुसूचित जाति के स0श0शि0	02	35.00	2.828	2.000			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

यह कहा जा सकता है कि पिछड़ी जाति के शहरी विज्ञान शिक्षक इसी जाति के ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से कुछ धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । समस्त पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (145.58 व 142.33) के आधार पर यह कह सकते हैं कि पिछड़ी जाति के ग्रामीण शिक्षकों की सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में पिछड़ी जाति के शहरी शिक्षकों से कुछ धनात्मकता है ।

सारिणी 28.9 में सार्थक रूप से भिन्नता का पता लगाने के लिए प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफमूल्य) भी सभी समूहों में ज्ञात किये गये । सारिणी के अवलोकन से विदित है कि किसी भी समूह के एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः यह कह सकते हैं कि पिछड़े वर्ग के विभिन्न समूहों के अर्न्तगत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सांख्यिकीय रूप से कोई विशेष अन्तर नही है ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 29.4 में शैक्षिक मूल्य के आधार पर अनु0 जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

शैक्षिक मूल्य पर अनुसुचित जाति के ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के माध्य क्रमशः (26.27 व 35.00) है । अतः अनुसूचित जाति के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों का शहरी पुरूष शिक्षकों से जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के शैक्षिक मूल्य पर स्तर निम्न है । शहरी पुरूष शिक्षकों की धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का कारण शोधकर्ता यह अनुभव करता है कि अनुसूचित जाति के शहरी पुरूष शिक्षक, ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से समाचार पत्र-पत्रिकाओं व अन्य साधनों से अधिक ज्ञान उपार्जन करते हैं ।

अनुसुचित जाति के ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । परन्तु समूह के मध्यमान अंको में पर्याप्त अन्तर है । समूह के माध्य क्रमशः (28.04 व 35.00) हैं । अतः माध्यमान अंकों के आधार

सारिणी - 30.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर अनु0जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन,मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अनुसूचित जाति के ग्रा0पु0शि0	61	25.70	4.978	.637	1.63	2.25	1.98
	अनुसूचित जाति के श0पु0शि0	02	31.50	3.536	2.500			
2.	अनुसूचित जाति की ग्रा0म0शि0	02	25.00	2.828	2.000	-	-	-
	अनुसूचित जाति की श0म0शि0	00	-	-	-			
3.	अनुसूचित जाति के ग्रा0क0शि0	38	26.52	4.304	.698	-	-	-
	अनुसूचित जाति के श0क0शि0	00	-	-	-			
4.	अनुसूचित जाति के ग्रा0वि0शि0	25	24.40	5.560	1.112	1.76	2.59	2.47
	अनुसूचित जाति के श0वि0शि0	02	31.50	3.536	2.500			
5.	अनुसूचित जाति के स0ग्रा0शि0	63	25.68	4.912	.619	1.66	2.26	1.93
	अनुसूचित जाति के स0श0शि0	02	31.50	3.536	2.500			

पर यह कहा जा सकता है, कि शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति शैक्षिक मूल्य के आधार पर, ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से अधिक श्रेष्ठ है ।

अनूसूचित जाति की शहरी महिला शिक्षक न्यादर्श में न होने के कारण इस समूह में कोई सार्थक अन्तर ज्ञात नहीं हुआ । यहीं समान परिस्थिति अनुसूचित जाति के ग्रामीण कला शिक्षकों व शहरी कला शिक्षकों की रही ।

समस्त अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के शैक्षिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है । समूहों के मध्यमान क्रमशः (26.22 व 35.00) है । टी मूल्य संयुक्त एवं पृथक आधार पर (2.15 व 4.30) हैं जो 0.05 स्तर पर सार्थक हैं । अतः माध्य अंकों के आधार पर शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति इसी जाति के ग्रामीण शिक्षकों से अधिक सार्थक है ।

सारिणी 29.4 में सभी समूहों के एफमूल्य भी ज्ञात किये गये, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है । अतः उपरोक्त सभी समूहों में प्रसरण के आधार पर शैक्षिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई अन्तर नही है । अर्थात् सभी समूहों में औसत शैक्षिक जनसंख्या अभिवृत्ति के पारितः संक्रेन्द्रण समान हैं ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 30.4 में सामाजिक मूल्य के आधार पर अनु0 जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य) दर्शाये गये हैं ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (25.70 व 31.50), प्रमाणिक विचलन (4.978 व 3.536) तथा संयुक्त एवं पृथक अनुमान के आधार पर टी मूल्य 1.63 व 2.25 हैं । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर यह स्पष्ट है, कि शहरी जाति के पुरूष शिक्षकों की सामाजिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अनुसूचित जाति के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से अधिक धनात्मक है । शोधकर्ता इसका कारण अनुसूचित जाति के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की रूढ़िवादी सामाजिक परम्पराओं को मानता है ।

सारिणी - 31.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य: प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अनुसूचित जाति के ग्रा0पु0शि0	61	31.01	5.430	.695	1.80	5.73x	14.74
	अनुसूचित जाति के श0पु0शि0	02	38.00	1.414	1.000			
2.	अनुसूचित जाति की ग्रा0म0शि0	02	35.50	.707	.500	-	-	-
	अनुसूचित जाति की श0म0शि0	00	-	-	-			
3.	अनुसूचित जाति के ग्रा0क0शि0	38	31.50	5.012	.813	-	-	-
	अनुसूचित जाति के श0क0शि0	00	-	-	-			
4.	अनुसूचित जाति के ग्रा0वि0शि0	25	30.64	6.013	1.203	1.70	4.71xx	18.08
	अनुसूचित जाति के श0वि0शि0	02	38.00	1.414	1.000			
5.	अनुसूचित जाति के स0ग्रा0शि0	63	31.15	5.401	.680	1.78	5.66x	14.58
	अनुसूचित जाति के स0श0शि0	02	38.00	1.414	1.000			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

अनुसूचित जाति की शहरी महिला शिक्षक न्यादर्श में न होने के कारण महिला समूह में कोई सार्थक अन्तर ज्ञात नही हो पाया । इसी जाति के शहरी कला शिक्षक भी न्यादर्श के लिए प्राप्त नहीं हो सके ।

अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (24.40 व 31.50) हैं ।

अनुसूचित जाति के समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की सामाजिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 या 0.01 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान क्रमशः (25.68 व 31.50) हैं। केवल मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि सामाजिक मूल्य पर अनुसुचित जाति के शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अनुकूल स्तर की है ।

सारिणी 30.4 में सभी समूहों के एफमूल्य भी दर्शाये गये हैं । जिनमें किसी भी स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नही है । अतः यह कहा जा सकता है, कि सभी समूहों की औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संकेन्द्रण है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 31.4 में आर्थिक मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक (टी मूल्य) व (एफ मूल्य) को प्रदर्शित किया गया है ।

अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (31.01 व 38.00), प्रमाणिक विचलन (5.430 व 1.414) है । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.80 व 5.73 है । पृथक टी मूल्य के आधार पर समूह की अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति इसी जाति के ग्रामीण शिक्षकों से अधिक धनात्मक है ।

सारिणी - 32.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अनुसूचित जाति के ग्रा0पु0शि0	61	21.49	6.260	.802	1.34	1.67	1.60
	अनुसूचित जाति के श0पु0शि0	02	27.50	4.950	3.500			
2.	अनुसूचित जाति की ग्रा0म0शि0	02	24.50	.707	.500	-	-	-
	अनुसूचित जाति की श0म0शि0	00	-	-	-			
3.	अनुसूचित जाति के ग्रा0क0शि0	38	20.92	5.185	.841	-	-	-
	अनुसूचित जाति के श0क0शि0	00	-	-	-			
4.	अनुसूचित जाति के ग्रा0वि0शि0	25	22.60	7.450	1.490	.91	1.29	2.27
	अनुसूचित जाति के श0वि0शि0	02	27.50	4.950	3.500			
5.	अनुसूचित जाति के स0ग्रा0शि0	63	21.58	6.182	.779	1.34	1.65	1.56
	अनुसूचित जाति के स0श0शि0	02	27.50	4.950	3.500			

आर्थिक मूल्य पर अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में पृथक टी मूल्य के आधार पर 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान क्रमशः (30.64 व 38.00) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.70 व 4.71 हैं । मध्यमान अंकों से विदित है कि अनुसूचित जाति के शहरी विज्ञान शिक्षक, अपनी जाति के ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

अनुसूचित जाति के समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में पृथक टी मूल्य के आधार पर 0.05 स्तर का सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान (31.15 व 38.00) तथा पृथक टी मूल्य 5.66 है । मध्यमान अंकों से विदित है, कि अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षकों की अपनी जाति के ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक व अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । शोधकर्ता इसका कारण अनुसूचित जाति के शिक्षकों का शहरों में अधिक आर्थिक मानदण्डों की उपलब्धता को सूक्ष्मता के साथ अवलोकन करना है ।

विभिन्न समूहों के एफ मूल्यों को भी सारिणी 31.4 में दर्शाया गया है । सारिणी से स्पष्ट है, कि किसी भी समूह के एफ मूल्यों में सार्थक अन्तर नही है । अर्थात् सभी समूहों में औसत आर्थिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के पारितः संकेन्द्रण समान हैं ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य को राजनीतिक मूल्य के आधार पर सारिणी 32.4 में दर्शाया गया है ।

अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों के मध्यमान क्रमशः (21.49 व 27.50), प्रमाणिक विचलन (6.260 व 4.950) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.34 व 1.67) है, जो 0.05 व 0.01 दोनो मानक स्तरों पर सार्थक नही है । अतः समूह में कोई सार्थक अन्तर नही है । केवल मध्यमान अंकों से परिलक्षित है, कि शहरी पुरूष शिक्षक, ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से राजनीतिक मूल्य पर कुछ अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सारिणी - 33.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अनुसूचित जाति के ग्रा0पु0शि0	61	22.96	4.923	.630	1.72	5.10^{x}	12.12
	अनुसूचित जाति के श0पु0शि0	02	29.00	1.414	1.000			
2.	अनुसूचित जाति की ग्रा0म0शि0	02	22.50	.707	.500	-	-	-
	अनुसूचित जाति की श0म0शि0	00	-	-	-			
3.	अनुसूचित जाति के ग्रा0क0शि0	38	22.21	4.872	.790	-	-	-
	अनुसूचित जाति के श0क0शि0	00	-	-	-			
4.	अनुसूचित जाति के ग्रा0वि0शि0	25	24.08	4.672	.934	1.46	3.59^{x}	10.91
	अनुसूचित जाति के श0वि0शि0	02	29.00	1.414	1.000			
5.	अनुसूचित जाति के स0ग्रा0शि0	63	22.95	4.844	.610	1.75	5.16^{x}	11.73
	अनुसूचित जाति के स0श0शि0	02	29.00	1.414	1.000			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

राजनीतिक मूल्य पर अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के केवल मध्यमान अंकों (22.60 व 27.50) से यह प्रदर्शित है, कि अनुसूचित जाति के ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से इसी जाति के शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति कुछ अनुकूल है ।

अनूसूचित जाति के समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में राजनीतिक मूल्य पर दोनों मानक स्तरों 0.05 तथा 0.01 पर कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः 21.58 व 27.50 हैं । केवल मध्यमान अंकों को लक्षित करके यह कहा जा सकता है कि अनुसूचित जाति के ग्रामीण शिक्षकों से शहरी शिक्षक कुछ उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण न्यादर्श की विसंगति मानता है ।

सारिणी 32.4 में विभिन्न समूहों के एफ मूल्य को भी प्रदर्शित किया गया है । सारिणी के अवलोकन से विदित है, कि किसी भी समूह के एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रति समान संकेन्द्रण हैं ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य को सारिणी 33.4 में दर्शाया गया है ।

अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान क्रमशः 22.96 व 29.00 हैं । इस समूह का प्रमाणिक विचलन 4.923 व 1.414 है । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य क्रमशः 1.72 व 5.10 ज्ञात हुए । मध्यमान अंकों के आधार पर यह स्पष्ट है कि उपरोक्त समूह के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से शहरी पुरूष शिक्षक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः 24.08 व 29.00 है । समूह का संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) 1.46 व 3.59 है । अतः

सारिणी 34.4

अन्य मूल्य के आधार अनुसूचित जाति के विभिन्न समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के समान्तर माध्य, प्रमाणिक विचलन,मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी. मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अनुसूचित जाति के ग्रा0पु0शि0	61	31.95	4.039	.517	-	-	-
	अनुसूचित जाति के श0पु0शि0	02	36.00	.000	.000			
2.	अनुसूचित जाति की ग्रा0म0शि0	02	33.00	.000	.000	-	-	-
	अनुसूचित जाति की श0म0शि0	00	00.00	.000	.000			
3.	अनुसूचित जाति के ग्रा0क0शि0	38	31.94	4.080	.662	-	-	-
	अनुसूचित जाति के श0क0शि0	00	.00	.000	.000			
4.	अनुसूचित जाति के ग्रा0वि0शि0	25	32.04	3.900	.780	-	-	-
	अनुसूचित जाति के श0वि0शि0	02	36.00	.000	.000			
5.	अनुसूचित जाति के स0ग्रा0शि0	63	31.98	3.978	.501	-	-	-
	अनुसूचित जाति के स0श0शि0	02	36.00	.000	.000			

समूह के पृथक टी मूल्य में 0.05 स्तर पर सार्थकता है । माध्य के अनुसार ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से शहरी विज्ञान शिक्षक सार्थक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता यह अनुभव करता है कि शहरी विज्ञान शिक्षक धार्मिक एवं जातिगत आधार पर जनसंख्या शिक्षा के विषय में अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हैं ।

अनुसूचित जाति के समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की धार्मिक एवं जातिगत आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान 22.95 व 29.00 हैं । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 1.75 व 5.16 रहे । मध्यमान अंकों से परिलक्षित होता है, कि अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षक जनसंख्या शिक्षा के विषय में इसी जाति के ग्रामीण शिक्षकों से घनात्मक अभिरूचि प्रकट करते हैं ।

सारिणी 33.4 में सभी समूहों के एफ मूल्य भी निकाले गये, जिनमें से कोई भी मूल्य सार्थक नही है । अतः उपरोक्त सभी समूहों में प्रसरण के आधार पर धार्मिक एवं जातिगत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है । अर्थात् सभी समूहों में औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के पारित संकेन्द्रण समान है ।

अन्य मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

अन्य मूल्य के आधार पर अनुसूचित जाति के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य व एफ मूल्य न्यादर्श की विसंगति के कारण ज्ञात नहीं हो सके ।

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न अनुसूचित जाति के शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 35.4 में अनुसूचित जाति के मूल्यों के योग पर विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) को संयुक्त एवं पृथक रूप से दर्शाया गया है ।

अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह में सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः 159.40 व 197.00 तथा संयुक्त एवं पृथक स्तर पर टी मूल्य 2.76 व 14.24 है । अतः इस जाति में ग्रामीण शिक्षकों से शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक सार्थक व अनुकूल है ।

सारिणी - 35.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न अनुसूचित जाति के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
नुसूचित जाति के ग्रा0पु0शि0	61	159.40	19.076	2.442	2.76xx	14.24xx	181.96
नुसूचित जाति के श0पु0शि0	02	197.00	1.414	1.000			
नुसूचित जाति की ग्रा0म0शि0	02	165.00	4.243	3.000	-	-	-
नुसूचित जाति की श0म0शि0	00	-	-	-			
नुसूचित जाति के ग्रा0क0शि0	38	157.86	16.926	2.746	-	-	-
नुसूचित जाति के श0क0शि0	00	-	-	-	-		
नुसूचित जाति के ग्रा0वि0शि0	25	162.20	21.438	4.288	2.25x	7.90xx	229.79
नुसूचित जाति के श0वि0शि0	02	197.00	1.414	1.000			
नुसूचित जाति के स0ग्रा0शि0	63	159.58	18.800	2.369	2.79xx	14.55xx	176.72
नुसूचित जाति के स0श0शि0	02	197.00	1.414	1.000			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः 162.20 व 197.00 हैं । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य क्रमशः 2.25 व 7.90 ज्ञात हुए । जो क्रमशः 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । अतः मध्यमान से स्पष्ट है कि ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक धनात्मक है ।

अनुसूचित जाति के समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.79 व 14.55 हैं । अतः मध्यमान अंकों 159.50 व 197.00 से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के ग्रामीण शिक्षकों से अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षक कहीं अधिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सभी मूल्यों के योग पर अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षकों ने अनुसूचित जाति के ग्रामीण शिक्षकों से अधिक धनात्मक व अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति प्रकट की है । अतः शोधकर्ता यह अनुभव करता है कि अनुसूचित जाति के शिक्षकों में परिवेश का प्रभाव पड़ता है । शहर में अधिक शैक्षिक संसाधन, वैज्ञानिक मूल्य, राजनीतिक गतिविधियाँ, आर्थिक अवसरों की अधिकता व सामाजिकता की प्रगतिवादी परम्परायें इसके लिये उत्तरदायी हैं ।

सारिणी 35.4 में विभिन्न समूहों के प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य) भी दिखाये गये हैं जो सार्थक नही है । अतः सांख्यिकीय दृष्टि से सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एक समानता है ।

शैक्षिक मूल्य के आधार हिन्दू शिक्षकों के विभिन्न समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 36.4 में शैक्षिक मूल्य के आधार पर हिन्दू शिक्षकों के विभिन्न शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) को दर्शाया गया है ।

हिन्दू ग्रामीण पुरूष शिक्षक व हिन्दू शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के माध्य क्रमशः 27.65 व 32.73 प्रमाणिक विचलन 6.467 व 5.753 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 5.06 व 5.37 हैं, जो 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । मध्यमान अंकों के आधार पर कहा जा सकता है कि हिन्दू धर्म के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से इसी धर्म के शहरी पुरूष शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न हिन्दू शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा आवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	हिन्दू ग्रा0पु0शि0	164	27.65	6.467	.505	5.06xx	5.37xx	1.26
	हिन्दू श0पु0शि0	52	32.73	5.753	.798			
2.	हिन्दू ग्रा0म0शि0	33	27.57	4.816	.838	.08	.09	1.61
	हिन्दू श0म0शि0	51	27.47	6.104	.855			
3.	हिन्दू ग्रा0क0शि0	128	27.35	6.226	.550	3.57xx	3.58xx	1.01
	हिन्दू श0क0शि0	76	30.56	6.187	.710			
4.	हिन्दू ग्रा0वि0शि0	69	28.18	6.189	.745	.48	.45	1.34
	हिन्दू श0वि0शि0	27	28.88	7.170	1.380			
5.	समस्त हिन्दू ग्रा0शि0	197	27.64	6.210	.442	3.24xx	3.20xx	1.08
	समस्त हिन्दू0श0शि0	103	30.12	6.465	.637			

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है । शोधकर्ता इसका कारण शहर में सुलभ समाचार पत्रों, सांस्कृतिक गतिविधियों, सार्वजनिक पुस्तकालयों को मानता है ।

हिन्दू धर्म की ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है । इस समूह के माध्य क्रमशः 27.57 व 27.47 हैं । अतः इस समूह में शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर एक प्रकार का है ।

हिन्दू ग्रामीण कला व शहरी कला शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान 27.35 व 30.56 तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 3.57 व 3.58 हैं, जो 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि हिन्दू ग्रामीण कला शिक्षकों से हिन्दू शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक सार्थक हैं ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर हिन्दू ग्रामीण विज्ञान व शहरी विज्ञान शिक्षकों में सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः 28.18 व 28.88 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .48 व .45 हैं । अतः इस समूह के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में अधिक भिन्नता नहीं है । शोधकर्ता यह अनुभव करता है, कि हिन्दू ग्रामीण विज्ञान अध्यापक भी अधिकांश शहरों में निवास कर रहे हैं जिससे उनकी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति हिन्दू शहरी शिक्षकों के समान हैं ।

समस्त हिन्दू ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों के बीच जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के शैक्षिक मूल्यों में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान 27.64 व 30.12 प्रमाणिक विचलन 6.210 व 6.465 है । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 3.24 व 3.20 ज्ञात हुए । मध्यमान अंकों के आधार पर परिलक्षित है, कि हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों से हिन्दू शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक सार्थक व धनात्मक है । शोधकर्ता इसका कारण शहर में ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक शैक्षिक वातावरण को मानता है ।

सारिणी 36.4 में विभिन्न समूहों के एफमूल्यों को दर्शाया गया है, जो सार्थक नहीं हैं । अतः उपरोक्त सभी समूहों में प्रसरण अनुपात के आधार पर हिन्दू धर्म के शिक्षकों की शैक्षिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई अन्तर नही है । अर्थात् सभी समूहों में औसत शैक्षिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परित संकेन्द्रण समान हैं ।

सारिणी - 37.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न हिन्दू शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	हिन्दू ग्रा0पु0शि0	164	26.26	5.159	.403	7.08xx	8.00xx	1.61
	हिन्दू श0पु0शि0	52	31.80	4.068	.564			
2.	हिन्दू ग्रा0म0शि0	33	27.93	4.756	.828	2.59x	2.50x	1.37
	हिन्दू श0म0शि0	51	30.45	4.066	.569			
3.	हिन्दू ग्रा0क0शि0	128	26.75	4.682	.414	6.81xx	6.93xx	1.15
	हिन्दू श0क0शि0	76	31.25	4.361	.500			
4.	हिन्दू ग्रा0वि0शि0	69	26.15	5.865	.706	3.88xx	4.88xx	3.10
	हिन्दू श0वि0शि0	27	30.81	3.329	.641			
5.	समस्त हिन्दू ग्रा0शि0	197	26.54	5.120	.365	7.87xx	8.43xx	1.56
	समस्त हिन्दू0श0शि0	103	31.13	4.104	.404			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

सामाजिक मूल्य के आधार पर हिन्दू धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सामाजिक मूल्य के आधार पर हिन्दू धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक टी मूल्यों को सारिणी 37.4 में प्रदर्शित किया गया है ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की सामाजिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान 26.26 व 31.80 प्रमाणिक विचलन 5.159 व 4.068 तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य क्रमशः 7.08 व 8.00 हैं । अतः वर्णित समूह में 0.01 स्तर पर सार्थकता है । मध्यमान अंकों से परिलक्षित है, कि सामाजिक मूल्य के आधार पर हिन्दू शहरी पुरूष शिक्षक, हिन्दू ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से अधिक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । सम्भवतः इसका कारण हिन्दू ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा हिन्दू शहरी पुरूष शिक्षकों की प्रगतिवादी सामाजिक परम्परायें हो सकती हैं ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर स्पष्ट है । उल्लेखित समूह के मध्यमान क्रमशः 27.93 व 30.45 हैं । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 2.59 व 2.50 है । अतः शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, ग्रामीण महिला शिक्षकों से धनात्मक है । इसका कारण शोधकर्ता शहरी महिला शिक्षकों का सामाजिक कुरीतियों से पृथक रहना मानता है ।

उपरोक्त मूल्य पर हिन्दू ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थकता पायी गयी । इस समूह में हिन्दू शहरी कला शिक्षकों के मध्यमान अंक अधिक है । अतः सामाजिक मूल्य पर हिन्दू शहरी कला शिक्षक, हिन्दू ग्रामीण कला शिक्षकों से अधिक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में भी 0.01 स्तर पर सार्थकता है । उल्लेखित समूह के मध्यमान अंक क्रमशः 26.15 व 30.81 तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 3.88 व 4.88 हैं । अतः स्पष्ट है कि हिन्दू शहरी विज्ञान शिक्षक, हिन्दू ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों की अपेक्षा अधिक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण शहरी विज्ञान शिक्षकों का सामाजिकता पर अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण मानता है ।

सारिणी - 38.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न हिन्दू शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	हिन्दू ग्रा0पु0शि0	164	32.50	5.988	.429	3.13xx	3.65xx	1.84
	हिन्दू श0पु0शि0	52	35.07	4.043	.561			
2.	हिन्दू ग्रा0म0शि0	33	34.36	4.636	.807	.64	.59	2.19
	हिन्दू श0म0शि0	51	34.90	3.132	.439			
3.	हिन्दू ग्रा0क0शि0	128	33.07	5.092	.450	3.09xx	3.43xx	2.35
	हिन्दू श0क0शि0	76	35.09	3.323	.381			
4.	हिन्दू ग्रा0वि0शि0	69	32.33	5.910	.712	1.89	2.16x	1.84
	हिन्दू श0वि0शि0	27	34.70	4.357	.839			
5.	समस्त हिन्दू ग्रा0शि0	197	32.81	5.389	.384	3.69xx	4.16xx	2.24
	समस्त हिन्दू0श0शि0	103	34.99	3.604	.355			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

समस्त हिन्दू ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः 26.54 व 31.13 है । संयुक्त एवं पृथक आधार पर टी मूल्य 7.87 व 8.43 हैं । अतः मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि हिन्दू शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों से अधिक धनात्मक हैं । सम्भवतः इसका कारण हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों पर अधिक रूढ़िवादी सामाजिक परम्पराओं की जकड़न तथा शहरी शिक्षकों का प्रगतिवादी, वैज्ञानिक सामाजिक परम्पराओं का अनुपालन है ।

सारिणी 37.4 में सभी समूहों के एफ मूल्य प्रदर्शित हैं, जिनमें सार्थकता का स्तर नही है । अर्थात् सभी समूहों में सामाजिक मूल्य पर औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परित संकेन्द्रण समान है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर हिन्दू धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 38.4 में हिन्दू धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की आर्थिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी मूल्य (संयुक्त एवं पृथक अलोचनात्मक अनुपात) को दर्शाया गया है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर हिन्दू ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । वर्णित समूह के मध्यमान 32.50 व 35.07, प्रमाणिक विचलन 5.988 व 4.043 हैं । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य क्रमशः 3.13 व 3.65 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । अतः मध्यमान अंकों के अवलोकन से स्पष्ट है, कि हिन्दू धर्म के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति कहीं अधिक अनुकूल है । सम्भवतः इसका कारण शहरी शिक्षकों के अधिक संघर्षरत आर्थिक संसाधन है ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की आर्थिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया । समूह के मध्यमान अंक 34.36 व 34.90 है । अतः हिन्दू शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति हिन्दू ग्रामीण महिला शिक्षकों के समान है । इसका कारण शोधकर्ता समूह की महिला शिक्षकों का पूर्ण रूप से स्वयं पर निर्भर होना नही मानता है ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों में आर्थिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्यों में भिन्नता है। उल्लिखित समूह के मध्यमान 33.07 व 35.09 तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 3.09 व 3.43 है । स्पष्ट है कि इस समूह में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है । हिन्दू शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति आर्थिक मूल्य पर हिन्दू ग्रामीण कला शिक्षकों से कहीं अधिक अनुकूल व धनात्मक है । सम्भवतः इसका कारण हिन्दू शहरी शिक्षकों का अतिरिक्त समय में आर्थिक सृजनात्मक हो सकता है ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों के मध्यमान अंक 32.33 व 34.70 है । संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.89 व 2.16 है । पृथक टी मूल्य के आधार पर इस समूह में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों के आधार पर स्पष्ट है, कि हिन्दू शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक धनात्मक है । सम्भवतः इसका कारण अतिरिक्त समय में शहरी विज्ञान शिक्षकों की अधिक आर्थिक उपार्जिता है ।

समस्त हिन्दू ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की आर्थिक आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान अंकों (32.81 व 34.99) तथा संयुक्त व पृथक टीमूल्य (3.69 व 4.16) को देखने से विदित है, कि हिन्दू शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति आर्थिक मूल्य पर अधिक श्रेष्ठ है ।

सारिणी 38.4 में प्रदर्शित विभिन्न हिन्दू शिक्षक समूहों में प्रसरण के आधार पर आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । अर्थात् सभी समूहों में सांख्यिकीय दृष्टि से आर्थिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान है ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर हिन्दू धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न हिन्दू शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि एवं अलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को संयुक्त एवं पृथक आधार पर सारिणी 39.4 में दर्शाया गया है ।

हिन्दू ग्रामीण पुरूष शिक्षकों व हिन्दू शहरी पुरूष शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान अंक क्रमशः 22.12

सारणी - 5.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न हिन्दू शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	हिन्दू ग्रा0पु0शि0	164	22.12	6.070	.474	6.20xx	6.90xx	1.52
	हिन्दू श0पु0शि0	52	27.86	4.931	.684			
2.	हिन्दू ग्रा0म0शि0	33	24.60	4.366	.760	1.23	1.23	1.01
	हिन्दू श0म0शि0	51	25.80	4.382	.614			
3.	हिन्दू ग्रा0क0शि0	128	22.11	5.513	.487	6.58xx	6.80xx	1.30
	हिन्दू श0क0शि0	76	27.14	4.843	.556			
4.	हिन्दू ग्रा0वि0शि0	69	23.33	6.485	.781	1.96	2.29x	2.09
	हिन्दू श0वि0शि0	27	26.00	4.489	.864			
5.	समस्त हिन्दू ग्रा0शि0	197	22.54	5.884	.419	6.40xx	6.84xx	1.53
	समस्त हिन्दू0श0शि0	103	26.84	4.758	.469			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

व 27.86, प्रमाणिक विचलन 6.070 व 4.931 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 6.20 व 6.90 हैं, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है । अतः इस समूह के मध्यमान अंको के आधार पर यह परिलक्षित है, कि हिन्दू शहरी पुरूष शिक्षक उपरोक्त मूल्य पर अधिक सार्थक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । सम्भवतः इसका कारण शहरी शिक्षकों की गुण-दोष के आधार पर अधिक राजनीतिक तार्किकता है ।

राजनीतिक मूल्य पर हिन्दू ग्रामीण व शहरी, महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है । उल्लेखित समूह के मध्यमान 24.60 व 25.80 तथा टी मूल्य संयुक्त एवं पृथक 1.23 है, जो 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि हिन्दू शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति हिन्दू ग्रामीण महिला शिक्षकों से कुछ अनुकूल है ।

हिन्दू ग्रामीण कला व शहरी कला शिक्षकों की उपरोक्त मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान अंक 22.11 व 27.14 तथा टी मूल्य दोनों आधार पर 6.58 व 6.80 है । अतः यह स्पष्ट है, कि हिन्दू ग्रामीण कला शिक्षकों से हिन्दू शहरी कला शिक्षक जनसंख्या शिक्षा के प्रति अधिक घनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं ।

हिन्दू धर्म के ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में पृथक टी मूल्य के आधार पर सार्थक अन्तर है । वर्णित समूह के मध्यमान क्रमशः 23.33 व 26.00 तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 1.96 व 2.29 हैं । पृथक आलोचनात्मक अनुपात के आधार पर समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । उपरोक्त लिखित समूह में हिन्दू शहरी शिक्षक पृथक आलोचनात्मक मूल्य पर हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

हिन्दू धर्म के समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । इस समूह के संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 6.40 व 6.84 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है । अतः इस समूह के मध्यमान अंकों (22.54 व 26.84) को देखने से स्पष्ट है कि इस समूह में हिन्दू शहरी शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा

सारिणी - 40.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न हिन्दू शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	हिन्दू ग्रा0पु0शि0	164	24.03	5.542	.433	3.07 xx	3.30 xx	1.33
	हिन्दू श0पु0शि0	52	26.65	4.814	.668			
2.	हिन्दू ग्रा0म0शि0	33	24.30	4.565	.795	3.63 xx	3.67 xx	1.10
	हिन्दू श0म0शि0	51	28.11	4.799	.672			
3.	हिन्दू ग्रा0क0शि0	128	24.19	5.401	.477	4.21 xx	4.38 xx	1.35
	हिन्दू श0क0शि0	76	27.32	4.654	.534			
4.	हिन्दू ग्रा0वि0शि0	69	23.85	5.378	.647	3.00 xx	2.99 xx	1.01
	हिन्दू श0वि0शि0	27	27.51	5.416	1.042			
5.	समस्त हिन्दू ग्रा0शि0	197	24.07	5.381	.383	5.22 xx	5.40 xx	1.24
	समस्त हिन्दू0श0शि0	103	27.37	4.839	.477			

xx 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

अभिवृत्ति अधिक धनात्मक है । सम्भवतः इसका कारण हिन्दू धर्म के शहरी शिक्षकों की राजनीतिक सूझ बूझ व शहर में उपलब्ध विभिन्न संसाधन व राजनीतिक गतिविधियाँ हैं ।

सारिणी 39.4 में सभी समूहों के एफ मूल्यों को प्रदर्शित किया गया है । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है, कि किसी भी समूह में सार्थक अन्तर नहीं है । अतः सांख्यिकीय रूप से सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति मूल रूप से एक सी है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न हिन्दू शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर हिन्दू शिक्षकों के विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त एवं पृथक अलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) को सारिणी 40.4 में दर्शाया गया है ।

हिन्दू शिक्षकों में परिवेश के आधार पर धार्मिक एवं जातिगत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्यों में सार्थक अन्तर है । ग्रामीण व शहरी हिन्दू शिक्षकों के मध्यमान क्रमशः (24.03 व 26.65), प्रमाणिक विचलन (5.542 व 4.814) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (3.07 व 3.30) हैं, जो 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । अतः हिन्दू शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति उपरोक्त मूल्य के आधार पर धनात्मक है । सम्भवतः इसका कारण शहरी शिक्षकों का अधिक व्यापक धार्मिक एवं जातिगत दृष्टिकोण हो सकता है ।

हिन्दू शिक्षकों के ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूहों की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान अंकों (24.30 व 28.11) से स्पष्टतः परिलक्षित है, कि शहरी महिला शिक्षक जनसंख्या शिक्षा के प्रति ग्रामीण महिला शिक्षकों से धार्मिक एवं जातिगत आधार पर श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती है । शोधकर्ता इसका कारण हिन्दू ग्रामीण महिला शिक्षकों का शहरी महिला शिक्षकों से अधिक रूढ़िवादी होना मानता है ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक भी धार्मिक एवं जातिगत आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के विषय में सार्थक अन्तर रखते हैं । इस समूह के संयुक्त एवं पृथक

टी मूल्य 4.21 व 4.38 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है । मध्यमान अंकों (24.19 व 27.32) के अवलोकन से विदित है, कि हिन्दू शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति हिन्दू ग्रामीण कला शिक्षकों से अधिक अनुकूल है ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के विषय में धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर सार्थक अन्तर रखते हैं। इस समुह के मध्यमान अंक क्रमशः (23.85 व 27.51), संयुक्त व पृथक टी मूल्य (3.00 व 2.99) हैं, जो 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । अतः उपरोक्त मूल्य पर हिन्दू शहरी विज्ञान शिक्षकों का जनसंख्या शिक्षा दृष्टिकोण हिन्दू ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से अधिक धनात्मक है ।

हिन्दू धर्म के समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । वर्णित समूह के संयुक्त व पृथक अनुमान के आधार पर टी मूल्य क्रमशः 5.22 व 5.40 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है । अतः मध्यमान अंकों (24.07 व 27.37) के आधार पर स्पष्ट है कि हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों से हिन्दू शहरी शिक्षकों की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक सार्थक है । शोधकर्ता इसका कारण शहरी क्षेत्रों में अधिक तीव्रता से टूटती हुई धार्मिक एवं जातिगत कुरीतियों एवं रूढ़ियों को मानता है ।

सारिणी 40.4 में सभी समूहों के प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्यों) को प्रदर्शित किया गया है । सार्थकता अन्तर देखने पर ज्ञात होता है, कि किसी भी समूह के एफ मूल्य में सार्थकता नही है । अतः सभी समूहों में औसत धार्मिक एवं जातिगत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान है ।

अन्य मूल्य के आधार पर हिन्दू धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 41.4 में अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न हिन्दू शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक अलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) दर्शाये गये हैं ।

अन्य मूल्य के आधार पर हिन्दू ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (32.88 व 35.17), प्रमाणिक विचलन (4.069 व 3.944) तथा संयुक्त व पृथक अलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) क्रमशः

सारिणी - 41.4

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न हिन्दू शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	हिन्दू ग्रा0पु0शि0	164	32.88	4.069	.318	3.56^{xx}	3.62^{xx}	1.06
	हिन्दू श0पु0शि0	52	35.17	3.944	.547			
2.	हिन्दू ग्रा0म0शि0	33	33.12	4.435	.772	2.35^{x}	2.22^{x}	1.71
	हिन्दू श0म0शि0	51	35.13	3.394	.475			
3.	हिन्दू ग्रा0क0शि0	128	33.15	4.229	.374	3.54^{xx}	3.64^{xx}	1.26
	हिन्दू श0क0शि0	76	35.23	3.766	.432			
4.	हिन्दू ग्रा0वि0शि0	69	32.49	3.909	.471	2.84^{xx}	3.01^{xx}	1.31
	हिन्दू श0वि0शि0	27	34.92	3.419	.658			
5.	समस्त हिन्दू ग्रा0शि0	197	32.92	4.122	.294	4.62^{xx}	4.79^{xx}	1.27
	समस्त हिन्दू0श0शि0	103	35.15	3.664	.361			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

3.56 व 3.62 हैं, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है । अतः मध्यमान अंकों से विदित है कि उपरोक्त मूल्य पर हिन्दू शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों से अधिक श्रेष्ठ है ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में अन्य मूल्य के आधार पर 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः 33.12 व 35.13 तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 2.35 व 2.22 हैं । अतः हिन्दू ग्रामीण महिला शिक्षकों से अन्य मूल्य पर हिन्दू शहरी महिला शिक्षक अधिक सार्थक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती है ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक 33.15 व 35.23 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 3.54 व 3.64 हैं, जिनमें 0.01 स्तर पर सार्थकता है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि हिन्दू शहरी कला शिक्षकों की हिन्दू ग्रामीण कला शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अन्य मूल्य पर हिन्दू ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में भी 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया । इस समूह के मध्यमान अंकों (32.49 व 34.92) से स्पष्ट है कि हिन्दू शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों से अन्य मूल्य के आधार पर अधिक धनात्मक है ।

हिन्दू धर्म के न्यादर्श में चयनित समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान अंकों (32.92 व 35.15) से परिलक्षित है, कि हिन्दू शहरी शिक्षकों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों से श्रेष्ठ है ।

अन्य मूल्य के आधार पर प्रदर्शित जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सारिणी के सभी समूहों में हिन्दू शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक धनात्मक व सार्थक है । शोधकर्ता इसका कारण शहरी क्षेत्रों में अधिक प्रदूषण व आवास समस्याओं से शहरी शिक्षकों का समान होना है ।

सारिणी 41.4 में सभी समूहों में प्रसरण के आधार पर अन्य मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । अर्थात् सभी समूहों में औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण हैं ।

सारिणी - 42.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न हिन्दू शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	हिन्दू ग्रा0पु0शि0	164	165.51	20.409	1.594	7.47xx	7.84xx	1.20
	हिन्दू श0पु0शि0	52	189.30	18.635	2.584			
2.	हिन्दू ग्रा0म0शि0	33	171.60	13.158	2.290	3.90xx	3.74xx	1.48
	हिन्दू श0म0शि0	51	181.88	10.820	1.515			
3.	हिन्दू ग्रा0क0शि0	128	166.73	18.370	1.624	7.83xx	8.11xx	1.31
	हिन्दू श0क0शि0	76	186.61	16.026	1.838			
4.	हिन्दू ग्रा0वि0शि0	69	166.17	21.549	2.594	3.70xx	4.38xx	2.22
	हिन्दू श0वि0शि0	27	182.85	14.464	2.784			
5.	समस्त हिन्दू ग्रा0शि0	197	166.53	19.490	1.389	8.60xx	9.20xx	1.55
	समस्त हिन्दू0श0शि0	103	185.63	15.651	1.542			

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

सभी मूल्यों के योग पर हिन्दू धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 42.4 में सभी मूल्यों के योग पर हिन्दू धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) को प्रदर्शित किया गया है ।

उपरोक्त लिखित मूल्य पर हिन्दू ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (165.51 व 189.30) तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य (7.47 व 7.84) हैं । मध्यमान अंकों के आधार पर यह स्पष्ट है, कि हिन्दू धर्म के ग्रामीण शिक्षकों से सभी मूल्यों के योग पर हिन्दू शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक अनुकूल है ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों के मध्यमान अंक 171.60 व 181.88 तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 3.90 व 3.74 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है । अतः हिन्दू शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सभी मूल्यों के योग पर हिन्दू ग्रामीण महिला शिक्षकों से सार्थक है ।

हिन्दू ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति मूल्य योग के आधार पर सार्थक अन्तर वाली है । समूह के मध्यमान अंक 166.73 व 186.61 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 7.83 व 8.11 हैं, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है । अतः हिन्दू धर्म के ग्रामीण कला शिक्षकों से शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है ।

विज्ञान वर्ग के हिन्दू ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की टी मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों (166.17 व 182.85) के आधार पर स्पष्ट है, कि ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है ।

हिन्दू धर्म के न्यादर्श में चयनित समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की मूल्य योग के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः 166.53 व 185.63 हैं । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्यों में 0.01 स्तर पर सार्थकता है । वर्णित

सारिणी - 43.4

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न सिख शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सिख ग्रा0पु0शि0	14	23.92	7.163	1.914	0.28	0.25	2.42
	सिख श0पु0शि0	21	24.47	4.600	1.004			
2.	सिख ग्रा0म0शि0	00	-	-	-	-	-	--
	सिख श0म0शि0	05	24.60	2.408	1.077			
3.	सिख ग्रा0क0शि0	12	24.58	7.561	2.183	0.05	0.05	4.27
	सिख श0क0शि0	17	24.47	3.659	.887			
4.	सिख ग्रा0वि0शि0	02	20.00	1.414	1.000	1.14	2.22	14.51
	सिख श0वि0शि0	07	24.55	5.388	1.796			
5.	समस्त सिख ग्रा0शि0	14	23.92	7.163	1.914	0.32	0.27	2.87
	समस्त सिख श0 शि0	26	24.50	4.226	.829			

समूह के मध्यमान अंकों में पर्याप्त अन्तर है । जिसके आधार पर स्पष्ट है कि समस्त हिन्दू शहरी शिक्षक समस्त हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों से अधिक सार्थक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सारिणी 42.4 में सभी समूहों के एफ मूल्य दर्शाये गये हैं, जिनमें सार्थकता नही है । अतः औसत के आधार पर मूल्य योग की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सभी समूहों में एक जैसी है ।

शैक्षिक मूल्य के योग पर सिख धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 43.4 में शैक्षिक मूल्य के आधार पर सिख धर्म के विभिन्न सिख शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि टी मूल्य (संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात) परीक्षण को प्रदर्शित किया गया है ।

सिख ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की शैक्षिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्यों में कोई सार्थकता नही है । समूह के मध्यमान क्रमशः (23.92 व 24.47), प्रमाणिक विचलन (7.163 व 4.600) हैं । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य .28 व .25 है । जिनमें सार्थक अन्तर नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर सिख शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सिख ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से कुछ अच्छी है ।

शैक्षिक मूल्य पर सिख धर्म के ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । इस समूह के मध्यमान (24.58 व 24.47), तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य (.05) है । अतः समूह में शैक्षिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा दृष्टिकोण एक प्रकार का है ।

सिख ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की शैक्षिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थकता नही है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (20.00 व 24.55) तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 1.14 व 2.22 हैं, जो 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर हम कह सकते हैं कि शैक्षिक मूल्य पर सिख ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से सिख शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, कुछ श्रेष्ठ है ।

सारिणी - 44.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न सिख शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सिख ग्रा0पु0शि0	14	24.50	5.080	1.358	.19	.20	1.18
	सिख श0पु0शि0	21	24.14	5.516	1.204			
2.	सिख ग्रा0म0शि0	00	-	-	-	-	-	-
	सिख श0म0शि0	05	23.40	3.975	1.778			
3.	सिख ग्रा0क0शि0	12	24.66	5.499	1.588	.64	.62	1.43
	सिख श0क0शि0	17	23.47	4.598	1.115			
4.	सिख ग्रा0वि0शि0	02	23.50	.707	.500	.32	.69	80.50
	सिख श0वि0शि0	07	25.00	6.344	2.115			
5.	समस्त सिख ग्रा0शि0	14	24.50	5.080	1.358	.29	.29	1.04
	समस्त सिख श0 शि0	26	24.00	5.192	1.018			

समस्त सिख ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्य भी शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही प्राप्त हुआ । समूह के मध्यमान अंकों (23.92 व 24.50) के आधार पर कह सकते हैं, कि शहरी सिख शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति इसी धर्म के ग्रामीण शिक्षकों से कुछ उच्च स्तर की है ।

सारिणी 43.4 में शैक्षिक मूल्य के आधार पर सभी समूहों के प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य) भी ज्ञात किये गये, जिनमें कोई सार्थक अन्तर नही है । अतः जनसंख्या शिक्षा के शैक्षिक मूल्य पर ग्रामीण व शहरी सिख शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर सिख धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सामाजिक मूल्य के आधार पर सिख धर्म के विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक अलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को सारिणी 44.4 में दर्शाया गया है ।

सिख धर्म के ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में दोनों मानक स्तर पर सार्थक अन्तर नही है । इस समूह के मध्यमान अंक (24.50 व 24.14), प्रमाणिक विचलन (5.080 व 5.516) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.19 व .20) हैं । अतः समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक प्रकार की है ।

सामाजिक मूल्य पर सिख ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । इस समूह के मध्यमान अंक (24.66 व 23.47), प्रमाणिक विचलन (5.499 व 4.598) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .64 तथा .62 हैं, जो मानक 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं हैं । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर सिख ग्रामीण कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सामाजिक मूल्य पर सिख शहरी कला शिक्षकों से कुछ अनुकूल है ।

सिख ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह में सामाजिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया । इस समूह के मध्यमान क्रमशः

सारिणी - 45.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न सिख शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सिख ग्रा0पु0शि0	14	29.71	5.384	1.439	.67	.69	1.37
	सिख श0पु0शि0	21	28.33	6.311	1.377			
2.	सिख ग्रा0म0शि0	00	-	-	-	-	-	-
	सिख श0म0शि0	05	27.20	2.588	1.158			
3.	सिख ग्रा0क0शि0	12	29.83	5.828	1.683	.93	.91	1.30
	सिख श0क0शि0	17	27.94	5.105	1.238			
4.	सिख ग्रा0वि0शि0	02	29.00	1.414	1.000	.11	.21	25.64
	सिख श0वि0शि0	07	28.44	7.161	2.387			
5.	समस्त सिख ग्रा0शि0	14	29.71	5.384	1.439	.86	.87	1.14
	समस्त सिख श0 शि0	26	28.11	5.757	1.129			

(23.50 व 25.00) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः (.32 व .69) हैं, जो मानक दोनों स्तरों पर सार्थक नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर कहा जा सकता है, कि सिख ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से सिख शहरी विज्ञान शिक्षकों का सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति दृष्टिकोण अधिक सापेक्ष है ।

समस्त सिख ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के सामाजिक मूल्य पर मध्यमान अंक 24.50 व 24.00 तथा टी मूल्य संयुक्त व पृथक दोनों (.29) हैं, जो सार्थक नही है । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक समान सी हैं ।

सारिणी 44.4 मं सिख धर्म के सभी शिक्षक समूहों मं प्रसरण के आधार पर एफ मूल्य निकाले गये हैं, जिनमें कोई सार्थक अन्तर नही है । अर्थात सभी समूहों के औसत सामाजिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर सिख धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 45 में आर्थिक मूल्य के आधार पर सिख धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि एवं संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टीमूल्य) को दर्शाया गया है ।

सिख ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (29.71 व 28.33), प्रमाणिक विचलन (5.384 व 6.311) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.67 व .69) हैं, जो 0.05 व 0.01 दोनों मानक स्तरों पर सार्थक नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर स्पष्ट है कि सिख ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सिख शहरी पुरूष शिक्षकों से कुछ अच्छी है ।

सिख ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक 29.83 व 27.94 है । इस समूह के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है । ग्रामीण सिख शिक्षकों के आर्थिक मूल्य पर मध्यमान अधिक है । अतः आर्थिक मूल्य पर सिख ग्रामीण कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सिख शहरी कला शिक्षकों से अच्छी है ।

सारणी - 40.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न सिख शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा आवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सिख ग्रा0पु0शि0	14	21.42	3.837	1.026	.28	.28	1.12
	सिख श0पु0शि0	21	21.80	4.070	.888			
2.	सिख ग्रा0म0शि0	-	-	-	-	-	-	-
	सिख श0म0शि0	05	20.20	2.387	1.068			
3.	सिख ग्रा0क0शि0	12	21.33	4.141	1.196	.20	.19	1.64
	सिख श0क0शि0	17	21.05	3.230	.783			
4.	सिख ग्रा0वि0शि0	02	22.00	1.414	1.000	.09	.18	11.75
	सिख श0वि0शि0	07	22.33	4.848	1.616			
5.	समस्त सिख ग्रा0शि0	14	21.42	3.837	1.026	.06	.06	1.01
	समस्त सिख श0 शि0	26	21.50	3.818	.749			

विज्ञान वर्ग के सिख ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में भी कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नही हुआ । समूह के मध्यमान (29.00 व 28.44), तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.11 व .21) हैं, जो दोनों मानक स्तरों पर सार्थक नहीं है । अतः इस समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

समस्त ग्रामीण व शहरी सिख शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थकता नही है । इस समूह के मध्यमान अंक (29.71 व 28.11) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.86 व .87) है । केवल मध्यमान अंकों से विदित होता है, कि आर्थिक मूल्य पर सिख ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सिख, शहरी शिक्षकों से थोड़ी अनुकूल है ।

सारिणी 45.4 में सभी समूहों के एफ मूल्य भी निकाले गये हैं, जिनमें किसी भी समूह में सार्थक अन्तर नही है । अर्थात् सभी समूहों में औसत आर्थिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान हैं ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर सिख धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 46.4 में राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न सिख शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

ग्रामीण व शहरी सिख पुरूष शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान क्रमशः 21.42 व 21.80 तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य .28 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नही है । अतः इस समूह में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के राजनीतिक मूल्य एक जैसे हैं ।

सिख ग्रामीण महिला शिक्षक न्यादर्श में प्राप्त न होने के कारण इस समूह के मध्य कोई सार्थकता ज्ञात नही हो सकी । सिख ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों के मध्यमान 21.33 व 21.05, प्रमाणिक विचलन 4.141 व 3.230 हैं । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य .20 व .19 है, जो मानक स्तर पर सार्थक नही हैं । अतः इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति राजनीतिक मूल्य पर एक प्रकार की है ।

ग्रामीण व शहरी सिख विज्ञान शिक्षक समूह के मध्य भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः 22.00 व 22.33 तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य .09 व .18 है । अतः समूह को राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई विशेष अन्तर नहीं है ।

न्यादर्श में चयनित समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः 21.42 व 21.50 हैं । संयुक्त व पृथक टी मूल्य .06 है । अतः वर्णित समूहों में राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का दृष्टिकोण एक जैसा हैं । राजनीतिक मूल्य पर सिख धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति पर आपस में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । शोधकर्ता इसका कारण सिख शिक्षकों की राजनीतिक चेतना के प्रति उदासीनता को मानता है ।

सारिणी 46.4 में सभी समूहों के एफ मूल्य भी निकाले गये हैं जो सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों में राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रति संकेन्द्रण है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर सिख धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहो की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 47.4 में धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर सिख शिक्षकों के विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को संयुक्त एवं पृथक रूप में प्रदर्शित किया गया है ।

सिख ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्य धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के माध्य अंक (22.64 व 23.28), प्रमाणिक विचलन (4.765 व 4.451) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.41 व .40) है, जो 0.01 या 0.05 स्तर पर सार्थक नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर यह कहा जासकता है कि सिख ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति से धार्मिक व जातिगत मूल्य पर सिख शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति कुछ अधिक धनात्मक है ।

सारिणी - 47.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न सिख शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सिख ग्रा0पु0शि0	14	22.64	4.765	1.274	.41	.40	1.15
	सिख श0पु0शि0	21	23.28	4.451	.971			
2.	सिख ग्रा0म0शि0	00	-	-	-	-	-	-
	सिख श0म0शि0	05	25.00	1.581	.707			
3.	सिख ग्रा0क0शि0	12	23.16	4.970	1.435	.04	.04	1.85
	सिख श0क0शि0	17	23.23	3.649	.885			
4.	सिख ग्रा0वि0शि0	02	19.50	.707	.500	1.32	2.79x	49.50
	सिख श0वि0शि0	07	24.33	4.975	1.658			
5.	समस्त सिख ग्रा0शि0	14	22.64	4.765	1.274	.68	.65	1.36
	समस्त सिख श0 शि0	26	23.61	4.090	.802			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

सिख ग्रामीण महिला शिक्षक न्यादर्श में उपलब्ध न होने के कारण सिख ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में तुलना नहीं हो सकी ।

ग्रामीण व शहरी कला वर्ग के सिख शिक्षकों में उपरोक्त मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का दृष्टिकोण एक सा रहा । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (23.16 व 23.23) तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य (.04) रहे, जो सार्थक नहीं है । शोधकर्ता की दृष्टि में इसका कारण सिख शिक्षकों के धार्मिक व जातिगत बन्धनों में अधिक विभेद नहीं होना मानता है ।

ग्रामीण व शहरी विज्ञान वर्ग के सिख शिक्षकों में पृथक टी मूल्य के आधार पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान क्रमशः (19.50 व 24.33), प्रमाणिक विचलन (.707 व 4.975) तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य (1.32 एवं 2.79) है । अतः मध्यमान अंकों से विदित है कि पृथक टी मूल्य के आधार पर सिख ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से सिख शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अनुकूल है । शोधकर्ता इसका कारण सिख शहरी विज्ञान शिक्षकों का धार्मिक व जातिगत आधार पर अधिक विस्तृत दृष्टिकोण रखना मानता है ।

समस्त सिख ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की धार्मिक व जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान अंक (22.64 व 23.61) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.68 व .65) हैं, जो दोनों मानक स्तर पर सार्थक नहीं है । मध्यमान अंकों से यह कहा जा सकता है, कि सिख शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति उपरोक्त मूल्य पर समस्त सिख ग्रामीण शिक्षकों से कुछ अधिक अनुकूल है ।

सारिणी 47.4 में सभी समूहों के एफ मूल्य भी प्रदर्शित है । सभी समूहों में प्रसरण के आधार पर धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । अतः सभी समूहों में औसत धार्मिक एवं जातिगत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान है ।

सारणी - 48.4

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न सिख शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सिख ग्रा0पु0शि0	14	31.92	3.852	1.030	1.38	1.37	1.10
	सिख श0पु0शि0	21	30.14	3.678	.803			
2.	सिख ग्रा0म0शि0	-	-	-	--	-	-	-
	सिख श0म0शि0	05	33.80	2.387	1.068			
3.	सिख ग्रा0क0शि0	12	31.75	4.137	1.194	.58	.56	1.51
	सिख श0क0शि0	17	30.94	3.363	.816			
4.	सिख ग्रा0वि0शि0	02	33.00	1.414	1.000	.69	1.28	10.38
	सिख श0वि0शि0	07	30.66	4.555	1.518			
5.	समस्त सिख ग्रा0शि0	14	31.92	3.852	1.030	.87	.86	1.07
	समस्त सिख श0 शि0	26	30.84	3.728	.731			

अन्य मूल्य के आधार पर सिख धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 48.4 में अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न सिख धर्म के शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं संयुक्त व पृथक टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

सिख ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (31.92 व 30.14), प्रमाणिक विचलन (3.852 व 3.678) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.38 व 1.37) हैं, जो 0.05 व 0.01 दोनों मानक स्तरों पर सार्थक नहीं हैं । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर सिख ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सिख शहरी पुरूष शिक्षकों से कुछ अच्छी है ।

सिख ग्रामीण महिला शिक्षक न्यादर्श में उपलब्ध न होने के कारण इस समूह की अभिवृत्ति का मूल्यांकन नहीं हो सका । ग्रामीण व शहरी सिख कला शिक्षकों के समूह में अन्य मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान अंक 31.75 व 30.94 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .58 व .56 हैं । अन्य मूल्य पर केवल मध्यमान अंकों से विदित होता है, कि सिख ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, सिख शहरी शिक्षकों से कुछ अधिक है ।

सिख ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के अन्य मूल्य पर मध्यमान अंक (33.00 व 30.66), संयुक्त व पृथक टी मूल्य .69 व 1.28 हैं, जो दोनों मानक स्तरों में किसी पर भी सार्थक नही है । केवल मध्यमान अंकों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट है, कि सिख ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, सिख शहरी विज्ञान शिक्षकों से कुछ श्रेष्ठ है ।

समस्त ग्रामीण व शहरी सिख शिक्षक समूहों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया । समूह के मध्यमान क्रमशः (31.92 व 30.84), प्रमाणिक विचलन (3.852 व 3.728) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .87 व .86 हैं ।

सारणी - 49.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न सिख शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षक अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र०सं०	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	सिख ग्रा०पु०शि०	14	154.14	19.841	5.303	.23	.22	1.16
	सिख ग्रा०श०शि०	21	152.66	18.437	4.023			
2.	सिख ग्रा०म०शि०	00	-	-	-	-	-	-
	सिख श०म०शि०	05	154.20	5.178	2.557			
3.	सिख ग्रा०क०शि०	12	155.33	21.279	6.143	.55	.51	2.21
	सिख श०क०शि०	17	151.70	14.308	3.470			
4.	सिख ग्रा०वि०शि०	02	147.00	4.243	3.000	.53	1.09	24.90
	सिख श०वि०शि०	09	155.33	21.172	7.057			
5.	समस्त सिख ग्रा०शि०	14	154.14	19.841	5.303	.20	.19	1.42
	समस्त सिख श०शि०	26	152.96	16.660	3.267			

अतः इस समूह में सिख ग्रामीण शिक्षकों के मध्यमान कुछ अधिक हैं । इससे यह परिलक्षित होता है, कि सिख ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति इसी समूह के शहरी शिक्षकों से कुछ अच्छी है ।

सिख धर्म के सारिणी में प्रदर्शित विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में अन्य मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ । शोधकर्ता इसका कारण सिख शिक्षकों का आर्थिक आधार पर अधिक सुदृढ़ होना मानता है ।

सारिणी 48.4 में प्रदर्शित सभी समूहों के एफ मूल्य भी निकाले गये हैं, जिनमें कोई भी सार्थक नहीं है । अतः उपरोक्त सभी समूहों में प्रसरण के आधार पर अन्य मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के दृष्टिकोण में कोई अन्तर नहीं है । सभी समूहों में औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान है ।

सभी मूल्यों के योग पर सिख धर्म के विभिन्न शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 49.4 में सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न सिख शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

सिख ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों के मध्यमान अंक क्रमशः (154.14 व 152.66), प्रमाणिक विचलन (19.841 व 18.437) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.23 व .22) हैं, जो 0.01 या 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर सिख ग्रामीण पुरूष शिक्षक, सिख शहरी पुरूष शिक्षकों से कुछ अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सिख ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सभी मूल्यों के योग पर सार्थक नहीं है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (155.33 व 151.70), प्रमाणिक विचलन (21.279 व 14.308) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .55 व .51 हैं । सिख ग्रामीण कला शिक्षकों के मध्यमान अंक शहरी सिख कला शिक्षकों से कुछ अधिक हैं । अतः यह कहा जा सकता है, कि सिख ग्रामीण कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक अनुकूल है ।

सिख ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सभी मूल्यों के योग पर कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान क्रमशः (147.00 व 155.33) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .53 व 1.09 है, जो दोनों स्तरों (0.05 व 0.01) पर सार्थक नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर सिख शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति कुछ अच्छी है । समस्त सिख ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में (0.01 या 0.05) स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (154.14 व 152.96), प्रमाणिक विचलन (19.841 व 16.660) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .20 व .19 हैं । अतः इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई विशेष अन्तर नहीं है ।

सिख धर्म के शिक्षक समूहों में किसी भी समूह के मध्य सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण सिख शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति उदासीनता को मानता है ।

सारिणी 49.4 में विभिन्न शिक्षक समूहों के एफ मूल्यों को प्रदर्शित किया गया है । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः सांख्यिकीय दृष्टि से सभी समूहों में सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक प्रकार की है ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर ईसाई धर्म के विभिन्न शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 50.4 में शैक्षिक मूल्य के आधार पर ईसाई शिक्षकों के विभिन्न शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) को दर्शाया गया है ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (31.50 व 25.50) तथा प्रमाणिक विचलन (.707 व 4.435) हैं । उपरोक्त समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में अन्तर ज्ञात करने के लिए टी मूल्य ज्ञात किये गये जो संयुक्त एवं पृथक आधार पर 1.80 व 2.65 आये, जो सार्थक नहीं है । अतः यह कहा जा सकता है कि शहरी व ग्रामीण, पुरूष ईसाई शिक्षक समूहों के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा

सारिणी - 50.4

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ईसाई ग्रा0पु0शि0	02	31.50	.707	.500	1.80	2.64	39.33
	ईसाई श0पु0शि0	04	25.50	4.435	2.217			
2.	ईसाई ग्रा0म0शि0	07	27.85	3.891	1.471	.94	1.07	3.33
	ईसाई श0म0शि0	11	30.63	7.103	2.142			
3.	ईसाई ग्रा0क0शि0	04	28.25	3.096	1.549	.63	.78	5.52
	ईसाई श0क0शि0	07	30.71	7.274	2.749			
4.	ईसाई ग्रा0वि0शि0	05	29.00	4.528	2.025	.30	.33	2.06
	ईसाई श0वि0शि0	08	28.00	6.503	2.299			
5.	समस्त ईसाई ग्रा0शि0	09	28.66	3.742	1.247	.24	.28	3.27
	समस्त ईसाई श0शि0	15	29.26	6.766	1.747			

अभिवृत्ति के विषय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर ईसाई ग्रामीण पुरूष शिक्षक कुछ अच्छी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता यह अनुभव करता है, कि जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर कुछ अन्य चरों पर निर्भर करता है जैसे सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्तर आदि ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान क्रमशः (27.85 व 30.63) है । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य (.94 व 1.07) प्राप्त हुए, जो सार्थक नही है । शोधकर्ता इसका कारण ईसाई ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों का मिशन के अनुरूप शिक्षा प्राप्त करना व प्रदान करना मानता है ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों के शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (28.25 व 30.71), है प्रमाणिक विचलन (3.096 व 7.274) है । समूह में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त एवं पृथक अनुमान पर टी मूल्य ज्ञात किये गये जो क्रमशः .63 व .78 हैं । अतः इस समूह में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों के मध्यमान क्रमशः (29.00 व 28.00) प्रमाणिक विचलन (4.528 व 6.503) हैं । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त एवं पृथक आधार पर टी मूल्य निकाले गये, जो क्रमशः .30 व .33 ज्ञात हुए । अतः समूह की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण ईसाई ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की एक समान शिक्षा को मानता है ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर समस्त ईसाई ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्य कोई सार्थक अन्तर ज्ञात नही हुआ । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान 28.66 व 29.26 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .24 व .28 प्राप्त हुए, जो 0.05 व 0.01 किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है । अतः समूह की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है । शोधकर्ता इसका कारण मिशनरीज विद्यालयों में ईसाई शिक्षकों का शिक्षित होना व शिक्षण प्रदान करना मानता है ।

प्रदर्शित सारिणी में शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के विभिन्न समूहों में सार्थक अन्तर देखे गये । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नहीं

सारिणी 51.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ईसाई ग्रा0पु0शि0	02	25.00	1.414	1.000	.36	.48	6.67
	ईसाई श0पु0शि0	04	26.00	3.651	1.826			
2.	ईसाई ग्रा0म0शि0	07	22.42	1.902	.719	1.53	1.82	6.32
	ईसाई श0म0शि0	11	25.36	4.781	1.441			
3.	ईसाई ग्रा0क0शि0	04	23.75	1.258	.629	.84	1.09	10.71
	ईसाई श0क0शि0	07	25.57	4.117	1.556			
4.	ईसाई ग्रा0वि0शि0	05	22.40	2.510	1.122	1.30	1.50	3.81
	ईसाई श0वि0शि0	08	25.50	4.899	1.732			
5.	समस्त ईसाई ग्रा0शि0	09	23.00	2.062	.687	1.62	1.91	4.53
	समस्त ईसाई श0शि0	15	25.53	4.389	1.133			

है । अतः यह कहा जा सकता है, कि विभिन्न समूहों के अन्तर्गत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में परितः संकेन्द्रण समान है ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर ईसाई धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) को सारिणी 51.4 में प्रदर्शित किया गया है ।

ईसाई ग्रामीण पुरूष व शहरी पुरूष शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (25.00 व 26.00) तथा प्रमाणिक विचलन (1.414 व 3.651) हैं । उपरोक्त समूह में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त व पृथक आधार पर टी मूल्य ज्ञात किये गये जो दोनों परिक्षणों में (.36 व .48) ज्ञात हुए । इस प्रकार कहा जा सकता है कि ईसाई ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । शोधकर्ता इसका कारण ईसाई शिक्षकों की भिन्न सामाजिक परम्पराओं को मानता है ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः 22.42 व 25.36 हैं । संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.53 व 1.82 है । केवल मध्यमान अंकों से विदित होता है, कि ईसाई शहरी महिला शिक्षक ग्रामीण महिला शिक्षकों से कुछ उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं । समूह में सार्थक अन्तर न होने का कारण शोधकर्ता सामाजिक मूल्यों में मिशनरी पृष्ठभूमि को मानता है ।

कला संवर्ग के ईसाई ग्रामीण व ईसाई शहरी शिक्षकों के मध्यमान (23.75 व 25.57), प्रमाणिक विचलन (1.258 व 4.117) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .84 व 1.09 है । जो मानक स्तरों पर सार्थक नहीं है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि ईसाई ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति लगभग एक प्रकार की है ।

सारिणी - 52.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ईसाई ग्रा0पु0शि0	02	32.50	2.121	1.500	.66	.89	6.43
	ईसाई श0पु0शि0	04	29.75	5.377	2.689			
2.	ईसाई ग्रा0म0शि0	07	28.71	4.499	1.700	3.42xx	3.27xx	1.48
	ईसाई श0म0शि0	11	35.36	3.695	1.114			
3.	ईसाई ग्रा0क0शि0	04	29.50	5.508	2.754	.42	.43	1.09
	ईसाई श0क0शि0	07	31.00	5.745	2.171			
4.	ईसाई ग्रा0वि0शि0	05	29.60	3.782	1.691	4.81xx	3.89xx	10.14
	ईसाई श0वि0शि0	08	36.37	1.188	.420			
5.	समस्त ईसाई ग्रा0शि0	09	29.55	4.304	1.435	2.23x	2.28x	1.22
	समस्त ईसाई श0शि0	15	33.86	4.749	1.228			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

सामाजिक मूल्य पर ईसाई ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त एवं पृथक आधार पर टी मूल्य निकाले गये जो 0.01 या 0.05 स्तर पर सार्थक नही है । इस समूह के मध्यमान अंक (23.00 व 25.53) है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर ईसाई ग्रामीण शिक्षकों से ईसाई शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति कुछ अधिक है । समूह में सार्थक अन्तर न होने का कारण ईसाई शिक्षकों का सामाजिक मूल्य पर एक जैसा चिन्तन हो सकता है ।

सारिणी 51.4 में विभिन्न समूहों के एफमूल्य भी निकाले गये हैं, जो किसी भी समूह में सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों में औसत सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान हैं ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर ईसाई धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 52.4 में आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) को दर्शाया गया है ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान क्रमशः 32.50 व 29.75 है । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य .66 व .89 है । टी मूल्य के आधार पर इस समूह में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । ईसाई ग्रामीण पुरूष शिक्षकों के मध्यमान अंक अधिक हैं, अतः ईसाई ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति आर्थिक मूल्य पर शहरी ईसाई पुरूष शिक्षकों से कुछ अधिक है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण ईसाई शिक्षकों में से अधिकांश का परिवार न होना मानता है ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान (28.71 व 35.36), प्रमाणिक विचलन (4.499 व 3.695) है । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 3.42 व 3.27 हैं । अतः ग्रामीण ईसाई महिला शिक्षकों से शहरी ईसाई महिला शिक्षक आर्थिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा पर धनात्मक अभिवृत्ति रखती है । शोधकर्ता इसका कारण शहरी ईसाई महिला शिक्षकों का आर्थिक मूल्य पर अधिक सचेत रहना मानता है ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के आर्थिक मूल्य पर मध्यमान (29.50 व 31.00), प्रमाणिक विचलन (5.508 व 5.745) हैं। समूह में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी मूल्य भी निकाले गये, जो संयुक्त पृथक आधार पर .42 व .43 है ।

अतः टी मूल्य के आधार पर समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में आर्थिक मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

ईसाई, ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान क्रमशः (29.60 व 36.37) तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 4.81 व 3.89 है । अतः यह कहा जा सकता है, कि ईसाई शहरी विज्ञान शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति ईसाई ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से उच्चकोटि की है । शोधकर्ता इसका कारण ईसाई शहरी विज्ञान शिक्षकों के अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण मानता है ।

समस्त ईसाई, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक क्रमशः (29.55 व 33.86), प्रमाणिक विचलन 4.304 व 4.749) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.23 व 2.28 हैं, जो 0.05 स्तर पर सार्थक हैं । अतः मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि ईसाई ग्रामीण शिक्षकों से ईसाई शहरी शिक्षकों का दृष्टिकोण जनसंख्या शिक्षा पर अधिक धनात्मक है । शोधकर्ता इसका कारण शहरी ईसाई शिक्षकों का शहर में निवास करना व ग्रामीण ईसाई शिक्षकों का मिशनरी संस्थानों में निवास करना मानता है ।

सारिणी 52.4 में सभी ईसाई शिक्षक समूहों के प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य) भी निकाले गये हैं । जो सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के औसत आर्थिक मूल्य में संकेन्द्रण है ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर — ईसाई धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि व आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) को

सारिणी - 53.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ईसाई ग्रा0पु0शि0	02	25.50	2.121	1.500	2.76	2.74	1.04
	ईसाई श0पु0शि0	04	20.50	2.082	1.041			
2.	ईसाई ग्रा0म0शि0	07	20.42	1.272	.481	2.76×	3.35××	10.11
	ईसाई श0म0शि0	11	24.81	4.045	1.220			
3.	ईसाई ग्रा0क0शि0	04	31.00	1.155	.577	1.31	1.73	20.71
	ईसाई श0क0शि0	07	24.57	5.255	1.986			
4.	ईसाई ग्रा0वि0शि0	05	22.00	3.464	1.549	.50	.48	1.53
	ईसाई श0वि0शि0	08	22.87	2.800	.990			
5.	समस्त ईसाई ग्रा0शि0	09	21.55	2.603	.868	1.39	1.55	2.44
	समस्त ईसाई श0शि0	15	23.66	4.065	1.050			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

×× - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

संयुक्त एवं पृथक आधार पर सारिणी 53.4 में दर्शाया गया है ।

राजनीतिक मूल्य पर ईसाई ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों के मध्यमान (25.50 व 20.50), प्रमाणिक विचलन (2.121 व 2.082) तथा संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 2.76 व 2.74 है । अतः राजनीतिक मूल्य पर ईसाई ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । केवल मध्यमान अंकों से विदित होता है कि उपरोक्त मूल्य पर ईसाई ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति ईसाई शहरी पुरूष शिक्षकों से कुछ अधिक है ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों के मध्यमान (20.42 व 24.81) हैं । इस समूह की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये टी मूल्य संयुक्त एवं पृथक आधार पर निकाले गये जो क्रमशः (2.76 व 3.35) प्राप्त हुए । जिनमें क्रमशः 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । अतः यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि ईसाई ग्रामीण महिला शिक्षकों से राजनीतिक मूल्य पर ईसाई शहरी महिला शिक्षक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (31.00 व 24.57) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.31 व 1.73 हैं, जो 0.01 व 0.05 दोनों ही स्तरों पर सार्थक नहीं हैं । केवल मध्यमान अंकों के देखने से विदित होता है कि राजनीतिक मूल्य के आधार पर ईसाई ग्रामीण कला शिक्षक ईसाई शहरी कला शिक्षकों से कुछ अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की राजनीतिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान क्रमशः (22.00 व 22.87), प्रमाणिक विचलन (3.464 व 2.800) है । संयुक्त व पृथक टी मूल्य .50 व .48 हैं, जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है । अतः इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में राजनीतिक आधार पर समानता है । शोधकर्ता इसका कारण ईसाई विज्ञान शिक्षकों की राजनीतिक अरूचि को मानता है ।

सारिणी - 54.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ईसाई ग्रा0पु0शि0	02	17.50	.707	.500	2.19	3.22^{x}	41.33
	ईसाई श0पु0शि0	04	25.00	4.546	2.273			
2.	ईसाई ग्रा0म0शि0	07	21.00	2.769	1.047	3.50^{xx}	3.56^{xx}	1.16
	ईसाई श0म0शि0	11	25.90	2.982	.899			
3.	ईसाई ग्रा0क0शि0	04	19.00	1.633	.816	3.53^{xx}	4.36^{xx}	5.86
	ईसाई श0क0शि0	07	26.42	3.952	1.494			
4.	ईसाई ग्रा0वि0शि0	05	21.20	3.421	1.530	2.22^{x}	2.10	1.58
	ईसाई श0वि0शि0	08	25.00	2.726	.964			
5.	समस्त ईसाई ग्रा0शि0	09	20.22	2.863	.954	4.09^{xx}	4.25^{xx}	1.34
	समस्त ईसाई श0शि0	15	25.66	3.309	.854			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

समस्त ईसाई ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान अंक (21.55 व 23.66), प्रमाणिक विचलन (2.603 व 4.65) है । समूह की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये दोनों परीक्षणों में टी मूल्य ज्ञात किये गये जो दोनों मानक स्तरों पर सार्थक नही है । अतः यह कहा जा सकता है कि इस समूह की उपरोक्त मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक सी है । शोधकर्ता इसका कारण ईसाई शिक्षकों की राजनीतिक उदासीनता को मानता है ।

सारिणी 53.4 के अनुसार ईसाई शिक्षक समूहों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर देखने के लिये प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफमूल्य) भी ज्ञात किये गये । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रति एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः यह कहा जा सकता है कि ईसाई शिक्षकों की विभिन्न समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टि से एकरूपता है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर ईसाई धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 54 में धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि एवं संयुक्त व पृथक आधार पर आलोचनात्मक अनुपात (टीमूल्य) को प्रदर्शित किया गया है ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान क्रमशः (17.50 व 25.00) है । समूह में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त व पृथक आधार पर टी मूल्य निकाले गये, जो दोनों मानक परीक्षणों में क्रमशः 2.19 व 3.22 प्राप्त हुए । अतः पृथक आधार पर टी मूल्य में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर ईसाई ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से ईसाई शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक उच्च स्तर की है । शोधकर्ता इसका कारण शहरी ईसाई शिक्षकों का अधिक विशाल धार्मिक दृष्टिकोण होना मानता है ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की धार्मिक व जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान क्रमशः (21.00 व 25.90) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः 3.50 व 3.56 हैं, जो 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । अतः उपरोक्त मूल्य पर ईसाई शहरी महिला शिक्षकों का जनसंख्या शिक्षा दृष्टिकोण ईसाई ग्रामीण महिला शिक्षकों से कही अधिक उच्च व सार्थक है । शोधकर्ता इसका कारण शहरी ईसाई महिला शिक्षकों का स्वतन्त्र दृष्टिकोण व ग्रामीण ईसाई महिला शिक्षकों का मिशनरी दृष्टिकोण होना मानता है ।

ईसाई शिक्षकों के ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक समूह के मध्यमान क्रमशः (19.00 व 26.42) तथा प्रमाणिक विचलन (1.633 व 3.952) हैं । सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य ज्ञात किये गये जिनमें 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ । अतः मध्यमान अंकों से विदित है, कि ईसाई शहरी कला शिक्षक इसी वर्ग के ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (21.20 व 25.00) है । संयुक्त व पृथक आधार पर टी मूल्य क्रमशः 2.22 व 2.10 है । संयुक्त टी मूल्य में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । अतः ईसाई शहरी विज्ञान शिक्षक संयुक्त आलोचनात्मक अनुपात के आधार पर ईसाई ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों की अपेक्षा अधिक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । सम्भवतः इसका कारण ईसाई शहरी शिक्षकों का अधिक व्यापक धार्मिक एवं जातिगत दृष्टिकोण है ।

न्यादर्श में चयनित समस्त ईसाई शिक्षकों की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (20..22 व 25.66), प्रमाणिक विचलन (2.863 व 3.309) हैं । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य क्रमशः 4.09 व 4.25 है । अतः स्पष्ट है कि शहरी ईसाई शिक्षक ग्रामीण ईसाई शिक्षकों से धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर कहीं अधिक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । सम्भवतः इसका कारण शहरी ईसाई शिक्षकों का मिशनरी प्रभाव से मुक्त होना हो सकता है ।

सारणी - 55.4

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ईसाई ग्रा0पु0शि0	02	27.00	4.243	3.000	.80	.77	1.21
	ईसाई श0पु0शि0	04	29.75	3.862	1.931			
2.	ईसाई ग्रा0म0शि0	07	31.85	2.193	.829	1.37	1.52	2.60
	ईसाई श0म0शि0	11	33.90	3.534	1.066			
3.	ईसाई ग्रा0क0शि0	04	32.75	.957	.479	.02	.02	19.53
	ईसाई श0क0शि0	07	32.71	4.231	1.599			
4.	ईसाई ग्रा0वि0शि0	05	29.20	3.633	1.625	1.66	1.70	1.22
	ईसाई श0वि0शि0	08	32.87	4.016	1.420			
5.	समस्त ईसाई ग्रा0शि0	09	30.77	3.232	1.077	1.29	1.36	1.51
	समस्त ईसाई श0शि0	15	32.80	3.968	1.024			

सारिणी 54.4 में सभी ईसाई शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर (एफमूल्य) भी निकाले गये, जो किसी भी समूह में सार्थक नही है । अतः सभी ईसाई शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति उपरोक्त मूल्य पर एक जैसी ही है ।

अन्य मूल्य के आधार पर ईसाई धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 55.4 में अन्य मूल्य के आधार पर ईसाई शिक्षकों के विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) को दर्शाया गया है ।

ईसाई, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान (27.00 व 29.75), प्रमाणिक विचलन (4.243 व 3.862) है। इस समूह में जनसंख्या शिक्ष के प्रति सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये टी मूल्य भी निकाले गये जो, संयुक्त एवं पृथक आधार पर क्रमशः .80 व .77 है, जो 0.01 या 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है । अतः ईसाई, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक अन्य मूल्य के आधार पर एक जैसी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते है ।

ईसाई, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (31.85 व 33.90), संयुक्त व पृथक टीमूल्य 1.37 व 1.52 है, जो 0.01 या 0.05 स्तर पर सार्थक नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर ईसाई शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, ईसाई ग्रामीण महिला शिक्षकों से कुछ अच्छी है ।

कला संवर्ग के ग्रामीण व शहरी, ईसाई शिक्षकों के मध्यमान अंक क्रमशः (32.75 व 32.71) तथा दोनों परीक्षणों से संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य .02 है । जो 0.05 व 0.01 किसी भी स्तर पर सार्थक नही है । अतः यह कहा जा सकता है कि इस समूह का अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर एक प्रकार का है । शोधकर्ता इसका कारण कला संवर्ग के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों का जनसंख्या शिक्षा में अधिक रूचि न लेना मानता है ।

सारणी - 56.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	ईसाई ग्रा0पु0शि0	02	159.00	4.243	3.000	.32	.42	5.87
	ईसाई श0पु0शि0	04	156.50	10.279	5.140			
2.	ईसाई ग्रा0म0शि0	07	152.28	6.800	2.570	3.07 xx	3.68 xx	7.56
	ईसाई श0म0शि0	11	175.09	18.695	5.637			
3.	ईसाई ग्रा0क0शि0	04	154.25	3.594	1.797	1.32	1.76	39.12
	ईसाई श0क0शि0	07	169.57	22.479	8.496			
4.	ईसाई ग्रा0वि0शि0	05	153.40	9.017	4.032	2.18	2.48 x	3.15
	ईसाई श0वि0शि0	08	170.62	15.991	5.653			
5.	समस्त ईसाई ग्रा0शि0	09	153.77	6.760	2.253	2.53 x	3.09 xx	7.54
	समस्त ईसाई श0शि0	15	170.13	18.566	4.794			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

विज्ञान संवर्ग के ईसाई ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान क्रमशः (29.20 व 32.87), प्रमाणिका विचलन (3.633 व 4.016) है । संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.66 व 1.70 ज्ञात हुए जो सार्थक नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर शहरी ईसाई विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, ग्रामीण ईसाई शिक्षकों से कुछ अधिक है ।

समस्त ईसाई ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (30.77 व 32.80) हैं । समूह में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त व पृथक टी मूल्य भी निकाले गये जो 0.01 या 0.05 दोनों स्तरों पर सार्थक नही है । अतः इस समूह में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का अन्य मूल्य पर दृष्टिकोण एक जैसा है ।

सारिणी 55.4 में सभी समूहों के एफ मूल्य भी प्रदर्शित किये गये हैं, जिनमें कोई भी मूल्य सार्थक नही है । अतः सारिणी में प्रदर्शित सभी समूहों में प्रसरण के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । अर्थात् सभी समूहों में औसत अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण है ।

सभी मूल्यों के योग पर ईसाई धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 56.4 में सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न ईसाई शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को संयुक्त व पृथक आधार पर दर्शाया गया है ।

ईसाई ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (159.00 व 156.50) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .32 व .42 है, जो 0.01 या 0.05 दोनों स्तरों पर सार्थक नही है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि उपरोक्त मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में ईसाई ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

ग्रामीण व शहरी ईसाई महिला शिक्षकों की सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (152.28 व 175.09), प्रमाणिक विचलन (6.800 व 18.695) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 3.07 व 3.68 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है । अतः मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि ग्रामीण ईसाई महिला शिक्षकों से शहरी महिला ईसाई शिक्षक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती है । शोधकर्ता इसका कारण ईसाई शहरी महिला शिक्षकों जनसंख्या शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक होना मानता है ।

कला संवर्ग के ग्रामीण व शहरी ईसाई शिक्षकों की सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान क्रमशः (154.25 व 169.57) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.32 व 1.76 है जो, सार्थक नहीं है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर ईसाई शहरी कला शिक्षक, ईसाई ग्रामीण कला शिक्षकों से कुछ अधिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

ईसाई, ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूहों के मध्यमान अंक (153.40 व 170.62), प्रमाणिक विचलन (9.017 व 15.991) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः (2.18 व 2.48) हैं । इस समूह में पृथक टी मूल्य के आधार पर 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । अतः ईसाई ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से, ईसाई शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक धनात्मक है । शोधकर्ता इसका कारण ईसाई शहरी विज्ञान शिक्षकों का विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण करना व ईसाई ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों का मिशनरीज संचालित विद्यालयों में शिक्षण करना मानता है ।

समस्त, ईसाई ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की योग मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात हुआ । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (153.77 व 170.13), प्रमाणिक विचलन (6.760 व 18.566) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.53 व 3.09 ज्ञात हुए जो क्रमशः 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । अतः समस्त, शहरी ईसाई शिक्षक अधिक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सारिणी 56.4 में सभी समूहों के एफ मूल्य भी दर्शाये गये हैं । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है, कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सांख्यिकीय दृष्टि से किसी भी समूह में भिन्नता नहीं है । सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर मुस्लिम धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 57.4 में शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य दर्शाये गये हैं ।

सारणी – 37.4

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	मुस्लिम ग्रा0पु0शि0	20	21.80	3.270	.731	.74	.92	2.25
	मुस्लिम श0पु0शि0	73	22.65	4.908	.574			
2.	मुस्लिम ग्रा0म0शि0	10	22.70	3.302	1.044	.68	.87	2.58
	मुस्लिम श0म0शि0	33	23.90	5.305	.924			
3.	मुस्लिम ग्रा0क0शि0	30	22.10	3.252	.594	.60	.74	2.23
	मुस्लिम श0क0शि0	100	22.67	4.857	.485			
4.	मुस्लिम ग्रा0वि0शि0	00	-	-	-	-	-	-
	मुस्लिम श0वि0शि0	06	29.33	4.227	1.726			
5.	समस्त मुस्लिम ग्रा0शि0	30	22.10	3.252	.594	.97	1.23	2.41
	समस्त मुस्लिम श0शि0	106	23.04	5.043	.490			

मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान क्रमशः (21.80 व 22.65), प्रमाणिक विचलन (3.270 व 4.908) हैं । समूह में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी मूल्य निकाले गये, जो संयुक्त एवं पृथक आधार पर .74 व .92 प्राप्त हुए । अतः इस प्रकार कहा जा सकता है, कि शैक्षिक आधार पर मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण कुछ चरों को मानता है । जैसे शिक्षा, धार्मिकता, आर्थिक स्तर आदि ।

जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में शैक्षिक मूल्य के आधार पर ग्रामीण व शहरी मुस्लिम महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही प्राप्त हुआ । इस समूह के मध्यमान (22.70 व 23.90), प्रमाणिक विचलन (3.302 व 5.305) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.68 व .87) प्राप्त हुए । अतः इस समूह में शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर एक जैसा है । शोधकर्ता इसका कारण इस समूह की महिला शिक्षकों का जनसंख्या शिक्षा साहित्य के प्रति आकर्षण न होना मानता है ।

मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (22.10 व 22.67) है । समूह में अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्यों में 0.01 या 0.05 दोनों स्तरों पर कोई सार्थकता नही है । अतः मुस्लिम कला शिक्षक समूह की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थकता नही है । शोधकर्ता इसका कारण मुस्लिम कला शिक्षकों की निम्न शैक्षिक चेतना को मानता है ।

समस्त, मुस्लिम ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्य शैक्षिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान अंक 22.10 व 23.04 हैं । संयुक्त व पृथक टी मूल्य .97 व 1.23 हैं । अतः इस समूह में दोनों मानक स्तरों पर सार्थकता नही है । शोधकर्ता इस समूह में निम्न शैक्षिक चेतना को इसका कारण मानता है ।

सारिणी 57.4 में विभिन्न समूहों के प्रसरण अनुपात परीक्षण एफ मूल्य भी निकाले गये । जो सार्थक नही है । अतः औसत आधार पर ग्रामीण व शहरी, मुस्लिम शिक्षक समूहों में शैक्षिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर एक सा है ।

सारणी - 58.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	मुस्लिम ग्रा0पु0शि0	20	22.50	3.980	.890	.38	.36	1.26
	मुस्लिम श0पु0शि0	73	22.15	3.456	.415			
2.	मुस्लिम ग्रा0म0शि0	10	20.30	2.452	.775	1.11	1.42	2.52
	मुस्लिम श0म0शि0	33	21.75	3.889	.677			
3.	मुस्लिम ग्रा0क0शि0	30	21.76	3.655	.667	.42	.42	1.00
	मुस्लिम श0क0शि0	100	22.09	3.660	.366			
4.	मुस्लिम ग्रा0वि0शि0	00	-	-	-	-	-	-
	मुस्लिम श0वि0शि0	06	21.00	3.464	1.414			
5.	समस्त मुस्लिम ग्रा0शि0	30	21.76	3.655	.667	.35	.35	1.01
	समस्त मुस्लिम श0शि0	106	22.02	3.642	.354			

सामाजिक मूल्य के आधार पर मुस्लिम धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 58.4 में सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि एवं संयुक्त व पृथक टी मूल्यों को प्रदर्शित किया गया है ।

मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (22.50 व 22.15) प्रमाणिक विचलन (3.980 व 3.546) हैं । समूह के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य ज्ञात किये गये, जो (.38 व .36) प्राप्त हुए । अतः मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सामाजिक मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण मुस्लिम धर्म की एक जैसी सामाजिक परम्पराओं को मानता है ।

मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस समूह के मध्यमान (20.30 व 21.75) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.11 व 1.42 है, जिनमें 0.01 व 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों में धार्मिक चर की अधिकता होना मानता है ।

ग्रामीण व शहरी मुस्लिम कला वर्ग के शिक्षक समूह के मध्यमान (21.76 व 22.09), प्रमाणिक विचलन (3.655 व 3.660) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य दोनों परीक्षणों में .42 है । जो 0.01 या 0.05 दोनों मानक स्तरों पर सार्थक नही है । अतः ग्रामीण व शहरी मुस्लिम कला शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

मुस्लिम, ग्रामीण विज्ञान शिक्षक न्यादर्श के लिए उपलब्ध न होने के कारण इस समूह में तुलना नही हो सकी ।

समस्त मुस्लिम ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनंसख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सामाजिक मूल्य पर कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ । इस समूह के मध्यमान (21.76 व 22.02), प्रमाणिक विचलन (3.655 व 3.642) हैं । संयुक्त व पृथक टी मूल्य

सारिणी - 59.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	मुस्लिम ग्रा0पु0शि0	20	25.80	5.095	1.139	.67	.72	1.30
	मुस्लिम श0पु0शि0	73	24.84	5.799	.679			
2.	मुस्लिम ग्रा0म0शि0	10	27.10	4.508	1.426	2.03 x	1.70	1.91
	मुस्लिम श0म0शि0	33	24.48	3.261	.568			
3.	मुस्लिम ग्रा0क0शि0	30	26.23	4.869	.829	1.90	1.91	1.00
	मुस्लिम श0क0शि0	100	24.30	4.877	.488			
4.	मुस्लिम ग्रा0वि0शि0	00	-	-	-	-	-	-
	मुस्लिम श0वि0शि0	06	32.00	3.847	1.571			
5.	समस्त मुस्लिम ग्रा0शि0	30	26.23	4.869	.889	1.43	1.47	1.11
	समस्त मुस्लिम श0शि0	106	24.73	5.131	.498			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

.35 रहे, जो सार्थक नही है । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक प्रकार की है । शोधकर्ता इसका कारण मुस्लिम शिक्षकों में व्याप्त अधिक पिछड़ी सामाजिक पम्पराओं को मानता है ।

सारिणी 58.4 में सभी समूहों के एफ मूल्य निकाले गये । सारिणी से स्पष्ट है, कि किसी भी समूह के एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सामाजिक मूल्य के आधार पर मुस्लिम शिक्षकों के विभिन्न समूहों की औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर मुस्लिम धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

आर्थिक मूल्य के आधार पर मुस्लिम शिक्षकों के विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को सारिणी 59.4 में दर्शाया गया है ।

मुस्लिम ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों के मध्यमान क्रमशः (25.80 व 24.84), प्रमाणिक विचलन (5.095 व 5.799) हैं । समूह की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर जानने के लिए संयुक्त व पृथक टी मूल्य निकाले गये जो दोनों परीक्षणों में (.69 व .72) प्राप्त हुए । इस प्रकार कहा जा सकता है कि मुस्लिम ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों में, आर्थिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

ग्रामीण व शहरी मुस्लिम महिला शिक्षकों के मध्यमान अंक (27.10 व 24.48), प्रमाणिक विचलन 4.508 व 3.261 ज्ञात हुए । संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.03 तथा 1.70 हैं । इस समूह में संयुक्त टी मूल्य के आधार पर 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि मुस्लिम ग्रामीण महिला शिक्षक, मुस्लिम शहरी महिला शिक्षकों से आर्थिक मूल्य के आधार पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती है । सम्भवतः इसका कारण ग्रामीण मुस्लिम महिला शिक्षकों के अधिक व्यवहारिक आर्थिक मानदण्ड है ।

मुस्लिम ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में आर्थिक आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः 26.23 व 24.30

सारिणी - 60.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	मुस्लिम ग्रा0पु0शि0	20	19.35	2.183	.488	.80	1.08	3.09
	मुस्लिम श0पु0शि0	73	20.06	3.838	.449			
2.	मुस्लिम ग्रा0म0शि0	10	21.50	3.342	1.057	.07	.06	1.34
	मुस्लिम श0म0शि0	33	21.42	2.883	.502			
3.	मुस्लिम ग्रा0क0शि0	30	20.06	2.766	.505	.40	.45	1.52
	मुस्लिम श0क0शि0	100	20.34	3.409	.341			
4.	मुस्लिम ग्रा0वि0शि0	00	-	-	-	-	-	-
	मुस्लिम श0वि0शि0	06	23.00	5.967	2.436			
5.	समस्त मुस्लिम ग्रा0शि0	30	20.06	2.766	.505	.59	.69	1.70
	समस्त मुस्लिम श0शि0	106	20.49	3.610	.351			

हैं । संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य 1.90 व 1.91 रहे जो सार्थक नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर मुस्लिम कला शिक्षकों की जनसंख्या अभिवृत्ति कुछ अधिक है ।

मुस्लिम ग्रामीण विज्ञान शिक्षक न्यादर्श में उपलब्ध नही होने के कारण समूह में आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात नही हो सका । समस्त मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (26.23 व 24.73) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.43 व 1.47 निकले । अतः इस समूह में आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । शोधकर्ता इसका कारण समूह के आर्थिक मानदण्डों का शैक्षिक चर से जुड़ा होना मानता है ।

सारिणी 59.4 में विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों में आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एफ मूल्य ज्ञात किये गये । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रति एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः विभिन्न समूहों के अर्न्तगत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सांख्यिकीय रूप से कोई सार्थक अन्तर नही है । मुस्लिम ग्रामीण व शहरी, कला व विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक सी है ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर मुस्लिम धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 60.4 में राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को प्रदर्शित किया गया है ।

मुस्लिम ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूहों के मध्यमान अंक 19.33 व 20.06 हैं । समूह में जनसंख्या शिक्षा के प्रति सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त व पृथक टी मूल्य निकाले गये जो .80 व 1.08 है । टी मूल्यों से स्पष्ट है, कि मुस्लिम ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूहों में राजनीतिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण व शहरी मुस्लिम शिक्षकों की एक निश्चित राजनीतिक सोच को मानता है ।

मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह के मध्य राजनीतिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान

अंक 21.50 व 21.42 हैं । सारिणी में इस समूह के टी मूल्यों का अवलोकन करने से विदित होता है कि संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.07 व .06) सार्थक नही हैं । शोधकर्ता इस समूह में सार्थकता न होने का कारण मुस्लिम महिला शिक्षकों का स्वतंत्र राजनीतिक चिन्तन न होना मानता है ।

मुस्लिम, ग्रामीण कला व शहरी कला शिक्षक समूह के मध्यमान (20.06 व 20.34) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .40 व .45 है । जो सार्थक नही है । अतः राजनीतिक मूल्य पर मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

न्यादर्श में विज्ञान वर्ग के ग्रामीण मुस्लिम शिक्षक न होने के कारण इस समूह में सार्थकता ज्ञात नही हो सकी । न्यादर्श में चयनित ग्रामीण व शहरी मुस्लिम शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूहों के मध्यमानों (20.06 व 20.49) तथा टी मूल्यों (.59 व .69) का अवलोकन करने से स्पष्ट है, कि समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता नही है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण व शहरी मुस्लिम शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति धर्म प्रभावित राजनीतिक मूल्यों को मानता है ।

सारिणी 60.4 के विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रसरण अनुपात परीक्षण को प्रदर्शित किया गया है । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है, कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः सभी समूहों में औसत राजनीतिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान हैं ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर मुस्लिम धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को सारिणी 61.4 में दर्शाया गया है ।

मुस्लिम ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूहों के मध्यमान (23.65 व 22.65), प्रमाणिक विचलन (3.870 व 4.076) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .97 व 1.00 है ।

सारिणी - 61.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	मुस्लिम ग्रा0पु0शि0	20	23.65	3.870	.865	.97	1.00	1.11
	मुस्लिम श0पु0शि0	73	22.65	4.076	.477			
2.	मुस्लिम ग्रा0म0शि0	10	24.70	3.529	1.116	.68	.76	1.50
	मुस्लिम श0म0शि0	33	25.72	4.325	.753			
3.	मुस्लिम ग्रा0क0शि0	30	24.00	3.732	.681	.61	.67	1.36
	मुस्लिम श0क0शि0	100	23.46	4.356	.436			
4.	मुस्लिम ग्रा0वि0शि0	00	-	-	-	-	-	-
	मुस्लिम श0वि0शि0	06	26.16	4.215	1.721			
5.	समस्त मुस्लिम ग्रा0शि0	30	24.00	3.732	.681	.44	.48	1.37
	समस्त मुस्लिम श0शि0	106	23.61	4.374	.425			

टी मूल्यों के अवलोकन से विदित है कि समूह की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण मुस्लिम शिक्षक समूहों की रूढ़िवादी धार्मिक नीति को मानता है ।

मुस्लिम ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह के बीच कोई सार्थक अन्तर नही ज्ञात हुआ । इस समूह के मध्यमान (24.70 व 25.72) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .68 व .76 हैं, जो 0.01 व 0.05 दोनों मानक स्तरों पर सार्थक नही है । अतः मुस्लिम ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की धार्मिक एवं जातिगत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है । शोधकर्ता इसका कारण मुस्लिम धर्म की कटटर धार्मिक नीति को मानता है ।

ग्रामीण एवं शहरी मुस्लिम कला शिक्षक संवर्ग के मध्यमान अंक क्रमशः (24.00 व 23.46) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः (.61 व .67) हैं । टी मूल्यों से विदित है कि समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण मुस्लिम ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की एकरूपतापूर्ण धार्मिक शिक्षा को मानता है ।

मुस्लिम ग्रामीण विज्ञान शिक्षक न्यादर्श में उपलब्ध न होने के कारण समूह में सार्थकता ज्ञात नही हो पाई है । न्यादर्श में चयनित समस्त मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमान अंकों में कोई अधिक भिन्नता नही है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (24.00 व 23.61) है । संयुक्त व पृथक टी मूल्य जो क्रमशः (.44 व .48) में सार्थकता की कोई कसौटी नही है । अतः धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर इस समूह के बीच जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थकता नही है । शोधकर्ता इसका स्पष्ट कारण धार्मिक कटटरतावादी नीति को मानता है ।

सारिणी 61.9 में धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एफ़ मूल्य भी ज्ञात किये गये । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः उपरोक्त मूल्य के आधार पर ग्रामीण व शहरी मुस्लिम शिक्षकों की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एकरूपता सी है ।

सारिणी - 62.4

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	मुस्लिम ग्रा0पु0शि0	20	28.70	4.067	.909	.13	.13	1.19
	मुस्लिम श0पु0शि0	73	28.56	4.441	.520			
2.	मुस्लिम ग्रा0म0शि0	10	26.20	4.849	1.533	1.16	1.22	1.20
	मुस्लिम श0म0शि0	33	28.39	5.321	.926			
3.	मुस्लिम ग्रा0क0शि0	30	27.86	4.424	.808	.45	.46	1.14
	मुस्लिम श0क0शि0	100	28.30	4.722	.472			
4.	मुस्लिम ग्रा0वि0शि0	00	-	-	-	-	-	-
	मुस्लिम श0वि0शि0	06	32.00	2.898	1.183			
5.	समस्त मुस्लिम ग्रा0शि0	30	27.86	4.424	.808	.67	.69	1.13
	समस्त मुस्लिम श0शि0	106	28.50	4.707	.457			

अन्य मूल्य के आधार पर मुस्लिम धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 62 .4 में अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) को दर्शाया गया है ।

अन्य मूल्य के आधार पर मुस्लिम ग्रामीण व शहरी पुरूष, शिक्षक समूह के मध्यमान (28.70 व 28.56), प्रमाणिक विचलन (4.067 व 4.441) हैं । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर जानने के लिए संयुक्त एवं पृथक आधार पर टी मूल्य निकाले गये जो दोनों मानक परीक्षणों में .13 प्राप्त हुए । टी मूल्यों के आधार पर स्पष्ट है, समूह की अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह की अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही प्राप्त हुआ । समूहों के मध्यमान (26.20 व 28.39), तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.16 व 1.22) रहे जो सार्थक नहीं है । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अन्य मूल्य के आधार पर एक जैसी है । शोधकर्ता इसका कारण मुस्लिम महिला शिक्षकों का धार्मिक चर से प्रभावित होना मानता है ।

मुस्लिम ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों के मध्य सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान 27.86 व 28.30 रहे । संयुक्त व पृथक टी मूल्य .45 व .46 हैं, जो सार्थकता की कसौती पर नहीं है । अतः इस समूह में एक सी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । शोधकर्ता इसका कारण मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी कला संवर्ग के शिक्षकों में स्वतंत्र जनसंख्या चिन्तन का अभाव मानता है ।

न्यादर्श में उपलब्ध सभी मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (27.86 व 28.50), प्रमाणिक विचलन (4.424 व 4.707) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.67 व .69) प्राप्त हुए, जो सार्थकता की कसौटी पर नही है । अतः इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

सारिणी - 63.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न मुस्लिम शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	मुस्लिम ग्रा0पु0शि0	20	142.00	11.346	2.537	.23	.29	2.27
	मुस्लिम श0पु0शि0	73	141.06	17.079	1.999			
2.	मुस्लिम ग्रा0म0शि0	10	142.50	8.873	2.806	.63	.81	2.80
	मुस्लिम श0म0शि0	33	145.60	14.839	2.583			
3.	मुस्लिम ग्रा0क0शि0	30	142.16	10.432	1.905	.31	.38	2.28
	मुस्लिम श0क0शि0	100	141.22	15.741	1.574			
4.	मुस्लिम ग्रा0वि0शि0	00	-	-	-	-	-	-
	मुस्लिम श0वि0शि0	06	163.50	15.333	6.260			
5.	समस्त मुस्लिम ग्रा0शि0	30	142.16	10.432	1.905	.10	.13	2.50
	समस्त मुस्लिम श0शि0	106	142.48	16.480	1.601			

सारिणी 62.4 के सभी समूहों में अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एफ मूल्य निकाले गये, जो किसी भी समूह में सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों में औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के अन्य मूल्य पर संकेन्द्रण समान है ।

सभी मूल्यों के योग पर मुस्लिम धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सभी मूल्यों के योग पर मुस्लिम शिक्षकों के विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) को सारिणी 63.4 में दर्शाया गया है ।

मुस्लिम ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक (142.00 व 141.06), प्रमाणिक विचलन (11.346 व 17.079) हैं । संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.23 व .29) ज्ञात हुए । स्पष्ट है, कि समूह के टी मूल्य सार्थक नही है । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

ग्रामीण व शहरी मुस्लिम महिला शिक्षक समूह के मध्यमान अंक (142.50 व 145.60) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .63 व .81 है । अतः समूह में सभी मूल्यों के योग पर कोई सार्थक अन्तर नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि, ग्रामीण मुस्लिम महिला शिक्षकों से शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति कुछ अधिक है ।

मुस्लिम, ग्रामीण व शहरी कला संवर्ग के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान अंक (142.16 व 141.22) एक जैसे है । संयुक्त व पृथक टी मूल्यों (.31 व .38) में भी कोई सार्थकता स्तर नहीं है । अतः ग्रामीण व शहरी कला संवर्ग के मुस्लिम शिक्षक सभी मूल्यों के योग पर एक प्रकार की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

मुस्लिम, ग्रामीण विज्ञान शिक्षक व शहरी विज्ञान शिक्षक समूहों में सार्थकता ज्ञात न होने का कारण न्यादर्श में मुस्लिम ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों का प्राप्त न होना है ।

समस्त, ग्रामीण व शहरी मुस्लिम शिक्षकों के, सभी मूल्यों के योग पर मध्यमान व टी मूल्यों में कोई विशेष भिन्नता नहीं है । समूह में 0.01 या 0.05 स्तर पर

सारिणी - 64.4

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्रौढ़ ग्रा0पु0शि0	104	27.59	6.665	.654	.44	.44	1.11
	प्रौढ़ श0पु0शि0	83	27.15	7.013	.770			
2.	प्रौढ़ ग्रा0म0शि0	20	29.20	2.949	.659	1.19	1.40	4.65
	प्रौढ़ श0म0शि0	33	27.69	6.359	1.107			
3.	प्रौढ़ ग्रा0क0शि0	95	27.28	6.368	.653	.69	.69	1.18
	प्रौढ़ श0क0शि0	96	26.62	6.910	.705			
4.	प्रौढ़ ग्रा0वि0शि0	29	29.72	5.477	1.017	.23	.23	1.04
	प्रौढ़ श0वि0शि0	20	30.10	5.581	1.248			
5.	समस्त प्रौढ़ ग्रा0शि0	124	27.85	6.236	.560	.75	.75	1.19
	समस्त प्रौढ़ श0शि0	116	27.22	6.807	.632			

कोई सार्थकता नही है । इस समूह के मध्यमान अंक 142.16 व 142.48 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .10 व .13 हैं । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एकरूपता है ।

मुस्लिम धर्म के विभिन्न शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । सभी समूहों के मध्यमान अंकों में भी कोई विशेष अन्तर नही पाया गया । शोधकर्ता किसी भी समूह में सार्थकता न होने का कारण मुस्लिम शिक्षकों पर धार्मिक व शैक्षिक चर का प्रभाव अनुभव करता है ।

सारिणी 63.4 के सभी समूहों में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये एफ मूल्य भी निकाले गये । जो किसी भी समूह में सार्थक नहीं है । अतः सभी मुस्लिम शिक्षक समूहों के औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संकेन्द्रण है ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर प्रौढ़ शिक्षकों के विभिन्न समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 64.4 में शैक्षिक मूल्य के आधार पर प्रौढ़ शिक्षकों के विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान (27.59 व 27.15), प्रमाणिक विचलन (6.665 व 7.013) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .44 है । जो मानक स्तर पर सार्थक नहीं है । अतः मध्यमान अंकों व टी मूल्यों से स्पष्ट है, कि इस समूह में कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में समान शैक्षिक स्तर को मानता है ।

ग्रामीण व शहरी, प्रौढ़ महिला शिक्षकों में सार्थकता की दृष्टि से शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (29.20 व 27.69) तथा संयुक्त व पृथक परीक्षण में टी मूल्य 1.19 व 1.40 है, जो सार्थकता की कसौटी पर नहीं है । अतः शैक्षिक मूल्य पर ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है ।

प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों के मध्यमान अंकों (27.28 व 26.62) में कोई विशेष भिन्नता नहीं है । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य दोनों

परीक्षणों में .69 है, जो सार्थक नही हैं । अतः ग्रामीण व शहरी कला संवर्ग के प्रौढ़ शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ शिक्षकों की शैक्षिक एकरूपता को मानता है ।

विज्ञान संवर्ग के ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के शैक्षिक मूल्य पर मध्यमान क्रमशः (29.72 व 30.10), प्रमाणिक विचलन (5.477 व 5.581) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य दोनों परीक्षणों में .23 है । जो सार्थक नहीं है । अतः प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर एक जैसा है । समस्त ग्रामीण व शहरी, प्रौढ़ शिक्षकों के मध्यमान अंक (27.85 व 27.22), प्रमाणिक विचलन (6.236 व 6.87) है । इस समूहों में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त व पृथक टी मूल्य निकाले गये, जो दोनों ही परीक्षणों में .75 प्राप्त हुए । अतः समस्त ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ शिक्षक समूह की शैक्षिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

सारिणी 64 4में शैक्षिक मूल्य पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एफमूल्यों को भी दर्शाया गया है । सारिणी का अवलोकन करने से विदित है, कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः औसत शैक्षिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टि से प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में एकरूपता है ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि एवं संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को सारिणी 65.4 में दर्शाया गया है ।

ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ शिक्षक समूह के मध्यमान (26.19 व 27.09), प्रामाणिक विचलन (4.701 व 6.040) हैं । इस समूह की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी मूल्य निकाले गये । संयुक्त व पृथक अनुपात के आधार पर दोनों परीक्षणों में टी मूल्य क्रमशः 1.15 व 1.12 प्राप्त हुए, जो 0.01 व 0.05 दोनों ही मानक स्तरों पर सार्थक नही हैं । अतः ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ शिक्षक समूह की

सारिणी - 65.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्रौढ़ ग्रा0पु0शि0	104	26.19	4.701	.461	1.15	1.12	1.65
	प्रौढ़ श0पु0शि0	83	27.09	6.040	.663			
2.	प्रौढ़ ग्रा0म0शि0	20	27.50	4.915	1.099	.15	.15	1.30
	प्रौढ़ श0म0शि0	33	27.72	5.603	.975			
3.	प्रौढ़ ग्रा0क0शि0	95	26.26	4.337	.445	.56	.57	1.86
	प्रौढ़ श0क0शि0	96	26.68	5.923	.604			
4.	प्रौढ़ ग्रा0वि0शि0	29	26.86	5.939	1.103	1.99	2.06x	1.40
	प्रौढ़ श0वि0शि0	20	30.10	5.025	1.124			
5.	समस्त प्रौढ़ ग्रा0शि0	124	26.40	4.740	.426	1.27	1.26	1.55
	समस्त प्रौढ़ श0शि0	116	27.27	5.901	.548			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सामाजिक मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण समूह के शिक्षकों का पुरानी सामाजिक परम्पराओं को मान्यता देना मानता है ।

प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सामाजिक मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान अंकों में लगभग समरूपता है । मध्यमान अंक (27.50 व 27.72) व दोनों टी मूल्यों (.15) से विदित है कि इस समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समरूपता है ।

कला संवर्ग के ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ शिक्षक समूहों के मध्यमान अंक क्रमशः (26.26 व 26.68) है । समूहों का प्रमाणिकविचलन (4.337 व 5.923) है । संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.56 व .57) रहे, जिनमें सार्थकता का स्तर नही है । अतः सामाजिक मूल्य के आधार पर प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (26.86 व 30.10), प्रमाणिक विचलन (5.939 व 5.025) हैं । समूह में संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.99 व 2.06 ज्ञात हुए । अतः पृथक टी मूल्य के आधार इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस प्रकार कहा जा सकता है, कि प्रौढ़ ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से सामाजिक मूल्य के आधार पर प्रौढ़ शहरी विज्ञान शिक्षक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण प्रौढ़ शहरी शिक्षकों का सामाजिक मान्यताओं पर अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण होना मानता है ।

समस्त प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सामाजिक मूल्य के आधार पर सांख्यिकीय गणना से कोई सार्थक अन्तर नही प्राप्त हुआ । समूह के मध्यमान अंकों (26.40 व 27.27) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्यों (1.27 व 1.26) के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण यह अनुभव करता है कि प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी शिक्षक सामाजिक मूल्यों के प्रति पुरानी परम्पराओं से जकड़े हुए हैं ।

सारिणी - 66.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्रौढ़ ग्रा0पु0शि0	104	32.32	5.455	.535	2.72^{xx}	2.63^{xx}	1.83
	प्रौढ़ श0पु0शि0	83	29.77	7.385	.811			
2.	प्रौढ़ ग्रा0म0शि0	20	32.90	5.757	1.287	.25	.24	1.19
	प्रौढ़ श0म0शि0	33	32.51	5.280	.919			
3.	प्रौढ़ ग्रा0क0शि0	95	32.50	5.525	.567	2.82^{xx}	2.82^{xx}	1.61
	प्रौढ़ श0क0शि0	96	29.29.92	7.009	.715			
4.	प्रौढ़ ग्रा0वि0शि0	29	30.13	5.436	1.009	.86	.85	1.17
	प्रौढ़ श0वि0शि0	20	33.55	5.889	1.317			
5.	समस्त प्रौढ़ ग्रा0शि0	124	32.41	5.485	.493	2.32^{x}	2.30^{x}	1.60
	समस्त प्रौढ़ श0शि0	116	30.55	6.942	.645			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

सारिणी 65.4 में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के विभिन्न समूहों में प्रसरण अनुपात परीक्षण को दिखाया गया है । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफमूल्य सार्थक नही है । अतः सामाजिक मूल्य पर सभी समूहों में जनसंख्या शिक्षा की अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 66.4 में आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को प्रदर्शित किया गया है ।

आर्थिक मूल्य पर ग्रामीण व शहरी, प्रौढ़ पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान (32.32 व 29.77), प्रमाणिक विचलन (5.455 व 7.385) प्राप्त हुए । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर जानने के लिये समूहों के टी मूल्य ज्ञात किये गये, जो दोनों परीक्षणों में 2.72 व 2.63 आये। ज्ञात टी मूल्यों में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । अतः मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि आर्थिक मूल्य पर प्रौढ़ शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति से प्रौढ़ ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक धनात्मक है । शोधकर्ता इसका कारण प्रौढ़ ग्रामीण शिक्षकों का ग्रामीण क्षेत्र में घटते आर्थिक संसाधनों के प्रति जागरूकता को मानता है ।

प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नही है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (32.90 व 32.51) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .25 व .24 है । जो सार्थकता की कसौटी पर नहीं है । अतः यह कहा जा सकता है कि प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक आर्थिक मूल्य पर एक सी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं । शोधकर्ता इसका कारण प्रौढ़ महिला शिक्षकों का जटिल आर्थिक स्थिति से साक्षात्कार न होना मानता है ।

कला संवर्ग के ग्रामीण व शहरी, प्रौढ़ शिक्षक समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (32.50 व 29.92), तथा प्रमाणिक विचलन (5.525 व 7.009) हैं । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.82) प्राप्त हुए, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है । अतः ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा

अभिवृत्ति में आर्थिक मूल्य पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से विदित है कि प्रौढ़ ग्रामीण कला शिक्षक, प्रौढ़ शहरी कला शिक्षकों से अधिक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण प्रौढ़ ग्रामीण कला शिक्षकों का आर्थिक दृष्टि से अधिक संवेदनशील होना मानता है ।

प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक (3013 व 33.55), संयुक्त व पृथक टी मूल्य .86 व 85 है, जो सार्थकता की कसौटी पर नही है । अतः इस समूह में सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है । केवल प्रौढ़ शहरी विज्ञान शिक्षकों के मध्यमान कुछ अधिक होने के कारण कहा जा सकता है कि प्रौढ़ ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से, प्रौढ़ शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति कुछ अधिक है ।

समस्त प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान अंक (32.41 व 30.55), प्रमाणिक विचलन (5.485 व 6.942) हैं । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त व पृथक टी मूल्य निकाले गये जो 0.05 स्तर पर सार्थक प्राप्त हुए । अतः समूह के मध्य सार्थक अन्तर है । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रौढ़ ग्रामीण शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति प्रौढ़ शहरी शिक्षकों से धनात्मक है । शोधकर्ता इसका कारण प्रौढ़ ग्रामीण शिक्षकों का आर्थिक मूल्य के प्रति अधिक संवेदनशील होना मानता है ।

सारिणी 66.4 में आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के सभी समूहों में प्रसरण अनुपात परीक्षण भी ज्ञात किये गये । सारिणी से विदित है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः आर्थिक मूल्य पर प्रौढ़ शिक्षक समूहों की औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

राजनीतिक मूल्य पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

राजनीतिक मूल्य के आधार पर प्रौढ़ शिक्षकों के विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) को सारिणी 67.4 में प्रदर्शित किया गया है ।

सारिणी - 67.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के समान्तर माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्रौढ़ ग्रा0पु0शि0	104	21.81	5.941	.583	$2.29^{\times}$	$2.29^{\times}$	1.01
	प्रौढ़ श0पु0शि0	83	23.81	5.918	.650			
2.	प्रौढ़ ग्रा0म0शि0	20	23.80	3.888	.869	.06	.06	1.33
	प्रौढ़ श0म0शि0	33	23.72	4.481	.780			
3.	प्रौढ़ ग्रा0क0शि0	95	21.81	5.356	.556	$2.33^{\times}$	$2.33^{\times}$	1.09
	प्रौढ़ श0क0शि0	96	23.65	5.583	.570			
4.	प्रौढ़ ग्रा0वि0शि0	29	23.20	6.678	1.240	.69	.72	1.56.
	प्रौढ़ श0वि0शि0	20	24.45	5.346	1.195			
5.	समस्त प्रौढ़ ग्रा0शि0	124	22.13	5.695	.511	$2.28^{\times}$	$2.29^{\times}$	1.06
	समस्त प्रौढ़ श0शि0	116	23.79	5.529	.513			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (21.81 व 23.81), प्रमाणिक विचलन (5.941 व 5.918) प्राप्त हुए । समूह में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त व पृथक टी मूल्य ज्ञात किये, जो दोनों आधार पर 2.29 प्राप्त हुए । सार्थकता के आधार पर समूह में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । अतः मध्यमान अंकों से परिलक्षित होता है, कि प्रौढ़ ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से प्रौढ़ शहरी पुरूष शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक धनात्मक व अनुकूल है । शोधकर्ता इसका कारण शहरों में होने वाले गहन राजनीतिक प्रभाव को मानता है ।

ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ महिला शिक्षक समूह की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस समूह के मध्यमान क्रमशः (23.80 व 23.72) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.06) है जो सार्थकता के मानक पर नही है । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है । शोधकर्ता इसका कारण प्रौढ़ महिला शिक्षकों में राजनीतिक सक्रियता की कमी को मानता है ।

प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के राजनीतिक मूल्य पर मध्यमान (21.81 व 23.65), प्रमाणिक विचलन (5.356 व 5.583) प्राप्त हुए । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.33 प्राप्त हुए, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है । अर्थात् ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ कला वर्ग के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । प्रौढ़ शहरी कला शिक्षक राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा के विषय में प्रौढ़ ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं । सम्भवतः इसका कारण प्रौढ़ कला संवर्ग के शहरी शिक्षकों की राजनीतिक सूझबूझ में अधिक परिपक्वता हो सकती है ।

विज्ञान संवर्ग के प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः 23.20 वं 24.45 हैं । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.69 व .72) ज्ञात हुए, जो सार्थकता के स्तर पर नही है । अतः विज्ञान वर्ग के ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में राजनीतिक मूल्य पर कोई सार्थक अन्तर नही है । सम्भवतः इसका कारण विज्ञान शिक्षकों की शैक्षिक क्षेत्र में अधिक व्यस्तता रही हो ।

सारिणी - 68.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षकसमूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के समान्तर माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्रौढ़ ग्रा0पु0शि0	104	24.45	5.310	.521	.34	.35	1.17
	प्रौढ़ श0पु0शि0	83	24.71	4.915	.540			
2.	प्रौढ़ ग्रा0म0शि0	20	24.45	5.010	1.120	$2.26^{\times}$	$2.20^{\times}$	1.24
	प्रौढ़ श0म0शि0	33	27.45	4.501	.783			
3.	प्रौढ़ ग्रा0क0शि0	95	24.56	5.220	.536	1.39	1.39	1.02
	प्रौढ़ श0क0शि0	96	25.61	5.176	.528			
4.	प्रौढ़ ग्रा0वि0शि0	29	24.06	5.391	1.001	.60	.64	2.18
	प्रौढ़ श0वि0शि0	20	24.90	3.655	.817			
5.	समस्त प्रौढ़ ग्रा0शि0	124	24.45	5.243	.471	1.58	1.58	1.13
	समस्त प्रौढ़ श0शि0	116	25.49	4.941	.459			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

समस्त प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमान (22.13 व 23.79), प्रमाणिक विचलन (5.695 व 5.529) प्राप्त हुए । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.28 व 2.29) है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक हैं । अतः राजनीतिक मूल्य पर प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह में सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से विदित है कि, प्रौढ़ ग्रामीण शिक्षकों से प्रौढ़ शहरी शिक्षक अधिक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण प्रौढ़ शहरी शिक्षकों की राजनीतिक जागरूकता व परिपक्वता को मानता है ।

सारिणी 67.4 में सभी समूहों के एफ मूल्यों को प्रदर्शित किया गया है । सारिणी से परिलक्षित होता है, कि किसी भी समूह के एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः राजनीतिक मूल्य पर सभी समूहों में औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण हैं ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 68.4 में धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान अंक (24.45 व 24.71), प्रमाणिक विचलन (5.310 व 4.915) ज्ञात हुए । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर जानने के लिए टी मूल्य निकाले गये । संयुक्त व पृथक अनुमान के आधार पर दोनों परीक्षणों में टी मूल्य क्रमशः .34 व .35 आये । अतः इस प्रकार कहा जा सकता है, कि जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के विषय में प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह में कोई सार्थक अन्तर नही है । सम्भवतः इसका कारण प्रौढ़ शिक्षकों की धार्मिक व जातिगत परिपक्वता है ।

प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के धार्मिक व जातिगत मूल्य पर मध्यमान (24.45 व 27.45), प्रमाणिक विचलन (5.010 व 4.501) प्राप्त हुए । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य, सार्थकता ज्ञात करने के लिए निकाले

गये जो (2.26 व 2.20) ज्ञात हुए । टी मूल्यों में 0.05 स्तर पर सार्थकता है । अतः मध्यमान अंकों के आधार पर स्पष्ट है कि प्रौढ़ शहरी महिला शिक्षक, प्रौढ़ ग्रामीण महिला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं । शोधकर्ता इसका कारण शहरी प्रौढ़ महिला शिक्षकों का धर्म व जाति के प्रति अधिक विस्तृत दृष्टिकोण को मानता है ।

प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी कला संवर्ग के शिक्षक समूह की धार्मिक व जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान (24.56 व 25.61) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.39) दोनों परीक्षणों पर प्राप्त हुए जो सार्थकता के दोनों मानक मानदण्डों की कसौटी पर सार्थक नही है । अतः प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की धार्मिक व जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर एक समान है । शोधकर्ता इसका कारण प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों का धार्मिक व जातिगत परम्पराओं से अधिक जुड़ा होना मानता है ।

ग्रामीण व शहरी प्रौढ़, विज्ञान शिक्षकों के मध्यमान अंक क्रमशः (24.06 व 24.90) तथा प्रमाणिक विचलन (5.391 व 3.655) हैं । संयुक्त व पृथक टी मूल्य .60 व .64 ज्ञात हुए । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में धार्मिक व जातिगत मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है ।

समस्त ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ शिक्षकों के मध्य जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के धार्मिक व जातिगत मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (24.45 व 25.49) ज्ञात हुए । संयुक्त व पृथक अनुमान पर टी मूल्य 1.58 प्राप्त हुआ, जो सार्थक नही है । अतः समूह में उपरोक्त मूल्य के आधार पर लगभग एक समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । शोधकर्ता इसका कारण प्रौढ़ शिक्षकों की अवस्था में परिपक्वता के साथ धर्म व जातिगत दृष्टिकोण में भी परिपक्वता को मानता है ।

सारिणी 68.4 में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के विभिन्न समूहों में प्रसरण अनुपात परीक्षण को भी दर्शाया गया है । सारिणी से स्पष्ट है, कि किसी भी समूह के एफमूल्यों में सार्थकता नही है । अतः यह कहा जा सकता है, कि विभिन्न समूहों के अन्तर्गत धार्मिक व जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई अन्तर नही है सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर एक सी है ।

सारिणी - 69.4

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्रoसंo	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्रौढ़ ग्राoपुoशिo	104	33.14	3.745	.367	1.51	1.46	1.92
	प्रौढ़ शoपुoशिo	83	32.15	5.193	.570			
2.	प्रौढ़ ग्राoमoशिo	20	33.15	3.951	.883	.75	.83	2.24
	प्रौढ़ शoमoशिo	33	32.03	5.919	1.030			
3.	प्रौढ़ ग्राoकoशिo	95	33.23	3.783	.388	2.05×	2.05×	2.10
	प्रौढ़ शoकoशिo	96	31.83	5.477	.559			
4.	प्रौढ़ ग्राoविoशिo	29	32.86	3.749	.696	.52	.50	1.64
	प्रौढ़ शoविoशिo	20	33.50	4.796	1.072			
5.	समस्त प्रौढ़ ग्राoशिo	124	33.14	3.763	.338	1.72	1.70	2.05
	समस्त प्रौढ़ शoशिo	114	32.12	5.383	.500			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

अन्य मूल्यों के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को सारिणी 69.4 में दर्शाया गया है ।

प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों के मध्यमान अंक क्रमशः (33.14 व 32.15), प्रमाणिक विचलन (3.745 व 5.193) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.51 व 1.46 है । टी मूल्यों को अवलोकित करने से स्पष्ट है कि समूह के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है । अतः प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण व शहरी पुरूष प्रौढ़ शिक्षकों की जनसंख्या के प्रति एक प्रकार की विचारधारा को मानता है ।

ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ महिला शिक्षकों की अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान (33.15 व 32.03) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्यों (.75 व .83) को अवलोकित करने से स्पष्ट है कि इस समूह में लगभग एक जैसी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । शोधकर्ता इसका कारण प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों का आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक व धार्मिक रूप से अधिक परिपक्व होना मानता है ।

प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक समूह के मध्यमान (33.23 व 31.83), प्रमाणिक विचलन (3.783 व 5.477) हैं । समूह में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त व पृथक आधार पर टी मूल्य निकाले गये, जो संयुक्त व पृथक परीक्षणों में 2.05 है । समूह के टी मूल्यों में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों के आधार पर स्पष्ट है, कि प्रौढ़ ग्रामीण शिक्षक, प्रौढ़ शहरी शिक्षकों से जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के अन्य मूल्य पर धनात्मक दृष्टिकोण रखते हैं । सम्भवतः इसका कारण ग्रामीण परिवेश में होने वाले छोटी आयु के विवाहों का प्रभाव हो ।

विज्ञान संवर्ग के ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ शिक्षक समूह के मध्य सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नही है । समूह के मध्यमान (32.86 व 33.50) तथा संयुक्त व पृथक

सारिणी - 70.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	प्रौढ़ ग्रा0पु0शि0	104	165.72	19.700	1.932	.28	.27	2.23
	प्रौढ़ श0पु0शि0	83	164.71	29.429	3.230			
2.	प्रौढ़ ग्रा0म0शि0	20	171.50	13.539	3.028	.12	.13	2.67
	प्रौढ़ श0म0शि0	33	170.84	22.126	3.852			
3.	प्रौढ़ ग्रा0क0शि0	95	165.87	18.919	1.941	.44	.44	2.27
	प्रौढ़ श0क0शि0	96	164.34	28.487	2.907			
4.	प्रौढ़ ग्रा0वि0शि0	29	169.20	19.014	3.531	1.30	1.28	1.16
	प्रौढ़ श0वि0शि0	20	176.60	20.510	4.586			
5.	समस्त प्रौढ़ ग्रा0शि0	124	166.65	18.917	1.699	.06	.06	2.13
	समस्त प्रौढ़ श0शि0	116	166.45	27.595	2.562			

टी मूल्य (.52 व .50) हैं, जो 0.01 या 0.05 स्तर पर सार्थक नही है । अतः प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक अन्य मूल्य के आधार पर एक सी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

प्रौढ़ अवस्था के न्यादर्श में चयनित समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान क्रमशः (33.14 व 32.12), प्रमाणिक विचलन (3.763 व 5.383) हैं । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.72 व 1.70) ज्ञात हुए, जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः अन्य मूल्यप्रवर्णित समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । सम्भवतः इसका कारण प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों का एक जैसी सामाजिक, आर्थिक समस्याओं से साक्षात्कार हो सकता है ।

सारिणी 69.4 के अनुसार जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के विभिन्न समूहों में सार्थक अन्तर देखने के लिए प्रदर्शित किया गया है । सारिणी से स्पष्ट है, कि सभी समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रति एफमूल्य सार्थक नही है । अतः सभी समूहों में औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में अन्य मूल्य के परितः संकेन्द्रण समान हैं ।

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न प्रौढ़ शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को सारिणी 70.4 में प्रदर्शित किया गया है ।

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक क्रमशः (165.72 व 164.71), प्रमाणिक विचलन (19.700 व 29.429) हैं । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त एवं पृथक टी मूल्य ज्ञात किये गये, जो दोनों परीक्षणों में क्रमशः (.28 व .27) प्राप्त हुए । अतः सभी मूल्यों के योग पर इस समूह के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान 171.50 व 170.84

तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .12 व .13 है । अतः प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक समूह के मध्यमान (165.87 व 164.34) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.44) है । अतः टी मूल्यों में सार्थक अन्तर की कसौटी नही है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों के मध्य सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

ग्रामीण व शहरी विज्ञान संवर्ग के प्रौढ़ शिक्षकों में 0.01 या 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नही हुआ । इस समूह के मध्यमान (169.20 व 176.60) तथा टी मूल्य संयुक्त व पृथक रूप में 1.30 व 1.28 रहे । अतः प्रौढ़ ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

समस्त ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ शिक्षक समूह के मध्यमान क्रमशः (166.65 व 166.45), प्रमाणिक विचलन (18.917 व 27.595) प्राप्त हुए । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त व पृथक टी मूल्य ज्ञात किये गये, जो (.06) प्राप्त हुए । अतः समस्त ग्रामीण व शहरी प्रौढ़ शिक्षकों की सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

सारिणी 70.4 में सभी समूहों के बीच जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का अनुपात देखने के लिये सभी समूहों के एफ मूल्य निकाले गये । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी भी समूह के एफमूल्यों में सार्थकता नही है । अतः उपरोक्त सभी समूहों में प्रसरण के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है । सभी समूहों में औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान है ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को सारिणी 71.4 में दर्शाया गया है ।

सारिणी - 71.4

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	युवा ग्रा0पु0शि0	96	26.04	6.301	.643	.39	.38	.113
	युवा श0पु0शि0	67	25.64	6.712	.820			
2.	युवा ग्रा0म0शि0	30	24.93	5.058	.923	.89	.95	1.44
	युवा श0म0शि0	67	26.05	6.072	.742			
3.	युवा ग्रा0क0शि0	79	25.06	5.756	.648	.62	.63	1.18
	युवा श0क0शि0	104	25.62	6.257	.614			
4.	युवा ग्रा0वि0शि0	47	26.97	6.340	.925	.23	.22	1.16
	युवा श0वि0शि0	30	26.63	6.840	1.249			
5.	समस्त युवा ग्रा0शि0	126	25.77	6.028	.537	.09	.09	1.12
	समस्त युवा श0शि0	134	25.85	6.380	.551			

युवा ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान क्रमशः (26.04 व 25.64), प्रमाणिक विचलन (6.301 व 6.712) ज्ञात हुए । समूह के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त व पृथक टी मूल्य निकाले गये जो क्रमशः .39 व .38 आये । इस प्रकार स्पष्ट है कि शहरी व ग्रामीण युवा पुरूष शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसके लिये युवा शिक्षकों का परिवेश के आधार पर जनसंख्या शिक्षा के विषय में एक जैसे चिन्तन को उत्तरदायी मानता है ।

ग्रामीण व शहरी युवा महिला शिक्षकों की जनसंख्या अभिवृत्ति के शैक्षिक मूल्य पर मध्यमान क्रमशः (24.93 व 26.05), संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.89 व .95) प्राप्त हुए । समूह के प्राप्त टी मूल्य सार्थक नहीं है । अतः ग्रामीण व शहरी युवा महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में शैक्षिक मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है । शोधकर्ता इसके लिये अन्य चरों जैसे विवाह, आर्थिक मानदण्ड, सामाजिक रीति रिवाज आदि को उत्तरदायी मानता है ।

युवा ग्रामीण व शहरी कला संवर्ग के शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है । इस समूह के मध्यमान (25.06 व 26.62) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .62 व .63 हैं । अतः युवा ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक शैक्षिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के विषय में एकसा दृष्टिकोण रखते हैं । सम्भवतः इसका कारण युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति एक जैसी धारणा है ।

विज्ञान संवर्ग के युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (26.97 व 26.63), प्रमाणिक विचलन (6.340 व 6.840) ज्ञात हुए । इस समूह के टी मूल्यों (.23 व .22) का अवलोकन करने से विदित है, कि इनमें सार्थकता की कसौटी नही है । अतः शैक्षिक मूल्य पर युवा ग्रामीण व शहरी, विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण युवा ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों का शहरों में शिक्षा पाना मानता है ।

सारिणी - 72.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	युवा ग्रा0पु0शि0	96	25.27	5.558	.567	1.01	1.01	1.00
	युवा श0पु0शि0	67	24.37	5.556	.679			
2.	युवा ग्रा0म0शि0	30	24.40	5.110	.933	1.44	1.50	1.24
	युवा श0म0शि0	67	26.14	5.695	.696			
3.	युवा ग्रा0क0शि0	79	24.97	5.433	.611	.03	.03	1.13
	युवा श0क0शि0	104	25.00	5.782	.567			
4.	युवा ग्रा0वि0शि0	47	25.21	5.528	.806	.75	.76	1.10
	युवा श0वि0शि0	30	26.16	5.279	.964			
5.	समस्त युवा ग्रा0शि0	126	25.06	5.448	.485	.29	.29	1.09
	समस्त युवा श0शि0	134	25.26	5.675	.490			

न्यादर्श में चयनित समस्त युवा, ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के बीच सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर नहीं है । इस समूह में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (25.77 व 25.85) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.09) दोनों परीक्षणों में ज्ञात हुए । अतः समस्त युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक प्रकार की है ।

सारिणी 71.4 के अनुसार जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के विभिन्न समूहों में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये ज्ञात प्रसरण अनुपात भी दर्शाये गये हैं । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह के एफमूल्यों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रति सार्थकता नहीं है । अतः शैक्षिक मूल्य पर सांख्यिकीय दृष्टि से युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या अभिवृत्ति में संकेन्द्रण है ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 72.4 में सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

युवा, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों के मध्यमान अंक (25.27 व 24.37), प्रमाणिक विचलन (5.558 व 5.556) हैं । समूह के बीच सार्थक अन्तर देखने के लिये संयुक्त व पृथक टी मूल्य ज्ञात किये गये जो दोनों परीक्षणों में (1.01) प्राप्त हुए । अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि युवा, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । शोधकर्ता इसका कारण युवा, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों का सामाजिक मूल्य पर एक जैसे जनसंख्या चिन्तन को मानता है ।

युवा, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की सामाजिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (24.40 व 26.14) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.44 व 1.50) हैं, जो 0.01 या 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि युवा, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक भिन्नता नहीं रखते ।

शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण व शहरी युवा महिला शिक्षकों की एक समान सामाजिक दृष्टि को मानता है ।

ग्रामीण व शहरी कला संवर्ग के युवा विज्ञान शिक्षकों के मध्यमान (24.97 व 25.00), प्रमाणिक विचलन (5.433 व 5.782) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.03) ज्ञात हुए । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि युवा, ग्रामीण व शहरी कला शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

युवा ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह के मध्य भी सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । इस समूह के मध्यमान 25.21 व 26.16 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य दोनों परीक्षणों में (.29) हैं । समूह के टी मूल्यों को देखने से स्पष्ट है कि युवा ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

समस्त युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमान (25.06 व 25.26), प्रमाणिक विचलन 5.448 व 5.675 ज्ञात हुए । संयुक्त व पृथक टी मूल्य .29 दोनों परीक्षणों पर प्राप्त हुआ । अतः समस्त युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण सम्भवतः ग्रामीण व शहरी सामाजिक परम्पराओं का मिश्रण होना मानता है ।

सारिणी 72.4 के सभी समूहों में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये एफ मूल्य निकाले गये । सारिणी से स्पष्ट है कि युवा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सांख्यिकीय दृष्टि से सभी समूहों के मध्य एक जैसी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 73.4 में आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

सारिणी - 73.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	युवा ग्रा0पु0शि0	96	30.88	6.045	.617	2.84^{xx}	2.81^{xx}	1.14
	युवा श0पु0शि0	67	28.07	6.453	.788			
2.	युवा ग्रा0म0शि0	30	31.60	5.386	.983	.89	.93	1.29
	युवा श0म0शि0	67	30.44	6.111	.747			
3.	युवा ग्रा0क0शि0	79	30.48	5.767	.649	2.71^{xx}	2.74^{xx}	1.18
	युवा श0क0शि0	104	28.03	6.255	.613			
4.	युवा ग्रा0वि0शि0	47	32.02	6.009	.877	1.13	1.19	1.55
	युवा श0वि0शि0	30	33.50	4.833	.882			
5.	समस्त युवा ग्रा0शि0	126	31.05	5.882	.524	2.36^{x}	2.36x	1.17
	समस्त युवा श0शि0	134	29.26	6.373	.551			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

आर्थिक मूल्य पर युवा ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक क्रमशः (30.88 व 28.07), प्रमाणिक विचलन (6.045 व 6.453) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.84 व 2.81 हैं । समूह के टी मूल्यों में 0.01 स्तर पर सार्थकता है । अतः आर्थिक मूल्य पर युवा, पुरूष शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि युवा ग्रामीण पुरूष शिक्षक, युवा शहरी पुरूष शिक्षकों से आर्थिक मूल्य पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण क्षेत्रों में सिकुड़ते रोजगार के अवसरों को मानता है ।

युवा ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (31.60 व 30.44) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.89 व .93) है । अतः आर्थिक मूल्य पर युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । इसका कारण युवा, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों का एक जैसा आर्थिक चिन्तन है ।

युवा ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक समूह के मध्यमान (30.48 व 28.03), प्रमाणिक विचलन (5.767 व 6.255) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.71 व 2.74) प्राप्त हुए । टीमूल्यों में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि युवा ग्रामीण कला शिक्षकों की, युवा शहरी कला शिक्षकों से, आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अनुकूल है । शोधकर्ता इसका कारण युवा ग्रामीण कला शिक्षकों का रोजगार के अवसरों का अभाव व छोटे होते कृषि खेतों को मानता है ।

युवा ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (32.02 व 33.50) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.13 व 1.19) प्राप्त हुए, जो सार्थकता की कसौटी पर नही है । अतः आर्थिक मूल्य पर युवा, ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । सम्भवतः इसका कारण ग्रामीण व शहरी युवा विज्ञान शिक्षकों का आर्थिक मानदण्डों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण है ।

समस्त युवा ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (31.05 व 29.26), प्रमाणिक विचलन (5.882 व 6.373) तथा संयुक्त व पृथक टीमूल्य दोनों परीक्षणों पर (2.36) हैं । अतः समस्त युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों

सारिणी - 74.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	युवा ग्रा0पु0शि0	96	21.85	5.452	.556	.23	.23	1.25
	युवा श0पु0शि0	67	22.04	4.876	.596			
2.	युवा ग्रा0म0शि0	30	23.13	4.447	.812	1.00	.99	1.06
	युवा श0म0शि0	67	24.08	4.320	.528			
3.	युवा ग्रा0क0शि0	79	21.53	4.641	.522	1.60	1.60	1.05
	युवा श0क0शि0	104	22.65	4.748	.466			
4.	युवा ग्रा0वि0शि0	47	23.21	6.029	.879	1.01	1.09	1.95
	युवा श0वि0शि0	30	24.50	4.313	.787			
5.	समस्त युवा ग्रा0शि0	126	22.15	5.242	.467	1.47	1.47	1.24
	समस्त युवा श0शि0	134	23.06	4.702	.406			

के आधार पर स्पष्ट है कि समस्त युवा ग्रामीण शिक्षक समस्त युवा शहरी शिक्षकों से, घनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सारिणी 73.4 के अनुसार जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति को विभिन्न समूहों में इस प्रकार दिखाया गया है कि दोनों समूहों में कहाँ तक एक दूसरे से सार्थक अन्तर पाया जाता है । सारिणी से स्पष्टहै कि किसी भी समूह के एफमूल्य सार्थक नही है । अतः सभी समूह में औसत आर्थिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण हैं ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 74.4 में राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि एवं संयुक्त व पृथक टी मूल्यों को प्रदर्शित किया गया है ।

युवा ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान अंक (21.85 व 22.04) हैं । संयुक्त व पृथक टी मूल्य दोनों परीक्षणों में .23 प्राप्त हुए, जिनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी युवा पुरूष शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर एक जैसी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण परिवेश में बढ़ती हुई राजनीतिक गतिविधियों को स्वीकार करता है ।

ग्रामीण व शहरी, युवा महिला शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई विशेष अन्तर प्राप्त नही हुआ । सार्थकता ज्ञात करने के लिए प्राप्त ज्ञातव्य टी मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है । शोधकर्ता इसके लिए युवा महिला शिक्षकों की राजनीतिक जागरूकता को मानता है ।

कला संवर्ग के युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (21.53 व 22.65) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.60) रहे । अतः इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

युवा ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूहों में भी राजनीतिक मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही प्राप्त हुआ । इस समूह के मध्यमान अंक (23.21 व 24.50) तथा प्रमाणिक विचलन

(6.029 व 4.313) ज्ञात हुआ । सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त व पृथक टी मूल्य जो क्रमशः (1.01 व 1.09) रहे ज्ञात किये गये । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि इस समूह में सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है ।

समस्त युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान (22.15 व 23.06) रहे । संयुक्त व पृथक टी मूल्य जो (1.47) दोनों परीक्षणों पर रहे, देखकर स्पष्ट है कि इस समूह में राजनीतिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । शोधकर्ता राजनीतिक मूल्य पर युवा शिक्षकों के विभिन्न समूहों में सार्थक अन्तर न होने का कारण युवा शिक्षकों के राजनीतिक दृष्टिकोण में समानता को मानता है ।

सारिणी 74.4 में युवा शिक्षक समूहों के प्रसरण अनुपात परीक्षण एफ मूल्य भी ज्ञात किये गये, जिनमें सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नही है । अतः सांख्यिकीय दृष्टि से युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में एकरूपता सी है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को सारिणी 75.4 में दर्शाया गया है ।

युवा ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक क्रमशः (23.15 व 23.55) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.50 व .51) हैं, जो सार्थक नहीं है । अतः इस समूह की उपरोक्त मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

युवा ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (23.56 व 26.67), प्रमाणिक विचलन (3.757 व 4.500) ज्ञात हुए । उपरोक्त समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त व पृथक टी मूल्य ज्ञात किये गये, जो क्रमशः (3.30 व 3.53) प्राप्त हुए । समूह के टी मूल्यों में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह में मध्यमानों के

सारिणी - 75.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	युवा ग्रा0पु0शि0	96	23.15	5.338	.545	.50	.51	1.43
	युवा श0पु0शि0	67	23.55	4.460	.545			
2.	युवा ग्रा0म0शि0	30	23.56	3.757	.686	3.30xx	3.53xx	1.43
	युवा श0म0शि0	67	26.67	4.500	.550			
3.	युवा ग्रा0क0शि0	79	23.25	4.890	.550	1.77	1.74	1.29
	युवा श0क0शि0	104	24.46	4.313	.423			
4.	युवा ग्रा0वि0शि0	47	23.25	5.223	.762	3.31xx	3.28xx	1.09
	युवा श0वि0शि0	30	27.36	5.455	.996			
5.	समस्त युवा ग्रा0शि0	126	23.25	4.996	.445	3.08xx	3.08xx	1.12
	समस्त युवा श0शि0	134	25.11	4.730	.409			

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

अवलोकन से स्पष्ट है कि युवा ग्रामीण महिला शिक्षकों से, युवा शहरी महिला शिक्षक धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती है । शोधकर्ता इसका कारण युवा शहरी महिला शिक्षकों के उदार और विस्तृत धार्मिक एवं जातिगत दृष्टिकोण को मानता है ।

कला संवर्ग के युवा, ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की धार्मिक एवं जातिगत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर नहीं प्राप्त हुआ । अतः उपरोक्त समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर धार्मिकव् जातिगत मूल्य पर एक जैसा है ।

विज्ञान वर्ग के ग्रामीण व शहरी, युवा शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (23.25 व 27.36), प्रमाणिक विचलन (5.223 व 5.455) ज्ञात हुए । इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त व पृथक टी मूल्य निकाले, जो 3.31 व 3.28 ज्ञात हुए, जिनमें 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों के अवलोकन से स्पष्ट है कि विज्ञान के युवा ग्रामीण शिक्षकों से विज्ञान के युवा शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अनुकूल है । शोधकर्ता इसका कारण शहरी विज्ञान शिक्षकों का धार्मिकता के प्रति अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अनुभव करता है ।

समस्त युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया । समूह के मध्यमान (23.25 व 23.11), प्रमाणिक विचलन (4.996 व 4.730) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (3.08) दोनों परीक्षणों में प्राप्त हुए । स्पष्ट है कि शहरी युवा शिक्षक, ग्रामीण युवा शिक्षकों से धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण शहरी परिवेश में टूटते हुए पुरातन रूढ़िवादी धार्मिक व जातिगत बन्धनों को मानता है ।

सारिणी 75.4 में सभी समूहों के प्रसरण अनुपात परीक्षण एफ मूल्य भी ज्ञात किये गये । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह के एफ मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है । अतः कहा जा सकता है कि प्रसरण के आधार पर सभी समूहों में औसत धार्मिक एवं जातिगत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान हैं ।

सारिणी - 76.4

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	युवा ग्रा0पु0शि0	96	31.46	4.602	.470	$2.25^{\times}$	$2.23^{\times}$	1.05
	युवा श0पु0शि0	67	29.80	4.723	.577			
2.	युवा ग्रा0म0शि0	30	30.50	5.438	.993	$2.36^{\times}$	$2.23^{\times}$	1.37
	युवा श0म0शि0	67	33.04	4.643	.567			
3.	युवा ग्रा0क0शि0	79	30.82	5.210	.587	.02	.02	1.02
	युवा श0क0शि0	104	30.83	5.171	.507			
4.	युवा ग्रा0वि0शि0	47	31.93	4.002	.584	1.74	1.80	1.40
	युवा श0वि0शि0	30	33.46	3.381	.617			
5.	समस्त युवा ग्रा0शि0	126	31.23	4.809	.428	.31	.31	1.06
	समस्त युवा श0शि0	134	31.42	4.941	.427			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 76.4 में अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को प्रदर्शित किया गया है ।

युवा ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान क्रमशः (31.46 व 29.80), प्रमाणिक विचलन (4.602 व 4.723) ज्ञात हुए। समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर जानने के लिये संयुक्त व पृथक टी मूल्य ज्ञात किये गये जो क्रमशः (2.25 व 2.23) आये । टी मूल्य में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि अन्य मूल्य पर युवा ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, युवा शहरी शिक्षकों से अधिक सार्थक व धनात्मक है । शोधकर्ता इसका कारण युवा ग्रामीण पुरूष शिक्षकों का वातावरण एवं भौतिकता के प्रति अधिक सतर्क होना मानता है ।

ग्रामीण व शहरी युवा महिला शिक्षकों की अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ । इस समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (30.50 व 33.04), प्रमाणिक विचलन (5.438 व 4.643) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.36 व 2.23) ज्ञात हुए । अतः माध्यमान अंकों से विदित है कि युवा ग्रामीण महिला शिक्षकों से, युवा शहरी महिला शिक्षकों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति श्रेष्ठ है । शोधकर्ता इसका कारण शहरी युवा महिला शिक्षकों की शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक जागरूकता को मानता है ।

कला व विज्ञान संवर्ग के युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान अंको में एकरूपता सी है । इस समूह के टी मूल्यों में भी सार्थकता का स्तर नही है । अतः यह कहा जा सकता है, कि कला संवर्ग व विज्ञान संवर्ग के ग्रामीण व शहरी युवा शिक्षक समूह की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एकरूपता सी है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण युवा शिक्षकों का शहर में निवास करना मानता है ।

सारिणी - 77.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	युवा ग्रा0पु0शि0	96	158.60	21.488	2.193	1.31	1.27	1.39
	युवा श0पु0शि0	67	153.77	25.341	3.096			
2.	युवा ग्रा0म0शि0	30	157.46	16.743	3.057	$2.05^{\times}$	$2.22^{\times}$	1.53
	युवा श0म0शि0	67	166.26	20.697	2.529			
3.	युवा ग्रा0क0शि0	79	156.07	19.160	2.156	.18	.19	1.61
	युवा श0क0शि0	104	156.67	24.330	2.386			
4.	युवा ग्रा0वि0शि0	47	162.12	22.023	3.212	1.97	$2.05^{\times}$	1.45
	युवा श0वि0शि0	30	171.63	18.288	3.339			
5.	समस्त युवा ग्रा0शि0	126	158.33	20.401	1.817	.61	.61	1.37
	समस्त युवा श0शि0	134	160.02	23.886	2.063			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

समस्त युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (31.23 व 31.42), प्रमाणिक विचलन (4.809 व 4.941) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य दोनों परीक्षणों में (.31) है, जो सार्थकता की कसौटी पर नहीं है । अतः इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समानता है ।

सारिणी 76.4 में अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति को विभिन्न समूहों में इस प्रकार दर्शाया गया है कि समूहों में कहाँ तक एक दूसरे से सार्थक अन्तर पाया जाता है । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रति एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सभी समूह में औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संकेन्द्रण है ।

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न युवा शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाषिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को सारिणी 77.4 में दर्शाया गया है ।

ग्रामीण व शहरी युवा पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के योग मूल्य पर मध्यमान (158.60 व 153.77), प्रमाणिक विचलन (21.488 व 25.341) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.31 व 1.27) ज्ञात हुए । टी मूल्य के आधार पर समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । केवल मध्यमान अंकों के अन्तर पर कहा जा सकता है कि युवा शहरी पुरूष शिक्षकों से, युवा ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति कुछ श्रेष्ठ है ।

युवा, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह के मध्यमान (157.46 व 166.26), प्रमाणिक विचलन (16.743 व 20.697) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.05 व 2.22) हैं । टी मूल्य के आधार पर इस समूह के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से विदित है कि शहरी युवा महिला शिक्षक, ग्रामीण युवा महिला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं ।

कला संवर्ग के ग्रामीण व शहरी युवा शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंकों में लगभग एकरूपता है । इस समूह के टी मूल्यों में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है । अतः यह कहा जा सकता है कि इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति योग मूल्य पर एक समान है ।

विज्ञान संवर्ग के युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के बीच योग मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण के आधार पर 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (162.12 व 171.63), प्रमाणिक विचलन (22.023 व 18.288) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.97 व 2.05) है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि विज्ञान के युवा शहरी शिक्षकों की विज्ञान के युवा ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

समस्त ग्रामीण व शहरी युवा शिक्षक समूह की योग मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ । समूह के मध्यमान 158.33 व 160.02 तथा टी मूल्य संयुक्त व पृथक दोनों परीक्षणों पर .61 रहे । अतः इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एकरूपता सी है ।

सारिणी 77.4 में विभिन्न युवा शिक्षक समूहों के प्रसरण अनुपात परीक्षण एफ मूल्य भी ज्ञात किये गये । सारिणी से विदित है कि एफ मूल्य किसी भी समूह में सार्थक नहीं है । अतः सांख्यिकीय दृष्टि से युवाओं के सभी समूहों में सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एक से मूल्य है ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 78.4 में शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक अलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

विवाहित ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान अंक (27.68 व 26.62), प्रमाणिक विचलन (6.689 व 7.011) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 1.33 व 1.32 हैं । टी मूल्यों में दोनों परीक्षणों पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि इस समूह की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति लगभग एक सी है ।

ग्रामीण व शहरी विवाहित महिला शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (29.41 व 26.10), प्रमाणिक विचलन (4.064 व 5.449) हैं । समूह की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी मूल्य निकाले गये जो संयुक्त व पृथक

सारिणी - 78.4

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	विवाहित ग्रा0पु0शि	159	27.68	6.689	.531	1.33	1.32	1.10
	विवाहित श0पु0शि	136	26.62	7.011	.601			
2.	विवाहित ग्रा0म0शि	24	29.41	4.064	.830	2.67^{xx}	3.09^{xx}	1.80
	विवाहित श0म0शि	74	26.10	5.449	.633			
3.	विवाहित ग्रा0क0शि	127	27.49	6.423	.570	2.14^{x}	2.14^{x}	1.00
	विवाहित श0क0शि	177	25.89	6.421	.483			
4.	विवाहित ग्रा0वि0शि	56	28.85	6.386	.853	.50	.51	1.10
	विवाहित श0वि0शि	33	29.54	6.088	1.066			
5.	समस्त विवाहित ग्रा0शि	183	27.91	6.425	.475	2.21^{x}	2.21^{x}	1.02
	समस्त विवाहित श0शि	210	26.47	6.493	.448			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

परीक्षणों में क्रमशः (2.67 व 3.09) प्राप्त हुए । टी मूल्यों में 0.01 स्तर पर सार्थकता है । अतः ग्रामीण व शहरी, विवाहित महिला शिक्षक समूह में सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट हैं कि विवाहित ग्रामीण महिला शिक्षक, विवाहित शहरी महिला शिक्षकों से शैक्षिक मूल्य पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखतीं हैं । शोधकर्ता इसका कारण विवाहित ग्रामीण महिला शिक्षकों का शहरी परिवेश में शिक्षा व पालन को मानता है ।

विवाहित ग्रामीण व शहरी कला संवर्ग के शिक्षक समूह में 0.05 स्तर पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान (27.49 व 25.89), प्रमाणिक विचलन (6.423 व 6.421) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.14 दोनों परीक्षणों पर प्राप्त हुए । अतः मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि, विवाहित शहरी कला शिक्षकों से, विवाहित ग्रामीण कला शिक्षक शैक्षिक मूल्य पर अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । विज्ञान वर्ग के विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान (28.85 व 29.54) हैं । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.50 व .51) ज्ञात हुए, जिनमें सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर नही है । अतः समूह की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है । शोधकर्ता इसका कारण अधिकांश विवाहित ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों का शहर में निवास करना मानता है ।

समस्त विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान (27.91 व 26.47), प्रमाणिक विचलन (6.425 व 6.493) है । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त व पृथक टी मूल्य ज्ञात किये गये जो 2.21 दोनों परीक्षणों में प्राप्त हुए । अतः टी मूल्यों के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है, कि समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि विवाहित शहरी शिक्षकों से विवाहित ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति शैक्षिक मूल्य पर धनात्मक है ।

सारिणी 78.4 के अनुसार जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक रूप से अन्तर ज्ञात करने के लिये सभी समूह के प्रसरण अनुपात परीक्षण भी ज्ञात किये गये । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह के एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः सभी समूहों में शैक्षिक मूल्य के आधार पर विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

सारिणी - 79.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	विवाहित ग्रा0पु0शि	159	26.38	5.209	.413	.40	.40	1.35
	विवाहित श0पु0शि	136	26.12	6.050	.519			
2.	विवाहित ग्रा0म0शि	24	28.58	4.615	.942	1.06	1.21	1.64
	विवाहित श0म0शि	74	27.17	5.916	.688			
3.	विवाहित ग्रा0क0शि	127	26.51	4.904	.435	.71	.73	1.50
	विवाहित श0क0शि	177	26.06	6.002	.451			
4.	विवाहित ग्रा0वि0शि	56	27.03	5.781	.772	1.42	1.44	1.07
	विवाहित श0वि0शि	33	28.81	5.582	.972			
5.	समस्त विवाहित ग्रा0शि	183	26.67	5.177	.383	.32	.32	1.35
	समस्त विवाहित श0शि	210	26.49	6.010	.415			

सामाजिक मूल्य पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सामाजिक मूल्य पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि आलोचनात्मक अनुपात (संयुक्त व पृथक टी मूल्य को सारिणी 79.4 में दर्शाया गया है ।

विवाहित ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (26.38 व 26.12), प्रमाणिक विचलन (5.209 व 6.050) हैं । सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य दोनों परीक्षणों पर (.40) ज्ञात हुए जिनमें कोई सार्थकता नहीं है । अतः वर्णित समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का समान स्तर है ।

ग्रामीण व शहरी, विवाहित महिला शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । इस समूह के मध्यमान (28.58 व 27.17) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.06 व 1.21) हैं । अतः समूह में सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्य लगभग समान हैं । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण व शहरी विवाहित महिला शिक्षकों का एक समान सामाजिक चिन्तन को मानता है ।

कला संवर्ग के विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान (26.51 व 26.06) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.71 व .73) हैं । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

विज्ञान वर्ग के विवाहित ग्रामीणव शहरी शिक्षक समूह में सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर ज्ञात नही हुआ । मध्यमान व टीमूल्यों से स्पष्ट है कि समूह के शिक्षकों की सामाजिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति लगभग एक जैसी है । शोधकर्ता इसका कारण विवाहित, ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों का सामाजिक मूल्य पर एक जैसा दृष्टिकोण होना मानता है ।

समस्त विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान क्रमशः (26.67 व 26.49), प्रमाणिक विचलन (5.177 व 6.010) प्राप्त हुए । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.32) ज्ञात हुए । अतः विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्य सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या

सारिणी - 80.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	विवाहित ग्रा0पु0शि	159	32.56	5.587	.443	4.52^{XX}	4.44^{XX}	1.60
	विवाहित श0पु0शि	136	29.23	7.070	.606			
2.	विवाहित ग्रा0म0शि	24	33.83	5.223	1.066	2.08^{X}	2.18^{X}	1.19
	विवाहित श0म0शि	74	31.09	5.705	.663			
3.	विवाहित ग्रा0क0शि	127	32.83	5.401	.479	5.07^{XX}	5.24^{XX}	1.53
	विवाहित श0क0शि	177	29.19	6.673	.502			
4.	विवाहित ग्रा0वि0शि	56	32.50	5.896	.788	.88	.91	1.22
	विवाहित श0वि0शि	33	33.60	5.344	.930			
5.	समस्त विवाहित ग्रा0शि	183	32.73	5.543	.410	4.55^{XX}	4.61^{XX}	
	समस्त विवाहित श0शि	210	29.89	6.667	.460			

X - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

XX - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । शोधकर्ता इसका कारण विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों सामाजिक परम्पराओं, रीति रिवाजों, मान्यताओं व आस्थाओं के प्रति समरूपता को मानता है ।

सारिणी 79.4 में सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रसरण अनुपात भी ज्ञात किये गये, जो किसी भी समूह में सार्थक नहीं है । अतः सभी समूह में सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संकेन्द्रण है ।

आर्थिक मूल्य पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 80.4 में आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) को दर्शाया गया है ।

आर्थिक मूल्य पर विवाहित, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान अंक क्रमशः (32.56 व 29.23), प्रमाणिक विचलन (5.587 व 7.070) ज्ञात हुए । समूह की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये टी संयुक्त व पृथक टी मूल्यों (4.52 व 4.44) में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि शहरी विवाहित पुरूष शिक्षकों से ग्रामीण विवाहित पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अधिक धनात्मक है । शोधकर्ता इसका कारण विवाहित ग्रामीण शिक्षकों की कमजोर आर्थिक स्थिति को मानता है ।

विवाहित ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह के मध्यमान (33.83 व 31.09), प्रमाणिक विचलन 5.223 व 5.705) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.08 व 2.18) है । टी मूल्यों के आधार पर समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से विदित है, कि आर्थिक मूल्य पर विवाहित ग्रामीण महिला शिक्षक, विवाहित शहरी महिला शिक्षकों से अधिक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती है । शोधकर्ता इसका कारण विवाहित ग्रामीण महिला शिक्षकों की बढ़ती हुई आर्थिक चिन्ता को मानता है ।

कला संवर्ग के विवाहित, ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर ज्ञात हुआ । समूह के मध्यमान (32.83 व 29.19) प्रमाणिक विचलन

(5.401 व 6.673) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (5.07 व 5.24) ज्ञात किये गये । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि आर्थिक मूल्य पर विवाहित ग्रामीण कला शिक्षक विवाहित शहरी कला शिक्षकों की अपेक्षा अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । सम्भवतः इसका कारण ग्रामीण क्षेत्रों में सिकुड़ते आर्थिक संसाधन हो सकते है ।

विवाहित ग्रामीण व शहरी विज्ञान वर्ग के शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नही है । इस समूह के मध्यमान (32.50 व 33.60) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.88 व .91) रहे । जो सार्थक नहीं है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों की एक समान आर्थिक स्थिति को मानता है ।

समस्त ग्रामीण व शहरी विवाहित शिक्षकों के मध्यमान (32.73 व 29.89), प्रमाणिक विचलन (5.543 व 6.667) है । संयुक्त व पृथक टी मूल्य (4.55 व 4.61) ज्ञात हुए।टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह के मध्य 0.01 स्तर पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि विवाहित शहरी शिक्षकों से, आर्थिक मूल्य पर विवाहित ग्रामीण शिक्षक, धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण विवाहित ग्रामीण शिक्षकों की रोजगार के अवसरों को प्राप्त करने में विलिष्टता को समझता है ।

आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सभी समूहों में प्रसरण अनुपात भी ज्ञात किये गये । जो कि सारिणी 80 .4 में दर्शाये गये हैं । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह के एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः सांख्यिकीय दृष्टि से सभी समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में आर्थिक मूल्य पर एकरूपता सी है ।

राजनीतिक मूल्य पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 81 .4 में राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, टी मूल्य (संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण) को दर्शाया गया है ।

सारिणी - 81

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन,मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	विवाहित ग्रा0पु0शि	159	22.19	6.094	.483	1.42	1.42	1.16
	विवाहित श0पु0शि	136	23.16	5.648	.484			
2.	विवाहित ग्रा0म0शि	24	24.29	5.320	1.086	.07	.06	1.42
	विवाहित श0म0शि	74	24.21	4.458	.518			
3.	विवाहित ग्रा0क0शि	127	22.10	5.500	.488	1.90	1.88	1.08
	विवाहित श0क0शि	177	23.28	5.287	.397			
4.	विवाहित ग्रा0वि0शि	56	23.30	7.061	.944	1.12	1.22	1.95
	विवाहित श0वि0शि	33	24.87	5.061	.881			
5.	समस्त विवाहित ग्रा0शि	183	22.46	6.026	.445	1.87	1.86	1.31
	समस्त विवाहित श0शि	210	23.53	5.273	.364			

विवाहित ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (22.19 व 23.16), प्रमाणिक विचलन (6.094 व 5.648) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य दोनों परीक्षणों पर (1.42) प्राप्त हुए । टी मूल्य से स्पष्ट है कि सार्थकता की दृष्टि से इस समूह में कोई अन्तर नही है ।

ग्रामीण व शहरी विवाहित महिला शिक्षकों के बीच राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है । शोधकर्ता इसका कारण विवाहित, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर कम राजनीतिक जागृति को मानता है ।

कला संवर्ग के विवाहित, ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (23.30 व 24.87) तथा प्रमाणिक विचलन (7.061 व 5.061) रहे । समूह के संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.12 व 1.22) ज्ञात किये । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि, समूह के शिक्षकों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

विवाहित, ग्रामीण व शहरी विज्ञान वर्ग के शिक्षक समूह के मध्य जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में राजनीतिक मूल्य पर कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नही हुआ । शोधकर्ता इसका कारण समूह के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को मानता है ।

समस्त विवाहित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमान क्रमशः (22.46 व 23.53), प्रमाणिक विचलन (6.026 व 5.273) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.87 व 1.86) निकाले गये । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह में सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है । अतः राजनीतिक मूल्य पर समूह की जनसंख्या अभिवृत्ति एक जैसी है ।

विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के किसी भी समूह में राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में राजनीति को प्रभावित करने वाले तत्वों को मानता है ।

सारिणी 81.4 में सभी समूहों के एफ मूल्यों को दर्शाया गया है । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रदर्शित सभी समूहों में प्रसरण के आधार पर कोई अन्तर नहीं है । अतः सभी समूहों में औसत राजनीतिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण समान हैं ।

सारिणी - 82.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	विवाहित ग्रा0पु0शि	159	24.42	5.478	.434	.18	.18	1.37
	विवाहित श0पु0शि	136	24.52	4.687	.402			
2.	विवाहित ग्रा0म0शि	24	24.87	4.581	.935	2.08×	2.01	1.12
	विवाहित श0म0शि	74	27.01	4.324	.503			
3.	विवाहित ग्रा0क0शि	127	24.62	5.375	.477	1.14	1.12	1.27
	विवाहित श0क0शि	177	25.28	4.771	.359			
4.	विवाहित ग्रा0वि0शि	56	24.16	5.359	.716	1.70	1.79	1.59
	विवाहित श0वि0शि	33	26.03	4.348	.757			
5.	समस्त विवाहित ग्रा0शि	183	24.48	5.359	.396	1.82	1.80	1.30
	समस्त विवाहित श0शि	210	25.40	4.705	.325			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के विभिन्न समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक अलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को सारिणी 82.4 में दर्शाया गया है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर विवाहित ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान (24.42 व 24.52) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.18) रहे जो सार्थकता की कसौटी पर नही है । शोधकर्ता इसका कारण विवाहित, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षकों की धार्मिक व जातिगत दृष्टिकोण में सहिष्णुता को मानता है ।

विवाहित ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों के मध्यमान (24.87 व 27.01), प्रमाणिक विचलन (4.581 व 4.324) हैं । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त व पृथक टी मूल्य ज्ञात किये जो (2.08 व 2.01) आये । संयुक्त टी मूल्य से स्पष्ट है कि समूह के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संयुक्त आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण के आधार पर 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है कि विवाहित ग्रामीण महिला शिक्षकों से, विवाहित शहरी महिला शिक्षक धार्मिक व जातिगत मूल्य पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती है । धनात्मक अभिवृत्ति रखने का कारण शोधकर्ता विवाहित शहरी महिलाओं शिक्षकों का व्यापक धार्मिक दृष्टिकोण मानता है ।

कला संवर्ग के विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के समूह की धार्मिक व जातिगत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त व पृथक टी मूल्य निकाले गये । जो 1.14 व 1.12 प्राप्त हुए । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में विशेष अन्तर नहीं है ।

विज्ञान वर्ग के विवाहित, ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान अंक (24.16 व 26.03), प्रमाणिक विचलन (5.359 व 4.348) प्राप्त हुए । इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संयुक्त व पृथक परीक्षण में टी मूल्य निकाले

सारिणी - 83.4

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	विवाहित ग्रा0पु0शि	159	33.13	4.013	.318	3.24^{xx}	3.18^{xx}	1.62
	विवाहित श0पु0शि	136	31.41	5.106	.438			
2.	विवाहित ग्रा0म0शि	24	32.50	5.308	1.083	.20	.20	1.08
	विवाहित श0म0शि	74	32.74	5.113	.594			
3.	विवाहित ग्रा0क0शि	127	33.24	4.255	.378	3.00^{xx}	3.10^{xx}	1.51
	विवाहित श0क0शि	177	31.55	5.231	.393			
4.	विवाहित ग्रा0वि0शि	56	32.62	4.057	.542	1.15	1.14	1.08
	विवाहित श0वि0शि	33	33.66	4.225	.736			
5.	समस्त विवाहित ग्रा0शि	183	33.05	4.194	.310	2.45^{x}	2.48^{x}	1.50
	समस्त विवाहित श0शि	210	31.88	5.135	.354			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

गये जो (1.70 व 1.79) है । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर नही है । शोधकर्ता इसका कारण विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों का जनसंख्या शिक्षा के प्रति एक जैसे झुकाव को मानता है ।

समस्त विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की जनसंख्या अभिवृत्ति के मध्यमान (24.48 व 25.40) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.82 व 1.80) ज्ञात हुए । अतः सार्थकता की दृष्टि से समूह की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई अन्तर नही है । शोधकर्ता इसके लिये ग्रामीण व शहरी विवाहित शिक्षकों के स्थूल जनसंख्या दृष्टिकोण को मानता है ।

सारिणी 82.4 में प्रसरण का सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये एफ मूल्य निकाले गये जो किसी भी समूह में सार्थकता की कसौटी पर नही है । अतः विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संकेन्द्रण है ।

अन्य मूल्य पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

अन्य मूल्य पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को सारिणी 83.4 में प्रदर्शित किया गया है ।

विवाहित, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (33.13 व 31.41), प्रमाणिक विचलन (4.013 व 5.106) ज्ञात हुए । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त व पृथक टी मूल्य ज्ञात किये, जो (3.24 व 3.18) ज्ञात हुए । टी मूल्यों से स्पष्ट है, कि दोनों समूहों के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से विदित है, कि विवाहित ग्रामीण पुरूष शिक्षक, विवाहित शहरी पुरूष शिक्षकों से अन्य मूल्य पर अधिक धनात्मक व अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

ग्रामीण व शहरी, विवाहित महिला शिक्षकों के मध्य अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर ज्ञात नही हुआ । समूह के मध्यमान लगभग एक जैसे रहे ।

कला संवर्ग के विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान क्रमशः (33.24 व 31.55) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (3.00 व 3.10) ज्ञात हुए । टी मूल्यों में सार्थकता की दृष्टि से 0.01 स्तर पर अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के आर्थिक मूल्य पर विवाहित ग्रामीण कला शिक्षक, विवाहित शहरी कला शिक्षकों से उच्च, सार्थक व अनुकूल अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण कला वर्ग के शिक्षकों की निश्चित आर्थिक स्थिति को मानता है ।

विज्ञान वर्ग के ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक समूह की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नही हुआ । संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः (1.15 व 1.14) है । जिनमें सार्थकता की कसौटी नही है । शोधकर्ता इसका कारण विज्ञान सवंर्ग के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों का प्रदूषण व भौतिकवादी संस्कृति पर एक से विचारों को मानता है ।

न्यादर्श में उपलब्ध समस्त विवाहित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमान 33.05 व 31.88, प्रमाणिक विचलन 4.194 व 5.135 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.45 व 2.48 रहे । समूह के टी मूल्य 0.01 स्तर पर सार्थक हैं । अतः समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों के अवलोकन से स्पष्ट है, कि विवाहित ग्रामीण शिक्षक, विवाहित शहरी शिक्षकों से अन्य मूल्य पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सारिणी 83.4 के अनुसार जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति को विभिन्न समूहों में इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है कि विभिन्न समूहों में कहाँ तक एक दूसरे से सार्थक अन्तर पाया जाता है । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः ग्रामीण व शहरी विवाहित शिक्षकों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रति अन्य मूल्य पर संकेन्द्रण समान है ।

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को सारिणी 84.4 में प्रदर्शित किया गया है ।

सारिणी - 84.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	विवाहित ग्रा0पु0शि	159	166.45	20.642	1.637	1.82	1.77	1.90
	विवाहित श0पु0शि	136	161.24	28.420	2.437			
2.	विवाहित ग्रा0म0शि	24	173.91	13.048	2.663	1.22	1.54	2.54
	विवाहित श0म0शि	74	165.39	20.784	2.416			
3.	विवाहित ग्रा0क0शि	127	166.91	19.063	1.692	2.00×	2.11×	1.95
	विवाहित श0क0शि	177	161.37	26.623	2.001			
4.	विवाहित ग्रा0वि0शि	56	168.60	21.952	2.933	1.72	1.78	1.30
	विवाहित श0वि0शि	33	176.54	19.265	3.354			
5.	समस्त विवाहित ग्रा0शि	183	165.43	19.945	1.474	1.55	1.57	1.72
	समस्त विवाहित श0शि	210	163.76	26.160	1.805			

× 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

विवाहित ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (166.45 व 161.24), प्रमाणिक विचलन (20.642 व 28.420) ज्ञात किये गये । समूह की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.82 व 1.77) रहे, जो सार्थकता की कसौटी पर नहीं है । अतः समूह के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर विवाहित ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की विवाहित शहरी पुरूष शिक्षकों से अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कुछ श्रेष्ठता है ।

ग्रामीण व शहरी विवाहित महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में मूल्यों के योग पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान (173.91 व 165.39) तथा टी मूल्य संयुक्त व पृथक परीक्षण में (1.22 व 1.54) हैं । समूह में केवल मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है, कि विवाहित ग्रामीण महिला शिक्षकों की विवाहित शहरी महिला शिक्षकों से जनसंख्या अभिवृत्ति में कुछ उच्चता का अंश है ।

कला संवर्ग के विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (166.91 व 161 .37), प्रमाणिक विचललन (19.063 व 26.623) है । समूह की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये टी मूल्य निकाले गये जो (2.00 व 2.11) संयुक्त व पृथक परीक्षण पर ज्ञात हुए । टी मूल्यों के आधार पर इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मूल्यों के योग पर विवाहित ग्रामीण कला शिक्षक, विवाहित शहरी कला शिक्षकों से श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं।

विवाहित ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (168.60 व 176.54) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.72 व 1.78) ज्ञात हुए । केवल मध्यमान अंकों के अन्तर पर कहा जा सकता है, कि विज्ञान वर्ग के शहरी विवाहित शिक्षक, इसी वर्ग के ग्रामीण विवाहित शिक्षकों से कुछ श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

समस्त विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान (165.43 व 163.76) तथा टी मूल्य संयुक्त व पृथक परीक्षण में (1.55 व 1.57) रहे । स्पष्ट है कि टी मूल्यों में कोई सार्थकता नहीं है । अतः समूह की सभी मूल्यों के योग पर जनसंख्या अभिवृत्ति में लगभग समानता है ।

सारिणी - 85.4

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अविवाहित ग्रा0पु0शि0	41	23.60	4.625	.722	.96	.86	1.53
	अविवाहित श0पु0शि0	14	25.07	5.717	1.528			
2.	अविवाहित ग्रा0म0शि0	26	24.07	3.949	.774	1.90	1.90	4.03
	अविवाहित श0म0शि0	26	27.38	7.930	1.555			
3.	अविवाहित ग्रा0क0शि0	47	22.97	3.931	.573	3.41xx	2.77xx	3.81
	अविवाहित श0क0शि0	23	27.69	7.678	1.601			
4.	अविवाहित ग्रा0वि0शि0	20	25.70	4.780	1.069	.34	.34	1.86
	अविवाहित श0वि0शि0	17	25.05	6.524	1.582			
5.	समस्त अविवाहित ग्रा0शि0	67	23.79	4.350	.531	2.49x	2.21x	2.77
	समस्त अविवाहित श0शि0	40	26.57	7.243	1.145			

x - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

सारिणी 84.4 में सभी समूहों के एफ मूल्य भी दर्शाये गये हैं । जिनके अवलोकन से विदित है कि किसी भी समूह के एफ मूल्य में सार्थकता नहीं है । अतः कहा जा सकता है कि सभी मूल्यों के योग पर सभी विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक सी है ।

शैक्षिक मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

शैक्षिक मूल्य के आधार पर सारिणी 85.4 में विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

अविवाहित ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की शैक्षिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान (23.60 व 25.07) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.96 व .86) हैं । जो सार्थक नहीं है । अतः समूह की शैक्षिक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक समान है । सम्भवतः इसका कारण अधिकांश शिक्षकों का कम शैक्षिक अनुभव हो सकता है ।

शैक्षिक मूल्य पर अविवाहित ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर ज्ञात नहीं हुआ । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (24.07 व 27.38) तथा टी मूल्य (1.90) संयुक्त व पृथक परीक्षण पर रहे । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर कहा जा सकता है, कि अविवाहित शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति कुछ अधिक अनुकूल है ।

अविवाहित ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (22.97 व 27.69) तथा प्रमाणिक विचलन (3.931 व 7.678) है । समूह के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त व पृथक परीक्षण के आधार पर प्राप्त टी मूल्य (3.41 व 2.77) रहे । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह में शैक्षिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि अविवाहित ग्रामीण कला शिक्षकों से अविवाहित शहरी कला शिक्षक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण अविवाहित शहरी कला शिक्षकों के उच्च शैक्षिक स्तर को मानता है ।

सारिणी - 86.4

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अविवाहित ग्रा0पु0शि0	41	23.26	4.025	.629	.18	.17	1.31
	अविवाहित श0पु0शि0	14	23.50	4.604	1.230			
2.	अविवाहित ग्रा0म0शि0	26	22.92	4.204	.824	1.85	1.85	1.30
	अविवाहित श0म0शि0	26	25.23	4.786	.939			
3.	अविवाहित ग्रा0क0शि0	47	23.40	4.116	.600	.42	.41	1.29
	अविवाहित श0क0शि0	23	23.86	4.674	.975			
4.	अविवाहित ग्रा0वि0शि0	20	22.50	3.980	.890	2.19	2.16	1.44
	अविवाहित श0वि0शि0	17	25.64	4.769	1.157			
5.	समस्त अविवाहित ग्रा0शि0	67	23.13	4.067	.497	1.72	1.66	1.36
	समस्त अविवाहित श0शि0	40	24.62	4.738	.749			

अविवाहित ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह के मध्य सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर नही पाया गया । दोनों के मध्यमान अंकों में भी कोई विशेष अन्तर नहीं है । शोधकर्ता इसका कारण ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों की शिक्षा का शहरी परिवेश में होना हो सकता है ।

समस्त अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्य सार्थकता की दृष्टि से जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संयुक्त टी मूल्य के आधार पर 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान (23.79 व 26.57) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.49 व 2.21) ज्ञात हुए । अतः शैक्षिक मूल्य पर अविवाहित ग्रामीण शिक्षकों से अविवाहित शहरी शिक्षक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सारिणी 85.4 के अनुसार जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति को विभिन्न समूहों में इस प्रकार दिखाया गया है कि विभिन्न समूह कहाँ तक सार्थक रूप से एक दूसरे से भिन्न है । सारिणी 85 .4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः शैक्षिक मूल्य पर सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के परितः संकेन्द्रण है ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सामाजिक मूल्य के आधार पर अविवाहित ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता के स्तर तक कोई अन्तर नहीं है । समूह के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (23.26 व 23.50) तथा टी मूल्य संयुक्त व पृथक परीक्षण पर (.18 व .17) रहे । सम्भवतः इसका कारण अविवाहित पुरूष शिक्षकों का सामाजिक मूल्यों पर अनुभव की कमी हो सकता है ।

अविवाहित ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (22.92 व 25.23) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.85) दोनों परीक्षण में ज्ञात किये गये । टी मूल्यों के अवलोकन से स्पष्ट है, कि इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सामाजिक मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है ।

कला संवर्ग के अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सामाजिक मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमानों में लगभग समरूपता है तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.42 व .41) है ।

ग्रामीण व शहरी विज्ञान वर्ग के अविवाहित शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (22.50 व 25.64), प्रमाणिक विचलन (3.980 व 4.769) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.19 व 2.16) ज्ञात हुए । समूह की अभिवृत्ति में टी मूल्य के आधार पर कोई सार्थकता नही पायी गई । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर कहा जा सकता है कि अविवाहित शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अविवाहित ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से अधिक अनुकूल है ।

समस्त अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर ज्ञात नहीं हुआ । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (23.13 व 24.62) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.72 व 1.66) रहे, जिनमें सार्थकता की कसौटी नही है । अतः समस्त विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की सामाजिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में लगभग समरूपता का स्तर है । शोधकर्ता इसका कारण अविवाहित शिक्षकों का जनसंख्या के प्रति कम रूझान होना मानता है ।

सारिणी 86.4 में सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एफ मूल्य भी ज्ञात किये गये हैं । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः सभी समूहों की सामाजिक मूल्य पर औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संकेन्द्रण है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 87.4 में आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुमान परीक्षण टी मूल्य को प्रदर्शित किया गया है ।

ग्रामीण व शहरी अविवाहित पुरूष शिक्षक समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर नही है । समूह की अभिवृत्ति के

सारिणी - 87.4

आर्थिक मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अविवाहित ग्रा0पु0शि0	41	28.02	5.092	.795	.70	.63	1.51
	अविवाहित श0पु0शि0	14	26.85	6.249	1.670			
2.	अविवाहित ग्रा0म0शि0	26	30.53	5.398	1.059	.42	.43	1.48
	अविवाहित श0म0शि0	26	31.23	6.556	1.286			
3.	अविवाहित ग्रा0क0शि0	47	28.21	5.175	.755	.84	.78	1.60
	अविवाहित श0क0शि0	23	27.00	6.537	1.363			
4.	अविवाहित ग्रा0वि0शि0	20	30.85	5.314	1.186	1.45	1.45	1.07
	अविवाहित श0वि0शि0	17	33.35	5.135	1.245			
5.	समस्त अविवाहित ग्रा0शि0	67	29.00	3.356	.410	1.96	1.87	1.49
	समस्त अविवाहित श0शि0	40	29.70	4.096	.648			

मध्यमान (28.02 व 26.85) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.70 व .63) है । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में आर्थिक मूल्य पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

अविवाहित, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (30.53 व 31.23), प्रमाणिक विचलन (5.398 व 6.556) ज्ञात हुए । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.42 व .43) रहे । अतः टी मूल्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । शोधकर्ता इसका कारण अविवाहित ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों में गम्भीर आर्थिक चिन्तन के अभाव को मानता है ।

कला संवर्ग के ग्रामीण व शहरी अविवाहित शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान (28.21 व 27.00) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.84 व .78) रहे । स्पष्ट है कि समूह के टी मूल्य सार्थक नहीं है । अतः समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समानता है ।

अविवाहित, ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह की अभिवृत्ति के मध्यमान (30.85 व 33.35) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.45) दोनों परीक्षणों में रहे । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर कहा जा सकता है, कि शहरी अविवाहित विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अविवाहित ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से कुछ अधिक अनुकूल है ।

समस्त, ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्यमान (29.00 व 29.70) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.96 व 1.87) रहे जो सार्थकता की कसौटी पर नहीं है । शोधकर्ता इसका कारण अविवाहित शिक्षकों का पारिवारिक उत्तरदायित्व के अभाव को मानता है ।

सारिणी 87.4 में सभी समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रसरण अनुपात परीक्षण एफ मूल्यों को भी दर्शाया गया है । सारिणी से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक

सारिणी - 88.4

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अविवाहित ग्रा0पु0शि0	41	20.43	3.507	.548	1.06	.98	1.38
	अविवाहित श0पु0शि0	14	21.64	4.125	1.102			
2.	अविवाहित ग्रा0म0शि0	26	22.57	2.671	.524	.73	.73	2.29
	अविवाहित श0म0शि0	26	23.26	4.045	.793			
3.	अविवाहित ग्रा0क0शि0	47	20.55	3.249	.474	1.55	1.43	1.62
	अविवाहित श0क0शि0	23	21.95	4.139	.863			
4.	अविवाहित ग्रा0वि0शि0	20	22.95	3.052	.682	.66	.64	1.66
	अविवाहित श0वि0शि0	17	23.70	3.933	.954			
5.	समस्त अविवाहित ग्रा0शि0	67	21.26	3.356	.410	1.96	1.87	1.49
	समस्त अविवाहित श0शि0	40	22.70	4.096	.648			

नही है । अतः सांख्यिकीय दृष्टि से आर्थिक मूल्य के प्रति सभी समूहों में औसत जनसंख्या अभिवृत्ति का समान स्तर है ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

राजनीतिक मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को सारिणी 88.4 में दर्शाया गया है।

राजनीतिक मूल्य पर अविवाहित ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (20.43 व 21.64), प्रमाणिक विचलन (3.507 व 4.125) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः (1.06 व .98) ज्ञात हुए । टी मूल्यों के आधार पर समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

अविवाहित ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में राजनीतिक मूल्य पर कोई सार्थक अन्तर नही है । अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.73) रहे । स्पष्ट है, कि राजनीतिक मूल्य पर ग्रामीण व शहरी अविवाहित महिला शिक्षक एक सी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

ग्रामीण व शहरी, अविवाहित कला शिक्षक समूह के मध्यमान (20.55 व 21.95) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः (1.55 व 1.43) ज्ञात हुए । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह में राजनीतिक मूल्य की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

विज्ञान वर्ग के अविवाहित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः (22.95 व 23.70) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.66 व .64) रहे । जो सार्थक अन्तर की कसौटी पर नही है । अतः समूह के शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

समस्त अविवाहित, ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर ज्ञात नही हुआ । समूह की अभिवृत्ति में सार्थक

सारिणी - 89.4

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अविवाहित ग्रा0पु0शि0	41	21.53	4.130	.695	.48	.48	1.04
	अविवाहित श0पु0शि0	14	20.92	4.047	1.082			
2.	अविवाहित ग्रा0म0शि0	26	23.03	3.852	.755	2.74^xx	2.94^xx	1.70
	अविवाहित श0म0शि0	26	26.69	5.026	.986			
3.	अविवाहित ग्रा0क0शि0	47	22.21	3.793	.553	.69	.67	1.28
	अविवाहित श0क0शि0	23	22.91	4.295	.896			
4.	अविवाहित ग्रा0वि0शि0	20	21.90	4.734	1.059	2.93^xx	2.87^xx	1.60
	अविवाहित श0वि0शि0	17	27.05	5.984	1.451			
5.	समस्त अविवाहित ग्रा0शि0	67	22.11	4.062	.496	2.77^xx	2.58^x	1.78
	समस्त अविवाहित श0शि0	40	24.67	5.423	.857			

x - 0.05 स्तर पर सार्थकता

xx - 0.01 स्तर पर सार्थकता

अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.96 व 1.87) ज्ञात हुए, जिनमें सार्थकता का स्तर नही है । अतः समस्त अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समरूपता का समावेश है । शोधकर्ता इसका कारण अविवाहित शिक्षकों का गृहस्थ जीवन के प्रति एक समान अपरिपक्व चिन्तन को मानता है ।

सभी समूहों में एक दूसरे से जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कहाँ तक सार्थक अन्तर है, यह ज्ञात करने के लिये सारिणी 88.4 में एफ मूल्यों को दर्शाया गया है । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है, कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समरूपता का स्तर है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 89.4 में धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर अविवाहित, ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान (21.53 व 20.92) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.48) ज्ञात हुए । टी मूल्यों के अवलोकन से विदित है, कि अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

अविवाहित ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक समूह के मध्यमान (23.03 व 26.69) ज्ञात हुए । समूह के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्यों (2.74 व 2.94) में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । अतः मध्यमान अंकों के अवलोकन से स्पष्ट है कि धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर अविवाहित शहरी महिला शिक्षक, अविवाहित ग्रामीण महिला शिक्षकों से कही अधिक अनूकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण अविवाहित शहरी शिक्षकों का व्यापक धार्मिक एवं जातिगत दृष्टिकोण मानता है ।

कला संवर्ग के अविवाहित, ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान 22.21 व 22.91 तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य .69 व .67 रहे । स्पष्ट है कि समूह के ज्ञात टी मूल्यों में कोई सार्थकता नहीं है ।

विज्ञान वर्ग के अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया । समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (21.90 व 27.05), प्रमाणिक विचलन (4.734 व 5.984) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.93 व 2.87) रहे । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि विज्ञान के अविवाहित ग्रामीण शिक्षकों से विज्ञान के अविवाहित शहरी शिक्षक धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर अधिक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । शोधकर्ता इसका कारण अविवाहित शहरी विज्ञान शिक्षकों की अधिक वैज्ञानिक सोच को मानता है ।

समस्त अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मध्यमान (22.11 व 24.67), प्रमाणिक विचलन (4.062 व 5.423) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य 2.77 व 2.58 रहे । समूह की धार्मिक एवं जातिगत मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संयुक्त व पृथक टी मूल्य के आधार पर क्रमशः (0.01 व 0.05) स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों के अवलोकन से विदित है कि समस्त अविवाहित ग्रामीण शिक्षकों से, समस्त अविवाहित शहरी शिक्षक अधिक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सारिणी 89.4 में सभी समूहों के प्रसरण अनुपात, परीक्षण / एफ मूल्यों को भी दर्शाया गया है । सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी भी समूह में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः सॉख्यिकीय दृष्टि से सभी समूहों की औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के धार्मिक एवं जातिगत मूल्यों में संकेन्द्रण हैं ।

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्यों को सारिणी 90.4 में प्रदर्शित किया गया है ।

सारिणी - 90.4

अन्य मूल्य के आधार पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अविवाहित ग्रा0पु0शि0	41	29.24	3.734	.583			
	अविवाहित श0पु0शि0	14	28.07	4.178	1.117	.98	.93	1.25
2.	अविवाहित ग्रा0म0शि0	26	30.69	4.688	.919			
	अविवाहित श0म0शि0	26	32.61	5.131	1.006	1.41	1.41	1.20
3.	अविवाहित ग्रा0क0शि0	47	29.14	4.314	.629			
	अविवाहित श0क0शि0	23	29.47	5.838	1.217	.27	.24	1.83
4.	अविवाहित ग्रा0वि0शि0	20	31.35	3.376	.755			
	अविवाहित श0वि0शि0	17	33.11	3.480	.844	1.56	1.56	1.06
5.	समस्त अविवाहित ग्रा0शि0	67	29.80	4.157	.508			
	समस्त अविवाहित श0शि0	40	31.02	5.245	.829	1.33	1.25	1.59

अविवाहित ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह के मध्यमान अंक क्रमशः (29.24 व 28.07) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.98 व .93) ज्ञात हुए । टी मूल्यों में 0.05 या 0.01 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है । अतः यह कहा जा सकता है कि अन्य मूल्य पर ग्रामीण व शहरी अविवाहित पुरूष शिक्षक एक जैसी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

ग्रामीण व शहरी अविवाहित महिला शिक्षक समूह की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । समूह के मध्यमान (30.69 व 32.61) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.41) दोनों परीक्षणों पर है । स्पष्ट है कि समूह के टी मूल्यों में कोई सार्थकता का स्तर नहीं है । अतः समूह के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक सी है ।

कला संवर्ग के अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमानों में लगभग एकरूपता है । समूह के संयुक्त व पृथक परीक्षणों पर निकाले गये टी मूल्यों में भी सार्थकता का स्तर नहीं है । अतः अन्य मूल्य पर समूह की एक जैसी जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

विज्ञान वर्ग के अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह के मध्य सार्थकता की दृष्टि से कोई अन्तर नही है । समूह के मध्यमान (31.35 व 33.11) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.56) दोनों परीक्षणों पर है । अतः विज्ञान वर्ग के अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अन्य मूल्य पर एक समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

समस्त अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों के मध्यमान (29.80 व 31.02), प्रमाणिक विचलन (4.157 व 5.245) ज्ञात हुए । समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में अन्तर ज्ञात करने के लिए निकाले गये संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.33 व 1.25) रहे । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि अविवाहित ग्रामीण शिक्षकों से अविवाहित शहरी शिक्षकों की अन्य मूल्य पर ज्ञात जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर कुछ अधिक है ।

सारिणी - 91.4

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के माध्य, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त एवं पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व प्रसरण अनुपात परीक्षण (एफ मूल्य)

क्र0सं0	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	संयुक्त टी मूल्य	पृथक टी मूल्य	एफ मूल्य
1.	अविवाहित ग्रा0पु0शि0	41	146.21	11.934	1.864	.03	.02	3.17
	अविवाहित श0पु0शि0	14	146.07	21.247	5.679			
2.	अविवाहित ग्रा0म0शि0	26	153.07	13.623	2.672	2.50×	2.50×	2.75
	अविवाहित श0म0शि0	26	166.03	22.595	4.431			
3.	अविवाहित ग्रा0क0शि0	47	146.59	11.861	1.730	1.31	1.04	4.73
	अविवाहित श0क0शि0	23	152.47	25.798	5.379			
4.	अविवाहित ग्रा0वि0शि0	20	154.25	14.127	3.159	2.58×	2.53×	1.65
	अविवाहित श0वि0शि0	17	167.94	18.168	4.406			
5.	समस्त अविवाहित ग्रा0शि0	67	148.88	12.960	1.583	2.86××	2.48×	3.40
	समस्त अविवाहित श0शि0	40	159.05	23.891	3.777			

× - 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

×× - 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

सारिणी 90 में सभी समूहों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के एफ मूल्यों को भी दर्शाया गया है । सारिणी से विदित है कि किसी भी समूह के एफ मूल्य सार्थक नही है । अतः सभी समूह में अन्य मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समरूपता है ।

सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न अविवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति :

सारिणी 91.4 में सभी मूल्यों के योग पर विभिन्न विवाहित शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, संयुक्त व पृथक आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण टी मूल्य को दर्शाया गया है ।

अविवाहित ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक समूह की मूल्यों के योग पर प्राप्त जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । समूह के मध्यमान (146.21 व 146.07) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (.03 व .02) है, जिनमें सार्थकता का स्तर नही है । अतः उपरोक्त लिखित समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक जैसी है ।

ग्रामीण व शहरी अविवाहित महिला शिक्षक समूह की जनसंख्या अभिवृत्ति के मूल्य योग पर मध्यमान (153.07 व 166.03), प्रमाणिक विचलन (13.623 व 22.595) ज्ञात हुए । समूह के मध्य जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में अन्तर ज्ञात करने के लिये संयुक्त व पृथक परीक्षणों पर टी मूल्य निकाले गये जो (2.50) दोनों परीक्षणों में रहे । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि समूह के शिक्षकों की अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से विदित है कि अविवाहित शहरी महिला शिक्षक, अविवाहित ग्रामीण महिला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती है ।

कला वर्ग के ग्रामीण व शहरी अविवाहित शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थकता के स्तर पर कोई अन्तर नही है । समूह के मध्यमान (146.59 व 152.47) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (1.31 व 1.04) ज्ञात हुए । जो सार्थकता की कसौटी पर नही है । केवल मध्यमान अंकों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अविवाहित ग्रामीण कला शिक्षकों से अविवाहित शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति कुछ श्रेष्ठ है ।

अविवाहित ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के सभी मूल्यों के योग पर मध्यमान (154.25 व 167.94), प्रमाणिक विचलन (14.127 व 18.168) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.58 व 2.53) हैं । समूह में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । मध्यमान अंकों से स्पष्ट है, कि अविवाहित ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से अविवाहित शहरी विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है ।

समस्त अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूह की योग के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । समूह के मध्यमान (148.88 व 159.05), प्रमाणिक विचलन (12.960 व 23.891) तथा संयुक्त व पृथक टी मूल्य (2.86 व 2.48) ज्ञात हुए । समूह के मध्यमानों के आधार पर स्पष्ट है, कि समस्त शहरी अविवाहित शिक्षक, समस्त ग्रामीण अविवाहित शिक्षकों से अधिक अनुकूल व श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सारिणी 91.4 में सभी समूहों के एफ मूल्यों को प्रदर्शित किया गया है । सारिणी से स्पष्ट है, कि किसी भी समूह में एफ मूल्य सार्थक नहीं है । अतः यह कहा जा सकता है कि सभी समूहों की औसत जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में संकेन्द्रण है ।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य 'ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन जनसंख्या शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में' करना था । इस अध्ययन के अन्तर्गत ग्रामीण व शहरी, प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित, सवर्ण, पिछड़े व अनुसूचित, हिन्दू-मुस्लिम, सिख, ईसाई, युवा एवं प्रौढ़, विवाहित व अविवाहित, ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन प्रस्तुत किया गया है ।

प्रस्तुत अध्ययन में अपने उद्देश्यों की प्राप्ति व परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु सभी मूल्यों पर विभिन्न समूहों के लिये मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि, आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) व एफ मूल्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये हैं ।

2. परिकल्पनाओं का परीक्षण :

प्रथम परिकल्पना का परीक्षण :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में हमारा प्रथम उद्देश्य 'ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का मापन करना है । इस उद्देश्य के साथ हमारी पहली 'परिकल्पना

यह थी कि 'शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में अधिक होती है ।' इस लक्ष्य को प्राप्त करने व परिकल्पना को सिद्ध करने के लिये मध्यमान की गणना की गई । सारिणी 7.4का अवलोकन करने पर यह निष्कर्ष निकला, कि ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की शहरी पुरूष शिक्षकों की तुलना में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति कम पाई गई, जबकि ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से ग्रामीण महिला शिक्षकों में जनसंख्या शिक्षा के विषय में अच्छा दृष्टिकोण पाया गया । इसी प्रकार ग्रामीण कला शिक्षकों व शहरी कला शिक्षकों में ग्रामीण कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अच्छी पाई गयी । इस सारिणी से यह भी प्रकट होता है, कि शहरी विज्ञान शिक्षक ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों की अपेक्षा जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रति अधिक जागरूक है । अन्त में समस्त ग्रामीण व समस्त शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति पर दृष्टिपात करने से विदित है, कि शहरी शिक्षक, ग्रामीण शिक्षकों से जनसंख्या शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक है । इसके पीछे शोधकर्ता का अपना विचार है, कि शहरी वातावरण में शिक्षा का अधिक विकास है जो कि सीधे रूप से शहरी शिक्षकों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति को परिष्कृत व परिमार्जित करता है ।

उपरोक्त लिखित तथ्यों के आधार पर हमारी पहली परिकल्पना 'शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में अधिक होती है ।' स्वीकार करने योग्य है व उससे सम्बन्धित उद्देश्य 'ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का मापन करना ' को हमने प्राप्त कर लिया है ।

द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण :

शोधकर्ता की द्वितीय परिकल्पना है 'ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है' व इससे सम्बन्धित द्वितीय उद्देश्य है 'ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।' इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के विभिन्न समूह व इसके विभिनन उपसमूहों में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी) मूल्य निकाले गये । विभिन्न सारिणियों पर दृष्टिपात करने से यह विदित हुआ कि मात्र ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों व शहरी विज्ञान शिक्षकों के मध्य जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी) मूल्य 2.37 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया । अन्य किसी समूह या उपसमूह में किसी भी

स्तर पर सार्थक अन्तर नही पाया गया । अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि शहरी विज्ञान शिक्षक, जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के प्रति ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से अधिक सजग है ।

इस प्रकार शोधकर्ता की द्वितीय परिकल्पना 'ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।' आंशिक रूप से से स्वीकार की गई व इससे सम्बन्धित उद्देश्य 'ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है, की प्राप्ति हुई ।

तृतीय परिकल्पना का परीक्षण :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का तृतीय उद्देश्य 'प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना व तृतीय परिकल्पना 'प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है ।' को परीक्षण करने के लिये सभी मूल्यों के योग पर समस्त प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्य आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी) की गणना की गई, जिसे सारिणी 14·4 में दर्शाया गया है । संयुक्त व पृथक टी मूल्य क्रमशः (10.16 व 11.04) रहे, जो 0.01 स्तर पर सार्थक हैं ।

प्रशिक्षित ग्रामीण व प्रशिक्षित शहरी तथा अप्रशिक्षित ग्रामीण व अप्रशिक्षित शहरी शिक्षक समूहों के (टी) मूल्य क्रमशः .18 व .01 रहे । जो किसी भी स्तर पर सार्थक नही है । अतः हमारी तृतीय परिकल्पना 'प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है ।' आंशिक रूप से स्वीकार हुई तथा इससे सम्बन्धित उद्देश्य 'प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।' शोधकर्ता ने प्राप्त कर लिया है ।

चतुर्थ परिकल्पना का परीक्षण :

शोध प्रबन्ध की चतुर्थ परिकल्पना ' ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में जातिगत आधार पर अंतर नहीं होता है' व इससे सम्बन्धित चतुर्थ उद्देश्य है 'जातिगत आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना"। इस परिकल्पना को सिद्ध करने के लिये सवर्ण, पिछड़े व अनुसूचित जाति के शिक्षकों

के विभिन्न समूहों में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) ज्ञात किये गये ।

सवर्ण शिक्षक :

सवर्ण शिक्षकों को विभिन्न समूहों में विभक्त किया गया जैसे सवर्ण ग्रामीण पुरूष शिक्षक - सवर्ण शहरी पुरूष शिक्षक, सवर्ण ग्रामीण महिला शिक्षक - सवर्ण शहरी महिला शिक्षक, सवर्ण ग्रामीण कला शिक्षक - सवर्ण शहरी कला शिक्षक, सवर्ण ग्रामीण विज्ञान शिक्षक व सवर्ण शहरी विज्ञान शिक्षक, समस्त सवर्ण ग्रामीण शिक्षक व समस्त सवर्ण शहरी शिक्षक । इन सभी समूहों में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये (टी मूल्य) की गणना की गई, जो कि क्रमशः .59, 1.60, .067, 1.12 व 1.24 ज्ञात हुई । ये सभी आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण मूल्य किसी भी स्तर पर सार्थक नही है । इस आधार पर कहा जा सकता है कि सवर्ण शिक्षकों के किसी भी समूह में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है ।

पिछड़ी जाति के शिक्षक :

पिछड़ी जाति के शिक्षकों को समूहों में विभक्त किया गया जैसे - पिछड़ी जाति के ग्रा0पु0 शिक्षक - पिछड़ी जाति के शहरी पुरूष शिक्षक, पिछड़ी जाति की ग्रामीण महिला शिक्षक - पिछड़ी जाति की शहरी महिला शिक्षक, पिछड़ी जाति के ग्रामीण कला शिक्षक - पिछड़ी जाति के शहरी कला शिक्षक, पिछड़ी जाति के ग्रामीण विज्ञान शिक्षक - पिछड़ी जाति के शहरी विज्ञान शिक्षक, पिछड़ी जाति के समस्त ग्रामीण शिक्षक - पिछड़ी जाति के शहरी पुरूष शिक्षक । इन सभी समूहों में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण (टी मूल्य) की गणना की गई जो क्रमशः .87, .51, 1.71, 1.50, 1.02 हैं । ये सभी मूल्य सार्थकता की कसौटी पर नही है । इस आधार पर स्पष्ट है कि पिछड़ी जाति के शिक्षक वर्गों [illegible] में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता ।

अनुसूचित जाति के शिक्षक :

अनुसूचित जाति के शिक्षकों को भी उपरोक्त लिखित सभी समूहों में विभक्त किया गया इनमें अनुसूचित जाति की शहरी महिला शिक्षक व अनुसूचित जाति के शहरी कला शिक्षक न्यादर्श में प्राप्त न होने के कारण इन समूहों में सार्थक अन्तर ज्ञात नही हुआ ।

अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी पुरूष वर्ग का आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण 2.27, अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी समूह का 2.25 तथा समस्त अनुसूचित जाति के ग्रामीण व शहरी समूह में आलोचनात्मक अनुपात मूल्य 2.79 रहे, जिनमें 0.01 व 0.05 पर सार्थक अन्तर है । अतः अनुसूचित जाति के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर है ।

अनुसूचित जाति के अन्तर्गत शहरी महिला शिक्षक व शहरी कला शिक्षक न्यादर्शमेंनहीं है । अन्य समूहों में भी मात्र (दो-दो) अनुसूचित जाति के शहरी पुरूष शिक्षक, शहरी विज्ञान शिक्षक है । अनुसंधानकर्ता का अपना विचार है, कि अनुसूचित जाति के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में जो सार्थक अन्तर है वह न्यादर्श के कारण है । इस प्रकार हमारी चतुर्थ परिकल्पना 'ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में जातिगत आधार पर अन्तर नहीं होता है, आंशिक रूप से स्वीकार हुई तथा इससे सम्बन्धित उद्देश्य' जातिगत आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना, को हमने प्राप्त कर लिया है ।

पंचम परिकल्पना का परीक्षण :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता की पंचम परिकल्पना है- 'धर्म के आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है" तथा इससे सम्बन्धित उद्देश्य है- 'धर्म के आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।' सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये हिन्दू ग्रामीण व शहरी शिक्षकों, सिख ग्रामीण व शहरी शिक्षकों, ईसाई ग्रामीण व शहरी शिक्षकों, मुस्लिम ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के विभिन्न समूहों का अलग अलग आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण ज्ञात किया गया ।

हिन्दू शिक्षक :

हिन्दू शिक्षकों को विभिन्न समूहों में विभक्त किया गया । ये समूह हैं - हिन्दू ग्रामीण पुरूष शिक्षक - हिन्दू शहरी पुरूष शिक्षक, हिन्दू ग्रामीण महिला शिक्षक - हिन्दू शहरी महिला शिक्षक, हिन्दू ग्रामीण कला शिक्षक - हिन्दू शहरी कला शिक्षक, हिन्दू ग्रामीण विज्ञान शिक्षक, हिन्दू शहरी विज्ञान शिक्षक, समस्त हिन्दू ग्रामीण शिक्षक - समस्त हिन्दू शहरी शिक्षक । उल्लिखित सभी समूहों में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये आलोचनात्मक अनुपात

परीक्षण (टी मूल्य) ज्ञात किया गया, जो सभी समूहों में 0.01 स्तर पर सार्थक है । समूह के (टी) मूल्य क्रमशः 7.47, 3.90, 7.83, 3.70, 8.60 हैं । इस आधार पर स्पष्टतः विदित है कि सभी समूहों में हिन्दू शहरी शिक्षक, हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

सिख शिक्षक :

सिख शिक्षकों को भी हिन्दू शिक्षकों के समान विभिन्न समूहों में विभक्त किया गया । समूह समान है । सिख शिक्षकों में, सिख ग्रामीण महिला शिक्षक व सिख शहरी महिला शिक्षक समूह में सिख ग्रामीण महिला शिक्षक न्यादर्श में उपलब्ध नही है अतः इस समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के (टी) मूल्य ज्ञात नही हुए । अन्य सब समूहों के आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण क्रमशः .23, .55, .53, .20 है । (टी) मूल्यों से स्पष्ट है कि, किसी भी समूह की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है । ग्रामीण व शहरी सिख धर्म के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक समान है ।

ईसाई शिक्षक :

ईसाई शिक्षकों को विभिन्न समूहों में विभक्त किया गया जैसे - ईसाई ग्रामीण पुरूष शिक्षक - ईसाई शहरी पुरूष शिक्षक, ईसाई ग्रामीण महिला शिक्षक - ईसाई शहरी महिला शिक्षक, ईसाई ग्रामीण कला शिक्षक - ईसाई शहरी कला शिक्षक, ईसाई ग्रामीण विज्ञान शिक्षक - ईसाई शहरी विज्ञान शिक्षक, समस्त ईसाई ग्रामीण शिक्षक - समस्त ईसाई शहरी शिक्षक,/ वर्णित सभी उपसमूहों में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण ज्ञात किये गये, जो क्रमशः .32, 3.07, 1.32, 2.18, 2.53 हैं । अतः सारिणी 56-4 से स्पष्टतः परिलक्षित है कि ईसाई धर्म की ग्रामीण महिला शिक्षकों से ईसाई धर्म की शहरी महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है ।

मुस्लिम शिक्षक :

मुस्लिम शिक्षकों को भी हिन्दू, सिख व ईसाई शिक्षकों के समान समूह में बाँटा गया है । मुस्लिम शिक्षकों में मुस्लिम ग्रामीण विज्ञान शिक्षक न्यादर्श के लिये प्राप्त नही हुए। अतः मुस्लिम ग्रामीण विज्ञान शिक्षक व मुस्लिम शहरी विज्ञान शिक्षक समूह की जनसंख्या अभिवृत्ति का आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण ज्ञात नहीं हुआ । अन्य समूह के टी मूल्य .23, .63, .31,

.10 है । टी मूल्यों से स्पष्ट है कि ये मूल्य किसी भी स्तर पर सार्थक नही है । अतः मुस्लिम शिक्षकों में ग्रामीण व शहरी स्तर पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समरूपता है ।

इस प्रकार धर्म के आधार पर हिन्दू व ईसाई धर्म के शिक्षकों में ग्रामीण व शहरी स्तर पर, जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर रहा । सिख व मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति समान रही । अतः हमारी चतुर्थ परिकल्पना 'धर्म के आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है, आंशिक रूप से स्वीकार हुई तथा इससे सम्बन्धित उद्देश्य 'धर्म के आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना, को हमने प्राप्त कर लिया है ।

षष्ठ परिकल्पना का परीक्षण :

शोधकर्ता का षष्ठः उद्देश्य था 'प्रौढ़ एवं युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना, तथा इससे सम्बन्धित परिकल्पना है– 'प्रौढ़ एवं युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।' परिकल्पना का परीक्षण करने के लिये प्रौढ़ एवं युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों को अलग-अलग विभिन्न समूहों में विभक्त किया तथा सभी समूहों का सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण ज्ञात किया गया ।

प्रौढ़ शिक्षक :

प्रौढ़ शिक्षकों को विभिन्न समूहों में विभक्त किया गया यथा - प्रौढ़ ग्रामीण पुरूष शिक्षक - प्रौढ़ शहरी पुरूष शिक्षक, प्रौढ़ ग्रामीण महिला शिक्षक - प्रौढ़ शहरी महिला शिक्षक, प्रौढ़ ग्रामीण कला शिक्षक - प्रौढ़ शहरी कला शिक्षक, प्रौढ़ ग्रामीण विज्ञान शिक्षक - प्रौढ़ शहरी विज्ञान शिक्षक, समस्त प्रौढ़ ग्रामीण शिक्षक - समस्त प्रौढ़ शहरी शिक्षक । सभी वर्गों में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण ज्ञात किये गये जो क्रमशः .28, .12, .44, 1.30, .06 ज्ञात हुए । स्पष्ट है कि टी मूल्य किसी भी स्तर पर सार्थक नही है इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रौढ़ ग्रामीण व प्रौढ़ शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक समान है ।

युवा शिक्षक :

युवा शिक्षकों के विभिन्न समूहों को भी प्रौढ़ शिक्षक समूह के समान किया गया । समस्त वर्गो के (टी मूल्य) आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण, सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये निकाले गये, जो क्रमशः 1. .1, 2.05, .18, 1.97, .61 प्राप्त हुए । अतः युवा ग्रामीण महिला शिक्षकों से, युवा शहरी महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति उच्च रही । शहरी युवा विज्ञान शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में भी ग्रामीण युवा शिक्षकों से कुछ उच्चता रही । अन्य सब समूहों में अभिवृत्ति समान है ।

प्रौढ़, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के सभी समूहों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्य समान है । जबकि युवा ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में केवल दो समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है । इस प्रकार शोधकर्ता की षष्ठ परिकल्पना 'प्रौढ़ एवं युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।' आंशिक रूप से स्वीकार हुई तथा इससे सम्बन्धित उददेश्य 'प्रौढ़ एवं युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना' को शोधकर्ता ने प्राप्त कर लिया है ।

सप्तम परिकल्पना का परीक्षण :

शोधकर्ता की सप्तम परिकल्पना है, 'विवाहित एवं अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर होता है' व इससे सम्बन्धित उद्देश्य है, 'विवाहित एवं अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना'। इस परिकल्पना को सिद्ध करने के लिए विवाहित तथा अविवाहित शिक्षकों को विभिन्न वर्गो में विभाजित करने पृथक-पृथक सार्थक अन्तर ज्ञात किया गया ।

विवाहित शिक्षक :

विवाहित शिक्षकों को उल्लिखित समूहों में विभाजित किया । ये समूह रहे - विवाहित ग्रामीण पुरूष शिक्षक - विवाहित शहरी पुरूष शिक्षक, विवाहित महिला ग्रामीण शिक्षक - विवाहित महिला शहरी शिक्षक, विवाहित ग्रामीण कला शिक्षक - विवाहित शहरी कला शिक्षक, विवाहित ग्रामीण विज्ञान शिक्षक - विवाहित शहरी विज्ञान शिक्षक, समस्त विवाहित ग्रामीण शिक्षक - समस्त विवाहित शहरी शिक्षक । उपरोक्त लिखित सभी उपसमूहों की जनसंख्या

शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये आलोचनात्मक अनुपात परीक्षण ज्ञात किया गया । विवाहित शिक्षकों में, विवाहित ग्रामीण कला शिक्षकों व विवाहित शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इस समूह में विवाहित ग्रामीण कला शिक्षक, विवाहित शहरी कला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति [illegible] रखते हैं । सभी समूहों के (टी) मूल्य क्रमशः 1.82, 1.22, 2.00, 1.72, 1.55 रहे । जिसमें 2.00 मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है । अन्य सभी समूहों में सार्थकता का स्तर नही है ।

अविवाहित शिक्षक :

अविवाहित शिक्षकों को भी विवाहित शिक्षकों के समान समूहों में विभक्त किया गया । सारिणी 91.4 से स्पष्ट है, कि समूह अविवाहित ग्रामीण पुरूष शिक्षक - अविवाहित शहरी पुरूष शिक्षक तथा अविवाहित ग्रामीण कला शिक्षक - अविवाहित शहरी कला शिक्षकों की जनसंख्या अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है । इनके आलोचनात्मक मूल्य क्रमशः .03 व 1.31 हैं । अविवाहित ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों, अविवाहित ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकों तथा समस्त अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । इन समूहों के टी मूल्य 2.50, 2.58 व 2.86 है । वर्णित सभी समूहों में अविवाहित शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अविवाहित ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक है ।

इस प्रकार विवाहित व अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर रहा । अतः शोधकर्ता की सप्तम परिकल्पना 'विवाहित एवं अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर होता है,' स्वीकार की गई, तथा इस परिकल्पना से सम्बन्धित उद्देश्य 'विवाहित एवं अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना, को शोधकर्ता ने प्राप्त कर लिया है ।

-0-

अध्याय - पंचम : शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय - 5

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

1. निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसख्या शिक्षा अभिवृत्ति का मापन करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया, जो शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं जातिगत व अन्य मूल्य पर आधारित हैं ।

शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिये शिक्षकों का अध्ययन, परिवेश, प्रशिक्षण, जाति, धर्म, आयु व वैवाहिक स्थिति के मध्य किया गया । समूहों को ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक, ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक, ग्रामीण व शहरी विज्ञान शिक्षकव समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक में विभक्त किया गया ।

अध्ययन में सभी मूल्यों से प्राप्त जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के आँकड़ों की सांख्यिकीय गणना विभिन्न समूहों में की गई । अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आये -

शैक्षिक मूल्य के आधार पर :

1- शैक्षिक मूल्य के आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समरूपता का समावेश है ।

2- प्रशिक्षित शिक्षक/अप्रशिक्षित शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि प्रशिक्षित ग्रामीण व प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों तथा अप्रशिक्षित ग्रामीण व अप्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक समान है ।

3- शैक्षिक मूल्य के आधार पर सवर्ण व पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति समान है, जबकि अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षक इस मूल्य पर अनुसूचित जाति के ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

4- शैक्षिक मूल्य पर हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों से, हिन्दू शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है । सिख, ईसाई व मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समानता का स्तर है ।

5- प्रौढ़ एवं युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में शैक्षिक मूल्य पर एकरूपता है ।

6- शैक्षिक मूल्य पर ग्रामीण विवाहित शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का शहरी विवाहित शिक्षकों से स्तर उच्च है, जबकि अविवाहित शिक्षकों में शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर अविवाहित ग्रामीण शिक्षकों से श्रेष्ठ है ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर :

1- सामाजिक मूल्य के आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एकरूपता है ।

2- प्रशिक्षित शिक्षक, अप्रशिक्षित शिक्षकों से उपरोक्त मूल्य पर उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि प्रशिक्षित ग्रामीण व प्रशिक्षित शहरी तथा अप्रशिक्षित ग्रामीण व अप्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एकरूपता है ।

3- सवर्ण व अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षक इन्ही जातियों के ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में समरूपता है ।

4- सामाजिक मूल्य पर हिन्दू धर्म के शहरी शिक्षक, ग्रामीण शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । सिख, ईसाई व मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की इसी मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समानता है ।

5- सामाजिक मूल्य पर प्रौढ़ शहरी विज्ञान, शिक्षकों की अभिवृत्ति प्रौढ़ ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से धनात्मक है, जबकि युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्य समान है ।

6- ग्रामीण व शहरी, विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की सामाजिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर एक जैसा है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर :

1- आर्थिक मूल्य के आधार पर शहरी शिक्षक ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

2- प्रशिक्षित ग्रामीण व प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों तथा अप्रशिक्षित ग्रामीण व अप्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में आर्थिक मूल्य पर सार्थक अन्तर रहा । प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों की प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों से जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति श्रेष्ठ रही। जबकि अप्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षक अप्रशिक्षित शहरी शिक्षकों से आर्थिक मूल्य पर श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का प्रदर्शन करते हैं ।

3- सवर्ण जाति के कला संवर्ग के ग्रामीण शिक्षक इसी संवर्ग के शहरी शिक्षकों से श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । पिछड़ी जाति के ग्रामीण शिक्षकों की भी आर्थिक मूल्य पर इसी जाति के शहरी शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । जबकि अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अपनी जाति के ग्रामीण शिक्षकों से श्रेष्ठ स्तर की है ।

4- हिन्दू एवं ईसाई धर्म को मानने वाले शहरी शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है, जबकि सिख और मुस्लिम ग्रामीण व शहरी शिक्षक एक समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

5- आर्थिक मूल्य के आधार पर प्रौढ़ एवं युवा आयु के ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति शहरी प्रौढ़ एवं युवा शिक्षकों से धनात्मक है ।

6- विवाहित ग्रामीण शिक्षक आर्थिक मूल्य पर श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं। जबकि अविवाहित शिक्षकों में ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति समान है ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर :

1- राजनीतिक मूल्य के आधार पर ग्रामीण शिक्षकों से शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है ।

2- राजनीतिक मूल्य पर प्रशिक्षित शिक्षकों की अप्रशिक्षित शिक्षकों से श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है, जबकि अप्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

3- सवर्ण एवं अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षक, ग्रामीण शिक्षकों से राजनीतिक मूल्य पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति एक समान है ।

4- राजनीतिक मूल्य के आधार पर हिन्दू एवं ईसाई धर्म के शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक है, जबकि सिख व मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समानता है ।

5- प्रौढ़ शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति राजनीतिक मूल्य पर प्रौढ़ ग्रामीण शिक्षकों से श्रेष्ठ है । युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षक उपरोक्त मूल्य पर समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

6- विवाहित एवं अविवाहित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर एक समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर :

1- धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर ग्रामीण शिक्षकों से शहरी शिक्षक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

2- प्रशिक्षित शिक्षक, अप्रशिक्षित शिक्षकों से उपरोक्त मूल्य पर श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । प्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की वर्णित मूल्य पर समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है, जबकि अप्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों से अप्रशिक्षित शहरी शिक्षक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

3- सवर्ण जाति के शहरी शिक्षकों व अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षकों की अपनी जाति के ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति हैं, जबकि पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षक धार्मिक व जातिगत मूल्य पर समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

4- हिन्दू व ईसाई धर्म के शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति ग्रामीण, हिन्दू व ईसाई शिक्षकों से श्रेष्ठ है । सिख धर्म के शहरी विज्ञान शिक्षक, सिख धर्म के ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति उपरोक्त मूल्य पर समान है ।

5. प्रौढ़ शिक्षकों के समूह में धार्मिक व जातिगत मूल्य के आधार पर प्रौढ़ शहरी महिला शिक्षक अपनी ही आयु की ग्रामीण महिला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं । युवा शिक्षकों में शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति ग्रामीण युवा शिक्षकों से धनात्मक है ।

6. धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विवाहित शहरी महिला शिक्षक, विवाहित ग्रामीण महिला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति प्रकट करती है । अविवाहित शिक्षकों में शहरी शिक्षक ग्रामीण शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

अन्य मूल्य के आधार पर :

1- अन्य मूल्य के आधार पर ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से शहरी पुरूष शिक्षक अधिक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

2- प्रशिक्षित शिक्षकों की अन्य मूल्य पर अप्रशिक्षित शिक्षकों से कहीं अधिक श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों की प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों से अन्य मूल्य पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है, जबकि अप्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर समान है ।

3- सवर्ण व पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक समान है ।

4- हिन्दू धर्म के शहरी शिक्षक, ग्रामीण शिक्षकों से अन्य मूल्य पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । सिख, ईसाई व मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की उपरोक्त मूल्य पर समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

5- अन्य मूल्य के आधार पर प्रौढ़ ग्रामीण कला शिक्षक, प्रौढ़ शहरी कला शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । युवा ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति युवा शहरी पुरूष शिक्षकों से धनात्मक है, जबकि युवा शहरी महिला शिक्षक, युवा ग्रामीण महिला शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं ।

6 - विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में अन्य मूल्य पर ग्रामीण शिक्षक, शहरी शिक्षकों से अनुकूल अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समरूपता का प्रदर्शन है ।

सभी मूल्यों के योग पर प्राप्त निष्कर्ष :

1- सभी मूल्यों के योग पर शहरी विज्ञान शिक्षक, ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

2- मूल्यों के योग पर प्रशिक्षित शिक्षकों की अप्रशिक्षित शिक्षकों से श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । प्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी तथा अप्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

3- सवर्ण व अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षक, ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में समानता है ।

4- हिन्दू व ईसाई धर्म के शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सभी मूल्यों के योग पर ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक पायी गयी, जबकि सिख व मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर समान पाया गया ।

5- प्रौढ़ शिक्षकों में सभी मूल्यों के योग पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर समरूपता का है, जबकि युवा अवस्था की शहरी महिला शिक्षक व शहरी विज्ञान शिक्षक अपने समूह के ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

6- विवाहित ग्रामीण कला शिक्षकों की सभी मूल्यों के योग पर विवाहित शहरी कला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रही, जबकि अविवाहित शहरी शिक्षक, अविवाहित ग्रामीण शिक्षकों से श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं ।

2. **शैक्षिक उपयोगिता :**

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति को विकसित करने वाले विभिन्न मूल्यों का अध्ययन विभिन्न वर्गो में किया गया है । प्रस्तुत शोध कार्य के आधार पर जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के विषय में अनेक प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम बनाये जा सकते हैं ।

1- जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम को बी0एड0 प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित करना एक अच्छा उपक्रम है ।

2- अप्रशिक्षित शिक्षकों के लिये जनसंख्या शिक्षा के संदर्भ में विशिष्ट कार्यक्रम निर्धारित किये जायें ।

3- अप्रशिक्षित शिक्षकों की आर्थिक स्थिति को सुधारने में जनसंख्या शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकती है ।

4- शोध प्रबन्ध के आधार पर राजनीतिक दृष्टि से जनसंख्या शिक्षा के द्वारा राष्ट्र के प्रति शिक्षकों में अधिक राजनीतिक चेतना व स्वस्थ लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है ।

5- आज के समय में धार्मिक एवं जातिगत आधार पर देश विभाजन के कगार पर खड़ा है । जनसंख्या शिक्षा द्वारा धार्मिक व जातिगत भेदों को दूर करके सामाजिक समरसता का वातावरण बनाने में शोध उपयोगी है ।

6- प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में प्रदूषण व स्वास्थ्य सम्बन्धी वीभत्तता से अवगत कराया गया है । जनसंख्या शिक्षा के द्वारा स्वास्थय सम्बन्धी चेतना एवं पर्यावरण के विषय में जनमत जाग्रत किया जा सकता है ।

3. संस्तुति एवं सुझाव :

1- जनसंख्या शिक्षा वर्तमान समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई है । अतः जनसंख्या शिक्षा प्रशिक्षण के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या शिक्षा पत्राचार कार्यक्रम के आधार पर प्रदान की जाये ।

2- जनसंख्या शिक्षा प्रशिक्षण में सम्पर्क कार्यक्रम को भी उचित स्थान दिया जाये ।

3- जनसंख्या शिक्षा के पाठयक्रम को बी0एड0 एवं एम0एड0 प्रशिक्षण में सम्मिलित किया जाये ।

4- जनसंख्या शिक्षा पाठयक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा, काम शिक्षा व पर्यावरण शिक्षा को भी अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाये ।

5- वर्तमान में भी कुछ शिक्षक परिवार नियोजन के साधनों को हानिकारक मानते हैं । शिक्षकों की ऐसी शंकाओं का निवारण प्रयोगात्मक आधार पर किया जाये तथा परिवार के साधनों का स्वास्थ्य पर प्रभाव सम्बन्धी अनुसंधानों का अध्ययन कराया जाये ।

6- शिक्षकों में व्याप्त पुत्र व पुत्री के अन्तर को समाप्त करने तथा धार्मिक कुरीतियों से देश व समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से परिचित कराया जाये ।

7- विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में जनसंख्या पाठयक्रम को लागू करने के लिये विशेष वित्तीय सहायता प्रदान की जानी चाहिये ।

8- कार्य गोष्ठियों के माध्यम से विभिन्न विद्यालयी विषयों में जनसंख्या शिक्षा के समाकलन हेतु पाठय सामग्री का निर्माण किया जाना चाहिये ।

9- समय-समय पर विद्यालयों में शिक्षकों के लिये जनसंख्या शिक्षा की प्रतियोगितायें, सेमीनार आदि आयोजित किये जायें ।

10- स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तरों पर जनसंख्या नीति, जनसंख्या शिक्षा, जनसंख्या गतिकी, जनसंख्या सांख्यिकी आदि को पाठयक्रमों में सम्मिलित किया जाये ।

11- जनसंख्या शिक्षा क्लबों एवं प्रकोष्टों की स्थापना तथा प्रसार सेवा के माध्यम से शिक्षकों को प्रशिक्षित करना उचित है ।

12- जनसंख्या शिक्षा के विषय में विशेषज्ञों के भाषण, प्रशिक्षण शिविर तथा श्रव्यदृश्य सामग्री का निर्माण उचित मात्रा में किया जाये ।

13- प्रत्येक जिले में यदि सम्भव हो तो प्रत्येक तहसील स्तर पर जनसंख्या शिक्षा विशेषज्ञ की नियुक्ति की जाये । जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी लेखों तथा अनुसंधानों को शिक्षा विभाग की विभागीय पत्रिकाओं तथा अन्य समाचार पत्रों में भी प्रकाशित किया जाये ।

4. **शोध प्रबन्ध की परिसीमायें :**

1- शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में निश्चित भौगोलिक सीमा के सुनिश्चित न्यादर्श में सम्मिलित ग्रामीण एवं शहरी पुरूष व महिला शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति, परिसीमा में ही शोधकार्य को पूर्ण किया है ।

2- शोधकर्ता ने शिक्षण संस्थाओं की परिसीमा में प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, माध्यमिक, स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर को ही सम्मिलित करके अपने अध्ययन को पूर्ण किया है ।

3- शोधकर्ता ने अपने इस अध्ययन में ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में स्थित अस्थाई, स्थाई, अर्द्धशासकीय, शासकीय, महिला एवं पुरूष शिक्षण संस्थाओं से हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम की परिसीमित परिधि के अन्तर्गत ही जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के शोध कार्य को पूर्ण किया है ।

4- इस अध्ययन में शोधकर्ता ने जातिगत, धर्मगत, परिसीमा में रहते हुए प्रशिक्षित - अप्रशिक्षित शिक्षकों, प्रौढ़ एवं युवा शिक्षकों, विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों, कला तथा विज्ञान विषयों के शिक्षण प्रदान करने वाले शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन सम्पन्न किया है ।

5. **भावी शोध कार्यों के लिये सुझाव :**

अपने शोध कार्य के कार्यकाल में शोधकर्ता को कुछ नये तथ्यों तथा आयामों का परिचय मिला है जिनमें से भावी शोधकर्ताओं एवं शोध संस्थाओं के उपयोग हेतु नये शोध कार्यों के लिये निम्न सुझाव प्रस्तावित है -

1- प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों पर किया गया है । भावी अध्ययनों में ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों, छात्रों को सम्मिलित किया जा सकता है ।

2- प्रस्तुत अध्ययन में केवल मुरादाबाद मण्डल के 500 शिक्षकों को चुना गया है । अध्ययन में सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के शिक्षकों को सम्मिलित किया जा सकता है ।

3- प्रस्तुत शोध में केवल शिक्षकों को चुना गया है । भावी अध्ययनों के लिए विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए लोगों जैसे - किसान, व्यापारी, मजदूरों आदि पर अध्ययन किया जा सकता है ।

4- शोध सीमाओं को ग्रामीण व शहरी शिक्षकों से आगे बढ़ाकर ग्रामीण व अति/तथा ग्रामीण नगरपालिकाओं व महानगर पालिकाओं के शिक्षकों के मध्य किया जा सकता है ।

5- भावी शोधों में प्राथमिक, माध्यमिक, विद्यालयी व महाविद्यालयी स्तर के संस्थागत व व्यक्तिगत छात्र छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ।

6- अभिभावकों, शिक्षकों एवं छात्र छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों का आयु, लिंग, शैक्षिक स्तर एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर अध्ययन किया जाना उचित है ।

7- ग्राम प्रधानों, क्षेत्र समिति के सदस्यों, जिला पंचायत के सदस्यों, विधान मंडल व संसद के सदस्यों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का अध्ययन किया जाना उचित है ।

8- भावी अध्ययनों में छोटे एवं बड़े परिवार के बालकों में रुचि, भग्नाशा, आकांक्षाओं के विषय में अध्ययन उचित है ।

9- भावी शोध कार्यों में, जनसंख्या शिक्षा में फिल्मों, दूरदर्शन जनसंख्या शिक्षा साहित्य, परिवार कल्याण कार्यक्रमों की प्रभावकारिता का अध्ययन उचित रहेगा ।

10- विभिन्न स्तरों पर पत्राचार प्रशिक्षण में जनसंख्या शिक्षा के पाठयक्रम के निर्माण का अध्ययन किया जा सकता है ।

11- भावी अध्ययनों में छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों की जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी प्राप्तियों के मूल्यांकन हेतु प्रश्न बैंकों का निर्माण किया जा सकता है ।

12- जनसंख्या शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षण विधियों, समस्याओं, समाधान, समूह परिचर्या, टीम टीचिंग, अभिक्रमिक स्वाध्याय, निरीक्षित स्वास्थ्य की प्रभावकारिता एवं उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ।

13- विभिन्न प्रदेशों व देशों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति भावी शोध कार्यों में अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना समयानुकूल है ।

-0-

सारांश

सारांश

अध्ययन का शीर्षक :

'ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन - जनसंख्या शिक्षा के परिप्रेक्षय में' ।

शोधकर्ता : **हर्षवर्धन,**

निर्देशक : **डॉ0 जवाहर लाल वर्मा,**
रीडर,
शिक्षा विभाग,
बुन्देलखण्ड कालेज,
झाँसी (उ0प्र0)

अध्ययन के उद्देश्य :

1- ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का मापन करना ।

2- ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

3- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

4- जातिगत आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

5- धर्म के आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

6. प्रौढ़ एवं युवा आयु के, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

7- विवाहित एवं अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना ।

8- प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निष्कर्षों के आधार पर सुझाव प्रस्तुत करना ।

परिकल्पनायें :

1- शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति, ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में अधिक होती है ।

2- ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है ।

3- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है ।

4- ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में जातिगत आधार पर सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

5- धर्म के आधार पर शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है ।

6- प्रौढ़ एवं युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

7- विवाहित एवं अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर होता है ।

विधियाँ :

अध्ययन हेतु मुख्य रूप से 'वर्णात्मक सर्व शोध विधि' का प्रयोग किया गया है । कुछ कथनों व तथ्यों को परिपुष्ट व परिमार्जित करने हेतु 'साक्षात्कार विधि' को भी अपनाया गया है । संग्रहीत प्रश्नावलियों से प्राप्त जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के आँकड़ों की गणना करने के लिये 'सांख्यिकीय विधि' का प्रयोग किया गया है ।

न्यादर्श :

शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के मुरादाबाद मण्डल (बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर जनपद) के 65 विद्यालयों में कार्यरत 500 शिक्षक, शिक्षिकाओं का चयन किया है ।

अध्ययन हेतु उपकरण :

पूर्व वर्णित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है -

प्रथम प्रशासन - विद्वत शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा 6 मूल्यों (आयामों) पर 135 कथनों का चुनाव ।

द्वितीय प्रशासन : विषय विशेषज्ञों द्वारा चयनित व संशोधित जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति मापनी में अंतिम रूप में 60 कथनों का चयन ।

प्रश्नावलियों द्वारा प्राप्त जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति की कम्प्यूटर द्वारा सांख्यिकीय गणना की गई ।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का मापन करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया, जो शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं जातिगत व अन्य मूल्य पर आधारित है ।

शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिये शिक्षकों का अध्ययन, परिवेश, प्रशिक्षण, जाति, धर्म, आयु व वैवाहिक स्थिति के मध्य किया गया । समूहों को ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक, ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक, ग्रामीण व शहरी कला शिक्षक, ग्रामीण व विज्ञान शिक्षक व समस्त ग्रामीण व शहरी शिक्षक में विभक्त किया गया ।

अध्ययन में सभी मूल्यों से प्राप्त जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के आँकड़ों की सांख्यिकीय गणना विभिन्न समूहों में की गई । अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आये -

शैक्षिक मूल्य के आधार पर :

1- शैक्षिक मूल्य के आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षक समूहों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समरूपता का समावेश है ।

2- प्रशिक्षित शिक्षक अप्रशिक्षित शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि प्रशिक्षित ग्रामीण व प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों तथा अप्रशिक्षित ग्रामीण व अप्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक समान है ।

3- शैक्षिक मूल्य के आधार पर सवर्ण व पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति समान है, जबकि अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षक इस मूल्य पर अनुसूचित जाति के ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

4- शैक्षिक मूल्य पर हिन्दू ग्रामीण शिक्षकों से, हिन्दू शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है । सिख, ईसाई व मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्तिमें समानता का स्तर है ।

5- प्रौढ़ एवं युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में शैक्षिक मूल्य पर एकरूपता है ।

6- शैक्षिक मूल्य पर ग्रामीण विवाहित शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का शहरी विवाहित शिक्षकों से स्तर उच्च है, जबकि अविवाहित शिक्षकों में शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर अविवाहित ग्रामीण शिक्षकों से श्रेष्ठ है ।

सामाजिक मूल्य के आधार पर :

1- सामाजिक मूल्य के आधार पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एकरूपता है ।

2- प्रशिक्षित शिक्षक, अप्रशिक्षित शिक्षकों से उपरोक्त मूल्य पर उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि प्रशिक्षित ग्रामीण व प्रशिक्षित शहरी तथा अप्रशिक्षित ग्रामीण व अप्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में एकरूपता है ।

3- सवर्ण व अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षक इन्हीं जातियों के ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में समरूपता है ।

4- सामाजिक मूल्य पर हिन्दू धर्म के शहरी शिक्षक, ग्रामीण शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । सिख, ईसाई व मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की इसी मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समानता है ।

5- सामाजिक मूल्य पर प्रौढ़ शहरी विज्ञान, शिक्षकों की अभिवृत्ति प्रौढ़ ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से धनात्मक है, जबकि युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति के मूल्य समान है ।

6- ग्रामीण व शहरी, विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की सामाजिक मूल्य के आधार पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर एक जैसा है ।

आर्थिक मूल्य के आधार पर :

1- आर्थिक मूल्य के आधार पर शहरी शिक्षक ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

2- प्रशिक्षित ग्रामीण व प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों तथा अप्रशिक्षित ग्रामीण व अप्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में आर्थिक मूल्य पर सार्थक अन्तर रहा । प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों की प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों से जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति श्रेष्ठ रही। जबकि अप्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षक अप्रशिक्षित शहरी शिक्षकों से आर्थिक मूल्य पर श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का प्रदर्शन करते हैं ।

3- सवर्ण जाति के कला संवर्ग के ग्रामीण शिक्षक इसी संवर्ग के शहरी शिक्षकों से श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । पिछड़ी जाति के ग्रामीण शिक्षकों की भी आर्थिक मूल्य पर इसी जाति के शहरी शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । जबकि अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति अपनी जाति के ग्रामीण शिक्षकों से श्रेष्ठ स्तर की है ।

4- हिन्दू एवं ईसाई धर्म को मानने वाले शहरी शिक्षकों की आर्थिक मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है, जबकि सिख और मुस्लिम ग्रामीण व शहरी शिक्षक एक समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

5- आर्थिक मूल्य के आधार पर प्रौढ़ एवं युवा आयु के ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति शहरी प्रौढ़ एवं युवा शिक्षकों से धनात्मक है ।

6- विवाहित ग्रामीण शिक्षक आर्थिक मूल्य पर श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं। जबकि अविवाहित शिक्षकों में ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति समान है ।

राजनीतिक मूल्य के आधार पर :

1- राजनीतिक मूल्य के आधार पर ग्रामीण शिक्षकों से शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति धनात्मक है ।

2- राजनीतिक मूल्य पर प्रशिक्षित शिक्षकों की अप्रशिक्षित शिक्षकों से श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों की प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है, जबकि अप्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षक समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

3- सवर्ण एवं अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षक, ग्रामीण शिक्षकों से राजनीतिक मूल्य पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति एक समान है ।

4- राजनीतिक मूल्य के आधार पर हिन्दू एवं ईसाई धर्म के शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृतित ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक है, जबकि सिख व मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समानता है ।

5- प्रौढ़ शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति राजनीतिक मूल्य पर प्रौढ़ ग्रामीण शिक्षकों से श्रेष्ठ है । युवा आयु के ग्रामीण व शहरी शिक्षक उपरोक्त मूल्य पर समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

6- विवाहित एवं अविवाहित, ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की राजनीतिक मूल्य पर एक समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर :

1- धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर ग्रामीण शिक्षकों से शहरी शिक्षक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

2- प्रशिक्षित शिक्षक, अप्रशिक्षित शिक्षकों से उपरोक्त मूल्य पर श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । प्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की वर्णित मूल्य पर समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है, जबकि अप्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों से अप्रशिक्षित शहरी शिक्षक धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

3- सवर्ण जाति के शहरी शिक्षकों व अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षकों की अपनी जाति के ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृतित हैं, जबकि पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षक धार्मिक व जातिगत मूल्य पर समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

4- हिन्दू व ईसाई धर्म के शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति ग्रामीण, हिन्दू व ईसाई शिक्षकों से श्रेष्ठ है । सिख धर्म के शहरी विज्ञान शिक्षक, सिख धर्म के ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृतित उपरोक्त मूल्य पर समान है ।

5. प्रौढ़ शिक्षकों के समूह में धार्मिक व जातिगत मूल्य के आधार पर प्रौढ़ शहरी महिला शिक्षक अपनी ही आयु की ग्रामीण महिला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं । युवा शिक्षकों में शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति ग्रामीण युवा शिक्षकों से धनात्मक है ।

6. धार्मिक एवं जातिगत मूल्य के आधार पर विवाहित शहरी महिला शिक्षक, विवाहित ग्रामीण महिला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति प्रकट करती है । अविवाहित शिक्षकों में शहरी शिक्षक ग्रामीण शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

अन्य मूल्य के आधार पर :

1- अन्य मूल्य के आधार पर ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से शहरी पुरूष शिक्षक अधिक अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

2- प्रशिक्षित शिक्षकों की अन्य मूल्य पर अप्रशिक्षित शिक्षकों से कहीं अधिक श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों की प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों से अन्य मूल्य पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है, जबकि अप्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर समान है ।

3- सवर्ण व पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अन्य मूल्य पर जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एक समान है ।

4- हिन्दू धर्म के शहरी शिक्षक, ग्रामीण शिक्षकों से अन्य मूल्य पर धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । सिख, ईसाई व मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की उपरोक्त मूल्य पर समान जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है ।

5- अन्य मूल्य के आधार पर प्रौढ़ ग्रामीण कला शिक्षक, प्रौढ़ शहरी कला शिक्षकों से अनुकूल जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं । युवा ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति युवा शहरी पुरूष शिक्षकों से धनात्मक है, जबकि युवा शहरी महिला शिक्षक, युवा ग्रामीण महिला शिक्षकों से उच्च जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखती हैं ।

6 - विवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में अन्य मूल्य पर ग्रामीण शिक्षक, शहरी शिक्षकों से अनुकूल अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि अविवाहित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में समरूपता का प्रदर्शन है ।

सभी मूल्यों के योग पर प्राप्त निष्कर्ष :

1- सभी मूल्यों के योग पर शहरी विज्ञान शिक्षक, ग्रामीण विज्ञान शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

2- मूल्यों के योग पर प्रशिक्षित शिक्षकों की अप्रशिक्षित शिक्षकों से श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति है । प्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी तथा अप्रशिक्षित ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

3- सवर्ण व अनुसूचित जाति के शहरी शिक्षक, ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं, जबकि पिछड़ी जाति के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में समानता है ।

4- हिन्दू व ईसाई धर्म के शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति सभी मूल्यों के योग पर ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक पायी गयी, जबकि सिख व मुस्लिम धर्म के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों में जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर समान पाया गया ।

5- प्रौढ़ शिक्षकों में सभी मूल्यों के योग पर ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का स्तर समरूपता का है, जबकि युवा अवस्था की शहरी महिला शिक्षक व शहरी विज्ञान शिक्षक अपने समूह के ग्रामीण शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रखते हैं ।

6- विवाहित ग्रामीण कला शिक्षकों की सभी मूल्यों के योग पर विवाहित शहरी कला शिक्षकों से धनात्मक जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति रही, जबकि, अविवाहित शहरी शिक्षक, अविवाहित ग्रामीण शिक्षकों से श्रेष्ठ जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं ।

संस्तुति एवं सुझाव :

1- जनसंख्या शिक्षा वर्तमान समाज की एक महत्वपूर्ण ईकाई है । अतः जनसंख्या शिक्षा प्रशिक्षण के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या शिक्षा पत्राचार कार्यक्रम के आधार पर प्रदान की जाये ।

2- जनसंख्या शिक्षा प्रशिक्षण में सम्पर्क कार्यक्रम को भी उचित स्थान दिया जाये ।

3- जनसंख्या शिक्षा के पाठयक्रम को बी0एड0 एवं एम0एड0 प्रशिक्षण में सम्मिलित किया जाये ।

4- जनसंख्या शिक्षा पाठयक्रम में स्वास्थय शिक्षा, काम शिक्षा व पर्यावरण शिक्षा को भी अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाये ।

5- वर्तमान में भी कुछ शिक्षक परिवार नियोजन के साधनों को हानिकारक मानते हैं । शिक्षकों की ऐसी शंकाओं का निवारण प्रयोगात्मक आधार पर किया जाये तथा परिवार के साधनों का स्वास्थ्य पर प्रभाव सम्बन्धी अनुसंधानों का अध्ययन कराया जाये ।

6- शिक्षकों में व्याप्त पुत्र व पुत्री के अन्तर को समाप्त करने तथा धार्मिक कुरीतियों से देश व समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से परिचित कराया जाये ।

7- विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में जनसंख्या पाठयक्रम को लागू करने के लिये विशेष वित्तीय सहायता प्रदान की जानी चाहिये ।

8- कार्य गोष्ठियों के माध्यम से विभिन्न विद्यालयी विषयों में जनसंख्या शिक्षा के समाकलन हेतु पाठय सामग्री का निर्माण किया जाना चाहिये ।

9- समय-समय पर विद्यालयों में शिक्षकों के लिये जनसंख्या शिक्षा की प्रतियोगितायें, सेमीनार आदि आयोजित किये जायें ।

10- स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तरों पर जनसंख्या नीति, जनसंख्या शिक्षा, जनसंख्या गतिकी, जनसंख्या सांख्यिकी आदि को पाठयक्रमों में सम्मिलित किया जाये ।

11- जनसंख्या शिक्षा क्लबों एवं प्रकोष्ठों की स्थापना तथा प्रसार सेवा के माध्यम से शिक्षकों को प्रशिक्षित करना उचित है ।

12- जनसंख्या शिक्षा के विषय में विशेषज्ञों के भाषण, प्रशिक्षण शिविर तथा श्रव्यदृश्य सामग्री का निर्माण उचित मात्रा में किया जाये ।

13- प्रत्येक जिले में यदि सम्भव हो तो प्रत्येक तहसील स्तर पर जनसंख्या शिक्षा विशेषज्ञ की नियुक्ति की जाये । जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी लेखों तथा अनुसंधानों को शिक्षा विभाग की विभागीय पत्रिकाओं तथा अन्य समाचार पत्रों में भी प्रकाशित किया जाये ।

भावी शोध कार्यो के लिये सुझाव :

अपने शोध कार्य के कार्यकाल में शोधकर्ता को कुछ नये तथ्यों तथा आयामों का परिचय मिला है जिनमें से भावी शोधकर्ताओं एवं शोध संस्थाओं के उपयोग हेतु नये शोध कार्यो के लिये निम्न सुझाव प्रस्तावित है -

1- प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों पर किया गया है । भावी अध्ययनों में ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों, छात्रों को सम्मिलित किया जा सकता है ।

2- प्रस्तुत अध्ययन में केवल मुरादाबाद मण्डल के 500 शिक्षकों को चुना गया है । अध्ययन में सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के शिक्षकों को सम्मिलित किया जा सकता है ।

3- प्रस्तुत शोध में केवल शिक्षकों को चुना गया है । भावी अध्ययनों के लिए विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए लोगों जैसे - किसान, व्यापारी, मजदूरों आदि पर अध्ययन किया जा सकता है ।

4- शोध सीमाओं को ग्रामीण व शहरी शिक्षकों से आगे बढ़ाकर ग्रामीण व अति ग्रामीण तथा नगरपालिकाओं व महानगर पालिकाओं के शिक्षकों के मध्य किया जा सकता है ।

5- भावी शोधों में प्राथमिक, माध्यमिक, विद्यालयी व महाविद्यालयी स्तर के संस्थागत व व्यक्तिगत छात्र छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ।

6- अभिभावकों, शिक्षकों एवं छात्र छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों का आयु, लिंग, शैक्षिक स्तर एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर अध्ययन किया जाना उचित है ।

7- ग्राम प्रधानों, क्षेत्र समिति के सदस्यों, जिला पंचायत के सदस्यों, विधान मंडल व संसद के सदस्यों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति का अध्ययन किया जाना उचित है ।

8- भावी अध्ययनों में छोटे एवं बड़े परिवार के बालकों में रूचि, भग्नाशा, आकांक्षाओं के विषय में अध्ययन उचित है ।

9- भावी शोध कार्यो में, जनसंख्या शिक्षा में फिल्मों, दूरदर्शन जनसंख्या शिक्षा साहित्य, परिवार कल्याण कार्यक्रमों की प्रभावकारिता का अध्ययन उचित रहेगा ।

10- विभिन्न स्तरों पर पत्राचार प्रशिक्षण में जनसंख्या शिक्षा के पाठयक्रम के निर्माण का अध्ययन किया जा सकता है ।

11- भावी अध्ययनों में छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों की जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी प्राप्तियों के मूल्यांकन हेतु प्रश्न बैंकों का निर्माण किया जा सकता है ।

12- जनसंख्या शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षण विधियों, समस्याओं, समाधान, समूह परिचर्या, टीम टीचिंग, अभिक्रमिक स्वाध्याय, निरीक्षित स्वास्थ्य की प्रभावकारिता एवं उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ।

13- विभिन्न प्रदेशों व देशों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति भावी शोध कार्यो में अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना समयानुकूल है ।

-0-

परिशिष्ट

BIBLIOGRAPHY

1. Aggarwala S N. (1966): Some Problems of India's Population Bombay Tata M/C Graw Hill.

2. Aggarwala S.N (1972): India's Population Problem Bombay Tata M/C Graw Hill.

3. Aggarwala S.N. (1962): Attitude Towards Family Planning in India, Bombay Asia Publishing House.

4. Anant Padmanathan N. and Ramesh Chandra (1978) : Population Education in Class Rooms, N.C.E.R.T.

5. Akhtar H.S.M.R., Sinha A K. and Islam M D.F. (1972): Attitudes and Practices of Graduate Teachers Towards Family Planning, The Journal of Family Welfare [xix], No.-1, Sept. 1972.

6. Aggarwala Y.P. (1988): Better Sampling, stessling Publishers Pvt. Ltd.

7. Bala Subramaniam et al (1970) : A study of Reaction High School Teachers to the Study of Population.

8. Baldwin George B. (1974) : Population Policy in Developed Countries, The American Review, Vol. 19, No. 1, Autumn, 1974, p. 21.

9. Bala Subramaniam and Kumar J. (N.D.): Some Research Aspects of Population Education Programme, Bombay, I.I.P.S. (Meme).

10. Banjal Madhu (1966): Attitudes of Lady Teachers Towards Family Planning, M.A. (Sociology). Thesis Agra University.

11. Bose, Ashish and others (1974), Population in India's Development (1947-2000) Delhi: Vikas Publishing House Pvt. Ltd., 5 Daryaganj, Ansari Road.

12. Bush M.B. (1974): A Survey of Research in Education, Baroda, M.S. University.

13. Buch M.B. (1979) : Second Survey of Research in Education, Baroda, S.E.R.D.

14. Buch M.B. (1987) : Third Survey of Research in Education, New Delhi N.C.E.R.T.

15. Buch M.B. (1991) : Fourth Survey of Research in Education, New Delhi N.C.E.R.T.

16. Bajpai S.R. (1987): Method of Social Survey and Research, Kitab Ghar Kanpur.

17. Brijendra M. Mathur and Beena Thadari (1988) : A Hand Book for the Prospective Teacher : Atlantic Publishers and Distributors.

18. Baruch Dorothy, W. (1959) : New ways of Sex Education, New York M/C Graw Hill.

19. Bhende, Asha (1976) : A Comprehensive Population Policy in India, Lok Rajya, Vol.-32. No. 4-5 June 16th, July Ist, 1976.

20. Bhan Chandra (1977) : Population Awareness Through Language, PEN. Feb.-1977.

21. Calhahan, Denial (1971): Ethics of Population Education. An Occasional Paper, Population Council.

22. Chelaswant, J. (1959) : Mortality and Fertility trends and Population Growth in Indian Population. "Some Problems in Prospective Planning" : By S.N. Aggarwala. Bombay, Asia Publishing House.

23. Chandra Ramesh (1975): A Case of Population Education in Schools, Chandigarh : F.P.A.T. Paper Presented at the Naraingarh Seminar Sept. 21st 1975. (Memco).

24. Dobbyn, M. and Hill L.A. (1984): A Teacher Training Course : Cassell London.

25. Dairyple J.J. (1960) : Family Life Education, Encyclopedia of Educational Research (Haris, C.W. aditor) New York: Macmillan (1960).

26. F.P.A.I. (Bombay) 1969 : Seminar on Population Education for Younger Generation, March 7th-8th, 1969.

27. F.P.A.I. Hongkong (N.D.) : Family Life Education Teacher's Handbook.

28. Gopalan C. (1968) : Health Problems in Pre-School Children,Journal of Trop. Pediatries, 14:218.

29. Gautam Rekha (1966) : Attitude of Meerut College. Female Students Towards Marriage and Family M.A. (Sociology) Thesis Agra University.

30. Ghosh Malika (1976) : Population Education and Youth PEN, Oct. 1976.

31. Ganguly B.N. (1973), Population and Development New Delhi, S.Chandra.

32. Gian Chandra (1972) : Population in Perspection, New Delhi Orient Longman.

33. Haethea, Carl A. (nd) Teacher's Knowledge and use of Population Education During 1961-1971, "Demography India". Dec. 1974.

34. Henry Michael M. (1974) : High School Teacher's Readiness for Population Education, George Reabady college for Teacher's. X. Croex supplied by the auther in personal correspondence. (Communication).

35. Hanumanulu (1976) : A Study of the Knowledge and Attitude of the Parents of out of School Youths on Population Education. F.P.A.I., New Delhi Br.

36. I.C.C.W. (1976) Why Sex Education ? Report of the Sex Education March 29th-30th, 1976, Organised by Indian Council of Child Welfare New Delhi.

37. Jangera N.K. (1985) : Professional Enculturation, Book Worth India.

38. Jain S.P. (1977), Indian Population and Development, New Delhi N.C.E.R.T. 1977.

39. Jonson W.R.Scutt. M. (1968): Sex Education Attitude of School Administrators and School Board Members. Journal of School Health, 36, 64-68 (Feb. 1968).

40. Kant J. Russell (1958): Family Life Education, A Teacher's Resource Guide 9-12, Son Mater Country Board of Education.

41. Kamat A.R. (Ed.) (1969) : Population Problems in India New Delhi, Lexington D.C. Lexington Books.

42. Kildnder, H. Fredric (1916): Sex Education in Schools, New York: Macmillan, 1916.

43. Lorand Rhoolorl (1969): Sex and the Tenagers. London: Macmillan 1969.

44. Levi, Lennart and Anderson Lor S. (1975): Psychological Stress: Population Environment and Quality of Life, New York: Spectrum Publishers.

45. Miclin Michale (1973): Population Environment and Social Organization, Current Issues in Human Ecology. Hinselale [iii]. Dry Den Press.

46. Mitra Ashok (1974): Inspect of Population Dynamics on Socio, Eco. and Educational Development in Asia, Bangkok: UNESCO Regional Office for Education in Asia 1974 (Memeo).

47. Mathur V.S. (1975): Population Education Need of Orienting the Teachers, PEN Dec. 1975.

48. Magda, S.L. and Reddy, P.T. (1976): Refresher Course on Population Education, S.V.U. Tripati.

49. Marshall T.H. (1970): Methods of Social Study, London School of Economics and Political Science Cambridge University Press.

50. Narayana, D.L. (1974): Human Resources Development and Population Education, Man Power Journal (Delhi), July-Sept. 1974.

51. N.C.E.R.T. (National Council of Educational Research and Training) New Delhi :

- Reaching in Population Education, 1969.
- National Seminar on Population Education, 1969.
- Population Education in School Curricular, 1970.
- Population Education, A Draft Syllabus, 1971.
- National Seminar on Population Education, 1971.
- Dreams of Tomorrow. C.A. Supplementary Reader in Hindi, 1972.
- Nutrition and Population Education, 1973.
- Population Education for Teachers, 1974.
- National Bibliography on Population Education 1975.
- Population Education in Class Rooms, 1978.
- National Baseline Survey of Population Education in India: 1980.
- A Decade of Population Education Research in India 1981.
- My Work Book on Population Studies, 1981.

52. N.C.E.R.T. Delhi (1988) : I.C.S.S.R. Research Project (1969-1987).

53. Oak, A.W. (1988): States of Woman in Education : The Indian Publication, Ambala (India).

54. Patel V.R. (1974) : A Study of Population Awareness of Pupils Standard (X) at Varnama High School, M.Ed. Thesis of the University of Baroda.

55. Proffenberger, T. (1970): A study of the knowledge and attitudes of Indian College Towards Population Related Problems, The Centre for Population Planning. University of Michigan, U.S.A. (Memeo).

56. Pathak M.J. (1974): A study of Population Education Awareness among Fathers of students of standard (X) of Varnama Village. M.Ed. Thesis of the University of Gujrat (Unpublished).

57. Parakh, B.S. (1976) : School's Response to Population Explosion PEN Dec. 1976.

58. Parakh, B.S. (1977) : Population Education Ethics, PEN, Feb. 1977.

59. Premi, M.K. (1968) : Planning Education Programmes, Economic and Political Weekly, Bombay, 24th Feb., 1968.

60. Premi M.K. (1975) : Women's Education and Practice of Family Planning in India, N.S. College of Educational Planning and Administration.

61. Passi, B.K. and Sahoo, P.K. (1988) : Futurology in Education National Psychological Corporation, Agra.

62. Rao, D. Gopal (1976-a): A Study of Attitudes of Parents and Teachers Towards Sex Education, N.C.E.R.T. New Delhi.

63. Rao D. Gopal (1974) : Population Education - Guide to Curriculum and teacher Education. Sterling Publishers, New Delhi.

64. Rao Parvati (1977) : Family Size and Growth of Child Swath Hind, June, 1977.

65. Rao D.Gopal (1976-b): A Study of awareness of Teachers of Population Education and Their Reaction Towards the Introduction of Population Education in Schools. NCERT, New Delhi.

66. Sharma, R.C. (1975) : Population Trends Resources and Environment. Handbook of Population Education. Delhi, Dhanpatrai & Sons.

67. Sen, S.N. (1967): Trends in Population Food and Economic Development, Science and Culture, Dec., 1967.

68. Singh, Ajit (1985) : Teachers Creativity and Classroom Behaviour, Book Mark India, Delhi.

69. Sidh, K.K. (1975) : Sex Education. Do you children Need ? PEN, Dec.

70. Tabah, L. (ed.) (1976) : Population Growth and Economic Development in the World Ddhain (Belgium). Ordina ed.

71. Thakore, R. (1979) : Development of Curriculum in Population Education for Secondary School Teachers. under Training PhD. Thesis Gujrat University.

72. UNESCO (Regional Office for Education in Asia and the Pacific, Bangkok Thailand).

73. Vijayan, K.K. Nambiar (1981) : Work Experience and Curricular Subjects. Indian Publication, Ambala.

74. Vyas, R.N. (1981) : Indian and Western Educational Psychologies and their synthesis The Associated Publishers. Ambala (India).

75. Waswani, N.V. and Kapoor, I. (1976) : Schools Teachers Attitudes Towards Population Education and View on Age on Marriage and Family Size, In Why Sex Education, ICCW, 1976.

76. Young, Venus Co (1980): The Church and Family Planning Population Forum 6(3):14.

77. भोपाल सिंह -

- परिवार नियोजन और अध्यापक, पेन, फरवरी, 1977
- काम शिक्षा कैसे ? पेन, मार्च, 1977 (ख)
- जनसंख्या शिक्षा और अनुसंधान, पेन, चण्डीगढ़, एफ0पी0ए0आई0, अप्रैल, 1978

- अध्यापक प्रशिक्षण में जनसंख्या शिक्षा के कुछ विचार बिन्दु : लोकमान्य तिलक, डबोक, वर्ष 4, अंक 4, 1978
- काम शिक्षा के प्रति अध्यापक के मत, मरूज्योति, गां0वि0म0 सरदार शहर, 1980
- जनसंख्या शिक्षा का इतिहास, मरूज्योति, गां0वि0म0, सरदार शहर, 1982

78- डॉ0 महेश भार्गव (1987-88), आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, हर प्रसाद भार्गव, आगरा ।

79- डॉ0 श्यामधर सिंह (1986), वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व, कमल प्रकाशन, इन्दौर ।

80- लाभसिंह, द्वारका प्रसाद, महेश भार्गव (1988), मनोविज्ञान शिक्षा में सांख्यिकी के मूल आधार, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा ।

81- डॉ0 सत्यदेव (1985), सामाजिक विज्ञानों की शोध पद्धतियाँ, हरियाणा साहित्य अकाडमी ।

82- कुलश्रेष्ठ संध्या (1990) - जनसंख्या शिक्षा के प्रति महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन ।

83- सच्चिदानन्द डोडियाल, अरविन्द फाठक (1982), शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकाडमी, जयपुर ।

84- डा0 लालवचन त्रिपाठी (1983), मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति, हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन, आगरा ।

85- डॉ0 रघुवंश त्रिपाठी (1987-88), अप्राचलिक सांख्यिकी, हर प्रसाद भार्गव, आगरा

86- श्रीमति कमलेश महाजन, धर्मवीर महाजन (1987-88), सामाजिक अनुसंधान सर्वेक्षण एवं सांख्यिकी, शिक्षा साहित्य प्रकाशन, मेरठ ।

87- एस0एम0 गणेशन (1986), अनुसंधान प्रविधि, सिद्धान्त और प्रक्रिया, लोकभारती प्रकाशन, मेरठ ।

समाचार पत्र :

1- इंडियन एक्सप्रेस (अंग्रेजी संस्करण) दिल्ली प्रकाशन ।

2- दि हिन्दुस्तान टाइम्स (अंग्रेजी संस्करण) दिल्ली प्रकाशन ।

3- दि टाइम्स आफ इंडिया (अंग्रेजी संस्करण) दिल्ली प्रकाशन ।

4- दैनिक अमर उजाला (हिन्दी संस्करण), मुरादाबाद प्रकाशन ।

5- दैनिक जागरण (हिन्दी संस्करण) मुरादाबाद प्रकाशन ।

6- जनसत्ता (हिन्दी संस्करण), दिल्ली प्रकाशन ।

साक्षात्कार अनुसूची पूर्णतया : गोपनीय

ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन

जनसंख्या शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में;

निर्माण कर्ता

डा० जवाहर लाल वर्मा * डा० जयपाल सिंह * *

एव हर्षवर्धन—शोधकर्ता * * *

कृपया अपने विषय में निम्नलिखित सूचनायें दीजिए—

नाम.. लिंग....................................

आयु.................. .... शैक्षिक योग्यता..

विवाहित / अविवाहित.............................. जाति..

धर्म.................. अध्यापन विषय.................. ......अध्यापन अनुभव....................

कुल मासिक आय.................. प्रशिक्षित/अप्रशिक्षित.................................

स्कूल कालेज का नाम..

पता...

निर्देश:— प्रस्तुत प्रश्नावली में छः (६) मूल्यों से सम्बन्धित कुल साठ (६०) प्रश्न सम्मिलित किये गये हैं। इन प्रश्नों का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित अभिवृत्तियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना है। किसी भी प्रश्न का कोई निश्चित पूर्व निर्धारित, सही या गलत उत्तर सुनिश्चित नहीं है। इन प्रश्नों के द्वारा केवल यह जानने का प्रयास किया जा रहा है। कि इन कथनों के प्रति आपके व्यक्तिगत विचार क्या हैं।

प्रत्येक प्रश्न को ध्यान पूर्वक पढ़कर ही उसका उत्तर अंकित करें। प्रत्येक प्रश्न के सामने पाँच कालम बने हुए हैं। आपको अपना उत्तर प्रत्येक कथन के सामने बने किसी भी एक कालम पर सही (√) का निशान लगाकर पूर्ण करना है।

विशेष सावधानियां— (१) उत्तर देते समय ध्यान रहे कि कोई कथन छूटने न पाये।

(२) आप अपनी अभिव्यक्ति निर्भय होकर व्यक्त करें, आपके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रहेंगे।

(३) उत्तर देने के लिए यद्यपि कोई समय सीमा निश्चित नहीं है, फिर भी सम्भव हो तो यथा शीघ्र उत्तर देने का प्रयास करें।

---

* बुन्देलखण्ड कालेज, झांसी रीडर, शिक्षा विभाग

* * हिन्दू कालेज, मुरादाबाद प्रवक्ता शिक्षा [पी० जी०] विभाग

* * * शोधकर्ता

जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति मापनी

शैक्षिक मूल्य	पूर्ण सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत
१- जनसंख्या शिक्षा-विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचिजाग्रत करती है ?	( )	( )	( )	( )
२- जनसंख्या शिक्षा का विद्यालयी विषयों से कोई सरोकार नहीं है ?	( )	( )	( )	( )
३- जनसंख्या शिक्षा का ज्ञान प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है ?	( )	( )	( )	( )
४- जनसंख्या शिक्षा-अश्लील साहित्य के प्रचार-प्रसार पर रोक लगाती है ?	( )	( )	( )	( )
५- जनसंख्या शिक्षा, विद्यालय स्तर पर अलग विषय के रूप में पढ़ाई जानी चाहिए ?	( )	( )	( )	( )
६- पाठ्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा का समाकलन किया जाए ?	( )	( )	( )	( )
७- जनसंख्या शिक्षा, विद्यालय के वातावरण को दूषित करती है ?	( )	( )	( )	( )
८- किशोर किशोरियों को विषय लिंगी जानकारी दी जानी चाहिए ?	( )	( )	( )	( )
९- काम ज्ञान, बालक को अभिवृत्ति को प्रभावित करता है ?	( )	( )	( )	( )
१०- जनसंख्या शिक्षा से अनैतिकता बढ़ती है ?	( )	( )	( )	( )
सामाजिक मूल्य				
११- जनसंख्या शिक्षा, समाज की प्रमुख आवश्यकता है ?	( )	( )	( )	( )
१२- परिवार नियोजन, पारिवारिक एवं सामाजिक कल्याण का द्योतक है ?	( )	( )	( )	( )
१३- परिवार नियोजन के साधन अप्राकृतिक एवं हानिकारक हैं ?	( )	( )	( )	( )
१४- प्रकृति स्वयं ही जनसंख्या नियंत्रित करती है ?	( )	( )	( )	( )
१५- बालक बालिकायें तो भगवान की देन हैं ?	( )	( )	( )	( )
१६- छोटा परिवार सुखी आधार है ?	( )	( )	( )	( )
१७- लड़कियों का विवाह २० वर्ष की आयु तक नहीं होना चाहिए ?	( )	( )	( )	( )
१८- परिवार में लड़कों को अधिक महत्व मिलता है ?	( )	( )	( )	( )
१९- संसार में प्रत्येक बालक अपना भाग्य लेकर उत्पन्न होता है ?	( )	( )	( )	( )
२०- जनसंख्या शिक्षा से सामाजिक जीवन स्तर ऊँचा होता है ?	( )	( )	( )	( )
आर्थिक मूल्य				
२१- अनियोजित परिवार घर के बजट को प्रभावित करता है ?	( )	( )	( )	( )
२२- छोटे परिवार में अधिक कष्ट नहीं होता ?	( )	( )	( )	( )
२३- जनाधिक्य का बेरोजगारी पर सीधा प्रभाव पड़ता है ?	( )	( )	( )	( )
२४- अधिक सम्पन्नता छोटे परिवार बनाने पर बल देती है ?	( )	( )	( )	( )
२५- जनसंख्या वृद्धि से भोजन, पोषण सम्बन्धी कोई दुष्परिणाम नहीं निकलता ?	( )	( )	( )	( )
२६- जनाधिक्य का यातायात व्यवस्था पर सीधा प्रभाव पड़ता है ?	( )	( )	( )	( )
२७- पारिवारिक स्वास्थ्य अधिक बालबच्चों से जुड़ा होता है ?	( )	( )	( )	( )
२८- जनसंख्या वृद्धि से देश की अर्थ व्यवस्था चरमरा जाती है ?	( )	( )	( )	( )
२९- संसार में कम जनसंख्या वाले राष्ट्र ही आर्थिक दृष्टि से अधिक सम्पन्न हैं ?	( )	( )	( )	( )
३०- कोई भी राष्ट्र अधिक समय तक जनाधिक्य का आर्थिक बोझ नहीं उठा सकता ?	( )	( )	( )	( )
राजनीतिक मूल्य				
३१- प्रजातंत्र में जनाधिक्य ही बल है।	( )	( )	( )	( )
३२- जनसंख्या वृद्धि में लोकतंत्र एक महत्वपूर्ण कारक है ?	( )	( )	( )	( )
३३- अधिक सन्तान वाले परिवार अधिक राजनीतिक सत्ता प्राप्त करते हैं ?	( )	( )	( )	( )

३४- राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए जनसंख्या बल से परिपूर्ण, जातियों एवं धर्मों की आवश्यकता पड़ती है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

३५- ग्रामों में बड़े परिवार की धारणा राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए बढ़ी है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

३६- राजनीतिक स्वार्थ जनसंख्या नियंत्रण को प्रभावित करते हैं ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

३७- अधिक जनाधिक्य वाले समाज राजनीति की दिशा निर्धारित करते हैं। ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

३८- राजनीतिक स्वार्थ जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने में बाधक हैं ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

३९- अधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र ही शक्तिशाली होता हैं ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

४०- भारत में जनाधिक्य भारतीय राजनीति एवं लोकतंत्र के दुरुपयोग का दुष्परिणाम हैं ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

धार्मिक एवं जातिगत मूल्य

४१- परिवार में पुत्र होना आवश्यक है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

४२- जनसंख्या नियंत्रण की सीख धार्मिक ग्रन्थों में नहीं है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

४३- धार्मिकता जनसंख्या को प्रभावित करती है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

४४- लड़कियों को शिक्षा देना धर्म के प्रतिकूल है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

४५- धार्मिक कुरीतियां एवं अन्ध विश्वास जनाधिक्य को बढ़ाते है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

४६- अनेक जातियों में बड़ा परिवार ही अच्छा माना जाता है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

४७- जनसंख्या अधिकता से जातियाँ सामाजिक एवं राजनीतिक अधारों को प्रभावित करतीं हैं ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

४८- अनेक जातियों में जितने अधिक पुरुष उतना ही अधिक आर्थिक लाभ का सिद्धान्त प्रचलित है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

४९- आज भी कुछ जातियों में बाल विवाह की परम्परा विद्यमान है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

५०- समाज में व्याप्त जातिगत बन्धन जनसंख्या वृद्धि को बल देते हैं ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

अन्य मूल्य

५१- वातावरण प्रदूषण जनसंख्या वृद्धि का ही परिणाम है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

५२- प्रतिदिन बढ़ते नगर एवं महानगर जनाधिक्य की देन है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

५३- अधिक जनसंख्या से राष्ट्र के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

५४- भौतिक वाद एवं उपभोक्ता संस्कृति से जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम को बल मिला हैं ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

५५- छोटी आयु में विवाह हानिकारक है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

५६- विवाह के बाद शीघ्र बच्चे नहीं होने चाहिए ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

५७- सन्तान की इच्छित संख्या पूर्ण होने पर परिवार नियोजन के साधनों को अपनाने का प्रचलन बढ़ गया हैं ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

५८- दहेज जैसी कुरीतियों ने छोटे परिवार की धारणा को जन्म दिया है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

५९- अन्तर्जातीय विवाह जनाधिक्य की देन है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

६०- स्वास्थ्य मानव जीवन की प्रमुख आवश्यकता है ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( )

विशेष सावधानियां :-

१- उत्तर देते समय ध्यान रहे कि कोई कथन छूटने न पाये।

२- आप अपनी अभिव्यक्ति निर्भय होकर व्यक्त करें, आपके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रहेंगे।

३- उत्तर देने के लिए यद्यपि कोई समय सीमा निश्चित नहीं हैं, फिर भी सम्भव हो तो यथा शीघ्र उत्तर देने का प्रयास करें।

उत्तर प्रपत्र

जनसंख्या शिक्षा के विभिन्न कथनों पर ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति एवं उनका प्रतिशत

क्रम	कथन	पूर्ण सहमत	प्रतिशत	सहमत	प्रतिशत	तटस्थ	प्रतिशत	असहमत	प्रतिशत	पूर्ण असहमत	प्रतिशत
शैक्षिक मूल्य :											
1-	जनसंख्या शिक्षा-विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि जाग्रत करती है ?	190	38.0	145	29.0	41	8.2	52	10.4	72	14.4
2-	जनसंख्या शिक्षा का विद्यालयी विषयों से कोई सरोकार नहीं है ?	130	26.0	70	14.0	30	6.0	70	14.0	200	40.0
3-	जनसंख्या शिक्षा का ज्ञान प्रत्येक विद्यार्थी के लिये आवश्यक है ?	394	78.8	50	10.0	15	3.0	-	-	41	8.2
4-	जनसंख्या शिक्षा-अश्लील साहित्य के प्रचार-प्रसार पर रोक लगाती है ?	200	40.0	100	20.0	44	8.8	22	4.4	134	26.8
5-	जनसंख्या शिक्षा, विद्यालय स्तर पर अलग विषय के रूप में पढ़ाई जानी चाहिये ?	340	68.0	102	20.4	27	5.4	15	3.0	16	3.2
6-	पाठयक्रम में जनसंख्या शिक्षा का समाकलन किया जाये ?	342	68.4	98	19.6	16	3.2	20	4.0	24	4.8
7-	जनसंख्या शिक्षा, विद्यालय के वातावरण को दूषित करती है ?	78	15.6	70	14.0	34	6.8	26	5.2	292	58.4
8-	किशोर किशोरियों को विषय लिंगी जानकारी दी जानी चाहिये ?	356	71.2	92	18.4	16	3.2	16	3.2	20	4.0
9-	काम ज्ञान, बाल की अभिवृत्ति को प्रभावित करता है ?	306	61.2	116	23.2	20	4.0	26	5.2	32	6.4
10-	जनसंख्या शिक्षा से अनैतिकता बढ़ती है ?	90	18.0	76	15.2	20	4.0	48	9.6	266	53.2
सामाजिक मूल्य :											
11-	जनसंख्या शिक्षा, समाज की प्रमुख आवश्यकता है ?	400	80.0	74	14.8	08	1.6	08	1.6	10	2.0
12-	परिवार नियोजन, परिवारिक एवं सामाजिक कल्याण का द्योतक है ?	392	78.4	60	12.0	10	2.0	10	2.0	28	5.6
13-	परिवार नियोजन के साधन अप्राकृतिक एवं हानिकारक है ?	80	16.0	120	24.0	30	6.0	40	8.0	230	46.0

क्रम	कथन	पूर्ण सहमत	प्रतिशत	सहमत	प्रतिशत	तटस्थ	प्रतिशत	असहमत	प्रतिशत	पूर्ण असहमत	प्रतिशत
14-	प्रकृति स्वयं ही जनसंख्या नियंत्रित करती है ?	208	41.6	150	30.0	20	4.0	14	2.8	108	21.6
15-	बालक बालिकायें तो भगवान की देन हैं ?	196	39.2	64	12.8	30	6.0	40	8.0	170	34.0
16-	छोटा परिवार सुख का आधार है ?	450	90.0	30	46.0	-	-	10	2.0	10	2.0
17-	लड़कियों का विवाह 20 वर्ष की आयु तक नही होना चाहिये ?	320	64.0	60	12.0	28	5.6	20	4.0	72	14.2
18-	परिवार में लड़कों को अधिक महत्व मिलता है । ?	270	54.0	130	26.0	30	6.0	08	1.6	62	12.4
19-	संसार में प्रत्येक बालक अपना भाग्य लेकर उत्पन्न होता ?	222	44.4	148	29.6	38	7.6	12	2.4	80	16.0
20-	जनसंख्या शिक्षा से सामाजिक जीवन स्तर ऊँचा होता है ?	300	60.0	120	24.0	24	4.8	30	6.0	26	5.2
आर्थिक मूल्य :											
21-	अनियोजित परिवार घर के बजट को प्रभावित करता है ?	434	86.8	26	5.2	08	1.6	06	1.2	26	5.2
22-	छोटे परिवारों में आर्थिक कष्ट नही होता ?	304	60.8	128	25.6	08	1.6	30	6.0	30	6.0
23-	जनाधिक्य का बेरोजगारी पर सीधा प्रभाव पड़ता है ?	444	88.8	36	7.2	04	0.8	08	1.6	08	1.6
24-	आर्थिक सम्पन्नता छोटे परिवार बनाने पर बल देती है ?	314	62.8	102	20.4	20	4.0	16	3.2	48	9.6
25-	जनसंख्या वृद्धि से भोजन, पोषण सम्बन्धी कोई दुष्परिणाम नहीं निकलता ?	82	16.4	38	7.6	14	2.8	26	5.2	340	68.0
26-	जनाधिक्य का आवास व्यवस्था पर सीधा प्रभाव पड़ता है ?	400	80.0	48	9.6	10	2.0	12	2.4	30	6.0
27-	पारिवारिक स्वास्थ्य आर्थिक मानदण्डों से जुड़ा होता है ?	308	61.6	134	26.8	28	5.6	18	3.6	12	2.4
28-	जनसंख्या वृद्धि से देश की अर्थ व्यवस्था चरमरा जाती है ?	434	86.8	42	8.4	12	2.4	08	1.6	04	0.8
29-	संसार में कम जनसंख्या वाले राष्ट्र ही आर्थिक दृष्टि से अधिक सम्पन्न हैं ?	342	68.4	114	22.8	26	5.2	08	1.6	10	2.0
30-	कोई भी राष्ट्र अधिक समय तक जनाधिक्य का आर्थिक बोझ नही उठा सकता ?	420	84.0	38	7.6	12	2.4	14	2.8	16	3.2

		पूर्ण सहमत	प्रतिशत	सहमत	प्रतिशत	तटस्थ	प्रतिशत	असहमत	प्रतिशत	पूर्ण असहमत	प्रतिशत
राजनीतिक मूल्य :											
31-	प्रजातंत्र में जनाधिक्य ही बल है ?	244	48.8	104	20.8	20	4.0	16	3.2	116	23.2
32-	जनसंख्या वृद्धि में लोकतंत्र एक महत्वपूर्ण कारक है ?	204	48.8	154	30.8	38	7.6	24	4.8	80	16.0
33-	अधिक सन्तान वाले परिवार अधिक राजनीतिक सत्ता प्राप्त करते हैं ?	82	16.4	94	18.8	36	7.2	32	6.4	256	51.2
34-	राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिये जनसंख्या बल से परिपूर्ण जातियों एवं धर्मो की आवश्यकता पड़ती है ?	182	36.4	84	16.8	40	8.0	58	11.6	136	27.2
35-	ग्रामों में बड़े परिवार की धारण राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिये बढ़ी है ?	132	26.4	132	26.4	48	9.6	36	7.2	152	30.4
36-	राजनीतिक स्वार्थ जनसंख्या नियंत्रण को प्रभावित करते हैं ?	264	52.8	78	15.6	24	4.8	10	2.0	124	24.8
37-	अधिक जनाधिक्य वाले समाज राजनीति की दिशा निर्धारित करते हैं ?	180	36.0	152	30.4	40	8.0	18	3.6	110	22.0
38-	राजनीतिक स्वार्थ जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने में बाधक हैं ?	344	68.8	52	10.4	20	4.0	24	4.8	60	12.0
39-	अधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र ही शक्तिशाली होता है ?	66	13.2	76	15.2	26	5.2	30	6.0	302	60.4
40-	भारत में जनाधिक्य भारतीय राजनीति एवं लोकतंत्र के दुरूपयोग का दुष्परिणाम हैं ?	280	56.0	82	16.4	28	5.6	34	6.8	76	15.2
धार्मिक एवं जातिमत मूल्य :											
41-	परिवार में पुत्र होना आवश्यक है ?	220	44.0	120	24.0	20	4.0	34	6.8	106	21.2
42-	जनसंख्या नियंत्रण की सीख धार्मिक ग्रन्थों में नही है ?	202	40.4	122	24.4	60	12.0	30	6.0	86	17.2
43-	धार्मिकता जनसंख्या को प्रभावित करती है ?	264	52.8	124	24.8	22	4.4	20	4.0	70	14.0
44-	लड़कियों को शिक्षा देना धर्म के प्रतिकूल है ?	102	20.4	30	6.0	08	1.6	18	3.6	342	68.4
45-	धार्मिक कुरीतियाँ एवं अन्ध विश्वास जनाधिक्य को बढ़ाते है ?	382	76.4	48	9.6	16	3.2	08	1.6	46	9.2

		पूर्ण सहमत	प्रतिशत	सहमत	प्रतिशत	तटस्थ	प्रतिशत	असहमत	प्रतिशत	पूर्ण असहमत	प्रतिशत
राजनीतिक मूल्य :											
31-	प्रजातंत्र में जनाधिक्य ही बल है ?	244	48.8	104	20.8	20	4.0	16	3.2	116	23.2
32-	जनसंख्या वृद्धि में लोकतंत्र एक महत्वपूर्ण कारक है ?	204	48.8	154	30.8	38	7.6	24	4.8	80	16.0
33-	अधिक सन्तान वाले परिवार अधिक राजनीतिक सत्ता प्राप्त करते हैं ?	82	16.4	94	18.8	36	7.2	32	6.4	256	51.2
34-	राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिये जनसंख्या बल से परिपूर्ण जातियों एवं धर्मो की आवश्यकता पड़ती है ?	182	36.4	84	16.8	40	8.0	58	11.6	136	27.2
35-	ग्रामों में बड़े परिवार की धारण राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिये बढ़ी है ?	132	26.4	132	26.4	48	9.6	36	7.2	152	30.4
36-	राजनीतिक स्वार्थ जनसंख्या नियंत्रण को प्रभावित करते हैं ?	264	52.8	78	15.6	24	4.8	10	2.0	124	24.8
37-	अधिक जनाधिक्य वाले समाज राजनीति की दिशा निर्धारित करते हैं ?	180	36.0	152	30.4	40	8.0	18	3.6	110	22.0
38-	राजनीतिक स्वार्थ जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने में बाधक हैं ?	344	68.8	52	10.4	20	4.0	24	4.8	60	12.0
39-	अधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र ही शक्तिशाली होता है ?	66	13.2	76	15.2	26	5.2	30	6.0	302	60.4
40-	भारत में जनाधिक्य भारतीय राजनीति एवं लोकतंत्र के दुरूपयोग का दुष्परिणाम हैं ?	280	56.0	82	16.4	28	5.6	34	6.8	76	15.2
धार्मिक एवं जातिगत मूल्य :											
41-	परिवार में पुत्र होना आवश्यक है ?	220	44.0	120	24.0	20	4.0	34	6.8	106	21.2
42-	जनसंख्या नियंत्रण की सीख धार्मिक ग्रन्थों में नही है ?	202	40.4	122	24.4	60	12.0	30	6.0	86	17.2
43-	धार्मिकता जनसंख्या को प्रभावित करती है ?	264	52.8	124	24.8	22	4.4	20	4.0	70	14.0
44-	लड़कियों को शिक्षा देना धर्म के प्रतिकूल हैं ?	102	20.4	30	6.0	08	1.6	18	3.6	342	68.4
45-	धार्मिक कुरीतियाँ एवं अन्ध विश्वास जनाधिक्य को बढ़ाते हैं ?	382	76.4	48	9.6	16	3.2	08	1.6	46	9.2

	पूर्ण सहमत	प्रतिशत	सहमत	प्रतिशत	तटस्थ	प्रतिशत	असहमत	प्रतिशत	पूर्ण असहमत	प्रतिशत
46- अनेक जातियों में बड़ा परिवार ही अच्छा माना जाता है ?	230	46.0	150	30.0	28	5.6	20	4.0	72	14.4
47- जनसंख्या अधिकता से जातियाँ सामाजिक एवं राजनीतिक आधारों को प्रभावित करती है ?	306	61.2	82	16.4	38	7.6	10	2.0	64	12.8
48- अनेक जातियों में जितने अधिक पुरूष उतना ही अधिक आर्थिक लाभ का सिद्धान्त प्रचलित हैं ?	232	46.4	140	28.0	34	6.8	10	2.0	84	16.8
49- आज भी कुछ जातियों में बाल विवाह की परम्परा विद्यमान है ?	316	63.2	130	26.0	08	1.6	10	2.0	36	7.2
50- समाज में व्याप्त जातिगत बन्धन जनसंख्या वृद्धि को बल देता है ?	266	53.2	116	23.2	30	6.0	20	4.0	68	13.6
अन्य मूल्य :										
51- वातावरण प्रदूषण जनसंख्या वृद्धि का ही परिणाम है ?	370	74.0	88	17.6	08	1.6	12	2.4	22	4.4
52- प्रतिदिन बढ़ते नगर एवं महानगर जनाधिक्य की देन है ?	392	78.4	78	15.6	12	2.4	08	1.6	10	2.0
53- अधिक जनसंख्या से राष्ट्र के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है ?	402	80.4	68	13.6	12	2.4	08	1.6	10	2.0
54- भौतिकवाद एवं उपभोक्ता संस्कृति से जनसंख्या नियंत्रण कार्य क्रम को बल मिला है ?	240	48.0	144	28.8	40	8.0	22	4.4	54	10.8
55- छोटी आयु में विवाह हानिकारक है ?	480	96.0	08	1.6	-	-	-	-	12	2.4
56- विवाह के बाद शीघ्र बच्चे नहीं होने चाहिये ।	382	76.4	68	13.8	10	2.0	10	2.0	30	6.0
57- सन्तान की इच्छित संख्या पूर्ण होने पर परिवार नियोजन के साधनों को अपनाने का प्रचलन बढ़ गया है ?	350	70.0	132	26.4	04	0.8	06	1.2	08	1.6
58- दहेज जैसी कुरीतियों ने छोटे परिवार की धारणा को जन्म दिया है ?	344	68.8	114	22.8	04	0.8	18	3.6	20	4.0
59- अर्न्तजातीय विवाह जनाधिक्य की देन है ?	170	34.0	140	28.0	24	4.8	16	3.2	150	30.0
60- स्वास्थ्य मानव जीवन की प्रमुख आवश्यकता है ?	490	98.0	10	2.0	-	-	--	-	-	-